

CALL No. 49250 ACC. NO. 444

AUTHOR \_\_\_\_\_

TITLE \_\_\_\_\_

DU STACKS

CHECKED AT THE TIME

SUE

DATE	NO.	DATE	NO.
3/2/2	26	2/8/2	12
2/6/2	2	1/1/2	1



# **MAULANA AZAD LIBRARY** **ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY**

## **RULES:—**

1. The book must be returned on the date stamped above.
2. A fine of **Re. 1-00** per volume per day shall be charged for text-books and **10 Paise** per volume per day for general books kept over-due.







# विज्ञापन

के हमारे कारगुमाने में जो पुस्तकें मूल संस्कृत टीका उर्दू में से कुछ नीचे लिखते हैं जिन साहबों को ज़रूरत हो मंगा जायत से मिलेगी-

## याज्ञवल्क्य स्मृति.

स्वामीदयाल साहब के उर्दू तर्जुमा समेत है जिस में राजाधियों की प्रजा पालन करने के धर्म और अधर्मियों के दण्ड देने और चारों वरों और ग्रहस्थादि चारों आश्रमों के धर्म और व्रतार्थ इत्यादि अनेक विषय संयुक्त हैं-

## मार्कराडेय पुराणा.

का उल्था श्रीबाबूसेवनन्दनसिंह रईस खान्वाण राजशिवद्वर और परगनात ज़िला निरुद्ध व चम्पारन ने कराया श्लोक के नीचे श्लोकांश भाषा टीका है और उर्दू टीका भी संयुक्त कर दोनों टीकाओं के अंक लगा दिये गये हैं छापा पत्थर है जिस में मार्कराडेय पुराण जैमिनि का सवसंग और संबाध अप्सराओं पर दुर्वासा मुनि का शाप, के सारे जाने पर विद्युतरूप राक्षस का मारा जाना और यमिदा के जार चरित्र, देवी जी का माहात्म्य और दुर्गा पाठ भी संयुक्त हैं-

## ब्रह्मार्क.

का उल्था लाला स्वामीदयाल साहब ने किया है छापा पत्थर का सुन्दर है इस में सम्पूर्ण ब्रह्म की कथा व उद्घाटन इत्यादि वर्णित है

## भगवद्गीता.

श्री श्यामसुन्दर लाल कत उल्था सहित है छापा पत्थर है इस में यदि भी भाषार्थ स्पष्ट किया है और फिर हर एक पद के अर्थ भी अलग अलग दिये हैं कि श्लोक लगाने की भी शक्ति हो-

## बृहत्संहिता अर्थात् बाराहीसंहिता.

इस के मूल श्लोकों की बराह मिहिराचार्य जी और दीक्षा दे  
परिचित दुर्गा प्रसाद शास्त्री ने किया था और उसी देवनागरी  
नफ़ाल उर्दू स्वत में लिखा बार संस्कृत मूल व उर्दू दीक्षा शास्त्री  
पी गई है इस में नवग्रह व्यंगस्थ और सप्तग्रहवियों के चार  
थ्य चन्द्र ग्रहरा, धूमकेतु के फल, ग्रहयुद्ध, ग्रहसमागम, ग्रह  
ल, पानी वर्धने के अनेक विचार इत्यादि १०८ विषय वर्णित  
समान लौकिक व्यवहारों के निमित्त कोई संहिता नहीं है-

### महिम्नस्तोत्र.

लाला स्वामीदयाल जी का तर्जुमा किया हुआ हर श्लोक का उक्त  
अर्थ है जिस में शिव जी की स्तुति वर्णित है-

### विष्णुसहस्रनाम.

जिस में श्रीविष्णु जी के हजार नाम श्लोकों में वर्णित हैं इस के दीक्षा  
भी लाला स्वामीदयाल जी ने उर्दू में उल्था किया है-

### शिवसहस्रनाम.

उर्दू तर्जुमे की मुंशी शंकर दयाल प्रारहत ने किया है इस में  
शिव जी हजार नाम श्लोकों में वर्णित हैं-

### अर्कप्रकाश.

यह वेद की पुस्तक रावरा ने अपनी परम प्यारी महोदरी प्रति व-  
र्णन किया है व में सम्पूर्ण औषधियों की अर्क निकालने की विधि  
और निकालने यंत्र बनाने की विधि लिखा है इस का भी तर्जुमा ल  
स्वामीदयाल जी ने किया है-

### मनोरंजन अर्थात् दिलबहलाव.

मुंशी जगन्नाथसहाय कत, हज़ारीबाग़ निवासी- इस में गज़लों व  
शिव भजन, वगैरह अनेक प्रकार के हैं- देखने योग्य हैं-

वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञोयत्रतत्राश्रमेवसन् ॥ इहैवलोकेतिस्व-  
 त्तन्मभूयायकल्पते ॥ १०२ ॥ अज्ञेभ्योअस्थिनः अश्वाअस्थि-  
 भ्योधारिरागवराः ॥ धारिभ्योज्ञानिनः अश्वाज्ञानिभ्योव्यव-  
 सायिनः ॥ १०३ ॥ तपोविद्याचविप्रस्यनिश्चयेयसकरंपरम् ॥  
 तपसाकिल्बिषंहन्तिविद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ १०४ ॥ प्रत्यक्षांश्च  
 नुमानंचशास्त्रंचविविधागमम् ॥ त्रयंसुविदितंकार्यधर्मश्च  
 ज्ञिसभीषिता ॥ १०५ ॥ आर्यधर्मोपदेशंचवेदशास्त्राऽविरो-  
 धिना ॥ यस्तर्कराणानुसन्धत्तेसधर्मवेदनेतरः ॥ १०६ ॥

۱- ویدادشاستر کے اصلی مطلب کو جاننے والا کسی ہوشیار میں قیام کرتا ہوا موش کے  
 قی ہوتا ہے۔

۱۰۲- جو کچھ مینن جانتا ہے ایک گرنفقہ پڑھنے والا بڑا ہے اس سے وہ بڑا ہے  
 پڑھنے ہوئے کو مینن بھولتا اس سے پڑھنے ہوئے کے مطلب کو جاننے والا بڑا ہے اس سے  
 مینن لکھے ہوئے کرم کو کرنا والا بڑا ہے۔

۱۰۳- تپ یعنی اپنا دھرم پڑھنا یعنی دھرم گبان یہ دونوں برہمن کی موش کی افضل چیز  
 کیونکہ تپ سے پاپ کو فانی کرتا ہے اور پڑھنا سے موش کو پاتا ہے۔

۱۰۴- دھرم کے سیدھے عاقبت کو جاننے کو جو آہستہ آدمی پر تکیں امان انواع قسم کا  
 شستر مین کہا ہوا ان تینوں پر مان کو اچھی طرح سے جانے۔

۱۰۵- ویدادشاستر ان دونوں کو اچھی دلیل سے جو تلاش کرتا ہے ان کے اصلی مطلب کے  
 مناسب دہی دھرم کو جانتا ہے دوسرا مینن۔

उत्पद्यन्ते च्यवन्ते च यान्यतोऽन्यानि कानिचित् ॥ तान्यर्वाक्कालिकतयानिष्कलान्यन्तानि च ॥ ६६ ॥ चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाश्च यक् ॥ भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिद्यति ॥ ६७ ॥ शब्दः स्पर्शश्चरुचं च रसो गन्धश्च पंचमः ॥ वेदादेव प्रसूयन्ते प्रसूतिगुराकर्मतः ॥ ६८ ॥ विभर्त्ति सर्वं भूतानि वेदशास्त्रं सनातनं ॥ तस्मादेतत्परमं न्येयं जन्तोरस्य साधनम् ॥ ६९ ॥ मेनापत्यं च राज्यं च दराडने तत्त्वमेव च ॥ सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविद्वहेति ॥ १०० ॥ यथा जातवलो वह्निर्दहत्यार्शानपि हुमान् ॥ तथा दहति वेदज्ञः कर्मजं दोषमात्मनः ॥ १०१ ॥

۹۶- سبب یا هر چه کلام است ده آدمی کا بنایا ہوا اس واسطے باز زوال ہے اور اس کا پران نہیں

اور امرت وغیرہ جو کلام ہیں وہ بے زوال ہیں کیونکہ انکی خبر دیدی ہو اس واسطے انھوں کا پران ہے۔

۹۷- چار دوسرے تینوں لوگ علیحدہ علیحدہ چاروں اشتم ماضی و حال و استقبال جو چچہ کرم ہے

وہ سب دیدی سے مشہور ہوتا ہے۔

۹۸- ست راج تم ان تینوں گون سے پیدا ہوتے ہیں جو شبر اسپرے روپ رتس گندہ میں وہ

سب دیدی سے پیدا ہوتے ہیں۔

۹۹- ہمیشہ سب جائزوں کو دھارن کر نیوالا جو شاستر ہے وہی آدمی کا افضل شریعہ

ہے اس بات کو میں مانتا ہوں۔

۱۰۰- سنیات کا کرم راج ڈنڈ و تیا سب لوگ کی حکومت ان کو دید شاستر کا دلا ہے۔

۱۰۱- جسطرح ترقی یافتہ آگ کی سی درخت کو جلا دیتی ہے اسی طرح وید جانشین دالا ہے کرم سے پیدا ہوتے دوشن کو جلاتا ہے۔

سर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ॥ समं पश्यन्नात्मया-  
 जीरवाराज्यमधिगच्छति ॥ ६१ ॥ यथोक्तान्यपि कर्माणि परि-  
 ह्रायद्विजोत्तमः ॥ आत्मज्ञानेशमेव स्याद्वैदभ्यासे च यत्नवान्  
 ॥ ६२ ॥ स तद्धि जन्मसाफल्यं ब्राह्मणस्य विशेषतः ॥ प्राप्येत-  
 त्कृतकृत्यो हि द्विजो भवति नान्यथा ॥ ६३ ॥ पितृदेवमनुष्या-  
 राणां वेदश्चक्षुःसनातनम् ॥ अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति  
 स्थितिः ॥ ६४ ॥ या वेदवाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कदस्यः ॥  
 सर्वास्तानिष्कलाप्रेत्य तमो निष्ठाहिताः स्मृताः ॥ ६५ ॥

- ۹۱ - جب جانتا رہوں میں اپنی آتما کو اور سب جانتا رہوں اپنی آتما میں دیکھتا ہوں ۱۱  
 گیتہ کو سوا لا آدمی برہم بھاو کو پاتا ہے -  
 ۹۲ - برہمن یعنی برہم گیانی اگن ہوتو وغیرہ کر مون کو نرک کر کے برہم دھیان اندریوں کو  
 جیتنا پر نو دا مندر وغیرہ وید بھاس ان سب میں تدریس کرے -  
 ۹۳ - برہمن شستری ویشیہ کے جن کو پائین کر نیو ہے تم گیان اور وید بھاس وغیرہ کرم  
 میں لیکن برہمن کو تو زیادہ سو اسٹ اس کرم کو پا کر کرت کرت ہوتا ہے نیو کر نے کے لائق  
 کام کو کر چکتا ہے -  
 ۹۴ - ویدیشیت تدریو تا آدمین کی آکھ ہے وید و شاستر دونوں شک کے لائق نہیں  
 ہیں اور دلیل کر نیوے لائق میں یہ شاستر کی مر جاوے -  
 ۹۵ - جو وید سے باہر یعنی خلاص وید و شاستر اور جو بچ غلام ہی نقل سے پیدا ہوئے وہ  
 میں وہ سبکے نتیجہ میں ہیں سو کس نہیں دیکھتے ہیں اور تو کس سے بھرے ہوئے ہیں -

यस्यामेवास्तु सर्वेषां कर्मणां प्रेत्य चेह च ॥ श्रेयस्कारतरं ज्ञेयं सर्व-  
दा कर्म वैदिकम् ॥ ८६ ॥ वैदिके कर्मयोगे तु सार्वरायेतान्यशेष-  
तः ॥ अन्तर्भवन्तिक्रमशस्तस्मिंस्तस्मिन्क्रियाविधौ ॥ ८७ ॥ सु-  
खाभ्युदयिकं चैवं नैश्रेयसिकमेव च ॥ प्रवृत्तं च निवृत्तं च द्विवि-  
धं कर्म वैदिकम् ॥ ८८ ॥ इह चासुत्रवाक्याभ्यां प्रवृत्तं कर्म कीर्त्यते  
॥ निष्कामं ज्ञानपूर्वञ्च निवृत्तमुपदिश्यते ॥ ८९ ॥ प्रवृत्तं कर्म सं-  
सेव्यं देवानामेति साम्यताम् ॥ निवृत्तं सेवमानस्तु भूतान्त्ये-  
तियं च वै ॥ ९० ॥

۸۶۔ پہلے کے ہوئے وید بھیساس وغیرہ چھ کرموں میں دید میں کہا ہوا کرم یعنی اتم گیان اس لوک اور پلوک میں موکش کیلئے ہر وقت جانتے کے لائق ہے۔

۸۷۔ اُس کرپا دیدم ویدک کرم جوگ یعنی برہم آپاسنا میں پیس وید بھیاس وغیرہ ختم ہو چکا  
میں یعنی جب برہم آپاسنا حاصل ہوئی تب کپس ادھن باقی رہ گیا۔

۸۸۔ وید میں لکھا ہوا کہ وہ قسم کا ایک پر برت دوسرا نیت عیش و تہلیل کا دینے والا  
 دیکھنے جو شوم کیلئے بغیرہ سے سکھ دینے والا سوگ وغیرہ چھل مونا کی لیکن سنسار میں پھولے  
 آتا ہے اس واسطے پر برت کھاتا ہے اور نیت سوگش دینے والا جو (نیت سوگش کیلئے) سو جو کرم  
 ہے وہ نیت کھاتا ہے وہ کلیان کر نیوالا ہے لئے سنسار میں مہر نہیں لانا۔

۸۹۔ اس لوگ اور پروک میں خود ہوش دل حاصل ہونے کی واسطے جو کرم ہے وہ پر برت ملانا ہے اور گیان پور دک جو کرم ہے وہ نیرت کہلاتا ہے۔

۹۰۔ پر بت کرم کر نیے سے دیوتاؤں کے برابر ہوتا ہے اور بت کرم کر نیے پر مبنی وغیرہ پانچ عناصر کو فتح کرتا ہے ایسے پانچ عناصر سے جنم ہوتا ہے ان کے فتح کر نیے بھر جنم میں ہوتا۔



دوہشوننوبھاवेनयद्यत्कर्मनिधेयते॥ तादृशेनशरीरेणातत्तत्क  
लमुपाश्रुते॥ ८१॥ सयसर्वःसमुद्दिष्टःकर्मणां वःफलोदयः॥  
नेश्वयेयसकरं कर्मविप्रस्येदंनिबोधत॥ ८२॥ वेदाभ्यासस्तपो-  
ज्ञानमिन्द्रियारागचसंयमः॥ अहिंसायुरुसेवाचनिश्चयेयसक  
रं परम्॥ सर्वेषामपिचैतेषांशुभानामिहकर्मणाम्॥ किंचिच्छे  
यस्करतरं कर्मोक्तं पुनर्यप्रति॥ ८३॥ सर्वेषामपिचैतेषामात्मा  
ज्ञानं परं स्मृतम्॥ तद्व्याप्त्यं सर्वविद्यानां प्राप्यतेत्यमृतं ततः॥

८५॥

۸۱- جس جس بھادے جس جس کرم کا سیون کرتا ہو اسی بد کے اس اس کرم کے پھل  
کو بھوک کرتا ہے۔

۸۲- میں سب تمام نتیجہ اعمال کو بیان کیا اب بکے بعد براہمن کے موکش ویزو کے  
کرم کو بیان کرتا ہوں۔

۸۳- دید کا پڑھنا۔ جب گیان اندریوں کا سنجھ سہنا یعنی کسی جاندار کو نہ مارنا گرو کی  
سیوا کرنا پسب کرم بڑے کلیان کر نیوانے ہیں۔

۸۴- ان سب سنجھ کرموں میں سے ہر ایک کرم آدمیوں کی موکش کو واسطے نہایت کلیان  
کرتی والا ہے۔

۸۵- سب کرموں میں اتنا کا گیان افضل ہے کیونکہ اسی سے موکش ہوتا ہے۔

یعنی سب سے جس فاس بھاد کے ارشاد دران دو جگہ دیکھ کرے تو زیادہ متوکل رکھنے والا زیادہ رو جگ  
رکھنے والا زیادہ متوکل رکھنے والا بدن پاکر اس جگہ دیکھتے ارشاد دران دو جگہ دیکھ کر کے پھل کو بھوک کرتا ہے۔



विविधाश्चैव संपीडाः काकोल्लकैश्च भक्षयामः ॥ कर्मवासंस्व-  
 न्नापात्कुम्भीयाकांश्चरारुणान् ॥ ७६ ॥ सस्मवांश्च वियोनीषु  
 दुःखप्रायासु नित्यशः ॥ शीतातपाभिधातांश्च विविधानि भ-  
 यानि च ॥ ७७ ॥ असक्तर्भवासेषु वासं जन्मचरारुणान् ॥ वंध-  
 नानि च काष्ठानि पश्येव्यत्वमेव च ॥ ७८ ॥ बन्धुप्रियवियोगां-  
 श्च संवासं चैव दुर्जनैः ॥ इव्यार्जनं च नाशं च मित्रा मित्रस्य चार्ज-  
 नम् ॥ ७९ ॥ जरां चैवाप्रतीकारां व्याधिमिश्रोपपीडनम् ॥ क्लेशां  
 च विविधां स्तां स्तान्मृत्युमेव च दुर्जयम् ॥ ८० ॥

۷۶- اور انواع اقسام کی تکلیفیں ہیں اور کوڑا اور آلو پر غرائق کو کھاتے ہیں اور گرم ہلو  
 کی گرمی کو پاتے ہیں اور نہایت خوفناک کشتیوں پر کھڑے ہوتے ہیں  
 ۷۷- ہمیشہ بہت دکھ والی ناقص ہلوں میں پیدا ہوتے ہیں اور سردی و گرمی کو تکلیف اور  
 انواع اقسام کا خوف پاتے ہیں۔

۷۸- بار بار شکم میں قیام و تکلیف و عذاب و تکلیف گرفتاری و دوسری کی خدشہ گزاری ان  
 سب کو پاتے ہیں۔

۷۹- بھائیوں اور پیارے لوگوں سے جدائی اور برادر میوں کے ساتھ بود و باش اور  
 دولت کا فراہم ہونا اور پھر اوسکا کالعدم ہونا اور دوست و دشمن کا ملنا ان سب کو تکلیف  
 ۸۰- قابل عموم محالہ حالت میری و بیماریوں سے دکھ و انواع اقسام کی تکلیف  
 کے بعد موت ان سب کو پاتے ہیں۔

مہنا س ج्यو تیک: پرتو वैश्यो भवति पूयमुक्त ॥ चेलाशकश्च भ  
वति शूद्रो धर्मात्त्वकाऽप्युतः ॥ ७२ ॥ यथा यथा निषेवने विषया  
न्विषयात्मकाः ॥ तथा तथा कुशलतां तेषां तेषूपजायते ॥ त  
स्या सात्कर्माणां तेषां पापानां मत्प्रबुद्धयः ॥ सम्या मुबन्धि दुः  
खानि तामुताखि ह्योनिषु ॥ ७४ ॥ तामिखादिबुचो प्रेषु नर-  
केषु विवर्त्तनम् ॥ असि यन्नव नारी निवन्धनं च्छेदना निच ॥  
७५ ॥

۶۲- جو دیشیا اپنے دھرم سے علیحدہ ہو وہ پیپ بھوجن کرے والا سترکشن نام پریت ہوتا ہے  
اور جو شور اپنے دھرم سے علیحدہ ہو وہ کھرا بھوجن کرے والا پریت ہوتا ہے۔  
۶۳- لیٹیوں میں آتما کو لگا کر سو والا آدمی جس جس طرح لیٹیوں کا سیون کرتا ہے اس سطح  
لیٹیوں میں ہوتا ہے۔  
۶۴- وہ سب کم عقل والے آپ پاپ کروں کی دھارت سے اُن اُن یوں میں دکھ کو پاتے ہیں  
۶۵- اور تاشتر اس پتر میں پھیدیں جو مرک ہیں انہیں دکھ پاتے ہیں۔

हको मृगो भं व्याघ्रोऽश्वं फलमूलान्मुमर्कतः ॥ स्त्री मृशः स्तोत्रं  
को वारियानान्युष्टपश्नजः ॥ ६७ ॥ यद्वातद्वा परद्रव्यमपह-  
त्य वलान्नरः ॥ अवश्यं याति तिर्यक्जग्ध्वा चैवाह तं हविः ॥  
६८ ॥ स्त्रियोऽप्येतेन कल्पेन हत्वा दोषमवाप्नुयुः ॥ सतेषामेव  
जन्तूनां भार्यं पुण्यान्तिताः ॥ ६९ ॥ स्वेभ्यः स्वेभ्यस्तु कर्मभ्य-  
श्च्युता वराणां ह्यनापदि ॥ पापान्संस्त्य संसारान्नेभ्यतां याति  
रात्रुषु ॥ ७० ॥ वाक्ता श्युल्का मुखः प्रेतो विप्रो धर्मात्त्वकाश्च्यु-  
तः ॥ अमेध्य कुरापाशी च स वियः कदपूतनः ॥ ७१ ॥

۶۷- ہرن اور ہاتھی ان دونوں میں سے کسی ایک کو چرانے سے بندھ رہتا ہے گھوڑا کے  
چرانے سے باگھ رہتا ہے پھل پھول ان دونوں سے کسی ایک کے چرانے سے بندھ رہتا ہے  
عورت کے چرانے سے پیچھ رہتا ہے پینے کے لائق پانی چرانے سے پیسپا نام پر بندھ رہتا ہے  
سوار یوں کو چوراکر اونٹ ہوتا ہے چارپالوں کو چور کر بکرا ہوتا ہے۔

۶۸- دوسری درجہ چرانے سے اور بدرون بھوک لگانے و ہوتاؤں کے ہبیکے بھوجن  
سے ضرور ٹیڑھے چلنے والے جانوروں کے جسم یعنی قالب کو پاتا ہے یعنی انکی صوفت  
پیدا ہوتا ہے۔

۶۹- اور عورت بھی اوپر لکھے ہوئے کرموں کے کرنے سے اوپر لکھے ہوئے جانوروں کی  
عورت ہوتی ہے۔

۷۰- وقت مصیبت کے نہ نہیں چاروں درجہ کرموں علیحدہ ہو کر باپ یوں بن جا کر  
اپنے دشمنوں کے غلام ہوتے سن۔

۷۱- اپنے دھرم سے علیحدہ برہمن نے کی ہوئی چیز کو بھوجن کرنا والا لکھ نام پریت ہوتا  
اور اپنے دھرم سے علیحدہ کشتری غلط پیشاب کھانی والا کیٹوتن نام پریت ہوتا ہے۔

دھات్యंहत्वाभवत्यासु:कास्यंहंसोजलज्ञव: ॥ मधुदंशःपयः  
 काकोरसंश्वानकुलोद्यतम् ॥ ६२ ॥ मांसंघृधोवयामहुस्तीक्ष्णं  
 लयकःखगः ॥ चीरीवाकस्तुलबरांबलाकाशकुनिर्दिधि ॥ ६३ ॥  
 ॥ कीरीदंतित्तिरिहत्वाक्षौमंहत्वातुदुर्दुरः ॥ कार्यासतान्नबंक्रौ-  
 चीगोधागावागुहोयुडम् ॥ ६४ ॥ ब्रुच्यन्तरिःशुभानान्धान्य-  
 ब्रशाकतुवर्हिशाः ॥ स्वाचित्कतान्नंविविधमकृतान्नंतुश-  
 ल्यकः ॥ ६५ ॥ वक्रोभवतिहत्वाग्निंघृहकारिह्युपस्करम् ॥ र-  
 क्तानिहत्वावासांसिजायतेजीवजीवकः ॥ ६६ ॥

۶۲۔ غلہ کے چورانیے چوہا اور کالسا کے چورانیے سنس اور پانی کے چورانیے پلوٹام  
 چالوز اور شہد کے چورانیے جگل کے ماچھی اور دودھ کے چورانیے کوٹا اور رس کے چورانیے  
 کٹہ اور گھی کے چورانیے نیولا بنوٹا ہے۔

۶۳۔ گوشت و چربی و دل و دھت و دہی انھوں کے چورانیے سلسلہ گدھ و پانی کے  
 اور پر سے والا پرند و تیل کی پرنڈ و بھینگ و بٹا کا پرند بنوٹا ہے۔

۶۴۔ کیر دن کے پیٹ سے لکالے ہوئے سون کا کیر اور نیکی کی جھال سے بنا ہوا کیر اور کپڑوں  
 کے سوت سے بنا ہوا کیر اور گنوا درگڑا انھوں کے چورانیے بٹا کا سلسلہ تتری پرند و میٹھا  
 و گرنج و گوہ و گودرا پرند بنوٹا ہے۔

۶۵۔ شاک و غیرہ بھج و غیرہ بھج و سنو و غیرہ جو دگیون انھوں کے چورانیے بٹا کا سلسلہ  
 چھوٹا پرند بنوٹا ہے۔

۶۶۔ اگن سوت و موسل و غیرہ گوی فاندہ سند چیرین لال کپڑا انھوں کے چورانیے سلسلہ  
 بٹا کا سلسلہ چھوٹا پرند بنوٹا ہے۔

तृरागुल्मवातानांचक्रव्यादांरंघ्रिणामपि॥ कृश्कर्मकतांचेव  
शतशोगुरुतल्पगः॥ ५८॥ हिंस्त्राभवंतिक्रव्यादाः क्लमयोऽभ  
स्यभक्षिराः॥ परस्परादिनःस्तेनाःप्रेतान्यस्त्रीनिधेविगाः॥  
५९॥ संयोगंपतितैर्गत्वापरस्यैवचयोधितम्॥ अपहृत्यच-  
विप्रस्वंभवतिब्रह्मराक्षसः॥ ६०॥ मरिामुक्ताप्रबालानिहत्वा  
लोभेनमानवः॥ विविधानिचरत्नानिजायतेहेमकर्तृषु॥ ६१॥

۵۸- ترن لینے دوپ وغیرہ (گم لتا کچے گوشت کے کھانے کے لیے) (کیچہ وغیرہ) (دارہ و دالے  
(شکھ وغیرہ) (کرور کرم کرنیکا جبکا سبھاوی (دباگوہ وغیرہ) (انفون کی یون مین دارہ سے جماع کرنا  
سیکڑوں دفنہ جاتا ہے -

۵۹- جیو کے ماشے کی حضرت رکھنے دے جو مین وہ کچے گوشت کے کھانے کے لیے (لیٹا بلا  
وغیرہ) ہوتے مین اور چونہ کھانے کے قابل چیز کو کھاتے مین وہ چھوٹے کیٹے ہوتے  
مین ہسپاکی کے سواے جو چور مین وہ باجم گوشت کے کھانے ہوتے مین (یعنی وہ  
اسکے گوشت کو کھاتا ہے اور وہ اسکے گوشت کو کھاتا ہے اور چاٹال کی عورت سے جماع  
کرنا والا پریت ہوتا ہے -

۶۰- تپت لوگوں کے ساتھ میل ملاپ کرنا و پسے کی عورت سے صحبت کرنا برہمن کا  
شونا چورانا انفون مین سے کوئی ایک کرم کر کے یہ ہم راگشس ہوتا ہے -  
۶۱- لوبھ سے سن مونی و مونگا و انواع اقسام کے جو اہرات کے چرانے سے سار ہوتا ہے -

इन्द्रियाराणं प्रसंगेन धर्मस्यासेवनेन च ॥ पापानां यान्ति संसार-  
न विद्धां सो न राधमाः ॥ ५१ ॥ यां यां यो नितु जीवो यं येन येनेह क-  
र्मणा ॥ क्रमशो याति लोकेऽस्मिंस्तत्तत्सर्वं निबोधत ॥ ५२ ॥ ब-  
हुन्वैर्यगृहान्धोरा न्नरकान्धाप्यतत्सयात् ॥ संसारान्प्रतिपद्य-  
ते न ह्यपातकिनस्त्विमान् ॥ ५४ ॥ श्वश्रूकरखरोद्गराणां गोजा-  
विन्दगपक्षिराणाम् ॥ चराडालपुच्छसानां च ब्रह्महायो निमृच्छ-  
ति ॥ ५५ ॥ कृमिकीटपतंगानां विड्भुजां चैव पक्षिराणाम् ॥ हिं-  
सायां चैव सत्त्वानां सुरापो ब्राह्मणो ब्रजेत् ॥ ५६ ॥ लूता हि मर-  
णानां च तिरश्चां चाम्बुचारिणाम् ॥ हिंसायां च पिशाचानां स्ते-  
नो विप्रः सहस्रशः ॥ ५७ ॥

۵۲۔ آدمیوت بیخ ہو کر کھادی اطاعت نفس نامہ سے اور عزم کر کے ترک کر بیٹھتا  
خواب حالت کو مانتا ہے۔

سیدہ! اس لوگ میں سکتا چو جس جس کرم کے جس جس یون میں جا پتا اس سب کو  
سکتے ہیں۔

۵۴۔ بہت سال تک گھوڑنر کے بھوک کرنے سے پالپون کدور کر کے باقی ماندہ پالپون  
میاپلی آدمی سنسار میں تنہا پاتے ہیں۔

۵۵۔ کتہ سوز گردھا دنت کھو گیا بھگیا سہرن پیرند چاٹا مال کپس انھون کی ٹوٹی بین  
برہن کا مارا نوالا دانت دسی انھون کا جھرمٹا ہے۔

۵۶- چھوٹے پوتے کی ریت تپتات علیظ کھائی گئے پر غلام مارنی کی فضیلت رکھنے والے شیر وغیرہ ان کو  
کی یون میں تراب پیسنے والا برہمن جانتا ہے۔

۵۷۔ مکتبی ساجپ کرکے جبل کے چوٹی پر چلے جانے کی ہمت کی کھو چلی۔  
 جیو آفٹن کی یونین سونا چرائیو والا براہمن سرارون وفد چاہتا ہے۔

गन्धर्वागुह्यकायसाविबुधानुचराश्च ॥ तथैवाप्यसः सर्वा-  
जसीब्रूतमागतिः ॥ ४७ ॥ तापसायतयोविप्रायेच वैमानिकाग-  
राः ॥ नक्षत्राणि चैत्याश्च प्रथमा सात्विकी गतिः ॥ ४८ ॥ यज्वा-  
न ऋषयो देवा देवा ज्योतींश्चित्तराः ॥ पितरश्चैव साध्याश्च द्विती-  
या सात्विकी गतिः ॥ ४९ ॥ ब्रह्मा विश्वसृजो धर्मो महानव्यक्त-  
मेव च ॥ उत्तमांसात्विकी मेतां गतिमाहर्म्मनी विराः ॥ ५० ॥ यद्य-  
सर्वः स सुदृढस्त्रिप्रकारस्य कर्मणाः ॥ त्रिविधस्त्रिविधः कृत्स्नः  
संसारः सार्वभौतिकः ॥ ५१ ॥

۴۴۔ گندھوب کھجک ویکش و دیوتوں کے پیچھے چلنے والے پدیا و غیرہ و لیسپا الہ  
گنوں کو جو گن کی آخر تک جانتا۔

۴۸۔ منپوئی بی بی برہن اور آپس کے علاوہ پشتک بان پر چھکے ہوئے ایک منکر و بدینہ  
ان سب گنوں کو ستون کی بیس گنت جانتا۔

۹۹۔ ایک کیرنوپلے رش دیوتا دیدو و دیو جو تگن تبسرتگن سادو گن ان کیرنوپلے  
سنو گن کی تدبیر گت چانتا۔

۵۔ برصغیر کے پیر اور بزرگوں کے ساتھ جہت و عدم جہت متنازعہ ہو سکتا ہے۔  
ستون کی آتم گت چانتا۔

۱۰۔ دل و گفتار و بدن تینوں کرم کی سادھن میں سچے پیون کے وسیلے سے غسل ہو تو انھوں کی توفیق سے تین قسم کے کرم ستوج تم نام والے ہوئے پھر پنج درجہ عم داسم کی توفیق سے ایک ایک کی تین قسم ہو تین کرم سب مار کر توفیق میں تمام عالم باخ غافر پیدا ہے اسکو میں نے دکھائی ہے واسطے کہا ایسے جو نہیں کہا وہ کتب بھی دوسری ایک سے دیکھنے کے لائق ہے۔

سواہر: کرمیکوٹا شمع مکتیا: سرپا: سکا چڑیا: ॥ پشاور شمع-  
 گا شمع جہنم نیا تا مسمیٰ گیتی: ॥ ۴۲ ॥ ہستین شمع توراں گا شمع ہراہو  
 چھا شمع ہریتا: ॥ سینہ انیا دھارہا شمع مہما تا مسمیٰ گیتی: ॥ ۴۳ ॥  
 ॥ چارواں شمع پوراں شمع پوراں شمع ہراں مہما: ॥ ۴۴ ॥ سینہ شمع پشاور  
 شمع تا مسمیٰ پوراں گیتی: ॥ ۴۵ ॥ ہستین شمع تا مسمیٰ پوراں گیتی: ॥ ۴۶ ॥  
 ۥ ۴۷ ॥ شمع پشاور شمع تا مسمیٰ پوراں گیتی: ॥ ۴۸ ॥ شمع  
 تا مسمیٰ پوراں گیتی: ॥ ۴۹ ॥ شمع تا مسمیٰ پوراں گیتی: ॥ ۵۰ ॥

۴۲- درخت دھوئے بڑے کیڑے دھوئے دسانپ دچار پایہ د کچھو اوہرن این سب  
 کنون کو متوگن کی بیج گت جانتا۔

۴۳- ہاتھی د گھوڑا سو د پتھر سنگھ باگھ سورن سب گنوں کو متوگن کی مدھیم گت جانتا۔  
 ۴۴- بٹ پرند کیٹ سے دھوم کر نیوے آدی کشش پشاور این گنوں کو متوگن کی اتم  
 گت جانتا۔

۴۵- ہر اتیہ کشتری ہر قوم عورت مین پیدا ہوئی اولاد دھکا بیان شونین دھیکا مین  
 اور بھل نیلے لاکھی سے پر بار کر نیوے اور مل نیلے پہلوان لوگ اور بٹ مین سبھا کا بنائیاں  
 اور سبھ سے زندگی سب کر نیوے والا اور قتار بازی کر نیوے والا اور شراب پینے والا این سب گنوں کو  
 رجونگن کی بیج گت جانتا۔

۴۶- راجہ د کشتری دراجہ کا پر دست د بٹ علمی کو بفضل جانتے والا تو تکلیف کر نیوے  
 این سب گنوں کو رجونگن کی مدھیم گت جانتا۔



येनास्मिन्कर्मणालोकेस्थातिविच्छातिषुष्कलाम् ॥ नचशो-  
 चत्यसम्पत्तौतद्विज्ञेयतुराजसं ॥ ३६ ॥ यत्सर्वेशोऽन्तित्तातुंयन्  
 लब्धतिवाचरन् ॥ येनतुष्ट्यातिचात्मास्यतत्सत्त्वगुरालक्षणां  
 ॥ ३७ ॥ तमसंलक्षणांकाशोऽसत्त्वर्थउच्यते ॥ सत्त्वस्यलक्ष-  
 णांधमःश्रेष्ठमेवांयथोत्तरम् ॥ ३८ ॥ येनयांस्तुगुरोनैवांसंसा-  
 रान्यतियद्यते ॥ तान्समासेनब्रह्माभिसर्वस्यास्ययथाक्रमम्  
 ॥ ३९ ॥ देवत्वंसात्विकायान्तिमनुष्यात्वंचराजसाः ॥ तियत्  
 तामसानित्यमित्येवान्निविधागतिः ॥ ४० ॥ त्रिविधात्रिविधै-  
 वातुविज्ञेयागौलिगीगतिः ॥ अधमासम्यमाध्याचकमाव-  
 द्याविशेषतः ॥ ४१ ॥

۱- جس کرم کر کے اس لوگ میں بڑی شہرت ہوئیگی خواہش کرتا ہے اور بے دہی میں  
 رنج مین کرتا ہے اس کرم کو جس گن لکشن جائین۔  
 ۲- جو کرم مہرب آتم کے وسیلے سے دیدار حق کو جاننے کی خواہش کرتا ہو اور جس کرم  
 کو کرتے ہوئے بہتر مہین ہوتی اور جس کرم کر کے پریش کی آتما خوش اور تربت ہوتی ہو  
 اس کرم کو ست گن لکشن جائین۔  
 ۳- تو گن کا لکشن کام لینے شہوت ہے جو گن کا لکشن ارتقہ ہو تو گن کا لکشن دھرم  
 میں پھلا پھلا افضل ہے۔  
 ۴- جس گن کے وسیلے سے جو حسن گت کو پاتا ہے اس تمام جگت کی گت کو بہتر مہین بیان کر دے گا۔  
 ۵- ستو گن دیو بھاد کو اور جو گن دے منشیہ بھاد کو اور تو گن دے چار پاہ و پرند وغیرہ کے بھاد  
 کو پر اپت ہوتے ہیں یہ تین طرح کی گت ہے۔  
 ۶- ستو گن وغیرہ تین گن دے وسیلے سے تین قسم کی گت جو بیان کی وہ دہش کال وغیرہ  
 کی تفریق سے اور سب صورت عالم تفریق عمل سے اہم بدھم و اہم قسم کر کے بھرتی قسم کی گت جاننا

۳۰ ॥ انا نینون گنوں کا جیتنے فضل واسطہ دانی ہے اسکو تم کہیں گے۔  
 ۳۱ ॥ دید کا پڑھنا شب گیارہ کی اندریوں کو کا جیتنا دھرم کرنا لینے دیکھ موفت  
 عمل آتم جیتنا یہ سب تو گن کے لکشن ہیں۔  
 ۳۲ ۥ شروع کام میں عینت بے صبری بڑے کام کو قبول کرنا ہمیشہ ویشیوں کی سیل  
 یہ سب رجو گن کے لکشن ہیں۔  
 ۳۳ ۥ تو مجھ خواب بے صبری کھو رہے نا شک پن آچار پھل نکرنا مالگنا پراویہ  
 گنوں کے لکشن ہیں۔  
 ۳۴ ۥ نینون زمانہ ماضی مستقبل و حال میں رہنے والے نینون گنوں کا خلاصہ سلسلہ  
 یہ گن لکشن جاننے کے لائق ہے۔  
 ۳۵ ۥ آؤ می جو کرم کر کے اور کرنا ہوا اور کرنے کی خواہش کرنا ہوا شرم گین ہو جس  
 کرم کو سنیڈ لوگ تاس گن لکشن جاتین۔

سत्त्व راجस्त مہوبہ بڑی نیندیا دا تھنوں گوراناں ॥ مہوبہ بڑی مانتھیا-  
 توں مہوبہ بڑی نیندیا دا تھنوں گوراناں ॥ ۲۵ ॥ یوہ دے دھاں گوراناں دے دھاں کاتھ  
 نا تیر چیتے ॥ سत्त्व دا تھنوں گوراناں پراپت کروتی شری ریشاں ॥ ۲۶ ॥ س-  
 تھنوں جانی تھو ॥ جانی راج گہہ بڑی راج ॥ سत्त्व دا تھنوں گوراناں پراپت کروتی  
 مہوبہ بڑی نیندیا دا تھنوں گوراناں ॥ ۲۷ ॥ تھنوں جانی تھو ॥ جانی راج گہہ  
 بڑی راج ॥ سत्त्व دا تھنوں گوراناں پراپت کروتی شری ریشاں ॥ ۲۸ ॥ یوہ دے  
 دھاں گوراناں دے دھاں کاتھ نا تیر چیتے ॥ سत्त्व دا تھنوں گوراناں پراپت کروتی  
 شری ریشاں ॥ ۲۹ ॥ یوہ دے دھاں گوراناں دے دھاں کاتھ نا تیر چیتے ॥ سत्त्व  
 دا تھنوں گوراناں پراپت کروتی شری ریشاں ॥ ۳۰ ॥ یوہ دے دھاں گوراناں دے  
 دھاں کاتھ نا تیر چیتے ॥ سत्त्व دا تھنوں گوراناں پراپت کروتی شری ریشاں ॥ ۳۱ ॥  
 یوہ دے دھاں گوراناں دے دھاں کاتھ نا تیر چیتے ॥ سत्त्व دا تھنوں گوراناں پراپت  
 کروتی شری ریشاں ॥ ۳۲ ॥ یوہ دے دھاں گوراناں دے دھاں کاتھ نا تیر چیتے ॥  
 سत्त्व دا تھنوں گوراناں پراپت کروتی شری ریشاں ॥ ۳۳ ॥

۲۴ - سترج تم بینڈن اتماست تتو کے گن مین ان گنوں سے میٹ ہو کر سب چیز  
 مین دان قائم ہے -

۲۵ - تینوں گنوں مین سے جو گن جس بن مین زیادہ اس بدن کو زیادہ اسی  
 گن والا دھن کرتا ہے -

۲۶ - ستر گنیاں سے اتم الگیاں، راج یعنی مرغوب چیز کی خواہش اور ودیش یعنی چیز  
 نامرغوب مین غصہ یہ دونوں راج مین ان تینوں گنوں سے تمام عالم میٹ ہو -

۲۷ - جب اتما کو پریت سے مشمول سانت و سدرم روئے کچھ تب سب گن کو جانے -

۲۸ - جب اتما کو دکھ سے مشمول دنا خوش دیکھ تب راج گن جانے دہ راج گن سب  
 ارباب قابلوں کو مشکل سے دور کرنے کے لائق ہے -

۲۹ - جب اتما کو مودہ سے مشمول بیشے روپ و پوشیدہ دیکھ تب تھو گن بجا دہ تھو گن  
 دلیل کے لائق مین ہے اور جانتے کے لائق مین ہے -

سوی: توبہ یا سوسو دکانی وانی وانی سینگ جان ॥ واپت کلمہ  
 یو: ۵ مہیتا وے وے مہیتا ۥ ۱۵ ॥ تہی دہم پشیت ست سہا  
 پंचात द्विती सह ॥ یا مہیا پامی تیس دت: پتھہ چ سوسو  
 سہ ॥ ۱۶ ॥ یا چا چر تہی دہم سہا پشیت: ۵ دہم سہا پشیت: ॥ تہی  
 چا تہی مہیت: سوسو سوسو پشیت ॥ ۱۷ ॥ یا تہی پشیت: ۵ دہم سہ  
 و تہی دہم سہا پشیت: ॥ تہی مہیت: سہا تہی تہی مہیت: پامی تیس  
 ۥ ۱۸ ॥ یا مہیتا تہی تہی: پامی سہا تہی تہی تہی تہی تہی تہی  
 و پंचभुतानि पुनरभ्येति भागशः ॥ ۱۹ ॥ یا تہی تہی تہی تہی  
 مہیت: تہی تہی تہی تہی ॥ دہم تہی: ۵ دہم تہی تہی تہی تہی تہی  
 ॥ ۲۰ ॥

۱۸۔ لنگ نام بدن میں قائم جو پشیت ہاں کی صحت سے پیدا ہو پاؤں کو بھوک کر پاؤں  
 سے علیحدہ ہو کر پشیت پر اکرم دالے مان اور پشیتا دونوں کی پناہ لیتا ہے۔  
 ۱۹۔ سستی سے علیحدہ مان اور پشیتا یہ دونوں ساتھ ہو کر جس دھوم واو دھوم سے تہی  
 جو اس لنگ پر لوک میں سکھ سکھ کو پشیتا اس دھوم کو اور بھوک سے بچے ہوئے پاؤں کو  
 بچاتے ہیں۔

۲۰۔ جب پشیت دھوم کو کرتا ہے اور تہی پاؤں کو کرتا ہے تب پر لوک میں سکھ کو پشیتا  
 ۲۱۔ اور جب بہت پشیت کرتا ہے اور تہی دھوم کرتا ہے تب پر لوک میں سکھ پناہ لیتا ہے۔  
 ۲۲۔ ایم راج کی سہا کو بھگت کر پشیت علیحدہ ہو کر پشیتا تہی لنگ نام بدن پیدا ہوا  
 اسی میں پھر حصہ دار داخل ہوتا ہے۔  
 ۲۳۔ اپنے چیت سے اس جیو کی ریگت دیکھ کر ہر وقت دل کو قائم کرے۔

जीवसंज्ञोऽन्तरात्माऽन्यः सहजः सर्वदेहिनाम् ॥ येन वेद्यते  
सर्वसुखं दुःखं च जन्मसु ॥ १३ ॥ तावुभीभूतसंघत्तो महान्नेत्रज  
स्रवच ॥ उच्चावचेषु भूतेषु स्थितं तं व्याप्य तिष्ठतः ॥ १४ ॥ असंख्या  
मूर्त्यस्तस्य निष्ठतन्निशरीरतः ॥ उच्चावचानिभूतानि सततं चे-  
ष्टयन्निधाः ॥ १५ ॥ पंचभ्यसं वमात्राभ्यः प्रेत्य दुष्कृतिनां चराणां  
॥ शरीरं यातनार्थं यमन्यदुत्पद्यते ध्रुवम् ॥ १६ ॥ तेनानुभूयता-  
यामीः शरीरं सोहयातनाः ॥ तास्वैव भूतमात्रासु प्रलीयन्ते वि-  
भागशः ॥ १७ ॥

۱۳- حجاب باب قال کے ساتھ پیدا ہوا انتر آتما جو نام والا جس کو صفت کہتی ہیں علیہ  
ہے جس سے جنم میں تمام سکھ دکھ کو کثیر گنبدان بھوکرتا ہے یعنی سکھ و دکھ کو بھوک کر تباہی  
۱۴- صفت تہو کثیر گنبدان دو دنوں پر مقوی وغیرہ پانچ ما بھو توں کر کے اویچ فنیج  
یون میں پر ماتما کو پکڑ کر رہتے ہیں۔

۱۵- پر ماتما کے بدن سے اویچ دین یون میں قائم بدن کو ہمیشہ کرم متحرک کر دیتا ہے  
بے لغو اور موت لینے بیو لگتے ہیں۔

۱۶- پر لوک میں پابہیوں کے دکھ بھوک کر ٹپکے لیتے پر مقوی وغیرہ پانچ عناصر کے  
حصوں سے ایک دوسرا بدن لنگ نام جدا ہوتا ہے۔

۱۷- اس برکت یوم راج کی صفت سزا کو ان بھوک کر کے لینے دکھ بھوک کر وہ بدن ہی  
میں خود ہو جاتا ہے (یعنی پر مقوی وغیرہ پانچ عناصر سے جو حصہ نکلا وہ پانچ عناصر  
میں مل جاتا ہے۔

अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः ॥ परदारोपसेवा च शा-  
रीरं त्रिविधं स्मृतम् ॥ ७ ॥ मानसं मनसैवायमुपभुंक्तं शुभाशुभम्  
॥ वाचा वाचाकृतं कर्म कार्येनैव च कायिकम् ॥ ८ ॥ शरीरं जैक  
नर्तनैर्येयाति स्थावरतानरः ॥ वाचिकैः पक्षि गतां मानसैरत्य-  
जातिताम् ॥ ९ ॥ वाग्दराडोऽयमनोदराडः काश्यदराडस्तथैव च  
॥ यस्येते निहिता बुद्धौ त्रिदराडीति स उच्यते ॥ १० ॥ त्रिदराडमे-  
तन्निक्षिप्य सर्वभूतेषु मानवः ॥ कामक्रोधौतु संयम्य ततः सिद्धिं  
नियच्छति ॥ ११ ॥ यो स्यात्मानः कारयिता तं सेवज्ञं प्रचक्षते ॥ यः  
करोति तु कर्माणि स भूतात्मा च्यते बुधैः ॥ १२ ॥

۷۔ بدن وی ہوتی چیز کو لینا بدھ کے خلاف حیوان کا رنا و شکر کی عورت ہے  
جام کرنا یہ تین قسم کا کرم بدن کا ہے۔

۸۔ بدن پیدا ہونے سے عمل نیا دیکھنے کے نتیجے کو صاحب بدن آدمی سلسلہ وار دیکھتا رہتا ہے۔  
وہ بدن بھوکے گزرتا ہے۔

۹۔ بدن و کفّار و دل سے پیدا ہو کر م سے ساکن یعنی وقت وغیرہ و پھر و چار پائید  
و چاندال وغیرہ کا جنم مانا ہے۔

۱۔ جکے گھناروں میں سب سے زیادہ نامور ہے گھنارہ خیالی و مصنوعی تجارت کو ترک کر کے عین دنی توڑی کھانا ہے۔

۱۱۔ تمام جانداروں میں ان تینوں ڈنڈوں (یعنی دل، جین، وکھٹنا کے ڈنڈوں) قائم کر کے کام لے کر دو دو کو ایک کر سیکھ کر پانا ہے۔

۱۲۔ بدن کو گرم مین بخول کر انبو الاکثر کہیہ کہلانا ہے اور جو گرم کرنا ہے وہ بخون ہوتا ہے جسے بدن کہلانا ہے یہ بات بیڑت لوگ کہتے ہیں۔

आतुर्वशस्यस्तत्त्वोऽयमुक्तो धर्मस्त्वयानघ ॥ कर्मणां फलनि-  
र्दिष्टं शंसनस्तत्त्वतः परम् ॥ १ ॥ सताजुवाच धर्मात्मा महर्षिणा  
नवोभूतः ॥ अस्य सर्वस्य शृणुत कर्मयोगस्य निर्णायकम् ॥ २ ॥ शु-  
भाशुभफलं कर्ममनोवाग्देहसंभवम् ॥ कर्मजागतयो नृणां सु-  
त्तमाधसमध्यमाः ॥ तस्येह त्रिविधस्यापि त्र्यधिविधानस्य देहिनः  
॥ दशालसरायुक्तस्य मनोविद्यात्त्ववर्तकम् ॥ ४ ॥ परद्वयै व्यभि-  
ध्यानं मनसानिष्ठचिंतनम् ॥ वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म-  
मानसम् ॥ ५ ॥ पारुष्यमनृतं चैव यश्चैव चापि सर्वशः ॥ असं-  
ख्यप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ ६ ॥

۱۔ سب ریش بھوک جی سے کہتے ہیں کہ اسے پاپ رہتا بھوک جی آپ نے بڑے موافق  
چار و درون کے دھرم کو کہا اب ہم سمجھوں سے عمل نیک و بد کے نتیجہ کو بدھ کو  
موافق کہتے۔

۲۔ دھرم اتما میں جی کے بیٹے بھوک جی ان مرتبوں سے بولے کہ اسے ریش لوگوں سے  
کرم لوگ کے لئے کوہم سے سنو۔

۳۔ دل و بدن و گفتار سے جو عمل نیک و بد پیدا ہوتا ہے اس سے کوئی آدمی بدھ کوہم  
نہیں کہتا ہے۔

۴۔ اس کے جو دیش لکھن کہتے ہیں اس سے لا شمول دی ارباب غالب کا دل جو بدن و گفتار  
دل سے اتما دھرم اور کرم میں مصروف کرینا کہ اس کو جانو۔

۵۔ دوسری دولت بین و عیان دل سے بد خیالی ناشکستین بیتین قسم کے مانس  
کرم میں لینے دل سے پیدا ہونے والے ہیں۔

۶۔ نام غروب گفتار و درون و شمع کوئی و بدھ سے کا عیب کنا بے مطلب بولنا یہ چار قسم کا پاپ  
کرم ہے بچے گفتار سے پیدا ہوتا ہے۔

यथा महाह्रदं प्राप्य सिमं लोचं विनश्यति ॥ तथा दुश्चरितं सर्वदे-  
 वे निवृत्तिमश्नति ॥ २६३ ॥ अथौयं जूषि चान्यानि सामानि वि-  
 विधानि च ॥ स यजेयस्त्रिचंदेदीयोर्वेदेन संवेदवित् ॥ २६४ ॥ आ-  
 र्यां यत्न्यसंनक्षत्रयीयस्मिन्नतिष्ठिता ॥ स गृह्योऽन्यस्त्रिचंदे-  
 दीयत्संवेदसवेदवित् ॥ २६५ ॥

### इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहिताया मेकादशोऽध्यायः ११

۲۶۳ - جب طح اٹھاہ جل میں مٹی کا ڈھیل ڈالو تو جل غائب ہو جاتا ہو اس طرح سب  
 پاپ تینوں دید کے پڑھنے سے دھوب جاتے ہیں -  
 ۲۶۴ - اگر یجر سام ان تینوں دیدوں کے منتر سے برہمن ہی تین قسم کا دید جانا چاہے  
 جو اسکو جانتا ہی وہی دید کا جاننے والا ہے -  
 ۲۶۵ - سب دیدوں کے آدھین اکثر والا سب دید کا ساما اور سب دیدوں کو اپنی  
 درمیان میں قائم کر نیوالا جو پر نو ہے اسکو جانے وہ دید کا جاننے والا ہے -

شری من جی کا دھرم شاہی ترگ جی کی سنگھت کا

گیارھواں ادھیاسماپت ہوا -

ن



अशयेवात्रिरभ्यस्यप्रयतोवेदसंहिताम् ॥ सुच्यतेपातकैः स-  
र्वैः पराकैः शोधितस्त्रिभिः ॥ २५८ ॥ अहन्त्यपचस्युक्तस्त्रि-  
होऽभ्युपयनयः ॥ सुच्यतेपातकैः सर्वैस्त्रिजपित्वाऽघमर्षरां  
॥ २५९ ॥ यथाश्वमेधः क्रतुरादसर्वपायापनोदनः ॥ तथाऽघम-  
र्षरांस्तुतंसर्वपायापनोदनम् ॥ २६० ॥ हत्वा लोकानपीमांस्त्री  
नशनन्त्रपियतस्ततः ॥ अश्वमेधस्य त्विप्रानेनः प्राप्नोति किंच-  
न ॥ २६१ ॥ अश्वमेधसंहितां त्रिरभ्यस्य यजुषां वा समाहितः ॥ साक्षा-  
वासरहस्यानां सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ २६२ ॥

۲۵۸- جنگل میں بیفکر ہو کر وید سنگھٹا کو تین دفعہ ابھیا س کرے اور تین دفعہ پرکاش  
کرے تو سب پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۲۵۹- اندرون پر غالب ہو کر ہر روز وقت صبح دوپہر دشاہستان کر کے جل میں تین  
دفعہ تیج سینٹیم اس لکھ کر تین سوکٹ کو چپ کرے تو سب پاپوں سے چھوٹتا ہے۔

۲۶۰- جسطرح سب لکھوں کا ارجاسو میدہم لکھیں پاپوں کو دور کرتا ہے اسی طرح لکھ  
مرکھن سوکٹ سب پاپوں کو دور کرتا ہے۔

۲۶۱- تینوں لوگ کو تین کر کے اور جہان تہاں بھوجن کر کے رگ وید کو دھارن کرے  
تو کسی پاپ کو نہیں پاتا ہے۔

۲۶۲- بیفکر ہو کر رگ وید یج وید سام وید کی سنگھٹا میں سے ایک ایک لکھتا کو تین دفعہ  
مزا دلن کر کے سب پاپوں سے چھوٹتا ہے۔

سوامی روتھنہ ناما سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥  
 مری سوامی ॥ ۲۵۳ ॥ سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥  
 سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥  
 ۲۵۴ ॥ سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥  
 ۲۵۵ ॥ سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥  
 ۲۵۶ ॥ سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥ سوامی سوامی ॥

۲۵۴۔ سووم رورا وغیرہ چارچا ارجمت وغیرہ تین رچا اٹھون بیس ایک ایک کو ایک  
 ایک مہینہ تک مڈی وغیرہ میں انسان کر کے چپ کرے تو بہت پاپوں سے بچتا ہے۔  
 ۲۵۵۔ اندر سندر وغیرہ سات رچا کو چھ مہینہ تک چپ کرے تو سب پاپوں سے بچتا ہے۔  
 جل میں ہوتا اور تیشا وغیرہ کرنا والا ایک مہینہ تک پھلکھ مانگ کر بھوجن کرے۔  
 ۲۵۶۔ دیو کر تیشا وغیرہ ساکل ہون تیرتے ایک سال تک گھی کا ہون کرے خواہ تہ اندر  
 اس رچا کو ایک سال تک چپ کرے تو بہت کشتی و تیشہ کے مہا پاکت و در ہون۔  
 ۲۵۷۔ برقم تیشا وغیرہ پاپ میں سے کسی ایک پاپ سے مشمول ہونا بیکھ کر گتو کے پیچھے  
 پیچھے چلے اور پھلکھ مانگ کر بھوجن کرے اور اندر یوں پر غالب ہو کر ایک سال تک ہر روز  
 پادمانی رچا کو چپ کرے تو پاک ہوتا ہے۔

कौत्सं ज्ञापयत्येतद्वासिष्ठं प्रतीत्युचम् ॥ माहित्रं युज्येत  
 अमुरायोऽपि विशुध्यति ॥ २४६ ॥ सकृज्ज्ञास्यवासीयं शि-  
 यसंकल्पमेव च ॥ अपहत्य सुवर्गान् सुसारां हवति निर्मलः ॥  
 २४७ ॥ हविष्यन्तीयमभ्यस्य न तमं ह इतीति च ॥ जपित्वा यौ-  
 क्यं हतं मुच्यते गुरुतल्पगः ॥ २४८ ॥ एनसां स्थूलसूक्ष्माणां  
 चिकीर्षन् जनोदनम् ॥ अवेत्युचं जपेदब्जं यत्किंचेद गतीति  
 वा ॥ २४९ ॥ प्रतिगृह्या प्रतिग्राह्यं भुक्त्वा चान्नं विगर्हितम् ॥  
 जपं स्तरत्समन्वीयं पूयते मानवश्चाहात ॥ २५० ॥

۲۴۹۔ کونش ریش نے جو شوکت دیکھا اسی نام اور پشت ریش نے جو سوکت دیکھا اسی نام  
 واپسے سوکت و تہتر ہندہ دتی ایسا نذر م پینن رچا ہفون کو ہر روز ایک مہینہ تک  
 سولہ دفعہ چپ کرے تو شراب پینے والا پاک ہوتا ہے۔  
 ۲۵۰۔ ایک مہینہ تک ہر روز ایک دفعہ اسی نام جی کو اور شیو سنگھ کو جو کہ اپنی شانام سے  
 مشہور ہو چپ کرے تو برہمن کا سونا جو اینو الا پاک ہوتا ہے۔  
 ۲۵۱۔ پہلے تو غیرہ اینن رچا اوریت سنگ ہووڑ سنگ آٹھ رچا اور ستر شہر کھا جو برہمن  
 نام اپنی شان سے مشہور ہو ہفون کو سولہ دفعہ ہر روز ایک مہینہ تک چپ کرے تو داروہ کے  
 ناسخہ جمار کرنے کے پاپ سے چھوٹتا ہے۔  
 ۲۵۲۔ اوت ٹیلو برہمن پیر چا ٹیکنیم ٹرن دیو جل پیر چا ہفون کو کبیاں تک ایک دفعہ  
 چپ کرے تو چھوٹے بڑے پاپوں کو دور کرتا ہے۔  
 ۲۵۳۔ نہ لینے کے لائق چیز کو لیکر اور نندا کے لائق ان کو بھوجن کر کے تہرت سم غیرہ  
 چار چاکو متن دن چپ کرے۔

इत्येतत्तपसो देवामहाभार्यं प्रचक्षते ॥ सर्वस्यास्य प्रपश्यन्त-  
स्तपसः पुरायमुत्तमम् ॥ २४४ ॥ वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्त्या महा-  
ततः क्रियाक्षमा ॥ नाशयत्यासु पापानि महापातकजान्यपि  
॥ २४५ ॥ यथैधस्तेजसा वह्निः प्राप्तं निर्दहति स रात ॥ तथा -  
ज्ञानाग्निना पापं सर्वदहति वेदवित ॥ २४६ ॥ इत्येतदेन सा सुक्तं  
प्रायश्चित्तं यथाविधि ॥ अत ऊर्ध्वं रहस्यानां प्रायश्चित्तं निबोध  
त ॥ २४७ ॥ सव्याहति प्रभावकाः प्राणायामास्तु षोडश ॥ अथ  
धूराहरां मासास्तु नव्यहरहः कृताः ॥ २४८ ॥

۴۴۴ - تمام جانداروں کو تپ ہی سے درجہ جہم ہوتا ہے بہت کو دیکھتے ہوئے دینو تا لوگ  
تپ کو سب کی جڑ جان کر تپ کا مہاتم کہتے ہیں -

۴۴۵ - جیسا کہ یاد اور طاقت نہ کہ برہمنہ مرد کا پاٹھ کر نیو لے جلدی مہا پاکو بھی فنا کرتے ہیں  
۴۴۶ - جس طرح تیز آگ کا ٹھک کو جھٹ پٹ جلاتی ہے اسی طرح دید کو جانتے والا لیان روکے  
جہاں سے تمام پاپوں کو جلاتا ہے -

۴۴۷ - ظاہری پاپوں سے یہ پریشیت کو کہا اسکے بعد پوشیدہ پاپوں کا پریشیت کہتے ہیں  
۴۴۸ - پرلود سات بیابرت سے ستول کا پتیری کے وسیلے سے ہر روز سولہ پرلایا م ایک  
عینہ مک کرے تو اسقاط حمل کے پاپوں کو دور کرنا ہے - خر -

خر پر پریشیت برہمن کستری دلشہ کا ہے استری دشو در کو مٹر کا ادھکار مین ہے -

यदुस्तरं यदुरायं यदुर्गं यच्चतुष्करम् ॥ सर्वतु तयसासाध्यंतयो हि  
 दुरतिक्रमम् ॥ २३८ ॥ महापातकिनश्चैव शेषाश्चाकार्यकारि-  
 राः ॥ तयसैव सुतयै न सुच्यन्ते किल्विपाततः ॥ २३९ ॥ कीटाश्चा-  
 हि पतंगाश्च पशवश्च वयांसि च ॥ स्थावराणि च क्षुतानि च विपा-  
 तितपो बलात् ॥ २४० ॥ यत्किंचिदेनः कुर्वन्ति मनोवाङ्मूर्ति-  
 भिर्जनाः ॥ तत्सर्वं निर्दहं त्याज्यं तयसैव तु पोधनाः ॥ २४१ ॥ तयसै-  
 व विशुद्धस्य ब्राह्मणस्य दिवौकसः ॥ इत्याश्च प्रतिगृह्णन्ति का-  
 मान्सं वर्धयन्ति च ॥ २४२ ॥ प्रजापतिरिदं शास्त्रं तयसैवाव्यजत-  
 म् ॥ तथैव वेदान् वयस्यस्तयसा प्रतिपेदिरे ॥ २४३ ॥

۴۴۸- جو چیز دکھ سے ترنے کے لائق اور ملنے کے لائق اور جانوروں کے لائق وہ تپ ہی ہو سکتی ہے جو تپ سے  
 تو اس کے ہونے میں تپ ہی مرمت سے تپ کا کھنڈ ٹکڑا ہے۔

۴۴۹- ایک تپ کی وجہ سے دیگر جتنے پاپ کر نیوالے میں وہ تپ سے پاک ہوتے ہیں۔

۴۵۰- بڑے بڑے سائب و پلنگے چار پایہ و پرند و ساکن جاندار یہ تپ کے زور سے  
 مین جاتے ہیں۔

۴۵۱- دل و گفتار و بدن جو کچھ پاپ ہوتا ہے وہ سب تپ ہی سے خالی ہوتا ہے۔

۴۵۲- یکہ میں تپ سے پاک برہمن کی دی ہوئی ہر شے کو دیا جاتا ہے جن اور ان کے دشمن  
 چیزوں کو ترقی دیتے ہیں۔

۴۵۳- پر جاہت ہر نیہ کر بھولے اس شاستر کو تپ ہی سے پیدا کیا اور سکورش کو گونج  
 تپ ہی سے پایا۔

अज्ञानाद्यदिवाज्ञानात्कृत्याकर्मविगर्हितम् ॥ तस्माद्विमुक्ति  
मन्विच्छन्दितीयं न सभाचरेत् ॥ २३२ ॥ यस्मिन्कर्मस्यस्य कृते  
मनसः स्यादलाघवम् ॥ तस्मिंस्तावत्तपः कुर्याद्यावत्तुष्टिक-  
रमावेत् ॥ २३३ ॥ तपोमूलमिदं सर्वं देवमानुषिकं सुखम् ॥  
तपोमध्यं बुधैः प्रोक्तं तपोऽन्तवेददर्शिभिः ॥ २३४ ॥ ब्राह्मणा  
स्य तपोज्ञानं तपः क्षत्रस्य रक्षणा ॥ वैश्यस्य तु तपो वार्त्ता तप  
शूद्रस्य सेवनम् ॥ २३५ ॥ ऋषयः संयतात्मानः फलमूलानि  
लाशनाः ॥ तपसैव प्रपश्यन्ति त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ २३६ ॥  
श्रीयघ्रान्यगदो विद्यादेवी च विविधा स्थितिः ॥ तपसैव प्रसि-  
ध्यन्ति तपस्तेषां हि साधनम् ॥ २३७ ॥

۲۳۲- دانسته یا نادانسته بکار کرم کے اس کرم سے چھوٹنے کی خواہش کرتا ہو اور دوسری  
بڑا کرم ملے اور اگر دوسری دفعہ بڑا کرم کرے تو دو چہرہ پر سخت کرے۔

۲۳۳- جس پر سختی کے کرنے سے پاپ کریندے گئے وگرنہ سنتوش ہو تو اس پر سختی  
کو چھو کر جب تک چیت کو سنتوش ہو تب تک پر سختی کرتا رہے۔

۲۳۴- دیوتا آدمی ان دونوں کے سکھ کا سولہ حصہ اور انت میں تپ ہی اس بات  
کو وید کے دیکھنے والوں نے کہا ہے۔

۲۳۵- برہمن کا تپ بڑھ گیا ہے کشتری کا تپ حفاظت عالم ہے ویشیہ کا تپ زمین  
وغیرہ ہے شूद्र کا بیوا ہے۔

۲۳۶- ریش لوگ اندریوں پر غالب ہو کر پھل قبول ہوا انھوں میں سے کسی ایک کو جو  
کرتے ہوئے ساکن و متحرک شیئوں کو کو تپ ہی سے دیکھتے ہیں۔

۲۳۷- او دیات و تندرستی و دنیا لینے برہمن کرم اوپ ویدار تھ گیاں وید کا پڑھنا اور  
الزاع اقسام کا سورگ میں پاس یہ سب تپ ہی سے سڑھ سورے میں۔

स्थापनेनानुत्तापेनतपसाऽध्यायनेनच। पापकान्मुच्यतेपापात्त-  
थादानेनचापदि॥ २२७॥ यथायथानरोधर्मस्वयंकत्वानुभाष-  
ते॥ तथातथात्वचेवाहितेनार्धर्मासुच्यते॥ २२८॥ यथाय-  
थामनस्तस्यदुष्कृतंकर्मगर्हेति॥ तथातथाशरीरतत्तेनार्धर्मा  
सुच्यते॥ २२९॥ कत्वापापं हि सन्तप्य तस्मात्पापात्सुच्यते॥  
नैव कुर्याद्युनरिति निवृत्त्यापूयतेतुसः॥ २३०॥ एवं संचिंत्य मन-  
साभेत्यकर्मफलौद्यम्॥ मनोवाङ्मूर्तिभिर्नित्यं शुभं कर्मस-  
माचरेत्॥ २३१॥

۲۲۷- کتابچہ کتابت کرنا و بیڑ ہونا انھوں کے وسیلہ سے پاپ کرنیوالا پاپ سے چھوٹتا ہے  
اور وقت مصیبت میں دان کر کے پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۲۲۸- جیسے کچل سے سانپ چھوٹتا ہے اسی طرح ظاہر یا لون کو جیسے جیسے کتاب ہے  
اسی طرح آدمی پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۲۲۹- پاپ کرنیوالے آدمی کا دل جیسے جیسے بُرے کام کی بُرائی کرتا رہے ویسے دُور  
اسکا بدن اس ادھرم سے چھوٹتا ہے۔

۲۳۰- پاپ کر کے کتابت کرے تو اس پاپ سے چھوٹتا ہے مگر پاپ نکر دگا اسی  
شرط کے وہ پانی پاک ہوتا ہے۔

۲۳۱- اسی طرح دل سے پر لوگ میں طلوع نیتجہ اعمال کو سوچ کر دل کا مقدار بدن سے ہمیشہ ہی  
عمل نیک کرے۔

۲۳۲- لیکن جو پاپ ظاہر ہو اسکو کتنا پوشیدہ پاپوں کو نہ کہنا ایک پراچا پتیشہ کی جگہ پر ایک گنوہان کرنا ایک مہینہ میں دھلا  
گوہ ہونی بارہ سال میں ۴۰ گنوہ ہوتی ہیں۔





एतमेवविधिंकृतत्तमाचरेद्यवमध्यमे ॥ सुक्तयक्षादिनियतश्च-  
 रंश्चान्नायरां व्रतम् ॥ २१७ ॥ अथावद्यौसमशनीयातिराडान्म-  
 ध्यन्दिनेस्थिते ॥ नियतान्माहविद्याशीयतिचान्नायरांचरन् ॥  
 २१८ ॥ चतुरः प्रातरशनीयातिराडान्विप्रः समाहितः ॥ चतुरोऽ-  
 स्तमितेसूर्यशिशुचान्नायरां स्मृतम् ॥ २१९ ॥ यथाकथंचित्ति-  
 राडानांतिश्रोऽशीतिः समाहितः ॥ यात्रेनाशनहविष्यस्यचन्द्र-  
 स्थेतिसलोकताम् ॥ २२० ॥ एतद्ब्रह्मस्तथादित्यावसवश्चाचरन्व्रत-  
 म् ॥ सर्वाकुशलमौसायमहतश्चमहर्षिभिः ॥ २२१ ॥ महाव्या-  
 हतिभिर्होमः कर्तव्यः स्वयमन्यहम् ॥ अहिंसांसत्यमक्रोधमा-  
 जंबचसमाचरेत् ॥ २२२ ॥

۲۱۶- اسی کو شکل یکیش میں متروک کرے تو جو چھبہ چاندرا میں کہلاتا ہے جیسے جو درمیان  
 میں ہوتا ہوتا ہے اور شمس وغیرہ بیتلا ہوتا ہے۔

۲۱۷- چاندرا میں کو کرتا ہوا اندریوں کو قابو میں کئے ہوئے ہمیشہ کے آٹھ لقمہ وقت  
 ایک مہینہ تک بھوجن کرے جس یکیش سے چاہے اس یکیش سے متروک کرے۔

۲۱۹- سش چاندرا میں کرتا ہوا بیفکر ہو کر چار لقمہ صبح اور چار لقمہ رات کو بھوجن کرے۔

۲۲۰- کسی طرح سے بیفکر ہو کر ایک مہینہ میں ہمیشہ کے ۲۴۰ لقمہ بھوجن کرے تو چند لوگ  
 میں جاوے۔

۲۲۱- سب پاؤں کے درہونے کیواسطے روز سو بوج پر تقویٰ ہو اور ٹہرے بڑے  
 رشیوں نے اس نیرت کو کیا ہے۔

۲۲۲- آپ ہر روز مایا بہارت سے ہون کرے جانداروں کو قتل نہ کرنا سچ بولنا غصہ نہ کرنا  
 نرم مزاج ہونا ان سب کو اختیار کرے۔

सकैकं प्रासमशनीयात्प्राप्तिग्रीष्मापूर्ववत् ॥ अहं चोप-  
सैदस्यमतिहृच्छं चरन्निजः ॥ २१३ ॥ तप्तकृच्छं चरन्निजो जल-  
सीरघृतानिलान् ॥ प्रतिअहं पिबेदुष्यान्सकृत्लायी समाहि-  
तः ॥ २१४ ॥ यत्तात्मनोऽग्रमत्तस्यद्वारशाहमभोजनम् ॥ परा-  
कोनामक्षच्छोऽयंसर्वपापापनीरजः ॥ सकैकं ह्रासयेत्पिंडं  
कृष्यो शुक्ले च वर्जयेत् ॥ उपस्पृशंस्त्रियवरा मेतच्चान्द्रायणां  
स्मृतम् ॥ २१६ ॥

۳۱- ات کہ چہرہ برت کر تا ہوا ایک دن وقت صبح ایک لقمہ اور ایک دن وقت شام ایک لقمہ اور ایک دن بدون مانگنے کے مٹنے میں ایک لقمہ بخوجن کرے اور تین دن آپاس کرے۔  
۳۲- پرت کہ چہرہ برت کر تا ہوا بیقر ہو کر ہر انسان کر کے گرم جل دو دو دھو گھی دھوان چارو تین سے ایک ایک کو ایک دفعہ تین تین دن پیوستہ (اب لغزادہ و مفقار کو بیان کرتے ہیں کہ گنڈہ بھو جل ۳ گنڈہ بھو دو دو ایک گنڈہ بھو گھی)۔  
۳۳- چت کو سا دو دھان کر کے اندریوں کو اپنے قابو میں کر کے ۱۲ دن تک آپاس کرے۔  
بہر پرت سب پاپ کو دور کرنے والا ہے۔

۱۱۔- مینوں وقت یعنی صبح دوپہر شام انسان کرنا ہوا ایک لقمہ کو کیش کیش میں بگھلواؤ اور شکل کیش میں بڑھاد یعنی شکل کیش کی پورنامشی کو پندرہ لقمہ بھون کر کد اور کیش کیش کی پریلو کو چار لقمہ بھون کر سطح ایک ایک لقمہ کو کم کرتے ہوئے اناوشیا کو آپس ہونگا پھر شکل کیش کی پریلو سے ایک ایک لقمہ بڑھاتے ہوئے پورنامشی کو پندرہ لقمہ ہونگے یہ پہلی کا ذہ چاندرا این کلما ناسے۔

अनुक्तनिष्कृतीनानुपायानामपनुत्तये ॥ शक्तिचविषयपार्य  
चप्रायश्चित्तप्रकल्पयेत् ॥ २०६ ॥ वैरभ्युपायैरेनामिमानवोच्य  
पकर्षति ॥ तान्वोऽभ्युपायान्वश्यामिरेव विधित्संचितान् ॥  
२१० ॥ अहं प्रातस्त्यहं सायं अहमद्याद्याचितम् ॥ अहं परं च  
नास्मीत्यात्मा जापत्यं चरन्निजः ॥ २११ ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं द-  
धिमर्षिः कुशोदकम् ॥ सकारात्रोपवासश्च कृच्छ्रं सान्नपनस्स-  
तम् ॥ २१२ ॥

۲۰۹ - جس پاپ کا پتر شمت نہیں کیا ہو اس پاپ کو دور کرنے کے واسطے اسکی طاقت اور پاپ  
دونوں کو دیکھ کر پتر شمت کو کلینا کرے۔

۲۱۰ - آدمی جن تدبیروں سے پاپوں کو دور کرتے ہیں امان تدبیروں کو دیورش بتیروں نے  
کہا ہے ان تدبیروں کو ہم کہیں گے

۲۱۱ - پرا جاپتیه برت کرنا ہوا میتین دن وقت صبح دینین دن وقت شام کے بھوجن کر کر  
میتین دن بد دن مانگنے کے جوئے اسکو بھوجن کر کر اخیر میتین دن آپاس کر کر (یا بغیر کی نوا)  
دمقدار کو کہتے ہیں کہ وقت صبح ۲۴ لقمہ وقت شام ۲۲ لقمہ اور بد دن مانگنے میں ۲۴ لقمہ بقلا  
بریقہ مرغ یا جینا منھ میں جاسکے ہمیشہ کے ان کو بھوجن کرنا اور چیز کو نہ بھوجن کرنا۔

۲۱۲ - گنو کا موتر گو برودودھ گلی دبی جل مع کشان سب کو ملا کر ایک دن سپو اور دوسرے  
دن آپاس کرے یہ شانت بن کر چھو کہنا ہے اور جب اوپر لگی ہوئی چیز دن کو ایک ایک  
دینین ایک ایک چیز کو بھوجن کرے اور ساتویں دن آپاس کرے یہ شانت بن کر چھو کہنا

اسکو بخ گئے کہتے ہیں

بے دین تانانیتیا ناکرم راناں سم تیکرمے ॥ سنا تکا بڑت لوی پے  
 چ پرا ی شیت م بوجن م ॥ ۲۰۳ ॥ ہنگار براہم راسو کتا تھ کا  
 رچ گری یس ॥ سنا تھ ۵ ن س ن ہ : شے م م بیا ی پراسا رے ت ۲۰۴  
 تا ڈ ی تھ ل رونا پیکر دے وا ب دھ یاس سا ॥ بیا دے وا ب نی  
 ریتھ پ ریا ی تھ پراسا رے ت ॥ ۲۰۵ ॥ ا ب و ر ی تھ ل ش ت س ہ س م  
 پ ہ تھ ب ॥ جی پ ا س ی ا ب ر ا س ی ن ر ک پ ر ی ی دے ت ॥ ۲۰۶ ॥ جی  
 ریا ت ی ا ب ت : پ ا س ی تھ ل ت م ہ ت لے ॥ ت ا ب تھ ی د س ہ س ا  
 ریا ت ت ک ر ت ا ن ر ک و س ت ॥ ۲۰۷ ॥ ا ب و ر ی تھ ل ش ت س م ت ک ک  
 ن ی پ ا ت تے ॥ ک ک ر ا ت ک ک ر ی ک و ر ی ت ب ی پ س ی تھ ا ی ش ریا ت م  
 ॥ ۲۰۸ ॥

۲۰۳- وید میں کے ہوتے عمل روزمرہ کو نکلنے میں اور بڑے حج برت کے چھوٹ جانے  
 میں ایک دن آپاس کرنا پڑے۔

۲۰۴- برہمن کو ہون ایسا تکر اور پے لوگو کو تم ایسا کہ کرستان کر اور انھن کو خوش کر  
 اور پرا نا یام کر کے ایک دن آپاس کرے۔

۲۰۵- برہمن کو ترن سے بھی ناڈنا کر کے اور بٹ میں جپ کرکے سے گلے کو بانڈھ کر پر نام  
 کر کے خوش کرے۔

۲۰۶- برہمن کے مارنے کو ہتھیار اوٹھا د اور مار مین تو بھ تلو برن کسزک مین رہتا ہے

۲۰۷- مارنے برہمن کے جسم کا خون گر کر زمین کے جتنے ذرہ کو پکڑتا ہے اتنے ہزار برس  
 تک مارنے والا نرک مین رہتا ہے۔

۲۰۸- برہمن کے مارنے کے واسطے ہتھیار اوٹھا کر چھ برت کو کرے اور مار مین ات کر چھ  
 برت کو کرے اور خون نکالتے مین کر چھ اور ات کر چھ دونوں برتوں کو کرے۔

شیرساگتंपरित्यज्यवेवंविशाव्यचद्विजः॥ संवत्सरंयवाहारस्त  
त्यापमयसेधति॥ १९८॥ श्वश्रुगालस्वरैर्वष्टोश्राभ्यैःक्रव्याद्भि-  
रेवच॥ नराश्वोद्वराहैश्चप्राणायामेनशुध्यति॥ १९९॥ यवतान  
कालतामासंसंहितानपसवव॥ होमाश्चसकलानित्यमयं-  
क्त्यानंविशोधनम्॥ २००॥ उद्ध्यानंसमारुह्यस्वस्थानंतुकास-  
तः॥ स्नात्वातुर्विप्रोदिग्वासाःप्राणायामेनशुध्यति॥ २०१॥ वि-  
नाद्भिर्यसुवाय्यार्तःशारीतंसन्निवेश्यच॥ सचैलोबद्भिगुह्यत्या-  
मालभ्यविशुध्यति॥ २०२॥

۱۹۸- اپنی پناہ میں آئے ہوئے کو ترک کر کے جو دیر پڑھانے کے لائق نہیں ہے اسکو  
ویر پڑھا کر ایک سال تک جو کا بھوجن کر کے رہے۔

۱۹۹- کتنے سیار آدمی گدھا گھوڑا سورگانوں کا رہنے والا بار و غیرہ انھوں میں سے کسی  
ایک کا کاٹا ہوا آدمی پر اپنا نام سے پاک ہوتا ہے۔

۲۰۰- کچے گوشت کا کھانا والا۔ نیگت میں رہنے کے لائق جو برہمن زمین پر دونوں ایک پر  
تک دو دن آپاس کر کے بیس دن وقت تمام بھوجن کریں اور شگفتا کا چپ کریں اور بوجھ  
کرت وغیرہ آٹھ منتر کے ہمیشہ آٹھ دفعہ بھون کریں تب پاک ہوئے تین۔

۲۰۱- جو کاری اونٹ یا گدھا سے مشمول ہے اس پر غوسہ سے پڑھ کر اونٹ یا گدھا ہو کر انسان  
کر کے پرانا نام کرے۔

۲۰۲- دھکی آدمی بد دن پانی کے ٹٹا دھو کر پانی پانی ہی میں ٹٹا دھو کر ٹوڑ ڈالو  
سے باہر جا کر نری وغیرہ میں مع کپڑوں کے غسل کر کے گنو کو چھو کر پاک ہوتا ہے۔

यज्ञहितेनार्जयत्तिकर्मणा ब्राह्मणाधनम् ॥ तस्योसर्गेराशुज्य-  
न्तिजघ्येनतपसैवच ॥ १६३ ॥ जपित्वात्रीशिशावित्र्याः सहस्रा-  
शिसमाहितः ॥ मासंगोष्ठेपथः पीत्वामुच्यतेऽसत्यतिग्रहात् ॥  
१६४ ॥ उपवासकशतंशुगोत्रजात्युनरागतम् ॥ प्ररातंप्रतिपृच्छेयु-  
साम्यंसीत्येच्छसीतिकिय ॥ १६५ ॥ सत्यमुक्त्वा तु विप्रेषु विकिरे-  
द्यवसंगताम् ॥ गोभिः प्रवर्त्तिते तीर्थे कुर्युस्तस्य परिग्रहम् ॥ १६६  
॥ ब्रात्यानां याजनं कृत्वा परेषा मन्य कर्म च ॥ अभिचारमहीनं च  
त्रिभिः कर्त्तव्यं पोहति ॥ १६७ ॥

- ۱۹۳۔ برہمن قابل نفرین کام کو کر کے جو دولت کو فراہم کرے ہیں اس دولت کو ترک  
اور چپ تپ کر کے پاک ہوتے ہیں۔
- ۱۹۴۔ برہمن بے فکر ہو کر ایک مہینہ تک ہمیشہ تین ہزار گائیتری کا جپ کرتا ہو لگو کے  
مقام میں مقیم ہو کر مرن دودھ پیتا ہوا پے دان لینے کے پاپ سے چھوڑتا ہے۔
- ۱۹۵۔ برت کر کے لگو کے مقام سے آگے ہوئے کمزور و عظیم برہمن کو بھلا لوگ پوچھیں کہ  
اے برہمن کیا ہم سب کے برابر ہو سکی ہو پیش کرتے ہو۔
- ۱۹۶۔ شب وہ برہمن کے کہ آمیزہ نہ لینے کے لائق دان کو نہ لینے کے پتے ہیں لیا کر  
لگو کے بھوجن کیواسطے گھاس دی ہوئی گھاس کو لگو بھوجن کرے تب بھلا لوگ  
اس کو قبول کریں۔
- ۱۹۷۔ برہمنیہ لوگوں کو گلیہ کر کے پتا دگر و غیرہ کے سوا ممنوع داه و غیرہ مرن شرا و  
گرے اور بارن پر لوگ کر کے امین نام دالی گلیہ کر کے متین کر چھوڑت کرے۔

सत्यसुतं घटं प्रास्य प्रविश्य भवनं स्वकम् ॥ सर्वं शिवात्कृतकार्यं  
 रायथा पूर्व समाचरेत् ॥ १८७ ॥ सतं देवविधिं कुर्याद्योषिस्तु पति  
 तास्यपि ॥ वस्त्रान्नपानदेयवस्त्रवसेयुश्च गृहान्तिके ॥ १८८ ॥ सन-  
 स्विभिरनिर्गोतैर्नर्थि किंचित् सहाचरेत् ॥ कृतनिर्गोजनांश्चैव  
 न जुगुप्सेत कर्हिचित् ॥ १८९ ॥ बालघ्नांश्च कृतघ्नांश्च विशुद्धान-  
 पि धर्मतः ॥ शरणागतं हंतुं च स्त्रीहंतं च न संवसेत् ॥ १९० ॥ ये यां  
 द्विजानां सावित्रीनां चेतया विधिः ॥ तांश्चारयित्वा त्रीन्कच्छा-  
 न्यथा विध्युपनाययेत् ॥ १९१ ॥ प्रायश्चित्तं च कीर्षन्ति विकर्मा  
 स्यास्तु ये द्विजाः ॥ ब्रह्मणा च परित्यक्तस्ते यामप्येतदादि शेत ॥  
 १९२ ॥

۱۸۷- اہرگم پانی میں گھوٹ کو ڈال کر اپنے گھر میں درمل ہو کر ذات کے سب کاموں کو پورا  
 کے مانند کرے۔

۱۸۸- چیت استری میں بھی بی بی بڑھ اور تیت استری کو گھوٹ کے سامنے چایا قیام اور کھانا  
 پانی اور کپڑا دینا چاہئے۔

۱۸۹- بدھن پر اپشیت کے پا پون کے ساتھ ارغھ کو گھوٹ اور جب پر اپشیت کر چکیں تو  
 انکی برائی بھی کہنی نہ کرے۔

۱۹۰- مالک ڈال کر و منراگت دعوت بخون میں سے کسی ایک کے مار نیوالے نے شاسترین  
 لکھا ہوا پر اپشیت بھی کیا ہو تو بھی اسکے ساتھ نہ رہے۔

۱۹۱- جس برہمن کشتری دیشہ کا گائتری برہم سے اپیش نہوا ہوا سکوتین کر چھوڑ  
 کر کے برہم کے موافق پھر جینو کرنا چاہئے۔

۱۹۲- خلاف کام لینے شتو در کی سبوا کر نیوالا اور وید کو نہ پڑھنے والا برہمن کشتری  
 دیشہ پر اپشیت کرنا چاہیے تو انکو بھی تین کر چھوڑت کا اپیش کرنا چاہئے۔





साचेत्पुनः प्रदुष्येत्तु सद्दशेनोपयंत्रिता ॥ कच्छं चाज्रायरां चैव त-  
 रस्याः पावनं रस्तम ॥ १९७ ॥ यत्करोत्येक रात्रे राघवली सेवना-  
 द्विजः ॥ तद्वै सभुजयन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति ॥ १९८ ॥ यथा-  
 पापकृता भुक्ता चतुर्गामयि निष्कतिः ॥ पतितैः संप्रयुक्ताना मि-  
 माः शृगावति निष्कतिः ॥ १९९ ॥ संवत्सरेण पतति पतितेन सहा च-  
 रन् ॥ याजनाध्यापनाद्यौ नान्तु या नाना सनाशनात् ॥ २०० ॥ यो-  
 येन पतितेनैवां संसर्गं याति मानवः ॥ स तस्यैव व्रतं कुर्यात्तत्सं-  
 सर्गविशुद्धये ॥ २०१ ॥

۱۶۶ - عورت اپنی ذات کے مرد کے ساتھ ایک دفعہ جماع کر کے مجرم ہوئی ہو اور اوسکے  
 پر تپت کر کے پھر اپنے ذات والے مرد کے ساتھ جماع کرے تو وہ عورت پرا جا پتی ہے و  
 چارو دران برت کرے -

۱۶۸ - برہمن و کشتری دشو دران کی عورت کے ساتھ ایک رات جماع کر کے جو پاپ  
 کرتے ہیں اسکے دور کر نیکی واسطے تین سال تک بھیکہ مانگ کر جو جن کرتے ہوں جب  
 کرتے ہیں -

۱۶۹ - چارو دران کے پاپ کا یہ پر تپت کہا اب تپتوں کے ساتھ میل دیو بار کرنے کے  
 پر تپت کو سنو -

۱۸۰ - تپت لوگون کے ساتھ جو کوئی ایک سال تک ایک سواری یا ایک سن پر بیٹھے یا  
 ایک ننگ میں بھوجن کرے تو اوسکے پر ابر ہو نا ہو اور تپت لوگون کو بیکہ کرادے یا جنیو  
 کرا کے گا بنری سادے یا دواہ وغیرہ رشتہ داری کرے تو جلد اُسکے پر ابر ہو نا ہے -

۱۸۱ - جس تپت کے ساتھ جو بیو بار کرے وہ اُسکے پاکی کے واسطے اسی کا برت کرے -

ماتا سنیخستو भार्यार्थे नोपयच्छेत्तु बुद्धिमान् ॥ ज्ञातिलिना नुपेया-  
स्ताः पतति ह्युपयन्नधः ॥ १७२ ॥ अमानुषीषु पुरुष उदक्याया-  
मयोनिषु ॥ रेतः सित्वा जले चैव कच्छं सान्नपनं चरेत् ॥ १७३ ॥  
मैथुनस्तु समासे व्यपुंसियोषिति वा हिजः ॥ गोयानेऽप्सु रिवा-  
चैव समासाः स्नानमाचरेत् ॥ १७४ ॥ चराडालान् स्त्रियोग-  
त्वाभुक्त्वा न प्रतिगृह्य च ॥ पतत्यज्ञानतो विप्रो ज्ञानात्साम्यं तु ग-  
च्छति ॥ १७५ ॥ विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्तानिरुध्या रेकयेऽमनि ॥ य-  
त्पुंसः परदारेषु तच्चैनां काश्ये द्वे तम ॥ १७६ ॥

۱۷۲۔ عقلمند آدمی ان تینوں کے ساتھ جماع کرے کیونکہ وہ رشتہ مند ہونے سے جماع کے لائق نہیں ہیں ان کے ساتھ جماع کرنے سے ترک میں جاتا ہے۔

۱۷۳۔ گلو کو چھو کر گھر کے باہر سے وغیرہ چار پایہ و با حیف عورت کسی ایک لیٹنے سے چلی جائے عورت و پانی انھوں میں لطفہ کراتے سے سانت پن کر چھو بیت کو کرے۔

۱۷۴۔ گاؤں پانی دن انھوں میں برہمن کشتی و شیشہ مرد یا عورت سے جماع کر کے مع کپڑ دن کے اسنان کرے۔

۱۷۵۔ برہمن اگیان سے چاندالی اور بلیمچ کی عورت کے غلہ کو چھو جن کر کے اور انھوں سے دان لیکر تپت ہوتا ہے اور جا کر پیوے تو اس کے برابر ہوتا ہے۔

۱۷۶۔ جس عورت نے دوسرے مرد میں دل لگایا اسکو شوہر ایک گھر میں روک کر رکھے اور جو برت مرد کو دوسری عورت کے ساتھ جماع کر نہیں کہا جو وہ برت عورت کو کر دے۔

मणिमुक्ताप्रवालानां ताक्षस्य रजतस्य च ॥ अथः कांस्योपला  
नांच द्वादशाहं करान्तथा ॥ १६७ ॥ कापीसकीटजीरानां हि श-  
फैकशफस्य च ॥ यस्मिन् नीलधीनां च रज्ज्वाश्चैव च्यवहं ययः १६८  
॥ सनैर्बतैरपोहेतपायं स्तेयकृतं द्विजः ॥ अगम्यागमनीयं शुभ-  
तैरेभिरपातुरेत ॥ १६९ ॥ गुरुतल्पवतं कुर्याद्वैतः सित्तासियो-  
नितु ॥ सरल्यः पुत्रस्य च स्त्रीसुकुमारी धन्यजा मुच ॥ १७० ॥ पै-  
तृष्वसेयी भगिनीं स्वस्त्रीयां मातुरैव च ॥ मातृश्चातुस्तनयांग-  
त्वाचान्दायरां चरेत् ॥ १७१ ॥

۱۶۷۔ جو آبہ موتی، مونگا، تانبہ، بارہ پاء کا، حقرا، انھوں میں سے کسی ایک کے چورا نہیں بارہ  
ناب چادل کے کن بھوجن کرے

۱۶۸۔ کیا اس کیڑا اور نا انھوں سے طیار کھو کپڑے ایک کھو دالے چار پائیہ پرند خوشیو بات  
اور دیر رشی انھوں میں سے کسی ایک کے چورانے میں تین دن تک نہ دھڑکیو (ہیان سب چہر  
چورا نہیں ایک روپ پر اپنچت کہا اسطرح چوری میں جہاں پر ایک روپ پر اپنچت ہی دہان  
پر جانا چاہئے)

۱۶۹۔ ان یرنوں کے وسیلہ سے چوری کے پاپ کو دو کرے اور جو عورت جماع کے لائق  
نہیں ہے اس کے ساتھ جماع کرین جو پاپ ہی اسکو برت مرقومہ ذیل سے دو کرے۔

۱۷۰۔ خواہر حقیقی اور دوست اور بیٹے کی زوجہ اور کماری اور چائڈالی انھوں میں سے کسی ایک  
کے ساتھ گیان سے جماع کرے اس پر اپنچت کو کرے جو نام کے ساتھ جماع کرین ہوتا ہے

۱۷۱۔ سوئی کی بیٹی اور بھوکھو کی اور ماتوں کی بیٹی جو اپنی خواہر میں ان میں سے کسی ایک کے  
ساتھ جماع کرین چاندیاں برت کرے لیکن یہ ب گیان سے ایک دفعہ دوسرے کے ساتھ

جماع کرین تب جانا کیونکہ پر اپنچت تھوڑا ہے اسلئے کہتے ہیں۔

धान्यान्नधनचौर्यारिक्तत्वाकाभाद्विजोत्तमः॥ स्वजातीय-  
ग्रहादेवकक्षाब्धेनविशुध्यति॥ १६२॥ मनुष्याराणामुत्तरांशो  
राणांक्षेत्रग्रहस्यच॥ कूपवापीजलानांचशुद्धिश्चात्रायरांस्तनं  
॥ १६३॥ इत्याराणामल्पसाराणांस्तथकलाऽन्यवेशमतः॥ च-  
रेत्सांतपनंकच्छंतन्निर्यात्यात्ममुदये॥ १६४॥ मस्यभोज्या-  
यहरशोयानशय्यासनस्यच॥ युध्यमूलफलानांचयंचगव्यं  
विशोधनम्॥ १६५॥ त्वराकाचमुमाणांचशुष्कान्नस्यमुड-  
स्यच॥ चैलचर्ममिवाराणांचत्रिशंत्रस्याहभोजनम्॥ १६६॥

۱۶۲۔ برہمن برہمن کے گھر سے بالا ارادہ و حلانہ کو چور کر پائی کیوں سڑا ایک سال تک کر چھ  
برت کو کرے لیکن دیش نکال دینہ پرمان و سوامی کا گن و غیرہ دیکھ کر یادہ بھی جانتا  
اس طرح سے جو آگے کہیں اس میں بھی جانتا۔  
۱۶۳۔ آدمی عورت کھیت گھر با دلی کنواں کا جل انھوں کے چور انہیں پاکی کیوں  
چاندرا این برت کہا ہے۔

۱۶۴۔ حقوڑی تہیت والی چیز اور حقوڑے مطلب الی چیز کے چور انہیں سناٹ میں کر چھوڑت  
کرے اور مال ستر وقتہ مالک کو دیکھ یہ بات سب چوری کے پرتخت میں جانتا۔  
۱۶۵۔ چنیا وغیرہ بھات وغیرہ سواریان دینک آس دھول موال پھل انھوں میں کو  
کسی ایک ایک کر چرانے میں پہنچ گیتہ کو سوت۔  
۱۶۶۔ ترن کاٹھ سوکھا وخت غلہ کڑ کڑا چڑا گشت انھوں میں کسی ایک کے چور انہیں  
تین دن برت کرنا چاہئے۔

پہنچ گیتہ لینے کو کا دوہ گلو کا لگی گلو کا دی گلو کا سو گلو کا کوہر۔

भासिकान्तुयोऽरनीयादशमावर्तकोद्विजः ॥ सत्रीसथज्ञ-  
न्युपवसेदेकाहं चोदकेवसेत् ॥ १५७ ॥ ब्रह्मचारीतुयोऽरनीयान्मा-  
धुमांसकयंचन ॥ सकृत्वाप्राक्तंतच्छृजतशेषं समापयेत् ॥ १५८ ॥  
विडालकाकारवृच्छिष्टं जग्ध्याश्वनकुलस्य च ॥ केशकीटाव-  
यनंचपिवेद्वहसुवर्चलासु ॥ १५९ ॥ अभोज्यमन्नं नात्तव्यमा-  
त्मनः शुद्धिमिच्छता ॥ अज्ञानधुक्तं हतार्यं शोध्याऽप्याशुशो-  
धनैः ॥ १६० ॥ सद्योऽनाद्यादनस्योक्तोन्नतानां विविधो विधिः ॥  
स्तेयदोषाय हर्त्तृणां व्रतानां श्रूयतां विधिः ॥ १६१ ॥

۱۵۶۔ برہم چاری مہینہ کی شراودھ کے غلہ کو بھوجن کر کے تین دن آپا کر کے اور ایک دن نہیں

۱۵۸۔ برہم چاری اگر کیا ہے شہر آب یا گوشت کو بھوجن کر کے پرا جا پینہ کر چوہر بن کر کرے

۱۶۸۔ یہ بلار کو آٹو سا کتہ بیولا آٹھون میں سے کسی ایک کی جو ٹھی چیز کو بھوجن کر کے اور بال

۱۶۰۔ آپ کو پاک کر نیکی خواہش رکھنے والا آدمی اس چیز کو جو بھوجن کے لائق نہیں ہے

۱۶۱۔ بھوجن کے لائق جو چیز نہیں ہے، اسے بھوجن میں یہ پرستش کہا اب چور کی پاپ کے

अभोज्यानांतुत्तुक्तान्त्रीश्वरोच्छिष्टमेवच॥ जगध्वासांसम-  
भक्ष्यं च सप्तरात्रं यवा न्यवेत् ॥ १५२ ॥ सुत्तानि च कवायांश्च-  
दीत्वामेध्यान्यपि द्विजः ॥ तान्नक्षत्रप्रयतोयावत्तन्त्रजस्य-  
धः ॥ १५३ ॥ विद्वराहखरोद्वासांशोभायोः कयिकाकयोः ॥  
प्राश्य सूत्रपुरीषाणि द्विजश्चान्यथा चरेत् ॥ १५४ ॥ सुक्ता-  
रिभुक्तामासानि भौमानिकवकानि च ॥ अज्ञातं चैव सूना-  
स्थमेतदेव ततश्चरेत् ॥ १५५ ॥ कव्याश्च कुरोद्वासां कुक्कुटाणां  
च भक्षणी ॥ नरकाकरवराणां च तप्तद्रव्यं विशोधनम् ॥ १५६ ॥

۱۵۲- کھانیکے لائق جب کاغذ بنیں ہے اور سکاغلا اور شور اور عورت کا چوٹھا غلا اور جو گوشت  
کھانیکے لائق بنیں ہے ان میں سے کسی کو بھوجن کر نہیں جو کے ستوسات دن تک پیسے  
۱۵۳- نکستہ اور کبھی چیز (مثل کھیر وغیرہ) یہ پاک بھی ہوں تو بھی انکو پیکر تک پاک نہیں  
ہوتا جب تک کہ وہ فہم نہیں ہوتے۔  
۱۵۴- گائون کے سوا گدھا اونٹ کو اسکا رخنون کا سو ترا ویشا بھوجن کر نہیں کشتہری  
ویشیہ چاندرا بن برت کریں۔  
۱۵۵- سوکھا گوشت اور زمین میں پیدا ہوا لکڑنا اور جس گوشت کو جانہ نہیں کہ کھانا  
کے لائق ہے یا نہیں اور وہ مقام قتل جائز میں رکھا ہو رخنون میں کسی ایک کو کھا نہیں  
اوپر کے ہوتے برت کو کرے۔  
۱۵۶- کچے گوشت کے کھانے پر شیر وغیرہ گائون کا سورا ویشا ویشا ویشا کو اگر کھا  
میں سے کسی ایک کے گوشت کے کھانے میں ہت کر چھو برت کو کرے۔

نکستہ اسکو کھتے ہیں کہ جو عورت میٹھا ہے اور سب گندے تمام کے یا پانی میں رہنے سے کھاتا ہوگا۔

آجنا نا با رگیاں پیوا سں سکا رہی بھو چھاتی ॥ مٹی پورب مانی  
 دے شے پرا نا تیک مٹی تھیتی ॥ ۱۴۵ ॥ آج: سورا نا جن سٹھا  
 مچھا نا راد سٹھا سٹھا ॥ پंचरा تر پیو تپیوا شے سب پو پو  
 تپ پ: ॥ ۱۴۶ ॥ سٹھا دوا چ مڈیاں بی بی بھتی پھتی ॥ آ  
 دھو دھیا چ پیوا پ: کورنا ر پیو تھتھ ॥ ۱۴۷ ॥ آج  
 را سٹھا سورا پ سٹھا مچھا پ سٹھا ॥ پرا نا ن سٹھا ر پ سٹھا  
 پ ت پرا ش پ بی بھتی ॥ ۱۴۸ ॥ آجنا نا تھ ش پ بی ر مچھا  
 را سٹھا مچھا ॥ پون: سں سکا ر مچھا تھ تھو و ر نا دیا تھ:  
 ॥ ۱۴۹ ॥ و پ ن مچھا راد سٹھا مچھا پ تھ تھ ॥ نی و تھ تھ  
 دیا تھ تھ پون: سں سکا ر مچھا ॥ ۱۵۰ ॥

۱۴۵ - بھر جانے پر کے گڑھی و ماو جوی نام شراب کو پیکر تو دوسرے سنگار سے پاک ہو تھ  
 اور چاکر پیوے تو ترنگ قالب سے پاک ہو تھ یہ شاستر کا حکم ہے۔

۱۴۶ - پیشانی اور بندہ یہ نام شراب کے برتن میں رکھا ہوا پانی پینے میں سنگھڑی نام ادویہ  
 کرم دودھ کے ساتھ پانچ رات تک پیوے۔

۱۴۷ - شراب کو چھو کر دیگر لیکر اور شودر کے جوٹھے جل کو پیکر گش سے پکے ہوئے جل کو تین  
 دن تک پیوے۔

۱۴۸ - سو م نام گیہ کے کر نیوالا برہمن شراب پینے والے کی چونگھ کر جل میں تین دن  
 پر ایسا نام کر کے گھی کو بھوجن کرنے سے پاک ہو تھ۔

۱۴۹ - جو چیز موڑا اور شربا سے چھو گئی انجین سے کسی ایک کو گیاں سے بھوج کر  
 برہمن کشتی دیشیہ بھر سنگار کے لائق ہوتے ہیں۔

۱۵۰ - دوسرے سنگار میں سٹھا دیکھا دودھ و جھٹا سٹھا۔





हत्वा हंसं बलाकां च वक्त्रं हिंसा मेव च ॥ वानरं श्येनभासौ च स्य  
 र्शयेद्वाह्मरायणम् ॥ १३५ ॥ वासौ दद्यात्तु हत्वा यंच नीला  
 न्धयान्नाजम् ॥ अजमेवावनद्वाहं वरं हत्वे कहायनम् ॥ १३६ ॥  
 क्रव्यादांस्तु मृगान् हत्वा धेनुं दद्यात्पयस्विनीम् ॥ अक्रव्यादा-  
 न्त्वत्सतरीमु ब्रह्मत्वा तु क्वा लम् ॥ १३७ ॥ जीनकार्मुकवत्तावी-  
 न्मथ कृदद्याद्विशुद्धये ॥ चतुर्गामयिवर्गानां नारी हत्वाऽनव-  
 स्थिताः ॥ १३८ ॥ दानेन वधनिर्गोकं सर्पादीनामशक्नुवन् ॥ ए-  
 कैकशश्चेत्तच्छूद्रिजः पापापनुत्तये ॥ १३९ ॥ अस्थिमतां तु  
 सत्यानां सहस्रस्य प्रमापरी ॥ पूर्योचानस्य नस्थां तु शूद्रहत्याज-  
 तंचरेत् ॥ १४० ॥

۱۳۵- بنس بلا کا بگلا مو بندر باز بھاس ان سب سے کسی ایک کو مار کر براہمن کو کرے  
 ۱۳۶- گھوڑا کو مار کر کپڑا دیوے اور باغی کو مار کر پانچ بیل براہمن کو دیوے بکر اور بچہ براہمن  
 سے کسی ایک کو مار کر ایک بیل دیوے کرے کو مار کر ایک سال کا بچہ دیوے۔  
 ۱۳۷- شیر و غیرہ کے گوشت کے کھانے والے جانور کو مار کر دو دو دیتی ہوئی گتو دیوے  
 اور برہمن وغیرہ کے گوشت کے کھانے والے جانور کو مار کر چھ دیوے اور اونٹ کو مار کر ایک لی سونا دیوے۔  
 ۱۳۸- براہمن وغیرہ چاروں طرف کی چھال عورت کو مار کر براہمن کشتی ویشیہ سلسلہ سے  
 چرم پٹ و پتھر بھیر کر دیوے۔  
 ۱۳۹- دان سے سب پاپوں کو دور کر نہیں بے طاقت ہو تو ایک ایک کے قتل میں ایک  
 ایک کر چھرت کرے۔  
 ۱۴۰- ہزار جاندار استخوان دار کے قتل میں اور بغیر استخوان دار جاندار گاڈی بچہ کے  
 قتل میں شتر و دستیا کے برت کو کرے۔



तकरापात्रकृत्यासुमासंशोधनमेन्ववम् ॥ मलीनीकसगीये-  
 पुतमः स्याद्यावकैरुयहम् ॥ १२५ ॥ तुरीयोब्रह्महत्यायाः स-  
 त्रियस्यवधेः स्मृतः ॥ वैश्येऽसमांशोचत्तरथेऽशूरेऽज्ञेयस्तुषोडशः  
 ॥ १२६ ॥ अकामतस्तुराजस्यविनिपात्यद्विजोत्तमः ॥ वयमे-  
 कसहस्रागाद्यासुचरितव्रतः ॥ १२७ ॥ अयं चरेद्वानियतो  
 नवीब्रह्महाराजव्रतम् ॥ वसन्तूरतरेग्रामाहसमूलनिकेतनः ॥  
 १२८ ॥ एतदेवचरेदयं प्रायश्चित्तं द्विजोत्तमः ॥ प्रमाद्यवैश्यं च  
 तस्यैवद्यावैकशतंगवाम् ॥ १२९ ॥

۱۲۵۔ شکری کرن کرہوں میں اور آپا تری کرن کرہوں میں کسی ایک کرم کو خواہش سے  
 کرنے میں ایک مہینہ چاندرا میں برت کرے اور اپنی کرن کرہوں میں کسی ایک کرم کو  
 خواہش سے کریمین میں دن چوکی پس بھوجن کرے۔  
 ۱۲۶۔ اپنے کرم میں قائم کشتی دیشیہ شودر کو قتل کریمین سلسلہ سے چوتھی کر بھویش  
 سو لھوین حصہ برت کو جاننا مگر یہ سب برت خواہش سے کرم کرنے میں جاننا۔  
 ۱۲۷۔ برہمن بدن خواہش کے کشتی کو قتل کرے تو نہرا گنو اور ایک میل برہمن کو دیکھو۔  
 ۱۲۸۔ خواہ جنادھاری ہو کر نیم سے گانوں کے باہر دھن کی خبر میں بقیہ ہو کر شین سال تک  
 برہم ہتیا کا برت کرے اسکو بلا خواہش قتل کریمین جاننا۔  
 ۱۲۹۔ برہمن اپنے کرم میں قائم دیشیہ کو قتل کرے ایک سال تک برہم ہتیا کا برت کرے۔  
 یا ایک نلو ایک گنو دان کرے بلا خواہش قتل کرنے میں اس برت کو جاننا۔



आत्मनोयस्विान्वेषां ह्येसेत्रेऽथवास्वले ॥ अथयन्तीनकथ-  
येत्यिवन्तंचैववत्सकम् ॥ ११४ ॥ अनेनविधिनायसुगोमोगा-  
मनुगच्छति ॥ सगोहत्याकृतं पापं त्रिभिर्मोसेज्यपोहति ॥  
११५ ॥ वृषभैकादशागाश्च दद्यात्सुचरितव्रतः ॥ अविद्यमा-  
ने सर्वसंवेदविद्यो निवेदयेत् ॥ ११६ ॥ सतदेवव्रतं कुर्युः कथ-  
पातकिनोद्विजाः ॥ अवकीर्तिवर्ज्यश्च द्व्यर्थचान्द्रायणम-  
थापि वा ॥ ११७ ॥ अवकीर्तितुकारो नशर्दभेन चतुष्यये ॥ पा-  
कयज्ञविधानेन यज्ञे तैर्ज्येति निशि ॥ ११८ ॥ ह्रस्वाग्नौ विधि-  
वज्रोमानन्नतश्च समेत्यूचा ॥ वातेन्द्रशुक्रबन्हीनां ब्रह्मात्म-  
र्षिषाहुतीः ॥ ११९ ॥

۱۱۴۔ اپنے خواہ دو سو کے گھر میں یا کھلیان یا کھیت میں جتنی ہوئی گتو کو نہ کے اور گھر سے  
کو یلانی ہو تو بھی نہ کے۔

۱۱۵۔ گتو کا ماریو والا آدمی اس طریق سے گتو کے پیچھے پہلے تو میتن مہینہ میں گتو کی سنبھالتے  
چھوٹ جائے۔

۱۱۶۔ اچھی ریت سے برت لڑ کے ایک پہل اور دس گتو دیوے اگر اتنا ہو سکے تو دیر پڑھے ہوئے  
برہمن کو سب دھن دیوے۔

۱۱۷۔ اوکیرنی برت جو آگے کہیں گے اسکو چھوڑ کر براہمن دکستری اور دیشیہ آپ پات کریں تو  
پاک ہونے کیواسطے اسی برت کو کریں یا چاندراہن برت کریں۔

۱۱۸۔ اوکیرنی چوراہم میں پاک بیکہ بدھان کر کے رات میں نرود دیوتا کیواسطے گانا  
گدھاسے بیکہ کرے۔

۱۱۹۔ آگن میں بدھ کے موافق سمان پنجو مار نہ اس منتر سے یا پواندراگن ان سب کو گتو  
بہت دیوے۔

उपपातकसंयुक्तोगोघ्नोमासंयवान्पिबेत् ॥ कृतवापोवसेजो-  
 छेचर्मगातेनसंबुतः ॥ १०८ ॥ चतुर्थकालमग्नीयादक्षारलवरा-  
 मितम् ॥ गोमूत्रेणाग्नेरक्तानघ्नौमासौनियतेन्द्रियः ॥ १०९ ॥  
 दिवानुगच्छेज्जास्तास्तुतिष्ठन्ध्वैरुजःपिबेत् ॥ शुश्रूयित्वानम-  
 रकृत्यरात्रौवीरासनं वसेत् ॥ ११० ॥ तिष्ठन्तीष्वनुतिष्ठेतुब्रजन्  
 तीष्वथनुब्रजेत् ॥ आसीनासुतथासीनोनियतोवीतमत्सरः  
 ॥ १११ ॥ आतुरामभिरास्तावाचौरव्याघ्रादिभिर्मयैः ॥ यति-  
 तांपंकलग्नांचासर्वापायैविमोचयेत् ॥ ११२ ॥ उद्योगवर्धति-  
 शीतेवामारुतेवातिबाधशम् ॥ नकुर्वीतात्मनस्त्राणांगोरह-  
 त्वातुशक्तिः ॥ ११३ ॥

۱۰۸۔ آپ پانی گنو کا ماریو والا ایک مہینہ تک جو کہ ستو پیو ناخن دھو بدن و سونکر وغیرہ کو نہر فی دھوئے اسے گنو اگر گنو کا چڑا اور دھو گنو کے مقام میں قیام کرے۔

۱۰۹- ایک دن برت کر کے دوسرے دن پہلی دفعہ تھراپکھوجن کرے جو اس پر غالب ہو کر  
جہنم تک لگو موتر سے اُتار کرے۔

۱۱۰۔ دن میں گنو کے پیچھے چل کھڑا ہو کر گنو کے کھر سے اڑتی ہوئی دھول کو پیچھا کرنا شروع کر دیا۔  
منسکار کے رات میں بہت آسہ سے روتے۔

۱۱۱۔ گنو کھڑی ہو تو آپ بھی حسد و نفیض سے علیحدہ ہو کر اندریوں کو جیت کر کھڑا رہے گنو چلے تو آپ بھی اسکے پیچھے ملے گنو سیکھتے تو آپ بھی سیکھتے۔

۱۱۲ جو گویا رہا ہوا اور چوراہہ شیر و غیرہ کے خوف سے خوفناک ہو یا اگر ٹپے ہو یا کچھ میں بھینس  
گرنے نہ کہ سب تہہ سے ہزار ہا فرقہ و رتھڑا دے۔

گدڑ کے انہی حفاظت نکرتے۔

शुरुतल्लयभिभाध्येनस्तमेखय्यादयोमये॥ स्वमीज्वलन्तीस्वा-  
 श्लिष्येन्मृत्युनामविशुध्यति॥१३०॥ स्वयंवाशिअद्ययगावुहं  
 त्याधायचांजलौ॥ नैर्ऋतींविशमातिष्ठेदानीपातादजिह्मगः॥  
 १०४॥ स्वदुंगीचीरवासवाशमश्रुलोविजनेवने॥ प्राजापत्यंचो  
 त्वाच्छमममेकंसमाहितः॥१०५॥ चान्दायरांवात्रीन्मासान-  
 भ्यसेनियतेन्त्रियः॥ हविष्येरायवावावाशुरुतल्लपापनुत्तये॥  
 १०६॥ एतैर्बतेरयोहेयुर्महापातकिनोमलम्॥ उपपातकिनस्त्वे  
 वमेभिर्नानाविधैर्बतैः॥१०७॥

۱۰۴- دالره سے جماع کرینو! اپنے پاپ کو کہہ کر گرم ٹوہے کے پلنگ پر سو دیاوہے کی  
 عورت بنا کر گمین گرم کر کے اس سے بھگیڑی کرے۔

۱۰۴- یا آلت و فوط کو کاٹ کر اپنی انجکی میں رکھ کر گوشہ جنوب و غرب میں دینی ریت کو نہ  
 میں سیدھا جلا جا جب تک دفات نہ پائے۔

۱۰۵- یا پلنگ کا ایک جزو ہاتھ میں لئے ہوئے کپڑے کا ٹکڑا اپنے ہونے داخل دھوے  
 بدن و دالڑھی و مویچھ کو دھارن کئے ہوئے بیٹھ کر ویران جبل میں ایک سال تک

پرا جا پتیبہ رت کرے یہ پر اپتیت اکیانک اپنی عورت جا کر دالڑھ کے جماع میں جانا جائے  
 ۱۰۶- یا اندلیون کو حین کر میتیہ یا جوگی لپی کھا کر دالڑھ جماع کرنے کے پاپ کو دور کرے

۱۰۷- یا اسٹے تین مہینہ تک چاندرا میں رت کرے یہ پر اپتیت غیر پت برتاہتری یا دوسروں کی  
 گرو بھاریا سے جماع کر نہیں جانا چاہیے

۱۰۸- یا پانکی لوگ ان برتوں سے اپنے پاپ کو دور کریں اور آپ پانکی لوگ پترم قوم  
 ذیل سے اپنے پاپ کو دور کریں۔

رماचिचिवाभिहितासुरायानस्यनिष्ठाति: ॥ अतऊईप्रवक्ष्या-  
 मिसुवर्गास्तेयनिष्ठातिम् ॥ ६८ ॥ सुवर्गास्तेयकद्विप्रोराजानम-  
 भिमम्यतु ॥ स्वकर्मस्यापयन्मूयान्मांभवाननुशास्त्विति ॥ ६९ ॥  
 ॥ ग्रहीन्वासुसलंराजासकद्वन्वाचुतंस्वयम् ॥ बधेनशुच्यतिस्ते-  
 नोवाहारास्तपसैवतु ॥ १०० ॥ तपसाऽपनुनुस्तुसुवर्गास्तेयजं-  
 मलम् ॥ चीन्वासाहिजोऽस्रायेचरेद्वह्न्यहाराजतम् ॥ १०१ ॥ स-  
 तेर्बतैरपोहेतपायंस्तेयकतंहिजः ॥ शुरुस्त्रीगमनीयन्नुब्रंतैरे-  
 भिरयानुरेत ॥ १०२ ॥

- ۹۸- یہ تجھے پشیمت شراب نوشی کا کما کے لہو سونا چور کے کا پشیمت کہتے ہیں۔  
 ۹۹- برہمن سونا چور اگر راجہ کے پاس جا کر کہے کہ میں سونا چور ہوں الاہوں آپ بھگو نہاؤں  
 ۱۰۰- راجہ آپ کو سونے کی ایک دھڑا سکومارے چوری کر نیوالا قتل خواہ قتل کے برابر یا سب سے  
 پاک ہوتا ہے چونکہ برہمن کو نہ اسے جسمانی ہین دی اس واسطے بھوک جی کہتے ہیں کہ برہمن  
 تپ ہی سے پاک ہوتا ہے۔  
 ۱۰۱- تپ سے سونا چورانے کے پاپ کو دور کرنے کی خواہش کر نیوالا کٹرے کا ٹکڑا نہ کر میں  
 جا کر اس برت کو کر کے چلا کر کے سے برہمن ہنیا دور ہوتی ہے یعنی سونا چورانا برہمن ہنیا کو نہ کر  
 ۱۰۲- برہمن ابن برتون کو کر کے چوری کے پاپوں کو دور کرے اور والد سے جمل کر کے  
 پاپ کو برت مرقورہ ذیل کر کے دور کرے۔





۱۸۸۔ گواہ ہو کر چھوٹے بونے میں گرو کو چھوٹھا دوش لگائے میں برہمن کا سونا چھوڑ کر چاندی وغیرہ زراعت اور شتری وغیرہ کا سونا وغیرہ زراعت کے لینے میں لگن ہو تری براہمن کی استری کی مائیں دوست کے مارنے میں برہمن ہتھیا کا برت کرنا چاہئے۔  
 ۱۸۹۔ یہ جو بارہ سال کا پڑھت کما ہی وہ بدوں کو اس ہنس کے براہمن کے مارنے میں جاننا اور ٹواہنس سے براہمن کے مارنے میں یہ پڑھت ہنسن ہو بلکہ اسکا دو چنڈہ  
 ۱۹۰۔ براہمن کشتری دیشیہ موہ سے تینوں پیشی مہرا کو پی کر اگر کن برن شراب کو پیوں اس جسم فانی ہونے سے اس پاپ سے چھوٹے ہیں۔  
 ۱۹۱۔ گھومو تر یا پانی یا گھو کا دو دھو یا گھو کا گھی یا گھو کے گوبر کا رس ان میں سے کسی ایک کو اگر کن برن (آتش زنگ) کر کے پیوے اور اس سے مر جائے تو پاک ہوتا ہے۔  
 ۱۹۲۔ گھو وغیرہ کے بالوں سے کپڑے بنا کر پہنے اور جھاو جھاو کر کے شراب کے برتن کا نشان لگا کر چاول کا کن یا تیل کی کھلی ہمیں سے کسی ایک کو رات میں ایک دفعہ ایک سال میں چھ جن کر کے تو شراب نوشی کے پاپ سے چھوٹے یہ راستہ تہذیب بدوں کے شراب نوشی میں جاننا۔

धर्मस्य ब्राह्मणो मूलमग्रं राजन्य उच्यते ॥ तस्मात्समागमे ते वामे-  
नो विरव्या व्यनुज्यति ॥ ८३ ॥ ब्राह्मणाः सन्मर्षे नैव देवानामपि  
देवतम् ॥ प्रमारां चैव लोकस्य ब्रह्मात्रैव हिकारणम् ॥ ८४ ॥ ते  
यां वेदवितो ह्युत्तमोऽप्येनः सुनिष्कृतम् ॥ सातेषां पावनाय सा-  
त्यवित्रा विदुषां हि वाक् ॥ ८५ ॥ अतोऽत्यतममास्याय विधिं-  
विप्रः समाहितः ॥ ब्रह्महत्या कृतं पापं व्यपीहत्यात्मवत्तया ॥  
८६ ॥ हत्वा गर्भमविज्ञातमेतदेव ब्रतं चरेत् ॥ राजन्यवैश्याचेजा-  
ना वात्रेयीमेव च स्त्रियम् ॥ ८७ ॥

۸۳ - کیونکہ برہمن دھرم کا مول ہے اور کشتری دھرم کا ۱/۲۰ سینہ ہیں یہ سب سے  
اپنے پاپ کو کھل پاگ ہوتا ہے۔

۸۴ - برہمن اپنی پیدائش ہی سے دیوتاؤں کا دیوتا ہے اور اس کا اپدیش سب کے ماننے کی  
لاکن ہے ان باتوں میں ویدی کا رن ہے اور اپدیش کا مول دیدی ہے۔

۸۵ - وید پڑھتے ہوئے تین برہمن جو پڑاؤ چت کہیں وہی پاک ہے کیونکہ وید پڑھی برہمن  
کی بانی ہی پاک ہے۔

۸۶ - برہمنی میں برہمن سے پیدا ہونے کی اسقاط میں بھی ہی برت و یکپہر کر کے

کشتری اور ویشیہ اور برہمن کی باجمین غوث اخون میں سے کسی ایک کے مائیمین بھی  
بچے گئے ہوئے برہمن میں سے کسی ایک ت کو کرے۔

نیا وارن پرتیرو جی واسر سب سب جلیتیا ॥ بیہ سب تہذیب تہذیب  
 پراسا لہا مہی سب جلیتیا ॥ ۷۰ ॥ سب ہندو جلیتیا تہذیب تہذیب  
 ہیت ॥ سب مہا ہندو جلیتیا تہذیب تہذیب ॥ ۷۱ ॥ شیشا  
 واسر مہی تہذیب تہذیب تہذیب ॥ سب مہی ۵ تہذیب تہذیب تہذیب  
 جلیتیا ۷۲ ॥

۸۰۔ کوئی شخص برہمن کا سپنہ چور کر لے جاتا ہے اس کے لئے کسوں سے طاقت کے موافق  
 رہا نہ چھوڑ کر تہذیب کے اور تہذیب کے اور برہمن کے چوری گئے ہوئے وہن کو  
 لایا جی نہ سکے تو برہمن ہتیا سے چھوڑتا ہے خواہ وہن چاہیے دیکھ کر برہمن چور کے ساتھ جنگ  
 کرنے سے جان دینے پر مستعد ہو تو جو وہن چوری کیا اس کے برابر وہن دیکھ کر اس کی جان کی حفاظت  
 کرے تو بھی برہمن ہتیا سے چھوڑتا ہے۔ ۷۳۔

۸۱۔ اس ریت سے ہمیشہ برت کر نیوالا ہے اندیشہ نہ کر برہمن چور کرنے والا بارہ برس کے تمام  
 پر برہمن ہتیا سے چھوڑتا ہے۔

۸۲۔ خواہ برہمن ہتیا کر نیوالا برہمن اسٹو مہی کی گئی کہ انسان کر نیوے وقت راجہ اس  
 جا کر برہمن ہتیا کو ظاہر کر کے اس کے ساتھ انسان کرے تو برہمن ہتیا سے چھوڑتا ہے یہ پرتیا  
 سو فترتہ کسی کا انگ ہے۔

قرآن مقام پریشک ہتیا کر نیوالا تہذیب ۹۹ مین لکھ آئے ہیں پھر دوبارہ کیوں لکھو سکا جہاں ہر اس طرح کا مہن  
 چھوڑ کر دوسری طرح کے کوہ برہمن کی حفاظت کیوں اسے ترک نہ کرے وہاں تہذیب ۹۹ کا مطلب جانا سکتا ہے  
 کہنے کا دوش نہیں ہوا۔

सर्वस्य वेदविदुषे ब्राह्मणायोपपादयेत् ॥ धनं वा जीवनायात्  
 ग्रहं वा सपरिच्छदम् ॥ ७६ ॥ हविष्यसुगवाऽनुसरेत्यतिश्रोतः  
 सरस्वतीम् ॥ जपेद्वा नियताहारस्त्रिवेदेदस्य संहिताम् ॥ ७७  
 कृतवायनो निवसेद्वा माने गोव्रजेऽपि वा ॥ आश्रमे हसमूले  
 वा भोजाहाराहितैरतः ॥ ७८ ॥ ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा सद्यः प्रा-  
 शान्त्यरित्यजेत् ॥ सुच्यते ब्रह्माहत्याया गोघ्ना गोव्रह्मणस्य-  
 च ॥ ७९ ॥

۷۶- خواہ دیو پڑھے ہوئے برہمن کو تمام ولن دھن دیوے خواہ تمام عمر تک بھوجن کج  
 برہمن کو دھن دیوے یا گھوم سامان کے برہمن کو دیوے یہ بھی لکھا ہے برہمن ذات  
 کے مارنے میں برہمن کو جانتا۔  
 ۷۷- خواہ دیشہ بھوجن کرنا ہو اچھ یا اپنی سرسوتی میں استنان کرے یا تھورا بھوجن کرنا ہو  
 تین دفعہ دید کی شکھتا کو پڑھے یہ لکھا ہے برہمن ذات کو مارنے میں برہمن کو جانتا۔  
 ۷۸- گو اور برہمن کا بھلا کرنا ہو اڈارھی ہو نیچہ و سرسوتا کے و ناخن کٹانے ہوئے کانوں  
 کے روبرو یا گھوم کے مقام یا درخت کی حرمین قیام کرے جنگل میں کٹی بنا کر یہی بلبل کیوسے لکھا ہے  
 ۷۹- خواہ بارہ سال کے برت کا آغاز کیا ہے اور روز میں ان میں برہمن اور گھوم  
 کی میت چھوڑانے کیواسے پران کا تیا کرے تو سوقت برہمن تیا سے چھوٹتا ہے۔

ब्रह्महाद्याशसमाः कुटीं कृत्वा वने यमेत ॥ भैसाश्यात्मविशु-  
द्धयर्थं कृत्वा शवशिरो ध्वजम् ॥ ७२ ॥ तस्य शस्त्रं मृतां वा स्याद्वि-  
दुषामिच्छयात्मनः ॥ प्रास्येदात्मानमग्नौ वा समिद्धे त्रिरवा-  
कशिराः ॥ ७३ ॥ यजेत वा श्वमेधेन स्वर्जितागो सवेन वा ॥  
अभिजिह्विष्वजिभ्यां वा त्रिभुताभिषुतापि वा ॥ ७४ ॥ जयन्  
वान्यतमं वेदं योजनानां शतं व्रजेत् ॥ ब्रह्महत्यापनोदाय मि-  
तं बुद्धं नियतेन्द्रियः ॥ ७५ ॥

۷۲- براہمن کو مارنیوالا اپنے پاک ہونے کیلئے وسطے جھگیں کٹی بنا کر بارہ برتن ہاتھ میں  
رہے جس براہمن کو مارا ہو اسکا شتر دھو جائیں رکھ کر ہیکھ مانگے یہ پیر پخت زرگن براہمن کے  
ماہمیں گنواں براہمن کو بدوں اچھا کے جانتا۔

۷۳- خواہ اپنی خواہش کے علم اسکی کو جاننے والے آدمیوں کے اسکی کاشتہ ہو یا نیچے  
شتر کے پٹن دفعہ اپنی اتھا کو گن میں ڈالے یہ پیر پخت زرگن اور آگے کے شلوک میں جو سویدہ  
یگیہ کہیں گے وہ بھی زرگن براہمنوں کو گنواں کشتری چھاسے بارے وہاں جانتا۔

۷۴- خواہ اسے سویدہ سوچت کو سب بھجت بھوجت ضرورت گشتوں انھوں میں سے کوئی ایک  
یگیہ کرے یہ پیر پخت اگیان براہمن کو مارے وہاں براہمن وغیرہ تینوں دن کو  
جانتا۔

۷۵- پریم ہتیا چھڑانے کیلئے وسطے غورا بھوجن کرتا ہوا اندر یوں بر غالب ہو کر کسی ایک  
وید کو پڑھتا ہوا سوچن گن کرے یہ بھی اگیان سے براہمن ذات کے مارنے میں براہمن  
کشتری دیشیہ کو پیر پخت جانتا۔

ब्राह्मरास्यरुजः कत्याघ्रातिरधेयमद्योः ॥ जैर्यं चंभैद्युनं पु-  
 सिजातिभंशकरं स्वतम् ॥ खराखोपुचगेभानामजाविकवध-  
 स्तथा ॥ संकरीकरां जैयंमीनाहिमहिबस्य च ॥ ६८ ॥ निनि-  
 तेभ्यो धनारानं वाशिज्यं श्वमेवनम् ॥ अषात्रीकरां जैय-  
 मसत्यस्य च भावरासम् ॥ ६९ ॥ कृमिकीदवयो हत्यामद्यानुग-  
 तभोजनम् ॥ फलैधः कुसुमस्तयमधैर्यचमलावन्नम् ॥ ७० ॥  
 सतान्येनांसि सर्वा शिथय्योक्तानि शयकथयक ॥ यैर्यैर्यैरयो-  
 ह्यन्तेतानि सम्यङ् निबोधत ॥ ७१ ॥

۶۶۔ برابھن کو ڈنڈ دینا یعنی ہاتھ پاؤں وغیرہ کی ایذا دینا آئسن دیشیا بے شراب کنگھنا  
 کٹل بنیا نمھو وغیرہ میں جماع کرنا یہ سب ذرات کو مجھٹ کر نیوالے ہیں۔  
 ۶۸۔ گدھ گھوڑا۔ اونٹ۔ ہاتھی۔ بکرا۔ بھیڑ اٹھلی۔ سانپ۔ بھینسا۔ انھوں کا مارنا شکری-  
 کرن کہلاتے ہیں۔

۶۹۔ نذرت آدمی سے دھن لینا بنیا کا کام کرنا شودر کا سیون کرنا جھوٹو بولنا یہ اپانتری  
 کرن کہلاتے ہیں۔

۷۰۔ چھوٹے کیڑے بڑے کیڑے پر بند انھوں کا مارنا کھانے کے لائق چیز پیاری ہیں بھی  
 ہوئی شراب کے ساتھ آئی ہوئی ہوس چیز کا کھانا پھل و لکڑی و پھول کا چوراہا دھجج کرنا  
 یہ سب لاڈ کہلاتے ہیں۔

۷۱۔ یہ سب پاپ علیحدہ علیحدہ کہے یہ سب جس جس برت کر نیسے وہ سب ہیں ان برتن  
 کو کہتے ہیں۔

سर्वाकरेखधीकारोमहायंत्रप्रवर्तनम् ॥ हिंसौषधीनांस्त्र्या  
जीवोऽभिचारोमूलकर्मच ॥ इन्धनार्थमशुष्काराण्डुमाराणां  
मवपातनम् ॥ आत्मार्थचक्रियारम्भोनिन्दितान्नादनंतथा ॥  
६४ ॥ अनाहिताग्नितास्तेयमृगानामनयक्रिया ॥ असच्छा-  
स्त्राधिगमनं कौशीलव्यस्यचक्रिया ॥ ६५ ॥ धान्यकुप्ययशु-  
स्तेयं मध्यपस्त्रीनिषेवरा ॥ स्त्रीशुद्धविद्वत्प्रवधोनास्तिक्यं  
चोपपातकम् ॥ ६६ ॥

۶۴۔ سونا وغیرہ کی پیدائش کا جو مقام ہے بہت حکم حاکم وقت اختیار ہونا پل وغیرہ کا بانی  
دواؤں کا مارنا یعنی کشتہ بنانا اپنی عورت کو کسی بنا کر دوسرے مرد کے حوالے سے جو دولت  
اس سے اوقات بسر کرنا شائستہ ترین سمجھے ہوئے مارن پر لوگ کو کرنا منصفیاد ویر وغیرہ کے  
ذریعے سے کسی کرن کرنا۔

۶۵۔ امید حق کی واسطے کیلے درخت کو گرانا بدون دیتا و پتروں کے مرنے ہی واسطے  
کھانا بنانا بدون خواہش کے ایک دوسرے وغیرہ جو کھانے کے لائق نہیں ہے  
اسکو کھانا۔

۶۵۔ اوجھار ہوتے ہوئے آگن ہو کر ترک کرنا سونا چھوڑ کر چاندی وغیرہ چورانا تیلوں  
یعنی ریش رن دیورن پتروں کو نہ ادا کرنا وید و دھرم شاستر کے خلاف جو شاستر ہے  
اسکو کھانا چنانا یا کرنا۔

۶۶۔ وعایتہ تانیاد و لغیرہ و چارپایہ کا چورانا برہمن کشتی دیشی کی مغربی عورت  
جمل کرنا ستری دشوور و دیشیہ و کشتی انھوں کا مارنا پر لوگ نہیں ہے ایسا سمجھنا یہ  
سب ایک ایک اپ پاکت کہلاتے ہیں۔



रेतःमेकःस्वयोनीयुकुमारीव्यन्यजासुच ॥ मरयुःपुत्रस्यच  
स्त्रीयुशुरुतल्पसमंविदुः ॥ ५८ ॥ गोबधोऽयान्यस्यान्यपार  
वार्यात्मविक्रयाः ॥ युक्तमात्तपितत्यागःस्वाध्यायान्योःसु-  
तस्यच ॥ ५९ ॥ परिबित्तितानुजेऽचूढेपरिवेदनमेवच ॥ तयो-  
र्दानंचकन्यायास्तयोरेवचयाजनम् ॥ ६० ॥ कन्यायादूषणांचै-  
ववार्धुष्यंव्रतलोपनम् ॥ तडागारासदारगामपत्यस्यचवि-  
क्रयः ॥ ६१ ॥ ब्राह्म्यतावान्धवत्यागोभृत्याध्यापनमेवच ॥  
भृताश्चाध्ययनादानामपरायानांचविक्रयः ॥ ६२ ॥

۵۸۔ سگی بہن اور کمٹاری اور چانڈالی اور درکست کی زوجہ اور بیٹے کی زوجہ انھوں کے ساتھ  
جہاں کرنا والدہ کے ساتھ جہاں کرنا بیکے برابر ہے۔

۵۹۔ گھو کو مارنا جو گلیہ کرنا لائق نہیں ہے اسکو گلیہ کرنا دوسرے کی زوجہ جہاں کرنا اپنی  
آتما کو فروخت کرنا گرو اور ناتا اور تپا کو ترک کرنا دیوتوانی اور اگن کی سیوا اور دنیا کو ترک کرنا

۶۰۔ بے شادی بڑے بھائی کے ہونے پر چھوٹے بھائی کی شادی ہو جانا اور ان دونوں  
بھائیوں کو کینیا دینا اور انکو بیکہ کرنا۔

۶۱۔ کینیا کی فرج بین او لگی ڈالکر باعیب کرنا سودیکر زندگی بسر کرنا برہم چاری ہو کر جہاں  
کرنا تالاب و باغیچہ و عورت و بیٹے کو فروخت کرنا۔

۶۲۔ وقت پر جنیو کا سنونا چاچا وغیرہ کی سیوا نہ کرنا دولت لیکر پڑھانا دولت دیکر پڑھنا  
نق وغیرہ جو فروخت کرنا لائق نہیں ہیں انکو فروخت کرنا۔

एवंकर्मविशेषेराजायन्तेसद्गिर्हिताः ॥ जडमूकान्धवधिरा-  
विकृताकृतयस्तथा ॥ ५२ ॥ चरितव्यमतो नित्यं प्रायश्चित्तं वि-  
शुद्धये ॥ निन्द्यैर्हिलसरोर्युक्ताजायन्तेऽनिष्टैर्तेनसः ॥ ५३ ॥  
ब्रह्माहत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वेगनागमः ॥ महान्तियातकान्या-  
हुः संसर्गश्चापितैः सह ॥ ५४ ॥ अन्तर्चसमुत्कर्षेराजगामिच-  
पैस्तुनमः ॥ गुरोश्चात्मीकनिर्वन्धः समानिब्रह्माहत्यथा ॥ ५५ ॥  
ब्रह्मोक्ततावेदनिन्दाकोटसाक्ष्यं सुहृद्वधः ॥ गर्हितानाद्ययो-  
र्जग्धिः सुरापानसमानियद् ॥ ५६ ॥ निक्षेपस्यापहृशानंरा-  
श्वरजतस्यच ॥ भूमिवज्रमशीनांचरुक्कस्तेयसमंस्कृतम् ॥  
५७ ॥

۵۲۔ آدمی اس راہ کھوٹا کام کر کے بھلا لوگوں میں مذمت ہوتا ہے اور جاہل لوگوں کے اندھے دھیرے وغیرہ عیوب کو بانٹتا ہے۔

۳۵۔ ایک پاک ہوئی کے واسطے ہمیشہ رنجت کریں جھوٹے رنجت نہیں کیا ورنہ ت کشن و آگوشیں  
۳۶۔ ہر قسم ہتیا شراب خوری برہمن کا دل اشتہار زیادہ شوناچرانا والدہ سی جماع یہ چار  
مہا پاپ ہیں اعفون کے ساتھ میل و ملاپ کرنے سے پانچویں ان مہا پاپک ہے۔

۵۵۔ بیچ ذات ہو کر کوکم پٹری ذات والے میں اس طرح جو ٹھہر بولنا اور کسی قسم کا دشمنی کر چکے کہنے سے اسکی موت ہو جائے کہ روبرو کہتا اگر تو سے جو ٹھہر بولنا یہ سب ہم ہتھیا کے برابر ہیں

۵۶۔ پڑھے ہوئے وید کو جو ٹھہر وید کی برائی کرنا لاء ہو کر جو ٹھہر بولنا دوست کو مارنا لسن وغیرہ کھانا بٹھا وغیرہ کا کھانا یہ سب شراب نوشی کے برابر ہیں۔

۵۷۔ زما نیت و آدمی و گھوڑا و چاتری و زمین و سیرا و ملن و غفلت کا چوراہا سوچنا چور کے لئے ہے

अकामतः कृतं पापं वेदम्यासेन शुद्धति ॥ कामतस्तु कृतं मोहा-  
 त्यायश्चित्तेऽथ विवर्धे ॥ ४६ ॥ प्रायश्चित्तीयतां प्राण्य देवात्सू-  
 र्वकृतेन वा ॥ न संसर्गं ब्रजेत्स हिः प्रायश्चित्तेऽकृते हि जः ॥ ४७ ॥  
 इह दुश्चरितैः केचित्केचित्पूर्वकृतैस्तथा ॥ प्राप्नुवन्ति सुगता नो-  
 नरारूपविपर्ययम् ॥ ४८ ॥ सुवर्गाचौरः कौनर्य्यमुग्रायः श्याव-  
 दन्तताम् ॥ ब्रह्महासयरो गित्वं दौश्चर्म्यं गुरुतल्पगः ॥ ४९ ॥  
 पिशुनः पौतिनासिक्यं सूचकः पूतिवक्रताम् ॥ धान्यचौरः  
 गह्वीनत्वमातिरेक्यत्सुमिश्रकः ॥ ५० ॥ अन्नहर्ता मयावित्वं-  
 मौक्यं वा गणहारकः ॥ बन्ध्यापहारकः श्वैव्यं पंगुतामश्वहा-  
 रकः ॥ ५१ ॥

۴۶۔ بروں فوہش کے کیا ہوا پاپ وید کی مہارت سے چھوٹتا ہے اور شوق سے جو پاپ کیے  
 وہ انواع اقسام کے پریشانت کر نیسے چھوٹتے ہیں۔  
 ۴۷۔ برلقاضا مقصوم پہلے جنم میں کئے ہوئے پاپ ہی پریشانت کے لائق ہو کر سجنوں کے  
 ساقر بوجہ جن و قیام و بلیگری وغیرہ ملاپ کرے۔  
 ۴۸۔ کوئی آدمی اس لوگ میں کھوٹے کام کر نیسے اھ کوئی آدمی پہلے جنم میں کھوٹے  
 کام کرنے سے بد صورتی کو پاتے ہیں۔  
 ۴۹۔ سو با پورا نیوالا شراب پینے والا برہمن کو بار نیوالا گورو کی عورت سے جلع کر نیوالا  
 سلسلہ بمانہن نا کارہ پیدائش سے سیاہ و نہر آن کشتی روگ ناقص جلد پاتا ہے۔  
 ۵۰۔ چنل خورشادہ سے کام کو جاننے والا و سٹانیہ چورانیوالا ملاوٹ کر نیوالا ایسا سلسلہ  
 برابست بینی و برابست دمن کی عضو کا ہونا اور کسی عضو کا زیادہ ہونا ان عیبوں کو پاتے ہیں۔  
 ۵۱۔ غایہ چورانیوالا جانکر چپٹے وال کپڑا چورانیوالا گھوڑا چورانیوالا سلسلہ سو عام روگ  
 گولگان سفید کوڑھے لنگر اپن کو پاتے ہے

इन्द्रियाण्यशः स्वर्गमायुः कीर्त्तिप्रजाः पशून् ॥ हन्यल्पद-  
क्षिराण्यज्ञस्तस्मान्नल्पधनोयजेत् ॥ ४० ॥ अग्निहोम्यपवि  
ध्याग्नीन्ब्राह्मणाः कामकारतः ॥ चान्द्रायणांचरेन्नासंवीर  
हत्यासमंहितत् ॥ ४१ ॥ येश्वद्वादधिगम्यार्थमग्निहोत्रमुपा-  
सते ॥ ऋत्विजस्ते हि श्वद्वाद्याग्न्यावादिषु गर्हिताः ॥ ४२ ॥ ते  
षांसततमजानां वयस्तान्युपसेविनाम् ॥ यशमस्तकमाक-  
म्यदाता दुर्गाणामन्तरेत् ॥ ४३ ॥ अकुर्वन्विहितं कर्म निन्दितं  
च समाचरन् ॥ प्रशक्तश्चेन्नियार्थेषु प्रायश्चित्तीयते नरः ॥ ४४  
अकामतः कृते यापे प्रायश्चित्तं विदुर्बुधाः ॥ कामकारकतेऽ  
प्याहरे केचुति निरर्शनात् ॥ ४५ ॥

۴۰- تھوڑی دکان والی گئیہ اندری پیش سوگ عمر نکلیاں اولاد چار پائیہ ان سب کو نیت نابو  
کرتی ہے اسلئے تھوڑا دھن والا گئیہ نکرے۔  
۴۱- اگر بوتری بڑھن خواہش سے صبح و شام ہون کرے تو بیٹا مارنے کا پاپ ہوتا ہے اس  
پاپ دور ہونیکے واسطے ایک مہینہ چاندرا بن برت کرے۔  
۴۲- جو بڑھن شودر سے دھن لیکر اگر بوتر کرنا ہے وہ شودری کا رتوج ہوتا ہے اسکو کچھ  
پھل نہیں ہوتا اور وید پڑھنے والے بڑھنوں میں مذمت کھاتا ہے۔  
۴۳- وہ شودر دہیہ دیتے سے اپنے رتوجوں کے ماتھے پر پانون دھو کر نرک کو ترنا ہے  
اور رتوجوں کو کچھ پھل نہیں ہوتا۔  
۴۴- شاستر میں لکھے ہوئے کرم کو نکرے سے اور آئندہ کرم کرنے سے اور اندریوں کے  
مطالب میں بدل مقول ہونے سے آدمی پر اپنیت کرنیکے لائق ہوتا ہے۔  
۴۵- پندتوں نے بڑھن خواہش کے پاپ کرنے میں پشیمت کو کہا اور خواہش سے پاپ  
کرنے میں بھی وید کے حکم سے پشیمت ہے۔

हस्त्रियोवाह्वीर्येरातरेदायदमात्मानः ॥ धनेनवेप्रयच्छेदोतुजय  
होमैर्द्विजोत्तमः ॥ ३४ ॥ विधाताशामितायतामैत्रोवाह्वराउ-  
च्यते ॥ तस्मैनाकुशलं ब्रूयान्नशुक्लागिरमीरयेत् ॥ ३५ ॥ नवे-  
कन्यानयुवतिर्नात्यविद्यो नवातिशः ॥ होतास्यदग्निहोत्रस्य  
नार्तोनासंस्कृतस्तथा ॥ ३६ ॥ नरकेहियतन्त्येतेजुह्वतः सच-  
यस्यतत् ॥ तस्माद्वैतानकुशलोहोतास्याद्वेदपारगः ॥ ३७ ॥ प्रा-  
जापत्यमदत्वाश्वमग्न्याधेयस्यदक्षिरागाम् ॥ अनाहिताग्नि-  
र्भवतिब्राह्मणोविभवेसति ॥ ३८ ॥ पुरायान्यन्यानि कुर्वीत-  
अद्धानोजितेन्द्रियः ॥ नत्यल्पदक्षिरोर्यज्ञैर्यजेतेहकार्यचन  
॥ ३९ ॥

۳۴ - کثیری اپنی قوت بازو سے اور ولشید اور شور و دھون دولت سے اور برہمن جب پاد-  
ہوں سے وقت مضیبت کو بتر کریں۔

۳۵ - جو برہمن تناسل میں لکھے ہوئے کرم کا کر نیوالا اور بیٹے اور شاگرد وغیرہ کو پڑھانے والا  
دیگر بچت وغیرہ کو لکھنے والا اور سب جانداروں سے دوستی رکھنے والا ہے اسکو نام خوب بات  
دعوت کہ نہ کہنا چاہئے۔

۳۶ - کینان اور جوان اور تھوڑے علم والا اور مور کھ لینے بیوقوف اور بیمار اور چنبیو نہ لکھنے والا  
یہ سب وقت صبح و شام اگن ہو کر نہ کریں۔

۳۷ - اگر ان سب کو کریں تو نرک میں جاتے ہیں اور جلی اگن دے لینے جو جہان سے وہ  
یعنی نرک میں جاتا ہے اسلئے جو وید کے پڑھ گیا ہوا اور اگن ہو کر کرم کو جاتے والا ہو ہی جہان  
ہوں کرے۔

۳۸ - برہمن کو سنے والا جو بتر کرے اور کھڑے ہو کر دھون ہو کر ہی ہو تو اگن ہو کر پھل میں کو نہیں پتا

۳۹ - جو آدمی انڑیوں کو جیت کر شتر دھاسے دوسرا پیشہ کرے لیکن تھوڑی دستانہ کی گنہ گری

आपत्कल्पेन यो धर्मो कुरुतेऽनापदि द्विजः ॥ सनाप्रोतिफलं  
 तस्य परत्रेति विचारितम् ॥ २८ ॥ विधेयं च देवेः साध्ये च ब्राह्म-  
 णोऽयमहर्षिभिः ॥ आपत्तुमरणाद्रीतेर्विधेः प्रतिनिधिः कृतः  
 ॥ २९ ॥ प्रभुः प्रथमकल्पस्य यो नुकल्पेन वर्तते ॥ न सांपरायि-  
 कंतस्य दुर्मते विद्यते फलम् ॥ ३० ॥ न ब्राह्मणोऽवेदयंत किंचि-  
 द्वाजनिधर्मवित् ॥ स्ववीर्यशौबतान्शिष्यान्मानवानपका-  
 रिणः ॥ ३१ ॥ स्ववीर्याद्वाजवीर्याच्च स्ववीर्यबलवत्तरम् ॥ तस्मा-  
 द्येनैव वीर्येणानिमुक्तीत्यान्वरीन्द्रिजः ॥ ३२ ॥ श्रुतीरथर्वागि-  
 रसीः कुर्यादित्यविचारयन् ॥ वाक्शस्त्रं वै ब्राह्मणस्थतेन ह-  
 न्यादरीन्द्रिजः ॥ ३३ ॥

۲۸۔ وقت مصیبت بنیں ہر اور چیز اس وقت مصیبت کے دھوکہ کرنا ہے وہ پر لوگوں میں اس کے پھیل کو نہیں پاتا۔

۲۹۔ موت سے خوفناک شوق دلو و سادھو گن براہمن دیر ریش لوگ ان سمجھنے والے وقت نصیبت میں اچھے دھرم کے خلاف عمل کیا ہے۔

۳۰۔ مقدمہ دہوم کے کرنے میں صاحب طاقت ہو کر خلافت دہوم کرنیوالا پر لوگ میں اس خلافت دہوم کا پھل سنیں پاتا۔

اسلام۔ دھرم کو جاننے والا براہمن راجہ سے کچھ کہے لکھا اپنی قوت سے ایکاری آویس کو سزا  
دلوں۔

۳۳۔ راجہ کے پیر اکرم سے اپنا پیر اکرم بڑا ہے اسلئے براہمن اپنے پیر اکرم سے دشمنوں کو دوستوں سے

۳۳۔ متعجب و انکراش نے جو مارن پریوگ کہا اسکو کرے سہین کچھ بچا کرے بہن کی بانی سی اختیار کرے اس سے وہ بھوکو مارے۔

तस्य भृत्यजनं ज्ञात्वा स्वकुटुम्बान्महीपतिः ॥ श्रुतशीले च  
 विज्ञाय च त्तिं धर्म्या प्रकल्पयत् ॥ २२ ॥ कल्पयित्वाऽस्य च-  
 त्तिं चरसेदेनं समन्ततः ॥ राजा हि धर्मवड्भागतं समात्मा प्रीति  
 रक्षितात् ॥ २३ ॥ नयन्तार्थधनं शृङ्गादिप्रौभिसेत कर्हिचित् ॥  
 यजमानो हि भिसित्वा चाराडालः प्रेत्य जायते ॥ २४ ॥ यजार्थ  
 मर्थं भिसित्वा योन सर्वं प्रयच्छति ॥ सयाति भाषतां विप्रः का-  
 कतां वा शतं समाः ॥ २५ ॥ देवस्वंत्राहारास्ववालो भेनोपहि-  
 नस्ति यः ॥ सयापात्मा परो लोके शुभोच्छिद्ये न जीवति ॥ २६ ॥  
 इच्छिवैश्वानरो नित्यं निर्वयेद्वययये ॥ क्लृप्तानां पशुसोमा-  
 नां निष्कत्यर्थमसम्भवे ॥ २७ ॥

۲۲- ۱۱۔ برہمن کے نوکر و عیال اطفال و ید خوانی کی عادت ان سب کو جان کر دھرم سے  
 شمول و جہ سماش کو مقرر کرے۔  
 ۲۳- ۱۱۔ برہمن کی وجہ سماش کر کے اسکی حفاظت چار و طرف سے کرے اس حفاظت سے  
 برہمن جو دھرم کرے گا اسکا چھٹھو ان حصہ راجہ پاویگا۔  
 ۲۴- ۱۱۔ برہمن یگیہ کے لئے شودر سے کبھی دھن نہ مانگے اگر مانگ کر اس دھن سے یگیہ  
 کرے تو دوسرے جنم میں چانڈال ہوتا ہے۔  
 ۲۵- ۱۱۔ یگیہ کیوں اسے بھیکہ مانگ کر دولت فراہم کر کے تمام دولت کو یگیہ میں دے لگا دے تو سوا  
 جنم تک بھاس نام پرند اور گوا ہوتا ہے۔  
 ۲۶- ۱۱۔ جو آدمی طلے سے برہمن کی درپہ اور دیوتا کی درپہ برباد کرنا ہو وہ پانی پر لوک میں گدے  
 پرند کے پس خوردہ سے زندگی بسر کرتا ہے۔  
 ۲۷- ۱۱۔ پس یگیہ و سوم یگیہ تمام سال میں ایک مرتبہ کرنا چاہئے اگر یہ نہ ہو سکے تو اسکی پرستش  
 کے لئے اخیر سال پر اگن دیوتا کی یگیہ کرے۔





योर्विश्वः स्याद्वत्तपशुर्हीनः क्रतुरसौमयः ॥ कुरु स्वात्तस्य तद्व-  
 व्यमाहरेद्यज्ञसिद्धये ॥ १२ ॥ आहरेत्वीशिवा इवा कामं शु-  
 द्रस्यवेशमनः ॥ नहिंशूद्रस्य यज्ञेषु कश्चिदस्ति यरिग्रहः ॥ १३ ॥  
 ॥ योऽनाहिताग्निः शतयुरयज्वा च सहस्रगुः ॥ तयोरयिकु-  
 रुंवास्यामाहरेद्विचारयन् ॥ १४ ॥ आदानं नित्याद्यादात्त-  
 राहरेदप्रयच्छतः ॥ तथायशोस्य प्रयते धर्मश्चैव प्रवर्धते ॥  
 ॥ १५ ॥

۱۲- تو جو دلشہ پاک یگیہ اور سوم یگیہ کرتا ہو اور بہت چار پایہ (یعنی گنو وغیرہ) رکھتا ہو اس کے  
 گھر سے اس ایک یعنی سامان کے لائق دولت کو زور سے یا چوری سے یگیہ کرے تو الایوب کے  
 ۱۳- جب یگیہ کے دوا لگ (یعنی سامان) خواہ تین ایک ہر دن دریا بہ کے پورے تین  
 ہوئے اور دلشہ سے بھی دھن بہن لےتا تو سود کے گھر سے زور سے یا چوری سے دھن لینا  
 منع بہن ہے -

۱۴- جو شخص اگن ہو تری بہن ہے اور تو گنو پاس رکھتا ہو یا یگیہ بہن کرتا ہو ہر گنو رکھتا ہو  
 دونوں کے گھر سے یگیہ کا نام پورا ہونیکے واسطے دھن لیوے اس میں کچھ بھاری نہ کرے -  
 ۱۵- جو براہمن ہر روز دان لیتا ہے اور بادی دکان و تالاب بہن کھدا تا ہو اور یگیہ  
 بہن کرتا اور دان بہن دیتا ہے اس سے یگیہ کا بوبیک پورا ہونے کے واسطے دھن مانگا  
 اور وہ بہن دیتا ہے تو زور سے یا چوری سے اس کے گھر سے دھن لیوے اس سے لینے دے  
 کی شہرت ہوتی ہے اور دھرم بڑھتا ہے -

धनानितुयथाशक्तिविप्रेषुप्रतिपादयेत् ॥ वैदवित्तुविविक्ते-  
 सुप्रेत्यस्वर्गसमश्नुते ॥ ६ ॥ यस्यत्रैवार्थिकंभक्तंयथासंभृत्यव-  
 क्तये ॥ अधिकांवापिविद्येतसरोमंपातुमर्हति ॥ ७ ॥ अतः  
 स्वल्पीयसिद्धयेयःसोमंपिवतिदिजः ॥ सपीतसोमपूर्वोऽ-  
 पिनतस्याप्नोतितत्कलम् ॥ ८ ॥ शक्तः परजनेदातास्वजने-  
 दुःखजीविनि ॥ मध्वापातोविवास्यादःसधर्मप्रतिरूपकः ॥  
 ९ ॥ भृत्यानामुपरोधेनयत्करोत्योर्ध्वदैहिकम् ॥ तद्भवत्यसु-  
 खोदकजीवतस्यमृतस्यच ॥ १० ॥ यजश्चेत्यतिरुद्धःस्यादे-  
 कोनांगेनयज्वनः ॥ ब्राह्मणास्तुविशेषेराधार्मिकेसतिरा-  
 जनि ॥ ११ ॥

- ۶- جو برہمن زن و فرزند کی پرورش میں ہوا اور دیگر بڑھتا ہوا راجہ ایسی برہمن کو اپنی قیادت  
 کے موافق دولت و دولت دہ راجہ اس لوگ اور پرلوک کو حاصل کرتا ہے۔  
 ۷- جس آدمی کے پاس نوکر و زن و فرزند وغیرہ کو برسیا رہنے والے کے خراج کے لائق تین  
 سال تک کھانے کے واسطے غلہ موجود ہے وہ سوم یکیدہ کرشمے لائق ہے۔  
 ۸- اس سے کم دولت رکھنے والا سوم یکیدہ کرے تو اسکا بچل بنین پاتا ہے۔  
 ۹- غیر آدمیوں کو غلہ دینے میں صاحب نقد درہم اور اپنی عیال و اطفال کو کھانا سنین  
 دینا اور دس عیال و اطفال تکلیف سے بسر کرتے ہیں ایسا آدمی دھرم کرنیوالا سنین ۵  
 پہلے نیکیاں ہی ہتی ہے پیچھے ترک ملتا ہے۔  
 ۱۰- جو شخص نوکر و چاکر و زن و فرزند وغیرہ کو دکھ و دیکر پرلوک کے واسطے دان وغیرہ کرتا ہے  
 دان اسکی زندگی تک ہر دھرم شیکہ دیتے والا ہے۔  
 ۱۱- دھرم اتار راجہ کے موجود ہونے جس برہمن یا کستری یکیدہ سام گری کا کوئی ایک  
 سامان طیارہ ہو۔

ساتتانیکنیہما سارا مध्यمं सर्ववेदसम् ॥ शुर्वर्थपितमात्रं  
 स्वाध्यायार्थ्यपतापिनः ॥ १ ॥ नवैतान्नातकान्विद्याद्वाहम  
 न्धर्मभिस्तु कान् ॥ निःस्वैभ्यो देयमेतेभ्यो दानं विद्या विशेषतः  
 ॥ २ ॥ रुतेभ्यो हि हिजात्र्येभ्यो देयमन्नं सदक्षिराम् ॥ इतरेभ्यो च  
 हिर्वैदिकतानं देयमुच्यते ॥ ३ ॥ सर्वरत्नानि राजा तु यथा ह प्र  
 तिपादयेत् ॥ ब्राह्मणान्वेदविद्वद्यथार्थं वैषदक्षिराम् ॥ ४  
 ॥ कृतदारोऽपराधाराभि सित्वा योऽधि राच्छति ॥ रतिमात्रं  
 फलान्तस्य इत्यहोस्तु सत्ततिः ॥ ५ ॥

۱۔ شادی کی خواہش کر نیوالا جو شہوم وغیرہ بگیہ کی خواہش کر نیوالا سانس و حسن و شاد  
 بسوخت نام بگیہ کو کر نیوالا و دبا کر دونا تپا ان تپون کو کھانا و کپڑا سینے والا وقت پڑھنے  
 و بیکے کھانے اور کپڑے کی خواہش کر نیوالا بیمار

۲۔ یہ تو براہمن نہایت کمالتیے ہیں لیکن برہم چاری کمالتیوں اور دھوم بھٹکا کا بھلا  
 رکھتے ہیں یہ سب بے رزہوں تو انکی دوا کے لائق سونا وغیرہ دینا چاہیے۔

۳۔ یہ تو براہمن افضل ہیں انکو بیدی کے اندر غلح و کٹنا دینا چاہیے اور جو براہمن  
 سچو کمین انکو بیدی کے باہر طیار کھانا دینا کہتے ہیں۔

۴۔ راہ دید پڑھنے والے براہمن کو اوسکی دوا کے لائق سب ترن دیو اور بگیہ کے  
 واسطے بھی دکتا دیو ہے۔

۵۔ پہلی عورت موجود ہوا دھیکتا سے دولت فراہم کر کے اس روپیہ سے دوسری شادی  
 کرے تو اسکو صرف جماع کا لطف ملتا ہے اور اولاد اسکی کی ہے جسے دولت دی۔

۶۔ چونکہ اس دھیکتا میں پرستشیتوں کو بیان کیا جا چکا اس واسطے پہلے ان براہمن کو بیان کیا جو کہ ان پنے کے لئے  
 ہیں۔

एतेचतुर्णावर्णानामापहर्माः प्रकीर्तिताः ॥ यान्धर्म्यगच्छति  
यत्तो जन्निपरमांगतिम् ॥ १३० ॥ यद्यधर्मनिधिः कलनश्चातु-  
र्वर्गस्य कीर्तितः ॥ अतः परंप्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तविधिं शुभम्  
॥ १३१ ॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभ्युद्योक्तायांसंहितायां  
दशमोऽध्यायः १०

۱۳۰۔ وقتِ مصیبت میں چاروں کی واسطے اس دھرم کو کہا جس دھرم کے  
کرنے سے پر مکت کو پاتا ہے۔  
۱۳۱۔ چاروںوں کا یہ طریق دھرم کہا اس کے بعد پرستش (یعنی کفارہ) کے نیک  
طریق کہتے ہیں۔

من جی کا دھرم ستر بھگ جی کی سنگھ کا  
دسوان ادھیا سماپت ہوا۔

نہ شریکات کیک چنن سہ سہا ۱۲۵ ۱۱۔ نا سہا دیکارو دہم  
 ۱۲۶ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۲۷ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۲۸ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۲۹ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۳۰ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۳۱ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۳۲ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۳۳ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۳۴ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۳۵ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۳۶ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۳۷ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۳۸ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۳۹ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۴۰ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۴۱ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۴۲ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۴۳ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۴۴ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۴۵ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۴۶ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۴۷ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۴۸ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۴۹ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔  
 ۱۵۰ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔ ۱۵۱ ۱۱۔ سہا دیکارو دہم ۱۱۔

۱۲۶۔ شودر کو کسین غیر کھانے سے پاب نہیں ہوتا اور شودر کو جینیو وغیرہ سنسکار  
 بھی نہیں ہے اور اگر وہ شودر وغیرہ دھرم کا اور جکار بھی نہیں ہے یا کہ بیکہ وغیرہ دھرم کی  
 مخالفت نہیں ہے دیہات تو کہہ آئے ہیں مگر شلوک آئینہ کیوں اسلئے اصل بات کا ظاہر  
 کرنا ہے۔

۱۲۷۔ اپنے دھرم کو جاننے والا دھرم کی خواہش کرنا والا دھرم کے ناقص آچار کرنا والا جو  
 شودر ہے وہ شکار سنسکار سے بچ گیا کہ کو کرے اور انکو ترک کرے تو اس کو کین نہیں مانتا  
 حاصل کرتا ہے۔

۱۲۸۔ دوسرے کے گن کی نیند اٹھ کرنا لا شودر جس طرح بھلا لوگوں کے آچرن کو  
 کرتا ہے اسی طرح اس کو کسین بڑا کہتا ہے اور یہ لوگ کین سنوگ پاتا ہے۔

۱۲۹۔ شودر سمر تھ بھی ہو مگر دولت جمع کرے کیونکہ شودر دولت پا کر براہمن ہی کو تکلیف  
 دیتا ہے۔

۱۲۱۔ شتو در برہمن کی سیوا سے اوقات گزاری نہ کر سکے اور دوسری جیو کا کی جو اس میں کرے  
 تو کشتی کی سیوا یا دو تہند ویشی کی سیوا کرنے اوقات بسر کرے۔  
 ۱۲۲۔ شتو در شتورگ یا جیو کا و شتورگ دونوں کیو اپنے برہمن کی سیوا کرے یہ شتو در برہمن کی  
 سیوا کر نیوا سے اس طرح عالم میں شتو رہنا لیا ہے کہ گویا شتو در گریہ لائن سب کا مون کو  
 کر چکا۔  
 ۱۲۳۔ برہمن کی سیوا شتو در کا برا کو کم ہے اسکو چھوڑ کر او جو کہ کتاب ہے وہ پتھل ہے۔  
 ۱۲۴۔ برہمن اپنے خد شتو در کی سیوا میں طاقت اور کام کرنے میں خوشی اور دن و  
 فرزند وغیرہ کی غذا اور اولاد کا خج ان سب باتوں کو دیکھ کر اپنے گھر سے اسکے لائن جیو کا کو  
 بخوڑ کرے۔  
 ۱۲۵۔ جو شتو در اپنا خد شتو در اور اپنی پناہ میں ہے اسکو جو ٹھانڈا اور پرانا کپڑا لیر سار کا  
 دھانیہ دیرانی چار پائی دگھو کا پرانا سباب دینا چاہئے۔

विद्याशित्यं सत्तिसेवागोरस्यं विपरीतः कृषिः ॥ धृतिर्मेख्यं  
कुसीदं च दशजीवनहेतवः ॥ ११६ ॥ ब्राह्मणाः सत्रियो वापि  
प्रद्धिर्नैव प्रयोजयेत् ॥ कामन्तु स्वलुधर्मार्थं दद्यात्पापीयसे  
लपिकाम् ॥ ११७ ॥ चतुर्थमावदानौऽपि सत्रियो भागमापहि ॥  
प्रजारसन्पश्यंश्च क्वचित्त्विद्यात्यतिमुच्यते ॥ ११८ ॥ स्वधर्मो  
विजयस्तस्य नाहवे स्यात्पराहः सुखः ॥ शस्त्रे वा वैश्यान् स  
त्वाधर्ममाहारयेद्वलिम् ॥ ११९ ॥ धान्येष्टमं विशांस्तुल्यं विशां  
कार्योपराजम् ॥ कर्मोपकराणां ह्यद्राः कारवः शिल्पिनस्त-  
था ॥ १२० ॥

۱۱۶۔ دیکھنے والے کے سوا دیکر علوم اور کھٹا وغیرہ مزدوری و سیکڑا پرورش کو دشمن  
و فرخت و کھیتی کرنا و دھیرج و بھیکہ و بیاج لینا یہ دس سبب اوقات گزاری میں بگڑت  
مہیت میں جو وہ معاش جسکو منع ہے وہ آدے وقت مصیبت میں اس معاش کو اختیار  
۱۱۷۔ برہمن کشتی بیاج نہ لیوین یا برا کام کر نیوالے کو دھرم کے واسطے تھوڑا سی بیاج  
لیکر رز مطلوبہ دیوین۔

۱۱۸۔ کشتی اپنی طاقت کے موافق پرورش رعایا کرتا ہوا وقت مصیبت میں رعایا  
کو چھٹا حصہ لیکر باپ سے چھوٹتا ہے۔

۱۱۹۔ سلوک سے فتح کا حاصل کرنا رائی میں نہ بھاگتا یہ دونوں کام راجہ کا دھرم اور  
اسکون سے دیشیوں کی حفاظت کر کے اسے دھرم کے موافق محمول لیوے۔

۱۲۰۔ بحالت وقت مصیبت وہاں زمین دیشیوں سے بمنزل روپیہ برہمن میں اٹھوان حصہ  
لیوے اور نہایت وقت مصیبت میں تو چھٹا حصہ کہ اسے پھین وقت مصیبت نہ تو لیوے  
حصہ لیوے نہ ناچار پاپ پھول کا پچاسواں حصہ لیوے اور وقت مصیبت نہ تو لیوے نہ حصہ لیوے نہ شود و  
رسوین نہ بنیر الا و برہمن دیشیوں سے وقت مصیبت میں محمول نہ لیوے لیوے اس کے کام کرالے۔

شیلو مہارکتی دہی تہا جیو جیو تہا تہا ॥ प्रतिग्रहाञ्जितः  
 श्रेयान्ततोप्युद्धः प्रशस्यते ॥ ११२ ॥ सीरहिः कुप्यमिच्छद्भि-  
 र्धनं वाप्यधीयति ॥ याचः स्वात्मा त कैविप्रैरहित्वा गम-  
 हति ॥ ११३ ॥ अकृतं चक्षता त्सेनाज्ञौ राजा विक्रमेव च ॥ हिर-  
 रायं धान्यमन्तं च पूर्वपूर्वमदोषवत् ॥ ११४ ॥ सप्तवित्तागमा-  
 धर्म्या रायो लाभः क्रयोजयः ॥ प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्यतिग्र-  
 हसवच ॥ ११५ ॥

۱۱۲- براہمن اپنی جو کا سے اوقات گزاری کر کے تو شل اور انچھ سے اوقات گزاری کر  
 دان سے شل اور شل سے انچھ برابر ہے -

۱۱۳- بے زر برہمن دھرم و عیال و اطفال ان و دبا تون کیواسطے تکلیف پا کر سوا  
 سونا و چاندی کے غلو دیکڑ اور بلیک پیو واسطے سونا و چاندی کو بھی اس کشتی سے مانگے  
 جو کشتی کے موافق عمل نہ کرتا ہوا درجہ نجل سے دینے کے خواہش نہ کرے اسکو ترک کرے -

۱۱۴- زراعت رکھنے والے کھیت سے بدون زراعت رکھنے والے کھیت کا دان لینا بڑا  
 ہے اور گلو دیکڑ و بھیر و سونا و غلو و دان انھوں میں پہلا پہلا دوسرے دوسرے بے دوش ہے  
 اسواسطے اول اول کے ہونے میں دوسرے دوسرے کو لینا چاہیے -

۱۱۵- تقسیم زمین ملا زمین میں و فیہ ملا جو خرید کیا گیا جو خرچ سے ملا جو ہوا کر نیسے ملا جو کام کر کے  
 ملا جو اچھے آدمیوں سے دان لینے سے ملا ان سات قسم کی دولت کا ملنا دھرم سے شامل ہے



भरद्वाजः सुधार्त्तस्तु सपुत्रो विजने वने ॥ वल्लीर्गाः प्रतिग्रहा हव-  
धोस्तस्मात्समाहृतः ॥ १०७ ॥ सुधार्त्तश्चाक्षुसभ्यागाद्विश्वामि-  
त्रः प्रवजाघनीम् ॥ चराडालहस्ता राशायधर्माधर्मविचक्षणाः  
॥ १०८ ॥ प्रतिग्रहाद्याजनाद्वातथैवाध्यापनादपि ॥ प्रतिग्रहः  
प्रत्यवरः प्रेत्यविप्रस्यगर्हितः ॥ १०९ ॥ याजने ध्यापने नित्यं क्रि-  
येते संस्कृतात्मनाम् ॥ प्रतिग्रहस्तु क्रियते श्वद्वारादप्यन्यजन्मनः  
॥ ११० ॥ जपहोमैरप्येत्येनो याजनाध्यापनैश्चतस्रम् ॥ प्रतिग्रहनि-  
मित्तस्तुत्यागो न तपसैव च ॥ १११ ॥

۱۰۶- بھروان رش بڑے تپشوی نے بھوکھ سے دُکھی ہو کر سچ آ بیٹے کے بن میں پڑھ  
نام پڑھی سے بہت کمون کا دان لیا۔

۱۰۸- وشنو منتر رش دھوم اور دھوم کے جاننے والے نے بھوکھ سے دُکھی ہو کر چاندل کے  
ہاتھ سے کتہ کی ران کو لیکر کھانے کو اسٹلے تجویز کیا۔

۱۰۹- برہمن کو وقت مصیبت نہونے میں لگیہ کرانا اور پڑھانا ان دونوں کاموں کے وسیلے سے  
دان لینا پر لوگ بین خدا کے قابل ہے۔

۱۱۰- اوپر کہی ہوئی بات میں یہ سب کچھ مصیبت یا غیر مصیبت میں برہمن و کستری و دیگر  
سناریوں کو پڑھانا اور لگیہ کرانا ہوتا ہے اور دان لینا تو بیچ ذات شود سے بھی ہوتا ہے  
اس لیے ان دونوں سے زیادہ خدا کے قابل دان لینا ہے۔

۱۱۱- لگیہ کرانے اور پڑھانے سے جو پاپ ہوتا ہے وہ جپ اور ہوم سے جاتا ہے اور دان  
لینے سے جو پاپ ہوتا ہے وہ تپ و دان کی چیز کے ترک سے جاتا ہے۔

سर्वतः प्रतिपक्षीयाद्वाह्यरास्वनयंगतः ॥ यवित्रंदुष्यतीत्ये-  
तद्धर्मतो नोपपद्यते ॥ १०२ ॥ नाध्यायनाद्याजनाद्वागर्हिता-  
द्वात्रतिग्रहात् ॥ शोधोभवति विप्राणां ज्वलनाम्बुसमाहिते ॥  
१०३ ॥ जीवितात्ययमायनो योऽन्मत्तिथतस्ततः ॥ आका-  
शमिव यं केन न स पापेन लिख्यते ॥ १०४ ॥ अजीगर्तः सुतं हन्तु-  
मुपास्यर्षद्भुक्षितः ॥ न चालिख्यत पापेन सुत्यतीकारमाच-  
रन् ॥ १०५ ॥ श्वमांसमिच्छन्नात्तोत्तुंधर्माधर्मविचक्षणाः ॥  
प्राराणानां परिरक्षार्थं चामदेवो न लिप्तवान् ॥ १०६ ॥

۱۰۲ - برہمن وقت مصیبت میں چاروں طرف سے دان لیجے جس طرح یہ بات دھرم سے پیدا  
ہوئی کہ گنگا وغیرہ ندی کو دہش لگتا ہے -

۱۰۳ - اسی طرح پڑھانا کیونکہ کرانا سنا کے لائق آدمیوں کے دھن لینا بھوک سے برہمن کو  
دوش نہیں ہوتا کیونکہ برہمن جل اگن کے برابر ہے -

۱۰۴ - جو برہمن وقت مصیبت میں آدھواؤ دھوتے بھوجن کرتا ہے وہ پاپ آلودہ نہیں  
ہوتا جیسے آکاش کچ میں بھی ہے لیکن اس سے آلودہ نہیں ہوتا -

۱۰۵ - اسی گرت رس نے بھوکھ سے دیکھی ہو کر اپنے پیٹے شونہ سب کو بجا اور یکے میں تنگ  
لیا اور بھوکھ دور کرنے کے واسطے پیٹے کو یکے کے سون میں بانڈھ کر مارنے لگا لیکن پاپ  
آلودہ نہیں ہونے یہ بات رگ وید کے برہمن میں شونہ سب کی کتنی میں ظاہر ہے -

۱۰۶ - بادیوریش دھرم اور ادھرم کے جاننے والے بھوکھ سے دیکھی ہو کر حفاظت جان  
کیواسطے کتہ کا گوشت کھانے کی خواہش کرنے پر بھی پاپ آلودہ نہیں ہوتے -

یو لوبھار دھرمو جاتھ جیو تھکھ کرمیہ : ॥ تہا جانیہ نہ ک-  
 تھاسیہ پرمے پراسے ॥ ۱۰۵ ॥ نرے سبھرمو ویگروا نہ پارس-  
 سھنوتھ : ॥ پرمے راجیو تھسھ : پتتیا تین : ॥ ۱۰۶ ॥  
 ویشیو : ॥ جیو تھسھ راجیو تھسھ : پتتیا تین : ॥ آنا چرن-  
 کھاسیہ نیو تھتھ شکتیا نہ : ॥ ۱۰۷ ॥ آنا کھو تھسھ سھ-  
 دھ : کھتھ دھجھنا نہ : ॥ پھہا تھسھ پھاسو جیو تھکار کھ-  
 کرمیہ : ॥ ۱۰۸ ॥ یہ : کرمیہ : پھریتھ : سھسھ تھجھ-  
 تھ : ॥ تھ-  
 نیکار کھ کھاسیہ شکتیا نیو تھ-  
 تھ : ॥ ۱۰۹ ॥ ویشی-  
 تھسھ تھ تھسھ : سھسھ تھسھ :  
 تھ تھسھ : ॥ ۱۱۰ ॥

۹۶ - بیخ ذات والا طبع سے بڑوں کے کرم سے اوقات گزاری کرے تو راجہ اسکو  
 بے رز کر کے جلد اپنے ملک سے نکال دے -

۹۷ - اپنا دھرم گن سے علیحدہ بھی ہو تو اسکو کرنا چاہئے دوسرے کا دھرم بہت اچھا تو بھی  
 اسکو نکرنا چاہئے دوسرا دھرم کرنے سے جلد ذات سے تھتھ ہونا ہے -

۹۸ - دیش اپنے کرم سے اوقات گزاری کرے تو شہر کے کرم سے اوقات گزاری کرے  
 اور جو چیز کر نیکی لائق نہیں ہے اسکو نہ کرے -

۹۹ - ستور و جھان کی سیوا کرے اور اسکے زن و فرزند جو کھ سے دیکھیں تو بہتین  
 کر نیوالوں کے کام سے اوقات نہ کرے -

۱۰۰ - جن کا تھن سے دو جھان کی سیوا ہو سکے وہ کام (یعنی درد و گری و مصوری وغیرہ  
 انواع اقام کے کام) کرے -

۱۰۱ - جو برہمن ویشیہ کے کام کو نہ کرے اور جیو کا سے تکلیف پائے اپنے مارگ میں قائم ہووے  
 اس دھرم کو کرے جو آگے کہینگے -

भोजनाभ्यंजनाह्नाद्यव्यत्युत्कृतेतिलैः ॥ कृमिभूतः श्वविष्टा  
यां पितृभिः सह मज्जति ॥ ६१ ॥ सद्यः पतति मांसेन लासया ल-  
वरो न च ॥ श्वहेरा मृशी भवति ब्राह्मणाः क्षीरविक्रयात् ॥ ६२  
॥ इतरेषां नृपरायाणां विक्रयार्हिह कामतः ॥ ब्राह्मणाः सप्त-  
रात्रेण वैश्यभावं नियच्छति ॥ ६३ ॥ रसार्सेर्निमातव्या न त्वेव  
लवणार्सेः ॥ कृतान्नं चाकृतान्नेन तिलाधान्येन तत्समाः ६४  
जीवेदं तेन राजन्यः सर्वेणाप्यनयंगतः ॥ न त्वेन ज्यायसी चेत्सि-  
मभिर्मन्येत कर्हिचित् ॥ ६५ ॥

۹۱۔ جو شخص معوجہ و باطن و دان یہ تین کام چھوڑ کر دوسرا کام مل سے کرے وہ کثیر الہام کر  
مع اپنے بزرگوں کے کلمہ کے غلیظ ملین غرق ہوتا ہے۔

۵۲- گوشت اور نمک اور لاکھ کے بچنے سے جلد تپت ہو تا ہے (یعنی اپنے دل کے درجہ سے گر جاتا ہے) اور دودھ بچنے سے تین دن میں شودر بھاؤ کو پرست ہو تا ہے۔

۹۴۔ برہمن خواہش دل دوسری چیز دے فروخت کرنے سے سات رات میں دلشید  
 ہوا کو براہین بتواتے۔

۹۴- رُس لُنی گرو و غیرہ کو لکھی و غیرہ سے بتا دیا کہ اگر تا وہ جب کہ اور نمک کو دوسرے رُس کے ساتھ تبدیل کرنا چاہتے اور بدون بنائے ہوئے غلہ کو تیار سے ہوئے غلہ سے اور تل کو و مہان سے تبدیل کرنا چاہتے مگر وہ بتا دیا کہ وزن میں برابر ہو۔

۹۵۔ کستری وقت نصیحت آنے پر جو کام قومہ بالا سے اوقات گزاری کرے لیکن  
 ٹرون کی جو کام سے اوقات گزاری کا غور کبھی کرے۔

सर्वानुरागानपोहेतकतान्नंचतिलैः सह ॥ अश्मनोत्तवरां चै-  
वपशवोमचमासुयाः ॥ ८६ ॥ सर्वचतान्नवरक्तंशाशाक्षीमावि-  
कानिच ॥ अपिचेत्सुरक्तानिफलमूलेतथीयथीः ॥ ८७ ॥ अ-  
प. शस्त्रंविमंसांसोमंमन्त्रांश्चसर्वशः ॥ क्षीरंक्षीरंद्रधिघृतंते-  
लंमधुगुडंकुशान् ॥ ८८ ॥ आरायाश्चपशून्सर्वानंद्विशांश्चन-  
यांसिच ॥ मयनीलींचलाक्षांचसर्वांचैकशपांस्तथा ॥ ८९ ॥  
काममुत्पाद्यकथ्यान्मुखयमेवक्षयीवतः ॥ विजीशीतति-  
तान्मुद्रान्धमार्थमचिरस्थितान् ॥ ९० ॥

۸۶- سب رس اور سترئون مع تل و پتھر و نمک و چار پایہ آدمی ان سب کو نہ بچھین رس کی کشت  
سے نمک کی مالفت ثابت و پتھر و نمک کی ممالفت کی تو عیب کی عظمت ظاہر نہ ہو سکے واسطے  
کہا وہ بھی پڑ پخت کی پڑائی کی واسطے سے اس طرح ان کی مالفت علیحدہ کو بھی لانا چاہیو۔  
۸۷- چارچہ سترخ و سن بھی پھر ان تینوں سے جو چارچہ طبیا ہو تا ہو وہ سفید ہو خواہ  
سترخ ہو و پھل ہو و ادویہ۔

۸۸- پانی بہتھیکار زہر گوشت سوم لیا خوشبو یات و دودھ دہی شہد کھی تیل گوم کوکٹ  
۸۹- خشکی چو پایہ و اڑھ و اسے جاتوریجے شیر و غیرہ پر نو شراب میل لاکھ ایک کھو دال دیں  
سب کو نہ بچھین۔

۹۰- کھیتی کرتی والا کھیتی میں تل کو پیدا کرے اور وہ تل شہد و ہوت دن بھر رخ رہا ہو  
اسکو دھرم کے واسطے نیچے۔



यराणास्तु कर्मणामस्य श्रीशिकर्माणिजीविका ॥ याजनाध्या-  
पनाचैव विशुद्धाश्च प्रतिग्रहः ॥ ७६ ॥ अयोधर्मानि वर्तन्ते ब्राह्म-  
णास्तस्मिन् प्रति ॥ अध्यापनं याजनं च द्वितीयश्च प्रतिग्रहः ॥ ७७  
वैश्यं प्रति तथैवैते निवर्तन्ति स्थितिः ॥ न तौ प्रति हि तान् ध-  
र्मान्मनुराह प्रजापतिः ॥ ७८ ॥ शास्त्रास्त्रभूतं सचस्य वशिष्ठा-  
युक्कविर्विशः ॥ आजीवनार्थं धर्मस्तु दानमध्ययनं यजिः ॥ ७९  
वेदाभ्यासो ब्राह्मणा स्य सत्रियस्य च रक्षणा ॥ वार्त्ता कर्मैव वैश्य-  
स्य विशिष्टानि स्वकर्मसु ॥ ८० ॥

۷۶- ان چتر کرمون مین تین کرم دینے پڑھنا اور یگیہ کرنا اور پاک آدمیوں سے دان لینا  
حصول معاش کے لئے ہیں۔

۷۷- برہمن سے آگے لینے کستری پڑھنا اور یگیہ کرنا دان لینا ان تینوں دھرموں  
کرنیکا اور حکاری ہیں۔

۷۸- سبطرج ویشیہ مین بھی دو تینوں کرم موقوف ہو چکے ہیں لیکن وہ بھی ان کرموں کے  
کرنیکا اور حکاری ہیں ہے یہ مر جاوے کستری اور ویشیہ دونوں کے واسطے ان دھرموں  
کو پر جا پت مین جی نئے مین کہا ہے۔

۷۹- کستری لینے بھیکار دے کر لینے جو کستری بھیکر چلا یا جا ان دونوں کا دھرم کرنا کستریوں  
کا کرم ہے اور سبطرج پار کرنا اور گتو وغیرہ کو پر دیش کرنا اور کھیتی کرنا ویشیہ کا کرم ہے اور پڑھنا اور  
یگیہ کرنا اور دان دینا یہ دھرم کستری اور ویشیہ دونوں کا ہے۔

۸۰- اپنے اپنے کاموں مین ایک ایک افضل کرم غنیوں کا ہے لینے برہمن کو پڑھنا کستری  
کو حفاظت عالم کرنا ویشیہ کو بیوپار کرنا۔

यस्माद्भिजप्रभावेरातिर्यजाः ऋषयोऽभवन् ॥ पुजिताश्चप्रश-  
स्ताश्चतस्माद्भिजप्रशस्यते ॥ ७२ ॥ अनार्यमार्त्यकर्माणामा-  
र्यचानार्यकर्माणाम् ॥ सम्यधार्याव्रवीद्धातानसमीनास-  
माविति ॥ ७३ ॥ ब्राह्मणाब्रह्मयोनिस्यायेस्वकर्मायवस्थि-  
ताः ॥ तेसम्यगुपजीवेयुः षट्कर्माणायथाक्रमम् ॥ ७४ ॥  
अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा ॥ दानं प्रतिग्रहश्चैव षट्-  
कर्माण्ययजन्मनः ॥ ७५ ॥

۷۲ - تخم کی فضیلت سے ہرنی سے پیدا شدہ گی ریش وغیرہ برہم ریش پوچنے کے لائق ہوئے  
اسوجہ سے تخم بڑا ہو (یعنی درمیان تخم و ذرت کے اونچے تخم والی ذات افضل ہو اس بات کو  
جاننا چاہیے۔

۷۳ - بیج ہے اونچ کا کام کرنا ہے اور اونچ ہے بیج کا کام کرتا ہے ان دونوں کا بچہ  
کر کے برہما جی نے کہا کہ وہ نہ برابر ہیں نہ مختلف ہیں۔ تو

۷۴ - جو برابر ہیں برہم دیہان میں سکھول ہو اور اپنے کرموں میں مصروف ہو وہ سلسلہ سے چھوٹ  
کرموں سے اذقات لیس کرے۔

۷۵ - پڑھنا پڑھنا ملکہ کرنا ملکہ کرنا دان دینا دان لینا یہ چھ کرم برہمن کے ہیں۔

نو کیونکہ جو شور و دنیا کا کام کرنا ہے وہ دنیا میں ہونا چاہیے جو شخص وہ دنیا کے کام کا ادا دکھاری نہیں ہے وہ دنیا کا  
کام کرنا بھی ہو تو وہ دنیا کے برابر نہیں ہونا اسلئے تو یہ شور و دنیا کا کام کرنا الا وہ شور و دنیا کے برابر نہیں ہونا کا ممنوع  
کرنے سے ذات کی بڑائی نہیں گئی ہے اور مختلف بھی نہیں ہے تو کار ممنوع کرنے سے دونوں کو برابر ہی ہے اسلئے سب کو وہ کام  
منزاع لائق ہے اس کام کو ملکہ سے یہ پڑ لیش دن ملکہ ہو۔



जातो नार्या मनार्या यामार्या शर्यो भवेत्तु रौः ॥ जातोऽप्यनार्या शर्या  
या मनार्या इति निश्चयः ॥ ६७ ॥ तावुभावप्यसंस्कार्या वि ति धर्मो  
व्यवस्थितः ॥ वेगुराया ज्ञान्मनः पूर्व उत्तरः प्रतिलोमतः ॥ ६८  
॥ सुबीजं चैव सुक्षेत्रे जातं सम्यग्यते यथा ॥ तथाऽर्था ज्ञातश्चा-  
र्यायां सर्व संस्कारमर्हति ॥ ६९ ॥ बीजमेके प्रशासन्ति क्षेत्रमन्ये  
मनीषिणाः ॥ बीजक्षेत्रे तथैवान्ये तत्रैव तु व्यवस्थितिः ॥ ७० ॥  
अक्षेत्रे बीजमुत्तुष्टमन्तरे विनश्यति ॥ अबीजकस्य पिक्षेत्रं के-  
वलं स्थितिर्दृष्टव्यम् ॥ ७१ ॥

۶۶۔ اور پنج بیج یوں ہیں (بجے برہمن سے منورالین) پیدا ہوا پاک گیہ وغیرہ، منا  
سے منور ہوا پراست اور پنج بیج سے اور یوں ہیں (بجے منور سے برہمن میں) پیدا  
ہوا پراستین ہیں یہ یقین ہے۔

۶۸۔ یہ سترھانت کہ دونوں سنگار کے لائق نہیں ہیں کیونکہ پہلا پنج ذات میں پیدا ہوا  
اور دوسرا پراست نام ہے۔

۶۹۔ جس طریق پر اچھا بیج اچھے کھیت میں پڑے سے اچھا غلہ پیدا ہوتا ہے اسی طریق سے  
افضل مرد سے افضل عورت میں پیدا ہوا سب سنگار کے لائق ہوتا ہے۔

۷۰۔ کوئی بیڈت تم کو افضل کہتے ہیں کوئی طرف کو اور کوئی دونوں کو افضل کہتے ہیں اس وقت  
ہیں آگے جو کیفیت بیان کرینگے اسکو جاننا۔

۷۱۔ اگر زمین جو بیج پڑتا ہے وہ برباد جاتا ہے یعنی اگت نہیں ہو اور کھیت اچھا ہے مگر  
اس میں بیج نہیں ہو تو صرف چوترا ہی ہے اس میں غلہ پیدا نہیں ہوتا ہے اسیلئے دونوں کی  
پڑائی ہے اچھا بیج اچھے کھیت میں پڑے تو اچھا غلہ پیدا ہو یہ پہلے کہا کے ہیں وہی  
قرین مصالحت کہ دونوں کو فضیلت ہے۔

श्रद्धायां ब्राह्मणां जातः श्रेयसाच्चेत्यजायते ॥ अश्रेयान् श्रेयसीं  
जातिं गच्छत्यासन्नमाद्युगात् ॥ ६४ ॥ सूत्रे ब्राह्मणातामेति-  
ब्राह्मणाश्चेति श्रद्धताम् ॥ सत्रिया जातमेव तु विद्याद्वैश्यान्तथे-  
व च ॥ ६५ ॥ अनार्याणां समुत्पत्तौ ब्राह्मणास्तु यदृच्छया ॥ ब्राह्म-  
णायामप्यनार्यास्तु श्रेयस्त्वं चेति चेन्न वेत् ॥ ६६ ॥

۱- شورابین برہمن سے کنیا پیدا ہو وہ پادشہی کہاتی ہے اس سے برہمن دو اہ کرے  
اور کنیا پیدا ہو اس سے برہمن دو اہ کرے اور کنیا پیدا ہو اسی طریق سے کنیا پیدا ہوتی  
جاوے اور اس کنیا کا وہاں برہمن کرتا جاوے تو چھوٹے کنیا فضیلت تم سے برہمن  
ذات کو پیدا کرتی ہے۔

۲- شورابین برہمن بھاد کو حاصل کرتا ہے اور برہمن شور بھاد کو حاصل کرتا ہے اسی طریق  
سے کشتری ویشیہ سے پیدا شدہ اہل و کو جاتا۔

۳- شورابین برہمن سے پیدا ہوا اور برہمنی میں شور سے پیدا ہوا ان دونوں میں کو  
بڑا ہے اس کا جو اب اشوک آمیزہ میں دیتے ہیں۔

۴- جیسے طرح شورابین برہمن سے پیدا ہوا شوراب سے وہ شور کا وہاں کرے اس سے پیدا ہوا  
اس سے بھی کنیا پیدا ہو اسی طریق پر کنیا پیدا ہوتا جاوے اور شور کا وہاں کرے تو چھوٹے کنیا  
شور ذات کو پیدا کرتا ہے اسی طرح شورابین کشتری سے پیدا کنیا چھوٹے کنیا فضیلت تم سے کشتری کو پیدا کرتی ہے  
اور کنیا کشتری پشت میں عورت کے بچے ہونے سے شور کو پیدا کرتا ہے اور ویشیہ سے شورابین پیدا کنیا  
فضیلت تم سے ویشیہ کو پیدا کرتی ہے اور کنیا دوسری پشت میں عورت کے بچے ہونے سے شور کو پیدا کرتا ہے اسی طریق پر  
برہمن سے ویشیہ میں پیدا ہوا اپنا بچہ پشت میں بزرگی و خردی کو پاتا ہے اور برہمن سے کشتری میں پیدا ہوا اپنا  
پشت میں بزرگی و خردی کو پاتا ہے کشتری سے ویشیہ میں پیدا ہوا کشتری پشت میں بزرگی و خردی کو پاتا ہے

अनार्यतानिधुरताकूरतानिष्क्रियात्मता॥ पुरुषं व्यञ्जयन्ती-  
 हलोकैकलुषयोजिनम्॥ ५८॥ पित्र्यं वामजतेशीलं मातुर्वोभ-  
 यमेव वा॥ न कथंचन दुर्योनिः प्रकृतिं स्वां नियच्छति॥ ५९॥ कु-  
 ले मुख्येऽपि जातस्य यस्य स्याद्यो निसंकरः॥ संश्रयत्येव तच्छ्री-  
 लं नरोऽल्पमपि बाबह॥ ६०॥ यत्र त्वेते परिध्वंसाज्जायन्ते वर्गा-  
 दूषकाः॥ राष्ट्रिकैः सह तद्वाष्ट्रं सिप्रमेव विनश्यति॥ ६१॥ ब्रा-  
 ह्मणार्थं गवार्थं वा हे हत्यागोऽनुपस्कृतः॥ स्त्रीवालाभ्युपय-  
 तौ च वाच्यानां सिद्धिकारराम्॥ ६२॥ अहिंसा सत्यमस्तेयं-  
 शौचमिन्द्रियनिग्रहः॥ स तन्मासासिकं धर्मं चातुर्वर्ग्यं ब्रवी-  
 न्मानुः॥ ६३॥

۵۸- افضل بنو ناپ سیرتی سخت مزاجی دید و تائستہ کے موافق عمل کرنا بخوبی لوگ میں  
 جانا جانتے کہ یہ آدمی پنج ذات سے پیدا ہوتا ہے -

۵۹- آدمی والد یا والدہ کی یا دونوں کی خاصیت حاصل کرتا ہے مگر پنج ذات والا کی طرح  
 اپنی خاصیت کو نہیں چھوڑتا ہے -

۶۰- جو شخص اچھے خاندان میں پیدا ہوا مگر والدہ اور والد کی پنج ذات ہی تاہم وہ شخص والد کی  
 خاصیت کو حاصل کرتا ہے -

۶۱- جس سلطنت میں درون کو باعیب کر لیا لے ورنہ سرک پیدا ہوتے ہیں وہ سلطنت  
 سچ رعایا جلد فانی ہو جاتی ہے -

۶۲- جو مطلب دیکھنے میں آوے اسکو چھوڑ کر براہمن اور گنہ اور عورت اور بالاک کی واسطے  
 ترک قلب کرنا ان لوگوں کو سوگن سینے والا ہے جو کہ وہاں سے علیحدہ ہیں -

۶۳- کسی جاندار کو قتل نہ کرنا سچ بولنا چوری نہ کرنا پاکیزگی کو اس کو رکھنا ان سب چیزوں کو  
 من جی نے چار و درن کی واسطے کہا ہے -

वासांसि दत्त चेत्तातिभिन्नभावेषु भोजनम् ॥ काव्याय समस्त-  
 कारः परिव्रज्या च नित्यशः ॥ ५२ ॥ नतैः समयमन्विच्छेत्सुरयो  
 धर्ममाचरन् ॥ व्यवहारो मिथस्तेषां विवाहः सदृशैः सह ॥ ५३ ॥  
 अन्नमेवापराधीनं देयं स्थाज्जिन्नभाजने ॥ रात्रौ न विचरेद्युस्तेषा-  
 मेषु नगरेषु च ॥ ५४ ॥ विवाचरेद्युः कार्यार्थं चिह्निताराजशासनेः  
 ॥ अवाच्यवंशवंचैव निर्हरेयुरिति स्थितिः ॥ ५५ ॥ वध्यांश्च हन्युः  
 सततं यथाशास्त्रं नृपाज्ञया ॥ वध्यवासांसि युक्तीयुः शय्याश्चा-  
 मरगानि च ॥ ५६ ॥ वर्गापेतम विज्ञातं नरं कलुषयो निजम् ॥  
 आर्यरूपमिवानार्यं कर्मभिः सैर्विभावयेत् ॥ ५७ ॥

۵۲- مردے کے کپڑے پہنیں اور پھوٹے ہوئے برتن میں بھجی کرین ذیل راہنی زیب بدن  
 کرین ہمیشہ گشت کرتے رہیں۔  
 ۵۳- دھرم اتا آدمی ان لوگوں کے ساتھ درشن و غیرہ پو بار نہ کرے مہونکا دواہ آپس میں  
 ہوتا ہے اور پو بار بھی آپس میں ہی کرین۔  
 ۵۴- انھوں کی خوراک دوسرے کے اختیار میں ہے پھوٹے برتن میں ان دینا چاہیے اور  
 یہ لوگ وقت شب کا نوں و شہر و غیرہ میں پھرتے بنا دیں۔  
 ۵۵- یہ لوگ نشان ذات سے مشغول ہو کر حکم راہ ملک کے کام کر کے واسطے دن میں پھرین  
 اور جس مردہ کو کوئی رشتہ دار نہ ہو اس کو بجا دین کشت ستر کی مر جا دے۔  
 ۵۶- یہ لوگ حکم راہ موافق طریق شاکتہ قتل لائق آدمیوں کو قتل کرین اور اہلین مقولہ  
 کا کپڑا دینا و پیرہ و ذیل راہیوں۔  
 ۵۷- جو شخص شیخ ذات سے پیدا ہوا ہو درج علیہ ہو مگر حائے میں نہ آتا ہو شریف  
 کی صورت مگر شریف نہ ہو تو اس کے اعمال سے اس کی ذات کو جانے۔



सुखवाहकपञ्चानांयालोकेजातयोवहिः॥ स्नेहवाचश्चार्य  
वाचःसर्वतैवस्यवःस्थिताः॥४५॥ येद्विजानामपसदायेचाय-  
ध्वंसजाःस्थिताः॥ तेनिन्दितैवर्तयेयुर्द्विजानामेवकर्मभिः॥  
४६॥

۴۵- برہمن اور کشتری اور دیشیہ اور شودر ان چار درونوں کی کیا دن کے لوپ ہو جانے سے جتنی ذات ہوئیں ان کا نام پچھ بھاشائیں ہو خواہ آرمی نام بھاشائیں ہو یہ سب ذات دیو کہاتی ہیں۔ +

۴۶- دجون سے جو آب سرد وغیرہ بطریق ان لوم پیدا ہوئے ہیں اور جنگا بیان دیوین اشوک میں ہوا اور بھی جو پرت لوم سے پیدا ہوئے ہیں یہ سب دجون کے مدت کرم سے اوقات کرکینا

+ لیجئے ہرہمن کشتری دیشیہ و شودر کو جو کہ ویدنستار کے موافق عمل کرتے ہیں انکو آری کہتے ہیں اور وقت پیدا ہونے کے ان لوگوں کو جو ملک پاک مغرب خاطر ہو اور سکوا آریادت کہتے ہیں اور علم سنکرت کو جو کہ سب زبانوں کی زبان لوجی زیادہ ہو کر آری بڑیا کہتے ہیں چنانچہ دیگر ولایت ہائیں لفظ آری کو ایرین کہتے ہیں اور جو پیر کا مقام دنیا کی دہائیں ایرین زبان کی بلکہ کوئی کہنے کو کج لوگوں نے ملک ایرین میں حرفت آریادت کو پاک دیکھتا دیکھتا کھلا کہیں قیام کیا تو دیگر ملک ہائے جن پر طرح آبادی ہوئی اسکا جواب یہ کہ شروع میں برہمن راجہ اپنا قیام بلحاظ طب و عیادت کے آریادت ہی میں مناسب جانا اور کشتری لوگوں کو اجازت دی کہ تم دیگر ولایت ہائے میں جا کر سلطنت کرو اسوجہ سے تھوچ تمام مردمان عالم و زبان آج اسلام صرف آریادت ہے کہ جلی گویا اسی اشوک ۱۲۰ دھیا سے ددم ہی نسا ستر کا دیتا ہے۔

فرخندگاری وغیرہ۔

तपोवीजप्रभावेस्तु ते गच्छन्ति युगे युगे ॥ उत्कर्षचापकर्षचम  
नुष्ये ध्विहजन्मजः ॥ ४२ ॥ शनकैस्तु क्रिया लोपादिनाः सन्नि  
यजातयः ॥ बलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥ ४३ ॥ पौंड्र  
काश्चौद्रविडाः काम्बोजयवनाः शकाः ॥ पारवाः पाह्लावा -  
श्रीनाः किराता द्रवाः खसाः ॥ ४४ ॥

۴۲۔ تب اور بیج کے پر بھاؤ سے یکساں وغیرہ یکساں ذات سے پیدا ہونے پر سناری  
جگہ جگہ میں جہم سے اور بیج ہوتے ہیں -  
۴۳۔ رفتہ رفتہ عدم تقبیل فرافق سے اور براہمن کے نہ دیکھنے سے مفصلہ ذیل کثرتی زمین  
شورور ہو گئے -  
۴۴۔ پونڈرک اور دروڈر کا بیج چون شک پارہ پہلو چین کرات و رکھش دان ملکوں کے  
رہنے والے کثرتی لوگ جینیو وغیرہ سنگار و دید خوانی وغیرہ اعمال کے نگرے سے شورور ہو گئے -

۴۲۔ تب کے پر بھاؤ سے انڈسپو است کے اور ہم کے پر بھاؤ سے مانند سرگی رش کے جانا چاہئے -

۴۳۔ انشوک ۲۲ دم ثابت کرتے ہیں کہ شروع میں تمام زمین پر صرف ایک مذہب انڈویر کے بیج کو نکالتا تھا جب موت کھنڈ کے  
سورج و پھر کھنڈ میں ایران و توران وغیرہ کے باشندگان کثرتی کو بیج و کرم کو چھوڑ دیا تب وہ شورور ذات ہو گئے اور نکلا  
اگلے انشوک میں کہتے ہیں -

۴۴۔ یعنی جینیو وغیرہ دیکھ کر ناوا پڑھنا اور پرستش کرتا ان سب باتوں کے ترک کرنے سے شورور ہو گئے -





پر ساधنوپچارنمسا سنا سजीवनम् ॥ सरिन्ध्रं वायुरावृत्ति-  
 स्तुते रस्युरयोगवे ॥ ३२ ॥ मैत्रेयकं तु वैदेही माधुकं संप्रसूयते ॥  
 नृत्प्रशंसत्यजसंयोधराताताडोऽरुतोदये ॥ ३३ ॥ निघारो मा-  
 र्गवस्तुते दासनो कर्मजीविनम् ॥ केवर्त्तमितियं प्राहृगार्यावर्त्त-  
 निवासिनः ॥ ३४ ॥ वृत्तवस्तु नृत्तु नारी युगार्हितान्नाशना सुच-  
 ॥ भवन्त्यायोगवीक्ष्यते जातिहीनाः श्वकृत्रयः ॥ ३५ ॥ कारा-  
 वरो निशादात्तु चर्मकारः प्रसूयते ॥ वैदेहिका दन्धमेवैव हिर्षा-  
 मप्रतिश्रयी ॥ ३६ ॥

۳۲۔ دستنی و صفائی ہوسے کا کرنیوالا جو ٹٹھا کھانا کھانے کے سوا کھانا نہ کھانا وغیرہ کا  
 غلامی کو چاہئے والا جال دغیرہ کے وسیلہ سے ہرن وغیرہ کے قتل سے اوقات بسر کرنیوالا  
 سیرنر نام بیٹے کو آئیگو کی استری میں دستونام ذات والا آدمی درجہ کاکشن شلوک ۵۷ میں  
 کہینے (پیدا کرتا ہے)۔

۳۳۔ آئیگو کی عورت میں بید بیک سے بینہ نام بیٹا شیرین کلام کرنیوالا پیدا ہوتا  
 جو وقت شام صبح بجا کر جیو کا کیواسطے راجہ وغیرہ کی تعریف کرتا ہے۔

۳۴۔ آئیگو کی عورت میں نشا دے پیشہ ملاجی سے اوقات بسر کرنیوالا دانش نام دارگو نام  
 بیٹا پیدا ہوتا ہے جسکو آربادت کے رہنے والے کی عورت کہتے ہیں۔

۳۵۔ سیرنر و ہیتری دارگو تینوں بیٹے ذات آئیگو کی اس عورت میں والد کی تعریف سے  
 علیحدہ علیحدہ پیدا ہوتے ہیں جو کہ پارچہ ٹرہ کے سینے والے دما دی حیدوں خوردہ کھاتے ہیں

۳۶۔ نشا دے بید بیک کی عورت میں چرے کو چھپو نیوالا کار اور نام بیٹا پیدا ہوتا ہے۔

اور بید بیک سے کار اور کی عورت میں اندر ذات والا بیٹا اور نشا دے عورت میں مہود ذات  
 والا بیٹا پیدا ہوتا ہے یہ دونوں گانوں کے باہر رہنے والے ہوتے ہیں۔

प्रतिज्ञं त्वं वर्तमानवाद्यावाद्यतरान्वुनः ॥ हीनाहीनान्यस्त्व  
यन्नेवार्थान्यंचरेशेवतु ॥ ३१ ॥

اسم - شو در سے پیدا ہوا براہمن کستری لیشی کی عورت میں آگو کشتا چاڈال تنیون چارو درن  
کی عورت اور اپنی مہوم عورت میں آپ سے پنج تین پنج پندرہ بیٹے پیدا کرتے ہیں اور ان کو مچ سے  
میں دیشید کستری سے پیدا مگر وہ بیدریک شوت یہ تنیون چارو درن کی عورت اور اپنی  
ذات کی عورت میں آپ سے پنج پندرہ بیٹے پیدا کرتے ہیں اس طریق سے تین بیٹے ہوئے  
خواہ چاڈال کشتا آگو کو بیدریک مگر وہ شوت یہ تین اول سے کچھ کچھ اچھے ہیں۔  
یہ تین چھوٹا پرت کو م کے بیٹے پیدا کریں تو پندرہ بیٹے ہوتے ہیں جیسے چاڈال سو پانچوں  
درن کی عورت میں پانچ بیٹے پیدا ہوئے کشتا سے چارو درن کی عورت میں چار لڑکے پیدا  
ہوئے آگو کو سے تنیون درن کی عورت میں تین لڑکے پیدا ہوئے بیدریک سے  
دونوں درن کی عورت میں دو لڑکے پیدا ہوئے مگر وہ سے ایک درن کی عورت میں  
ایک لڑکا پیدا ہوا شوت سے آگے کوئی نہیں ہے اسلئے شوت سے کوئی پرت کو م میں  
ہوتا اس طریق سے پندرہ بیٹے ہوئے تنیون کی عورت میں بھوک جی نے لفظ بھوکا بیان کیا اسکا مطلب  
یہ ہے کہ شوت مگر وہ بیدریک آگو کو کشتا چاڈال یہ چھ کچھ کچھ سے اول اول اچھے ہیں  
یہ چھوٹا پرت کو م کے طریق پر بیٹے کو پیدا کریں تو پندرہ بیٹے پیدا ہوئے ہیں جیسے شوت ہی  
پانچوں کی عورت میں پانچ بیٹے پیدا ہوئے مگر وہ سے چارو کی عورت میں چار لڑکے پیدا ہوئے  
تنیون کی عورت میں تین بیٹے ہوئے آگو کو سے دونوں کی عورت میں دو بیٹے ہوئے کشتا سے  
ایک کی عورت میں ایک بیٹا ہوا چاڈال سے کوئی اور بیٹا نہیں ہے اسلئے اس سے ان کو م  
میں ہوتا اس طریق سے ملکر پندرہ ہوئے دونوں ملکر تین ہوئے -

एतेष्वमृशान्वर्णाञ्जनयन्निस्वयोनियु ॥ माहृजात्यां प्रसू-  
यन्ने प्रवरासु च योनियु ॥ २७ ॥ यथा त्रयभर्तां वर्णानां हजोरा-  
त्यास्यजायते ॥ आनन्तर्यात्त्वयोन्यास्तृत्यावाह्ये व्यपिक्रमा-  
त् ॥ २८ ॥ ते चापि बाह्यान्सुवहून्स्ततोऽप्यधिकदूषितान् ॥ य-  
स्यरस्यरारेषु जनयन्निविर्हितान् ॥ २९ ॥ यथैव शूद्रो माहृ-  
रायां बाह्यं जन्तुं प्रसूयते ॥ तथा बाह्यतरं वाह्यं स्नातुवर्णां प्रसू-  
यते ॥ ३० ॥

یہ سید اپنی ذات کی استری میں اپنے وزن کو پیدا کرتے ہیں بیان والدہ کو ہم ذات  
کرہ ہونے سے والد کے برابر پیدا ہوتے ہیں اور ان کو جانتا چاہئے کہ چونکہ چار ورن کی استری میں  
والد سے بیچ ذات والے پیدا ہوتے ہیں یہ بات آگے کیلئے والد اپنی ذات کی عورت میں  
بھی بیچ پیدا کرتے ہیں اسقدر باتی رہا اسکا بیان اس اشلوک میں کیا جیسے شو دوس  
دیشہ کی استری میں پیدا ہوا لڑکا اور کو کھانا ہے اس سے شدم جو آلو گوی ویشہ برہمنی کیترا  
شو ورا میں پیدا ہونگا وہ آلو کو کھانا لیکن شدم آلو گو سے یہ سب آلو گو دنش میں تین مثل  
دیشہ میں کہ جیسے مخلع مرد و عورت کے ایک نے برہمن ہتیا کیا اس سے پیدا ہوا اسکی نسبت سے  
عورت دونوں گھنہا میں آتے جو میرا ہو گا وہ برادش ہو گا۔

جیسے تھوڑے دن میں سے دو بین الاقوامی طرح پیدا ہوتا ہے (یعنی عورت قریب مائوٹین  
دو ہی توہم میں) اس طرح خارج القوم میں بھی تفریق کے ہوتا ہے۔

۲۹۔ اوکو وغیرہ چھہ ہجوم عورت میں ان قوم کے بھی زیادہ وشت بیٹے کو پیدا کرتے ہیں جیسے اوکو کشت کی عورت میں اپنے سے بچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے اور شامی اوکو کی عورت میں بچے سے بیٹے کو پیدا کرتا ہے اسی طرح دیگر قوموں میں بھی جاننا چاہیے۔

۴۰۔ جب طبع شور و راہتی میں چاٹا لے گا تو پید کرنا ہے اسی طرح ہمارے دور کی عورت میں اپنے سے بھی بڑے کو پیدا کرنا ہے۔

اکلوی مہلہ راجنیا دھاتوا نیندھیرے وچ ॥ ندر شکر راجے  
 و راجے و راجے و راجے ॥ ۲۲ ॥ ویشیا راجے ویشیا راجے  
 ویشیا راجے ॥ کاکھ راجے ویشیا راجے ॥ ۲۳ ॥ ویش-  
 می راجے ویشیا راجے ویشیا راجے ॥ ویشیا راجے ویشیا راجے  
 ویشیا راجے ॥ ۲۴ ॥ ویشیا راجے ویشیا راجے ویشیا راجے  
 ویشیا راجے ॥ ۲۵ ॥ ویشیا راجے ویشیا راجے ویشیا راجے  
 ویشیا راجے ॥ ۲۶ ॥

۲۲۔ پرانیہ کشتی سے کشتی ذات کی عورت میں جھل ذات دے کہوتے ہیں اس کا نام جھل  
 پنجب نہ کرن گھس درور ہے۔

۲۳۔ پرانیہ ویشیہ سے ویشیہ ذات کی عورت میں سہو چارج ذات دے کہوتے ہیں انکو  
 کارشہ بنما ستر ساتوت ذات دے کہتے ہیں۔

۲۴۔ دوسر ذات کے مرد سے دوسری ذات کی عورت میں جماع۔ دواہ کر نیلے لائق  
 جو بنیں ہے اس کے ساتھ دواہ اپنے گریون کا تیاگ۔ ان کا تونہ ورن شکر سیداموتے ہیں

۲۵۔ ان لوم اور پرت لوم کر کے باہم نسبت سے جو ورن شکر لیں ہے اسکو میں کہو لگا۔

۲۶۔ سوت اور بیہیک اور چاڑال اور ماگر دم اور کشت اور ایلو گوم۔

آयोगवश्चसत्ताचचराडालश्चाधमोहरासम् ॥ प्रातिलो-  
 म्येनजायन्तेसूद्रास्यसदास्त्रयः ॥ १६ ॥ वैश्यान्मागधवैदेहीस-  
 धियात्सूतएवतु ॥ प्रतीपमेतेजायन्तेपरेऽप्यपसदास्त्रयः ॥ १७ ॥  
 जातोनिघादाच्छूद्रायांजात्याभवतिपुक्कशः ॥ सूद्राज्ञातोनि-  
 घाद्यात्सुसर्वेकुक्कुरकःस्मृतः ॥ १८ ॥ सत्तुर्जातसथोप्रायांश्च-  
 पाकइतिकीर्त्यते ॥ वैदेहकेनत्वन्मव्यासुत्यन्तोवैशामुच्यते ॥  
 १६ ॥ द्विजातयःसवर्णासुजनयन्त्यब्रतांसुयान् ॥ तात्सावि-  
 त्रीपरिभ्रष्टाम्ब्राह्मणानितिबिनिर्दिशेत् ॥ २० ॥ ब्राह्म्यात्तुजायते  
 विप्रात्पापात्माभुर्जकराटकः ॥ आचक्ष्यवाटधानौचपुष्प-  
 धःशैवरावच ॥ २१ ॥

۱- ایوگو کشنا چانڈال یہ تینوں بیٹے کام میں مہر تھ لیے صاحب قدر تین ہوتے۔

۱۶- اگر کہ جید یہ سوت یہ تینوں بیٹے بھی کام میں میر تقی میر ہیں ہوتے۔

۱۸- نشا وے سٹو راگنیا میں کیش ذات والے ہوتے ہیں نشا وے کلک ذات والے تو ہیں

۱۹- کشا سے اگر گنیا میں سو پاک ذات والے ہوتے ہیں بیدیک سے ایکشت ذات کی گنیا

میں بچن ذات والے ہوتے ہیں۔

۲۰- دو جہا دن سے ہم ذات عورت میں جو پیدا ہو لے گرا دن کا جینو دیوہ سنکار

سین ہوگا وہ براہیہ کہلاتے ہیں۔

۲۱- براہیہ برہمن سے برہمنی میں جو پیدا ہوا وہ پایا تا بھوج کشکے ذات والا کہاں تا ہر کھیکو

دیش بھید سے آونتیہ باٹ دھان نشیدہ تیش گنتے ہیں۔

विप्रस्य त्रिषु वर्गेषु नृपतेर्वर्गा योर्द्वयोः ॥ वैश्यस्य वर्गो वै कस्मि  
 न्यडेतेऽयमहाः स्मृताः ॥ १० ॥ सत्रियाद्विप्रकन्यायां सुतो भवति  
 जातिः ॥ वैश्यान्मागधवैदेहौ राजविप्रांगनासुतौ ॥ ११ ॥ शू-  
 द्रादयोगवः सताचराडालश्चाथमोक्षराणाम् ॥ वैश्यराजन्यवि-  
 प्रासुजायन्ते वर्गा संकराः ॥ १२ ॥ स्वकान्तेरेत्यानुतो म्यादम्बुष्टो  
 प्रीयद्यात्सुतौ ॥ सत्त्ववैदेहकौतद्व्यतिलो म्येऽयिजन्मनि ॥  
 पुत्रायेऽनन्तरस्त्रीजाः कमेनोक्ता द्विजन्मनाम् ॥ ताननन्तरना-  
 यस्तु मातरो वात्यचक्षते ॥ १४ ॥ ब्राह्मराादुभयकन्याया माव-  
 तो नाम जायते ॥ आभीरोऽस्य ह्यकन्याया मायोगव्यां तु धि-  
 खराः ॥ १५ ॥

- ۱۰- براہمن سے کشتریانی وغیرہ تین درجہ کی استری میں اور کشتری سے دیشیہ وغیرہ درجہ کی استری میں اور دیشیہ وغیرہ درجہ کی استری میں جو پیدا ہونے میں وہ چھاپنے والے تین درجہ کی ہیں
- ۱۱- ان قوم کو بیان کرتے ہیں کہ اب پرت قوم کو کہتے ہیں کہ کشتری سے براہمنی کہنا میں سوٹ ذات والا ہوتا ہے اور دیشیہ سے کشتری یا کہنا میں مگدھ اور براہمنی کہنا میں بھوہ ذات والا ہوتا ہے۔
- ۱۲- شودر سے دیشیہ اور کشتری اور براہمن کی کہنا سے ریشہ لگے آریو گوشت آدمیوں میں فرخ جائے ذات والے ہوتے ہیں۔
- ۱۳- حطیح ایک ذات کے تفاوت میں ان قوم میں سمیت اور اگر ہے اسی طرح پرت قوم میں کش اور بیہر ایک ہیں
- ۱۴- دو جنماؤں میں ایک ذات کی تفاوت والی عورت میں سلسلہ سے جوڑ کے پیدا ہوئے کہے ہیں وہ سب مان کے عیسے مان کی ذات والے کہلاتے ہیں۔
- ۱۵- براہمن سے اگر امیشٹ الیو کو ان مینوں کی کہنا میں سلسلہ سے آبرٹ۔ بھیر۔ ویشگن ذات والے ہوتے ہیں

स्त्रीष्वनन्तरासुविज्ञैरुत्पारितास्तुतान्॥ सदृशानेवतानाह-  
 मात्तरोयविगर्हितान्॥ ६ ॥ अनन्तरासुजातानांविधिर्यसनात-  
 नः॥ द्योकान्तरासुजातानांधर्म्यंविद्यादिमंविधिम्॥ ७ ॥ ब्राह्म-  
 रावैश्यकन्यायामन्वयोनामजायते॥ निवारःशूद्रकन्यायां  
 सःपारशवडच्यते॥ ८ ॥ सप्रियाच्छूद्रकन्यायांभूराचारविहा-  
 रवान्॥ सप्रशूद्रवपुर्जलुरुयोनामप्रजायते॥ ९ ॥

۴- دوج اور ایک ذات کی تفاوت والی عورت سے جو اولاد پیدا ہو وہ موافق کہلاتی ہے کہ  
 آئین مان کے عیب کا نقص ہے۔  
 ۵- ایک ذات کی تفاوت میں پیدا ہونی اولاد کے قدیم طریق کو کہا اب دو ایک ذات کے  
 تفاوت میں پیدا ہونی اولاد کے طریق کو کہتے ہیں۔ کہ  
 ۸- براہمن سے بواہتا دیشیا میں نسبت والا پیدا ہوتا ہے اور براہمن سے بواہتا شودر کی کنیا  
 میں نشا ذات والا پیدا ہوتا ہے اسکو براہمن کہتے ہیں۔  
 ۹- کشتری سے بواہتا شودر کی کنیا میں برہمن کشتری شودر ایک الا اگر نام ذات والا ہوتا ہے۔

یہ وہا بھارت انسانس پر پادھیست لیک شلوک ۴۰ و ۴۱ و ۴۲ و ۴۳ کے بموجب براہمن سے برہمنی و کشتری میں برہمن  
 دیشیا میں دیشیہ کشتری و کشتری دیشیا میں دیشیہ و شودرانی میں دیشیہ و نشا ہوتا ہے۔  
 و نسبت دپارتو اگر وہ کسی قوم کا نام جو اکادمین قائم ہو کیونکہ برہمنیت کی اولاد چاروں دین میں سے کسی دین میں داخل  
 ہوتی گی۔ آئینہ نقصان کا نام بھی تھا ماحیارت کرن پر پادھیست شلوک ۴۴ میں لکھتے ہیں کہ برہمنیت پر چتر کیت  
 کے لڑکا کا لقب بہت ہوا تھا اور چتر کیت دیشی بموجب اول لہویشہ پوران مندرجہ ۴۵ و ۴۶ کے کشتری دین میں  
 چتر کیت کو پراسر است و نسب پران میں جو وہ جم میں المیہ جم قرار دیا ہے اور جم کا دین نسبت چتر براہمن و برہمنیت  
 ۲۴-۲۵ میں کشتری لکھا ہے۔

अधीपीः स्वयो वर्याः स्वकर्मस्था द्विजातयः ॥ प्रभूयाद्ब्रह्मरास्त्वे-  
षां नेतृत्वमिति निश्चयः ॥ १ ॥ सर्वेषां ब्राह्मरा गोविद्या ह्युपाया-  
न्यथा विधिः ॥ प्रभूयादितरेभ्यश्च स्वयं चैव तथा भवेत् ॥ २ ॥ विशेषे-  
ष्यात्प्रकृतिश्चैव न्यायप्रसङ्गवधात् ॥ संस्कारस्य विशेषा-  
द्यवर्णानां ब्राह्मराः प्रभुः ॥ ३ ॥ ब्राह्मराः सत्रियो वैश्यस्वयो व-  
र्या द्विजातयः ॥ चतुर्वर्ण्यजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु यं चमः ॥ ४ ॥  
सर्ववर्णोऽप्युत्तुत्याशुपत्नीव्यसतयोनिषु ॥ आनुलोम्येन संभूता  
जातान्येवास्त्यवते ॥ ५ ॥

- ۱- برہمن کشتری ویشیہ تینوں درن اکرم من قائم ہو کر دیکھے جانے ہوئے سے پنج دھرم کو کرتے ہوئے دیکھ کر پرمین برہمن تو دوسرے دن کوڑھتا دیکھ کر کشتری ویشیہ کوڑھتا اور پرمین کشتریہ
- ۲- برہمن سب لوگوں کی تہذیب و عادت کو موافق طریق کے جانے اور دوسرے دن کو سنبھا دے اور اپنا بھی اسی کے موافق کرے۔
- ۳- بڑی ذات اور اتم جگہ سے پیدائش اور نیم کا دھارن اور بڑا سنگار ان دھرم برہمن کے بڑا ہے اور ب درنوں کا گرو اور پرم ہے۔
- ۴- برہمن کشتری ویشیہ تینوں درن دو چٹا کھاتے ہیں اور چوٹھا درن شور و کھانسی خانا کھاتا ہے اور کوئی درن پانچواں نہیں ہے۔
- ۵- سب درنوں میں ان درنوں سے جو ہجوم و منکومہ وقت شادی کے بارہ پہنچا دلا دیا ہوتا ہے وہ ساوی ترے میں مان باپ کی ذات والی کھاتی ہے۔

۶- یعنی ایک خیم مان اپنے ہوتا ہے اور دوسرا خیم سنگار سے ہوتا ہے۔

۷- وہاں اتر آگس پرید و ہاسے وراہشوک ۱۲ اور ۱۳ میں بھی صاف لکھا ہے کہ پانچواں درن نہیں ہے اور چاروں کے وراہشوک میں ہیں۔



धर्मेराचव्यवज्ञावातिष्ठेयत्तमुत्तमम् ॥ इद्याच्चसर्वभूताना  
मन्त्रमेवप्रयत्नतः ॥ ३३३ ॥ विप्राराधेद्विदुषांघृहस्थानांय-  
शस्विनाम् ॥ शुश्रूषेयतुशूद्रस्यधर्मोर्नैश्च्येयसःपरः ॥ ३३४ ॥  
शुचिरुक्त्वशुश्रूषुस्तदुवागनहंकृतः ॥ ब्राह्मरागाद्याश्रयो-  
नित्यमुक्त्वाजातिमश्नुते ॥ ३३५ ॥ सयोऽनापदिचरानामु-  
क्तःकर्मविधिःशुभः ॥ आपद्यपिद्वियस्तेषांकमशःतन्निबो-  
धत ॥ ३३६ ॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां  
नवमोऽध्यायः ६

۳۳۳- دھوم سے ترقی دولت میں اچھی تدبیر کرے سب جانداروں کے کھانپنے کی  
نیک طریق سے خبر گیری کرے۔  
۳۳۴- وید پڑھنے والے نیکنام اگر ہتھ برہمنوں کی سیوا شودروں کی روکش دینے میں مل  
انفصل ہے۔  
۳۳۵- پاکیزگی و خدمت بزرگان و نرم زبانی و خودی نکرنا و ہمیشہ برہمنوں کی پناہ میں رہنا  
یہ سب کام شودروں کو اتم ذات دینے والے ہیں۔  
۳۳۶- بحالت ہنولے وقت رخصت کے یہ طریق اعمال حسنہ ہر چاروں کیواسطے کمابست  
رخصت میں انھوں کے طریق عمل کو سلسلہ دار کہتے ہیں۔

مَنْ جِي كَا دِهِي سِرْمِ گِ جِي كِي سَنگِ مَتَا كَا

نَوَانِ اَدِهِيَا سَمَپِتِ ہوا۔

प्रजायति हि वैश्याय सृष्ट्या परिदेयश्च ॥ ब्राह्मणाय च राज्ञे च  
 सर्वाः परिदेयप्रजाः ॥ ३२७ ॥ न च वैश्यस्य कामः स्यान्नरक्षेयं य-  
 श्चनिति ॥ वैश्ये चेच्छतिनाऽन्येन रक्षितव्याः कथंचन ॥ ३२८ ॥  
 मरिा मुक्ता प्रबालानां लोहानां तान् च वस्य च ॥ गन्धानां च रसा-  
 नां च विद्यार्थवलाचलम् ॥ ३२९ ॥ बीजानां मुष्टि विचित्रास्ते  
 त्रदोषगुणस्य च ॥ मानयोगं च जानीयात्तुलायोगं च सर्वशः ॥  
 ३३० ॥ सारासारं च भाराडानां देशानां च गुणा गुणान् ॥ लाभ-  
 लाभं च परायणानां यश्च नां परिवर्द्धनम् ॥ ३३१ ॥ भृत्यानां च भृ-  
 तिं विद्याद्वायाश्च विविधान् गाम् ॥ इव्याराणां स्थानयोगांश्च-  
 क्रयविक्रयमेव च ॥ ३३२ ॥

۳۳۶- برہا جی نے ویشیہ کو پیدا کر کے اسکو پیش (لینے چار پایہ) دیا اور برہمن و کشتری کو تمام رعیت دی۔

۳۳۸- ویشیہ یہ جو پیش نہ کرے کہ چار پایہ کی حفاظت نہ کرے گیے کاشتکاری وغیرہ کرتا ہو ایسی چار پایہ کی حفاظت ضرور کرے اور جب تک ویشیہ چار پایہ کی حفاظت کرے تب تک دوسرا ور نہ کرے۔

۳۳۹- جو اہرات نوکاد موتی و گوہا و سوت و خوشبو یا ت و رس ان سبھوں کی قیمت ملک و وقت سمجھ کر کم و زیادہ مقرر کرے۔

۳۴۰- کیفیت کا عیب و نہر تخم زیری پرستھہ دورن وغیرہ لغوا و تور و مانسہ وغیرہ لغوا و درن ان سبھوں کا جاننے والا ویشیہ ہو سکے۔

۳۴۱- بہتوں کا سارا سار ملکوں کا عیب و نہر تیار و نہر و ختنی کا نفع و نقصان ترقی چار پایہ ان سب کو جانے۔

۳۴۲- مزدوروں کی مزدوری آدمیوں کی انواع اقسام کی زبان و پیہ اشرنی وغیرہ مزدور کے قیام کی تدبیر اور خرید و فروخت ان سب کو جانے۔

अथोऽन्वित्रह्यतः सत्रमश्मनोलौहमुत्थितम् ॥ तेषां सर्वत्रांते-  
जः स्वासुयोनिवृशाम्यति ॥ ३२१ ॥ नाब्रह्मसत्रमधोतिनासत्रं  
ब्रह्मवर्द्धते ॥ ब्रह्मसत्रंचसंस्तमिहचासुत्रवर्द्धते ॥ ३२२ ॥ इ-  
त्वाधनंतुविप्रेभ्यः सर्ववराडसमुत्थितम् ॥ पुत्रेराज्यं समाख्य  
कुर्वीतयायरांरसो ॥ ३२३ ॥ एवंचरन्सहायुक्तो राजधर्मेषुया-  
र्थिवः ॥ हितेषुचैवलोकस्यसर्वान्धत्यानियोजयेत् ॥ ३२४ ॥  
सयोऽखिलः कर्मविधिरुक्तो राजः सनातनः ॥ इमंकर्मविधिं-  
विधात्कमशोवैश्यशूद्रयोः ॥ ३२५ ॥ वैश्यस्तु कृतसंस्कारः क-  
त्वादारपरिग्रहम् ॥ वार्त्तायानित्युक्तः स्यात्पशूनांचैवरस-  
रो ॥ ३२६ ॥

۳۲۱- پانی سے لگے پیدائش سے برہمن کشتری کی پیدائش سے پتھر سے لوہے کی  
پیدائش ہے اور انھوں نے کایج سے سب جگہ ملنا ہے دھلو بکڑا داتا تو لیکن اس پہل کو پائنت  
ہو جاتا ہے۔

۳۲۲- برہمن کشتری اور کشتری سے برہمن علیہ وہ ہو کر ترقی نہیں پاتا ورنہ مثال  
رہنے سے اس کو کمین ترقی پاتے ہیں۔

۳۲۳- سزا سے حاصل ہوئی تمام دولت کو برہمن کو دیکر اور ملک بیٹھے کو دیکر خلیفین ترک  
قالبتے گئے۔

۳۲۴- اس طریق سے راجہ ہر ایک وقت پر راج دھرموں کو کرتا ہوا ہندوئی عالم میں  
ملازمان کو معروف کرے۔

۳۲۵- یہ تمام طریق راجہ کے عمل روزمرہ کا کیا گیا اب آگے سلامہ دار دیشیہ اور شورو کے  
دھرموں کو کہیں گے۔

۳۲۶- دیشیہ سنگھار کو پاکر وادہ کر کے حفاظت چارپایہ و کشتکاری وغیرہ میں ہمیشہ ہر روز

لोकानن्याتھ جے پوری لکھا لکھا کو پیتا: ॥ دیوانکوری رے-  
 वांश्चकः सिरावंस्तां समधुयात् ॥ ३१५ ॥ यातुपात्रित्यतिष्ठति  
 लोकादेवाश्च सर्वदा ॥ ब्रह्मचैव धनं येषां को हिंस्यात्तान्जिजी-  
 विषुः ॥ ३१६ ॥ अविद्वांश्चैव विद्वांश्च ब्राह्मणो देवतं महत् ॥ प्रणी-  
 तञ्चाप्रणीतञ्च यथाग्निर्देवतं महत् ॥ ३१७ ॥ समशानेष्य पिते-  
 जस्वीपावको नैव दुष्यति ॥ हूयमानश्च यज्ञेषु भूयरावा भिवर्जते  
 ॥ ३१८ ॥ सर्वं यद्यप्यनिष्टं युवर्त्तन्ते सर्वकर्मसु ॥ सर्वथा ब्राह्म-  
 णाः पूज्याः परमं देवतं हितम् ॥ ३१९ ॥ सत्रस्यातिप्रवृद्धस्य-  
 ब्राह्मणान्यतिसर्वशः ॥ ब्रह्मैव सन्नियन्तु स्यात्सत्रं हि ब्रह्म सं-  
 भवम् ॥ ३२० ॥

۱۵۱۔ جو پڑھیں خشکین ہو کر دوسرے لوگ کو کپیاں بنا دے اور دیوتا کو غیر دیوتا کرے اس میں کو  
 تکلیف دیکر کون شخص دولت و حکومت حاصل کر سکتا ہے۔

۱۵۲۔ جن برہمنوں کی دولت و برتری انھوں کی پناہ میں لوگ اور دیوتا رہتے ہیں ان  
 برہمنوں کو زندگی کی خواہش رکھنے والا کون شخص مار لگا۔

۱۵۳۔ جس طرح گن سنسکار کو حاصل کرے یا کرے تاہم وہ بڑا دیوتا ہے اس طرح برہمن پڑھتا  
 ہو یا مورکھ ہو تاہم بڑا دیوتا ہے۔

۱۵۴۔ بیچ والی گن سہاسن میں بھی دوش کو مین پر اپت ہوتی ہے جیسا کہ مین میں ہون کو  
 پر اپت ہوتی ہے ہر حال ترقی ہی پاتی ہے۔

۱۵۵۔ اس طرح اگرچہ برہمن تمام اعمال ناشائستہ کرتے ہیں تاہم پوجنے کے لائق ہیں اور بڑے  
 دیوتا ہیں۔

۱۵۶۔ کشتی تمام چیزوں بڑا ہوتا ہے برہمن کو اپنے اختیار میں مین کر سکتا کیونکہ وہ برہمن  
 سے ہوا ہے اس سبب برہمن کشتیوں کو اپنے اختیار میں کر سکتا ہے۔

परिशूरायथाचन्द्रं हृष्टा हृष्टान्तिमानवाः ॥ तथा प्रकृतयोय-  
स्मिन्सचान्द्रव्रतिको नृपः ॥ ३०६ ॥ प्रतापयुक्तस्तेजस्वी नित्यं  
स्यात्पापकर्मसु ॥ दुष्टसामन्तहिंस्रश्च तराज्जेयं व्रतं स्मृतम् ॥  
३१० ॥ यथा सर्वाणि भूतानि धराधारयते समम् ॥ तथा सव्य-  
शिभूतानि विधत्तः पार्थिवं व्रतम् ॥ ३११ ॥ सैरुपायैरन्यैश्च यु-  
क्तो नित्यमतन्द्रितः ॥ स्तेनान् राजानि यल्लीयात्स्वराष्ट्रे परस्व-  
च ॥ ३१२ ॥ परमध्यापदं प्राप्नो ब्राह्मणान् प्रकीपयेत् ॥ तेहो-  
नंकुपिता हन्तुः सद्यः सबलवाहनम् ॥ ३१३ ॥ यैः कृतः सर्वभ-  
क्ष्यः शिश्यश्च भक्ष्यमहोदधिः ॥ सयी चाप्यायितः सोमः को न न-  
श्येत्प्रकीप्यतान् ॥ ३१४ ॥

۳۰۶۔ جب طرح پورن چندرمان کو دیکھ کر آدمیوں کو آندھنوتا ہے اسی طرح سب جاندار راجہ کو  
دیکھ کر خوش رہیں اس طریق سے راجہ رہا کرے۔

۳۰۷۔ پاپ کرکون ہمیشہ صاحب آفتاب و برجلان کے لینے جو منکوفہ و سترادپوس  
اور ان کا برت کرتا ہوا دھست منیہ لون کو سترادینے والا رہے۔

۳۰۸۔ جب طرح زمین تمام جانداروں کو اپنے اوپر یکساں قائم رکھتی ہے اسی طرح راجہ زمین پر  
دھارن کرتا ہوا سب جانداروں کو دھارن کرے۔

۳۰۹۔ ان تدریوں اور دیگر تدبیروں سے مشمول رہ کر ہمیشہ شستی سے دور رہے اپنے اور دوسروں  
کی راج سے چورون کو نیست و نابود کرے۔

۳۱۰۔ راجہ وقت مصیبت میں بھی برہمنوں کو شرمگین نہ کرے کیونکہ ان کے غصہ کرنے سے راجہ  
سج فوج و سواروں کے نیست و نابود ہو جاتا ہے۔

۳۱۱۔ جن برہمنوں نے ان کو سب ہرکشی اور ہرما سدر کو کھادی اور چندرمان کو کشتی روگ  
دلا کر پیا ان برہمنوں کو شرمگین کرانے کو ناپاکی ہو گا۔

इन्द्रस्यार्कस्यवायोश्चयमस्यवरुणास्यच॥ चन्द्रस्याग्नेः प्रथि-  
व्याश्चतेजोवर्त्तिचयश्चेत॥ ३०३॥ वार्षिकाश्चतुरो मासान्यथे-  
न्द्रोऽभिप्रवर्षति॥ तथाभिवर्षेत्त्वंराष्ट्रं कामैरिन्द्रव्रतंचरन् ३०४  
॥ अथै मासान्यथादित्यस्तोयंहरतिरस्मिभिः॥ तथाहरेत्करंरा-  
ष्ट्रानित्यमर्कव्रतंहित॥ ३०५॥ प्रविश्य सर्वभूतानि यथाचर-  
तिमारुतः॥ तथाचौरैः प्रवेष्टव्यं व्रतमेतद्विमारुतम्॥ ३०६॥  
यथायमः प्रियद्वेष्योप्राप्तेकालेनियच्छति॥ तथाराजानिय-  
न्तव्याः प्रजास्तद्वियमव्रतम्॥ ३०७॥ वरुणो नयथा पाशैर्विद्ध-  
सवामिदृश्यते॥ तथापापान्निघृह्णीयाद्व्रतमेतद्विवारुणम्  
॥ ३०८॥

۳۰۳- آخر سورج ہو ایم راج برن چند دان اگن زمین انھوں کے پر اکرم کو راجہ جان  
کرے اور ڈٹوں کو غائی کر کے آفتاب محبت سے شامل ہے۔  
۳۰۴- جسطرح چار مہینہ برسات میں راجہ اندر پانی برساتے ہیں اسی طرح راجہ اندر کا کام  
کرتا ہوا تمام راج میں رعایا کی منشاء دلی پوری کرے۔  
۳۰۵- جسطرح سورج اپنی شمع سے آگھ مہینہ مکہ پانی زمین سے کھینچتے ہیں اسی طرح  
راجہ سورج کا کام کرتا ہوا راج سے محصول لےوے۔  
۳۰۶- جسطرح ہوا تمام راج میں داخل ہو کر گشت کرتی ہے اسی طرح راجہ ہوا کا کام  
کرتا ہوا بوسیلہ جاسوسان تمام جانداروں میں داخل ہو کر گشت کرے۔  
۳۰۷- جسطرح بیم راج دوست و دشمن دونوں کو قریب اگر پہنچو پیرازتا ہی اسی طرح راجہ  
سب رعایا کو جرم کے موافق بیم راج کا کام کرتا ہوا اندر دیوے۔  
۳۰۸- جسطرح برن ڈٹوں کو باندھتے ہیں اسی طرح راجہ برن کا کام کرتا ہوا بھرنو کو  
گرفتار کرے۔

چارہاں آتھا ہر یوگن کریم یہی بچ کرم راسا ॥ سب شکتی پر شکتی  
 چنیتھ بیڈا نہ ہی پتی ॥ ۲۶۵ ॥ یوڈنا نی ب س ریا ॥ ب س نا  
 نیت یہی بچ ॥ آ رہت ت ت : کار ی س چنیتھ یو ر ل ا د ب م ॥ ۲۶۶ ॥  
 آ رہت ت ت ک ر م ا ر ا ن : آ ن ت : یو ن : یو ن : ॥ ک ر م ا ر ی ا ر م م ا  
 ر ا د ی یو ر ی و ا ر ن ی ی ب ت ॥ ۳۰۰ ॥ ک ت ت ت ت ا یو ر ا چ ب د ا پ ر ک ل ر  
 ب ب ॥ ر ا ش ت ت ت ا ن ی س ر ی ا ر ا ج ا د ی یو ر م ی ب ت ॥ ۳۰۱ ॥ ک ل  
 پ ر م م ا ب ت ی س ج ا د ا پ ر یو ر م ॥ ک ر م س ب ی د ت ر س ت ا ب ی چ ر  
 س ت ک ت یو ر م ॥ ۳۰۲ ॥

۲۹۸۔ جاسوسن انتاہ (یعنی توتیت دل) د عمل آنکے وسیلے سے راجہ دوسروں کی طاقت کو ہمیشہ جانے۔

۲۹۹۔ تمام تکلیفات و سچ کو خیال کر کے چھوٹے بڑے کام کو آغاز کرے۔  
 ۳۰۰۔ اگر کاموں کو کرتے کرتے ٹھک جائے تو پھر پھر کاموں ہی کا آغاز کرتا رہی کیونکہ  
 لکشتی کام کرنا ہولن کی سیوا کرتی ہے۔

۳۰۱۔ سب جگہ تریتا دوا پر کلجک یہ چار جگہ ہیں مگر کچھ نہیں بلکہ راجہ جیسا رواج جاگ  
 کرے وہی جگہ ہوتا ہے یعنی راجہ ہی جگہ ہے۔

۳۰۲۔ جب راجہ بیوقوفی و سستی و غیرہ سے انجام کا نہ کرے تب کلجک ہوتا ہے اور جب  
 کام نہیں کرتا تب دوا پر ہوتا ہے اور جب کام کرتا ہے تب تریتا ہوتا ہے اور جب تریتا  
 موافق کام کرتا ہے تب سب جگہ ہوتا ہے اس لیے راجہ ہر وقت کام کرتا ہے یہ سب بات  
 ہے چاروں جگہ کا ہونا سوسہا نیت نہیں ہے۔

स्वाम्यमात्मीयुरंगारुं कौशराडीमुहत्तया ॥ सप्रप्रकृतयोह्ये-  
ताससांगराज्यमुच्यते ॥ २६४ ॥ सप्तानांप्रकृतीनांतुराज्यस्या  
सांघ्याकमं ॥ पूर्वपूर्वगुरुतरंजानीयाद्यसनंमहत् ॥ २६५ ॥ सप्तां  
गस्येहराज्यस्यविद्युद्यस्यविदराडवत् ॥ अन्योन्यगुरावैशेष्या  
न्मकिंचिरतिरिच्यते ॥ २६६ ॥ तेषुतेषुतुक्त्येषुतत्तसंगंविशिय-  
ते ॥ येनपत्तायतेकार्यतत्तस्मिन्त्रैष्टमुच्यते ॥ २६७ ॥

۲۹۴- راجہ وزیر و دار السلطنت و ملک و خزانہ و سرآرشدہ دار و دوست و غیر ان ساتواں  
پرکرت کہتے ہیں اور یہ ساتو عضو سلطنت میں ہوتا ہے اس سلطنت ہفت اعضاء کی کہلاتی ہے۔

۲۹۵- ان ساتو میں سلسلے سے اول اول کو بہت بڑا دیکھتے ہیں یعنی آخر کے ہونے میں  
اول اول کو دیکھتے ہیں۔

۲۹۶- اس لوگ میں باہم کے ساتھ ہفت اعضاء سلطنت میں باہم عجیب کاری سے تڑوڑکی  
طرح کوئی عضو زائد نہیں ہے اگرچہ اول اول عضو کو زیادہ کہا تو بھی ان ساتو اعضاء کے  
درمیان میں ایک عضو کے کام کو دوسرا عضو بذات خود نہیں کر سکتا اس سے اگلے لگے  
عضو کی بھی ضرورت ہوتی ہے اسوجہ سے زماونی کی ممانعت سے اس میں تڑوڑکی نہ ہو  
دی ہے جیسے تینوں ڈنڈ ملا کر اوپر چار انگلیوں کے بال سے بندش کرتے ہیں باہم نسبت  
ہوتی ہے اور تڑوڑو دھارن سے شاستر اور محققین کوئی ڈنڈ زیادہ نہیں ہے ویسے ہی  
ہفت اعضاء سلطنت مرقومہ بالا کو جانتا چاہئے۔

۲۹۷- جس عضو سے جو کام ہو اس میں افضل ہے۔



प्राकारस्य च भेत्तारं परिवाराणां च पूरकम् ॥ द्वाराणां चैव भंक्त-  
 रं क्षिप्रमेव प्रवासयेत् ॥ २८६ ॥ अभिचारेषु सर्वेषु कर्तव्यो हि-  
 शतोदमः ॥ मूलकर्मणि चानामैः कृत्यासु विविधासु च २८७  
 ॥ अबीज विकयी चैव बीजोत्कृष्टं तथैव च ॥ मर्यादाभेदकश्चै-  
 व विकृतं प्राप्नुयाद्दधम् ॥ २८८ ॥ सर्वकटाकपापि हं हेमकारं  
 तु पार्थिवः ॥ प्रवर्त्तमानमन्यायेच्छेदयेत्तव शः सुरैः ॥ २८९ ॥  
 सीताद्रव्यापहं सो शस्त्राणां सो बधस्य च ॥ कालमासाद्यका-  
 र्यं च राजा दराडं प्रकल्पयेत् ॥ २९० ॥

۲۸۹- قلعہ کو توڑ نیوالا اور اسکی خندق کو پلٹنے والا اور اسکے دروازہ کو توڑ نیوالا جلد ملک سے  
 باہر نکال دیا جائے۔

۲۹۰- شائستہ ترین کے سپہ سالارن کا پر لوگ اور ہالوں کی دھول لیکر مارن پر لوگ ان کرہوں  
 کے کرہوں والوں کو دوسوین ڈنڈ دینا چاہئے اگر اس پر لوگ سے آدمی مر جا تو نہر سے قتل دینا  
 اور اسی طریق سے ماہن باب اوڈ دھ کو چھوڑ کر اگر مستثنیٰ وغیرہ موہ کر کے دولت لینے کیو اسطے  
 بسی کرن و چاٹن دا انواع اقسام کا پر لوگ کرین اوکے کرہین بھی دوسوین ڈنڈ دینا چاہئے  
 ۲۹۱- جو بیج کر جسے کے لائق نہیں ہے اسکو جتنے کے لائق کہہ کر دھنڈ کر نیوالا یا ناقص تخمین  
 تھوڑا چھوٹا تخمینہ ڈال کر بیچے والا امر جا دا کہو نیوالا یہ سب انواع اقسام کی نہر کے قطع اعضا یا دین  
 ۲۹۲- سب ٹوٹوں میں ٹراوٹ شتار ہے وہ جب منظور کرے تو جرم کے موافق تھوڑی  
 تھوڑے عضو کو چھوری سے کاٹے۔

۲۹۳- بل دھوڑا وغیرہ حالات کا تشکاری پن اور لکھ اور ادویہ پھول کے چورہ میں وقت  
 اور منسل کو دیکھ کر راجہ نہر کا یقین کرنے۔



तडागमेदकंहन्यादपुच्छवधेनवा॥ यद्यापिपतिसंस्क्रुर्गहा-  
प्यस्तुतमसाहसम्॥ २७६॥ कौद्यागारायुधागारदेवतागारमेद-  
कान्॥ हस्त्यश्चरथहत्तैश्चहन्यादेवानिचारयन्॥ २७७॥ यस्तु-  
पूर्वनिविष्टस्यतडागस्योदकं हरेत्॥ आगमंवाप्यपांभिद्या-  
त्सदाप्यः पूर्वसाहसम्॥ २७८॥ समुत्तजेद्राजमार्गंयस्त्वमेध्य-  
मनापदि॥ सद्योकार्वापरौवद्यादमेध्यंचाशुशोधयेत्॥ २७९॥  
॥ आयज्ञतोऽथवाचजोगर्भिणीबालस्यवा॥ परिभाषयामहे  
वितचशोधयमितिस्थितिः॥ २८०॥

۲۷۹- جو تالاب کر انسان اور دان وغیر سے لوگوں کا آپکار کر نیوالا ہے اسکو بل وغیرہ شکست  
کرنے سے جو لگاؤ ہے اس آدمی کو پانی سن حق کر کے یا اور طر سے نابود کرے اگر وہ آدمی  
تالاب ترک کر کو بدستور سابق بنادے تو اسکو فانی کرنا چاہئے ملک اتم ساس تان لینا چاہئے  
۲۸۰- راجہ کا غلہ دھیرہ دولت کا خزانہ واسکو خانہ و دیوتا کا سند انھوں کا توڑنے و بیکار نیوالا  
ہاتھی و گھوڑا اور غنہ کو چورانیوالا ان سب کو مارنا اسمین کچھ سچا رنگ چاہئے۔

۲۸۱- کسی شخص نے رعیت کیواسطے تالاب بنایا اور دوسرا آدمی اسکا پانی لیوی اور پانی کے  
آئینی راہ کو حینڈ لگا کر بند کر دے تو وہ شخص پر عقم ساس ٹوڑ کے لائق ہے۔  
۲۸۲- بغیر وقت مصیبت کے تباہ راہ میں ناپاک چیز کو ڈالے تو وہ کار شاہنشاہ بن دے دیوے  
جس ناپاک چیز کو ڈالا ہے اسکو جلد تباہ راہ سے باہر لے جائے۔

۲۸۳- اگر کوئی مصیبت زدہ یا یوڑھا یا جلد عورت یا نابالغ لڑکا حرکت متروکہ یا لڑکے  
صرف اس بات کے کہنے کے لائق ہوتا ہے کہ یہ کیا کیا سزا کے لائق بنیں ہوتا لیکن اس ناپاک  
چیز کو تو ضرور اسے سے اٹھا لیا دین۔

यथापि धर्मसमयात्प्रच्युतो धर्मजीवनः ॥ दशदेनैव तमप्योये  
त्वकाद्वर्मादिविच्युतम् ॥ २७३ ॥ ग्रामघाते हिताभंगे पथि मो  
घाभिर्दर्शने ॥ शक्तितोनाभिधावत्तो निर्वास्याः सपरिच्छदाः ॥  
२७४ ॥ राज्ञः कोशाय हर्तुं च प्रति कूलेषु च स्थितान् ॥ घातये  
द्विविधैर्दशदेरीणां चोपजायकान् ॥ २७५ ॥ सन्धिं छित्वा तु  
ये चोपजायत्रीषुर्वन्नितम्काराः ॥ तेषां छित्वा न्यो हस्तोतीक्ष्णो  
ले निवेशयेत् ॥ २७६ ॥ अंगुलीग्रन्थिभेदस्य छेदयेत्तथमग्रे ॥  
द्वितीये हस्तचरणां तृतीये बध्मर्हति ॥ २७७ ॥ अग्निदान्वाक्ता  
दां चैव तथा शास्त्रावकाशदान् ॥ सन्निधातुं च मोषस्य हन्या  
त्तौरमिवेश्वरः ॥ २७८ ॥

۳۷۔ جو رہا میں گئی وہاں دیوہ کر کے گئی وہاں وغیرہ دھوم کو دوسرے کے دہلے پید کر کے اوقات گزاری کرے اور اپنے دھوم سے علیحدہ ہو جا کر اس رہمن کو بھی دھند دلوے

۳۸۔ جو شخص چور دن سے گاؤں کے غارت ہونے و شکاری تل نہ آستہ میں چور کے نظر آئیں جمالت صاحب طاقت ہونیکے و نہا میں دھوم اشیاء عامی کا قوت نکال دینے کے لائق ہے۔

۲۷۵۔ را جب کے خزانہ زمین پورا نیوال اور خلاف حکم را جب کے عمل کو نیوال اور را جب کے دشمنوں سے دوستی کو نیوال انکو الفراعہ قسم کے دینے سے قتل کرنا چاہئے۔

۴۲- جو چوایق زنی کر کے رات میں چوری کرتے ہیں ان کے دونوں ہاتھ کاٹ کر پھانسی دی جائے گی۔

۴۷۔ جو چو اول دیکھ کر کاسکا کوٹھا اور کوٹھا کپاس کا لگا کاسکا دوسرے نمونے ہاتھ کا کون سا نمونہ قتل کرانے سے  
۴۸۔ جو شخص جو کوگ بھات دسمہ دملت دینا ہے اور جو چو کی خیر دن کا رکھے مایا ہے  
انھوں کو راجہ ہانڈ چور کے نابود کر دے۔

भक्ष्यभोज्योपदेशे च ब्राह्मणानां च दर्शनैः ॥ शौर्यकर्मापदेशे-  
 च कुर्युस्तेषां समागमम् ॥ २६८ ॥ येतन्नोपसर्पयुर्मूलप्रणि-  
 हिताश्च ये ॥ तान्नसह्यन्तपोहन्यात्मनि च ज्ञातिवाचवान् ॥  
 २६९ ॥ न होढेन विना चौरघातयेद्भूमिको नृपः ॥ सहोढं सोप-  
 कसांघातयेदविचारयन् ॥ २७० ॥ ग्रामे व्यपिचये केचिच्चौरा-  
 सां बलशयकाः ॥ भाराडावकाशदाश्चैव सर्वास्तानपि घात-  
 येत् ॥ २७१ ॥ राष्ट्रेषु रसाधिकृतान् सामन्तांश्चैव चोदितान् ॥ अ-  
 ध्याघातेषु मध्यस्थान् शिष्याञ्चौरानिवद्भुतम् ॥ २७२ ॥

۲۶۸- پہلے سے جو چار جاہل سوس صورت میں وہ ان سب چوروں سے ایسا کہیں کہ آئیے  
 ہمارے گھر چلیے اور وغیرہ کھائے ہمارے ملک میں ایک برہمن ایسا کہ تیرے حصول  
 مطالب کی جانت ہے اسکا ورثہ کیجئے ایک آدمی سینہ آدمیوں سے جنگ کرانگا یہاں اسکو دیکھو  
 اس بہانہ سے راجہ کے ڈنڈ کو دھارن کرینوالے آدمی ان چوروں کو فراہم کرے اور یہ تیرا  
 ۲۶۹- جو چور مقام خورڈووش میں بھجیا اور خود گھر کے باہر سے چوروں کو فراہم کرے  
 ۲۷۰- راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں  
 ۲۷۱- راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں  
 ۲۷۲- راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں راجہ کے ملک میں

کے نیت دنا بود کرے -  
 ۲۶۰- دھرم کا جانشین والا اور شہر پر عمل کرینوالا راجہ چوروں کو بدوں دریافت و ثبوت کا  
 چوری قتل کرے اگر جو راجہ نشان چوری کے ہو تو اسکو مع اس کے اشیاء کے نیت دنا بود کرے  
 یہ جہاں کرے کہ اسکو دکھائیے گا -  
 ۲۶۱- کانوں میں جو کوئی چوروں کو غلام و نوکرانہ کو راجہ انکو بھی نابود کرے -  
 ۲۶۲- راجہ میں جو آدمی حفاظت کا اختیار رکھنے والے ہیں اور جو آدمی کانوں کے  
 چاروں طرف سے دے میں یہ دونوں قسم کے آدمی چوروں کو چوری کرے ہوا کریں  
 تو راجہ انکو بھی چوروں کی طرح سزا دیوے -

तेषां दीधानभिख्याप्यस्वेकं कर्म शीतत्वंतः ॥ कुर्वीत शासनं रा-  
जा सम्यक् साराय राधतः ॥ २६२ ॥ न हिं द्राडा हते शक्यः कर्तुं या-  
य विनिग्रहः ॥ स्तेनानां पापबुद्धीनां निवृत्तं चरतां क्षितौ ॥ २६३  
॥ सभाप्रयापूपशालावेशममद्यान्विक्रयाः ॥ चतुष्यथा श्रे-  
त्यहसाः समाजाः प्रेक्षणा निच ॥ २६४ ॥ जीर्णोद्याना न्यराया-  
निकारुकावेशानिच ॥ शून्यानि चाप्यगारा शिवनान्युपव-  
नानिच ॥ २६५ ॥ सर्वविधान्पौरेशा न्युत्तमैः स्थावरजंगमैः  
॥ तत्कारप्रतिषेधार्थं चारैश्चाप्यनुचारयेत् ॥ तत्सहायैरनुगते-  
र्नानाकर्मप्रवेदिभिः ॥ विद्यादुत्साहये चैव निपुणैः पूर्वतस्कारैः  
॥ २६७ ॥

۲۷۲۔ راجا نے علیحدہ علیحدہ کام میں کما حقہ عیب کو کسر اچھڑنے سے جرم کے موافق سزا دلوے۔

نظم ۲۴۔ چو در پائی جو مودب متواضع صورت بنا کر عالم میں گشت کرتے ہیں انھوں کے  
ہرم کا انداز بدوں نیرا دینے کے ٹھکر بہرہ ہے اس واسطے نیرا دینا چاہئے۔

۲۴۴ - سبعا (یعنی مقام فراہمی صلح اندیشان) چاہے کج بخت کیونکہ مقام متراپہ فردوسی  
مقام غلہ فردوسی جو اسے خانہ کوائف سے روخت رسول مقام محب خلافت

۲۶۵۔ باغات خجّل کا گمنہ خانہ کاریگان خانہ خالی وقت سہ و غیرہ کا خجّل خجّل نو طیار کر نہ  
۲۶۶۔ ایسے ملکوں کی فوج وغیرہ سے راہ گرفتاری حیر وغیرہ کی کر کے کیونکہ وغیرہ اسے مقامات

۲۶۷۔ انھوں نے کہ سوکھنوالے اور ملایاں اور بکاٹ کے جانشین والے چوروں کے قریب میں

ہوشتیار پہلے چور جاسوس کی صورت میں انھوں نے وسیع سے چوروں کو جاننا اور نیت قرار دے کرنا ہے۔

उत्کلیچکا: پधिकانچکا: کیتواستیا ॥ مंगलादेश-  
 ताश्चमद्राश्चेशिका: सह ॥ २५८ ॥ अमम्यकाराश्चैवमहा  
 मावाश्चिकित्सा: ॥ शिल्पोपचारयुक्ताश्चनिपुरा: पराय  
 योचित: ॥ २५९ ॥ एवमादीन्विजानीयात्मकाः शौलो ककंद-  
 कान् ॥ निगूहचारिणाश्चान्याननार्याचार्यलिंशिन: ॥ २६० ॥  
 तान्विदित्वा मुचरितैर्गृहैस्तत्कर्मकारिभि: ॥ चरैश्चानेकसं-  
 स्थानै: प्रोत्साद्यवशमानयेत् ॥ २६१ ॥

۳۵۸- کام والے آدمی سے دھن لیکر نامناسب کام کرنا والا اور خوف دکھلا کر دھن لینے والا  
 اور سونا وغیرہ میں ناقص چیز مل کر دغا بازی کر کے دوسرے کا دھن لینے والا اور دولت اور ماکہ  
 قسم کی تمباربازی کرنا والا اور دولت و فرزند و نفع وغیرہ حالات خوشی کو بیان کر کے اوقات  
 بسر کرنا والا اور بد عملی کو چھپا کر اچھے فعل کو ظاہر کر کے دوسرے کی دولت لینے والا اور ہاتھ کی  
 ربیکا کو دیکھ کر اچھے اور برے پھل کو کھلے دوسرے کی دولت لینے والا۔

۳۵۹- باغی کو سکھانے سے اوقات بسر کرنا والا اور پیشہ طبابت سے اوقات بسر کرنا والا  
 یہ دونوں اس حالت میں جب اپنے کام کو اچھی طرح نہ کریں اور دھن لیویں اور پیشہ برصوری وغیرہ  
 سے گزارہ کرنا والا اور بغیر کچے ہونے تصور پر چھوٹکی تحریک و ترغیب دیکر دوسرے کی دولت لے کر دلا  
 اور دوسری عورت پر دوسرے کو اپنے قابو میں کر لینے کو ہوشیار رہیں۔

۳۶۰- ان سیکو اور ان کے برابر دوسروں کو ظاہر میں خار عالم جانتا چاہئے اور پوشیدہ خار لگ  
 دوسرے میں جو کہ بھلا آدمی نہیں ہیں مگر بھلا آدمیوں کے نشان سے رہتے ہیں

۳۶۱- ان سب کو بوسیدہ کاٹیک وغیرہ جاسوس کے (جو کہ بہت سے مقامات پر مقیم ہیں اور  
 جنگا بیان ساتوہن ادھکا میں ہوا) اور نیز بوسیدہ ان آدمیوں کے جو کہ پوشیدہ خار لگتی ہیں  
 ہیں جانکر اور انکو دکھ دیکر اپنے اختیار میں کرے۔

سمپد्वि-विह्वेशस्तु कतदुर्गश्चाश्वतः ॥ कराटकोद्धरगो-  
 नित्यमातिषेद्यत्नमुत्तमम् ॥ २५२ ॥ रक्षणादार्थवृत्तानां कराट-  
 कानांच शोधनात् ॥ नरेन्द्रास्त्रिदिव्यांतिप्रजापालनतत्पराः  
 ॥ २५३ ॥ अशामंस्तस्करान्यस्तु वलिपृच्छातिपार्थिवः ॥ तस्य  
 प्रसुभ्यते राशं स्वर्गाच्च परिहीयते ॥ २५४ ॥ निर्भयस्तु भवेद्यस्य-  
 राशं बाहुबलाश्रितम् ॥ तस्य तद्वद्धेते नित्यं सिध्यमान इव द्रुमः  
 ॥ २५५ ॥ द्विविधांस्तस्करान्विद्यात्परद्रव्यापहारकाच्च ॥ प्रका-  
 शांश्चाप्रकाशांश्च चारुचसुर्महीयति ॥ २५६ ॥ प्रकाशवं च का-  
 स्तेषां नानापरायोपजीविनः ॥ प्रच्छन्नवं च कास्ते ते ये स्तेनाद-  
 विकारयः ॥ २५७ ॥

۲۵۲- شاستر میں کے ہوئے ملک میں ہوا فن ہدایت شاستر کے قلوبنا کر اور اس میں  
 ہو کر کاٹنا لگانے میں تدبیر تائید کرے۔  
 ۲۵۳- اور دیکھو لوگ ۲۵۸ غایت ۲۵۹

۲۵۴- راجہ پرورش رعایا میں کما حقہ مشغول ہو کر اچھے لوگوں کی حفاظت کرے اور  
 کے نگالنے سے شوگر میں جانا ہے۔

۲۵۵- جو راجہ چوروں کو مبرا نہیں دیتا۔ اور محض اپنا لبتا ہی ایسے راجہ کی راج میں رعایا  
 بد دعا کرتی ہے۔ اور اس پاپ پستی چھین ہو کر شوگر میں حاصل نہیں ہوتا۔

۲۵۶- جس راجہ کی قوت بازو پاکر رعایا پیچھے رہتی ہے اسکا راج ہر روز ترقی پاتا ہو جیسے  
 بچا ہوا درخت۔

۲۵۷- راجہ دونوں کی آنکھ سے دیکھ کر دوسرے کی دولت کو چھپے والے چور کو ظاہر و باطن  
 دو قسم کر کے دو طرح کا جانے۔

۲۵۸- انواع اقسام کی چیزوں کو فروخت کر نیوالے ظاہری چور میں اور آدمیوں خالی  
 مقام میں اور بجات سو جانے آدمیوں کے دوسرے کی دولت چورانیوں کے پوشیدہ چور میں۔



یत्र वर्जयते राजा पापद्वन्द्वयोधनामम् ॥ तत्र कालेन जायते  
 मानवादीर्घजीविनः ॥ २४६ ॥ निष्पद्यन्ते च सस्यानि यथा-  
 निविशांश्चक्र ॥ बालाश्च न प्रमीयन्ते विकृतं न च जायते ॥ २४७  
 ॥ ब्राह्मणा न्याधमानस्तु कामादवरवराजम् ॥ हन्याच्चित्रैर्व-  
 धोपायैस्तु हे जनकरिन्देवः ॥ २४८ ॥ यावानवध्यस्य वधेतावान्  
 वध्यस्य मोक्षरो ॥ अधर्मो नृपतेर्द्वयोधर्मस्तु विनियच्छतः ॥  
 २४९ ॥ उदितोऽयं विस्तररो भियो विविदमानयोः ॥ अष्टादश  
 सुमार्गेषु व्यवहारस्य निर्णायः ॥ २५० ॥ सवंधर्माणां कार्या  
 शासस्य कुर्वन्महीपतिः ॥ देशानलब्धां लिप्तेतलब्धांश्च प-  
 रियालयेत ॥ २५१ ॥

۲۴۶- جس مقام پر راجہ پاپیوں کی فراہم کی ہوئی دولت کو نہیں لیتا ہر وہاں آدمی ہی  
 عمر دے پیدا ہوتے ہیں دینے بہت دن مکنت زندہ رہتے ہیں۔

۲۴۷- جسطح دیشیہ لوگ جو غلہ بونے ہیں وہ غلہ علیحدہ علیحدہ پیدا ہوتا اسی طرح اس راجہ  
 کی راج میں لوگ بھی نہیں مرنے اور نہ کوئی لوگ کسی شخص سے محروم پیدا ہوتا ہے۔

۲۴۸- جو چھوٹا اورن خواہش سے برہمنوں کا قتل کرے یا اسکو انواع اقسام کی تزیینوں  
 سے قتل کرے جو بھکاری درجہ و فوج کی دینے والی ہیں۔

۲۴۹- جو قتل کے لائق نہیں ہے اس کے قتل میں جتنا پاپ ہوتا ہے اتنا ہی پاپ قتل کے لائق  
 آدمی کو چھوڑ دینے سے ہوتا ہے۔

۲۵۰- اب بھوک جی کہتے ہیں کہ اسے دش لوگوں کا اٹھارہ قسم کے مفادات میں ہاشم کرنا لو  
 کی تیغ مفاد کو مفصل کیا۔

۲۵۱- راجہ اس طریق کار یا مشورہ کو جو کچھ طرح سے کرتا ہوں ملکوں کے فتح کی خواہش  
 کرے جو کہ فتح نہیں ہوتے اور پھر ملک منقوحہ کی پرورش کر نیکی خواہش کرے۔

پراپشیتلکوکورانا: सर्ववर्णायथोदितम् ॥ नांकाराज्ञा  
ललाटेऽस्युर्द्वारस्तुतमसाहसम् ॥ २४० ॥ आगस्तुब्राह्मरा  
स्येवकार्योमध्यमसाहसम् ॥ विवास्थोवाभवेद्राक्षसद्रव्यः स  
परिच्छदः ॥ २४१ ॥ इतरेकतवन्तस्तुपायान्येतान्यकामतः ॥  
सर्वस्वहारमर्हन्तिकामतस्तुप्रवासनम् ॥ २४२ ॥ नाददीतन्यः  
साधुर्महापातकिनोधनम् ॥ आददानस्तुतल्लोभात्तेनदोषेरा  
लिष्यते ॥ २४३ ॥ अस्मप्रवेश्यतंदराडंवरुणाशोपपादयेत् ॥  
श्रुतवृत्तोपयन्नेवाब्राह्मरोप्रतिपादयेत् ॥ २४४ ॥ ईशोदराडस्य  
वरुणोराज्ञांदराडधरोहिमः ॥ ईशः सर्वस्यजगतोब्राह्मरोवे-  
दपारमः ॥ २४५ ॥

۲۴۰- جو چاروں پر پشت کے کرنیوالے ہیں راجہ انکی پیشانی پر نشان نکر سے بلکہ تیرا پر  
ڈنڈ لیوے۔

۲۴۱- مجرم برہمن سے مدھیم سامن ڈنڈ لیوے خواہ مجرم برہمن کو جس اشیاء خانگی و دولت کے  
اپنی مان سے باہر نکال لیے۔

۲۴۲- کشتی وغیرہ تینوں دریاں ملا کر آہن لہن یا پون کو کرین تو انھوں کی تمام دولت  
کو لے لیوے اور آہن سے کیا ہو تو قطع اعضا خواہ قتل کی نمراد دینا چاہیے۔

۲۴۳- جو راجہ مدھیر دھنڈ برہمن کا دھن نہ لیوے اگر قطع سے کیو تو انھوں کے  
پاپ میں شامل ہوتا ہے۔

۲۴۴- دھنڈ کے دھن کو (یعنی زر جہانہ دنا وان والی چیز) پانی میں ڈال کر برہمن دینا کی ختم  
میں کرے یا اس برہمن کو دلیوے جو دیدن سنا ستر کا جائے والا اور اس پر عمل کر نیوالا ہو۔

۲۴۵- کیونکہ مہابلی کو دھنڈ دینے سے جو دھن ملا کر اس دھن کا مالک برہمن دیتا ہے وہ  
تمام مطلب کو جائے والا برہمن تمام جہن کا سوا ہی ہے۔

ब्रह्महाचसुरायश्चस्तेयीचगुरुतल्पगः॥ एते सर्वे दृष्टकृतेया  
महापातकिनो नराः॥ २३५॥ चतुर्गामपि चैतेयां प्रायश्चित्तम  
कुर्वताम्॥ शरीरं धनसंयुक्तं दण्डं धर्म्यं प्रकल्पयेत्॥ २३६॥ शु-  
रुतल्ये भगः कार्यः सुरापाने सुराध्वजः॥ स्तेये च श्वपदं कार्यं ब्र-  
ह्महाराय शिराः पुमान्॥ २३७॥ असंभोज्या ह्यसंयाज्या असं-  
पाठ्या विवाहिनः॥ चरेद्युः दृष्टिवीदीनाः सर्वधर्मवहिष्कृताः॥  
॥ २३८॥ ज्ञाति संबंधिभिस्त्वेतेत्यक्तव्याः क्षतलसराः॥ नि-  
र्दयानिर्नमस्कारास्तन्मनोरनुशासनम्॥ २३९॥

۲۳۵- براہمن کو مار نیوالا شراب پینے والا براہمن کا سونا بقدار ۱۶ مائتہ چورانیوالا اپنی لڑ  
سے جملے کر نیوالا یہ چارو پڑ پخت نکرین تو مع دولت نہ اسے بدنی مرقومہ ذیل انکو دینا چاہیے۔

۲۳۶- والدہ سے جملے کر نیوالا شراب پینے والا براہمن کا ۱۶ مائتہ سونا چورانیوالا براہمن کو  
بازنیوالا این چاروں کی پیشانی پر حسب سلسلہ نشانات مرقومہ ذیل کرنا چاہیے یعنی فرج کی صورت  
دیکھ بھگالی صورت کتے کے پاؤں کی صورت بے سہرے آدمی کی صورت۔

۲۳۸- جو یہ سب لوگ نشانات مرقومہ بالا کے رکھنے والے ہیں انکے بھوجن اور یگی اور پاٹھ  
اور تادی وغیرہ کرم نہ کرنا چاہیے یہ سب تمام دھرموں کا باہر ہو کر مفلس و تنگ و خوفناک ہو کر  
بین پرکھتیں۔

۲۳۹- ذات والے اور شدت دار اور بھالی وغیرہ سب انکو ترک کریں اپنہ رحم نکرین اور نہ انکو  
نشد کر کریں یسٹن ممالج کا حکم ہے۔



अप्राप्तिभिर्भयं क्रियते तत्सोके द्यूतमुच्यते ॥ प्राप्तिभिः क्रि-  
यते यस्य स विजयेः समाह्वयः ॥ २२३ ॥ द्यूतं समाह्वयं चैव यः कु-  
र्यात्कारयेत्तदा ॥ तान् सर्वान्धातये राजा श्रद्धां श्रद्धिजलिं गिन-  
न् ॥ २२४ ॥ कितवान् कुशीलवान् कूरान् वा स्वराडस्थांश्च मानवा-  
न् ॥ विकर्मस्थान् शौरिडिकांश्च क्षिप्रं निर्वसयेत्पुरा ॥ २२५ ॥  
यतेशश्चेवर्त्तमाना राज्ञः प्रच्छन्नतस्कराः ॥ विकर्मक्रिययानि-  
त्यं बाधन्नेव त्रिकाः प्रजाः ॥ २२६ ॥ द्यूतमेतत्पुरा कल्पेद्वैर-  
करं गहत ॥ तस्मा द्यूतं न सेवेत्तद्वा स्यार्थमपि बुद्धिमान् ॥ २२७ ॥  
प्रच्छन्नं वा प्रकाशं वा तन्निवेयेत यो नरः ॥ तस्य दराडविक-  
ल्पः स्याद्यथेदं नृपतेस्तथा ॥ २२८ ॥

۲۲۳- بچان چیز ہائے دنیوی و غیرہ سے داؤ لگا کر بازی کرنا دیوت کہلاتا ہے اور جاندار چیزیں  
بغیر بشر و جنین و گھوڑا سے داؤ لگا کر بازی کرنا سما ہوتے کہلاتا ہے۔

۲۲۴- ان دونوں کو جو کہ اور کراؤ سے اُسکو اور جو شود کہ بہرین و کشتی کے نشان کو  
و معارن کہیو الائی۔ اُسکو راجہ نابو دکرے۔

۲۲۵- قمار باز رقاص کا بیوا الائی سب سے دشمنی کر بیوا۔ پاکھنڈی ناکارہ کام کر بیوا اثر آب  
بنائوا الائی۔ سب کو راجہ جلد شہر کی باہر نکال دیوے۔

۲۲۶- یہ سب چھپے ہوئے چورین کوٹے کاموں سے اچھی رعایا کو تکلیف دینے پر تیار ہیں  
۲۲۷- جری و دشمنی کر بیوا القمار ہے یہ زمانہ سابق میں بجز کیا گیا اسو سطی عقل مند آدمی نہیں کہ  
طو پر بھی اُسکا استعمال نہ کرے۔

۲۲۸- پوشیدہ یا بظاہر قمار بازی کر بیوا لے آدمیوں کو راجہ جس نہر کے دینے کی خواہش  
کرے وہی نہر ادا ہوے۔

अनपत्यस्य पुत्रस्य मातादायमवाप्नुयात् ॥ मातर्यपि च वृत्ता  
यां पितुर्माताहरेद्धनम् ॥ २१७ ॥ अष्टाधने च सर्वस्मिन् अवि-  
भक्ते यथाविधि ॥ पञ्चादृश्येत यत्किंचित् सर्वसमतानयेत्  
॥ २१८ ॥ वस्त्रं पत्रमलंकारं कृतान्मुद्रकं स्त्रियः ॥ योगक्षेमं  
प्रचारं च न विभाज्यं प्रचक्षते ॥ २१९ ॥ अथ मुक्तो विभागो वः  
पुत्रारां च क्रियाविधिः ॥ क्रमशः क्षेत्रजादीनां द्यूतधर्मनि-  
बोधता ॥ २२० ॥ द्यूतं समाह्वयं चैव राजा राजान्निवारयेत् ॥ राजा-  
न्तकराणां वेतो दैहो योऽथिवीक्षिताम् ॥ २२१ ॥ प्रकाशमेत-  
त्तास्कार्यं यदेव न समाह्वयौ ॥ तयोर्नित्यं प्रतीघाते च यतिर्य-  
त्नवान् भवेत् ॥ २२२ ॥

۲۱۷- اگر بیٹا ولد نہ ہو اسکا دھن اسکی والدہ کیوں والدہ بھی نہ تو اسکی وادی لیبے۔

۲۱۸- قبو عتیم دولت و قرضہ کے موافق طریقہ سے ستر کے جو کچھ دھن دیکھنے میں آوے اسکا حصہ برابر کریں۔

۲۱۹- پارچہ سواری زیور لٹو سنو کنواں وغیرہ علام و کنیزک مشیر پر دہت وغیرہ کو وغیرہ جانے کے آنے جانے کی راہ ان سمجھوں کا حصہ لکنا چاہئے اپنے کام کے موافق سب کو بیوی ہیں۔

۲۲۰- بھوکہ جی کہتے ہیں کہ اسے رت کو کوششیں وغیرہ بیویوں کی تقسیم حصص کو آپ کو کون کہا اس کے بعد غار بازی کو بیان کرتے ہیں۔

۲۲۱- دیوت اور سماہوے نام غار بازیوں کو راجہ اپنی راج میں نہو کیوں کہ یہ دونوں راج کو نیت و نابود کرتے ہیں۔

۲۲۲- یہ دونوں ظاہر جو رہی ہیں اس واسطے ان دونوں کے شانے کی تہیر میں رہے۔

येवाज्येष्ठः कनिष्ठोवाहीयेतांशप्रदानतः॥ त्रियेतान्यतरोवाहि-  
तस्यभागोनलुप्यते॥ २११॥ सौदर्याविभजेरंस्तंसमेत्यसहिताः  
समम्॥ आतरोयेचसंस्तद्वामगिन्यश्चसनाभयः॥ २१२॥ यो-  
ज्येष्ठोविनिकुर्वीतलोभाद्वात्नयवीयसः॥ सौज्येष्ठः स्यात्  
भागश्चनियन्तव्यश्चराजभिः॥ २१३॥ सर्वरावविकर्मस्थाना-  
र्हन्निभ्रातरोधनम्॥ नचादत्वाकनिष्ठेभ्योज्येष्ठः कुर्वीतयौ-  
लुकम्॥ २१४॥ आत्तरासविभक्तानांयद्युत्थानंभवेत्सह॥  
नपुत्रभासांविशमंयिताद्यात्कथंचन॥ २१५॥ उर्ध्वविभागा-  
ज्ञातस्तुपित्र्यमेवहरेद्धनम्॥ संस्तद्वामस्तेनवायेस्युर्विभजेत्स-  
तैः सह॥ २१६॥

۲۱۱- بھائیوں میں بڑا بھائی یا چھوٹا بھائی تقسیم حصہ کے وقت بوجہ سنیاس وغیرہ حصہ  
کرنے کے اپنے حصہ سے محروم ہو یا فوت ہو گیا ہو تو اس کے حصہ کو غائب کرنا چاہیے بلکہ اس کا حصہ  
بھی علیحدہ کرنا مناسب ہے۔

۲۱۲- اس حصہ کو سب بھائی اور بہن ملکر بانٹ لیں۔

۲۱۳- جو بڑا بھائی طبع سے چھوٹے بھائی کو حصہ نہ دے وہ بڑا بھائی نہیں کہلاتا اور اس  
سے ڈھڑپا آتا ہے۔

۲۱۴- اگر سب بھائی بھاندرہ کا بیٹن مشغول رہیں تو دولت کو نہیں پہنچا بھائی دولت  
کو چھوٹے بھائی کو بغیر دے ہوئے مرنا اپنے تقسیم نہیں کر سکتا۔

۲۱۵- سب بھائی ملکر دولت کو جمع کریں تو والد کو مناسب ہے کہ وقت تقسیم کے طاق حصہ  
نکرتے ہیں سب کو حصہ برابر دیوں۔

۲۱۶- اپنے بیٹوں علیحدہ ہو کر پھر بیٹیاں پیدا کیا ہو تو وہ بڑے کا حصہ باپ ہی کا دھن پاتا اور اس کا  
ساتھ بڑا علیحدہ ہو کر بھائی شامل ہو تو اس کی ساتھ اپنے تقسیم حصہ جو کر گیا ہو وہ تقسیم حصہ نہ کرے۔

विद्याधनस्तु यद्यस्य तत्तस्यैव धनं भवेत् ॥ भैश्यामौ ह्यहिकं चैव-  
 माधुपर्किकमेव च ॥ २०६ ॥ आहूतायस्तु नेहेत धनं शक्तः स्व-  
 कर्मणा ॥ सनिर्भक्ष्यः स्वकांशात्किंचिद्व्ययं जीवनम् ॥ २०७ ॥  
 ॥ अन्वयः सन्निवृत्त्यं न भिरास्य दुपार्जितम् ॥ स्वयमीहितं तन्म-  
 तन्नाका मोरातुमर्हति ॥ २०८ ॥ येन कस्तुपिता इव मनवाप्तं य-  
 दासुयाव ॥ न तत्सुभैर्भजित्वा र्द्धमकामः स्वयमर्जितम् ॥ २०९ ॥  
 विभक्ताः सहजीवन्तो विभजेरन्नुनर्यदि ॥ समस्तत्र विभागा स्या-  
 ज्येक्यंतत्र न नियते ॥ २१० ॥

۲۰۶- علم و دوستی در دواہ و نہ پرک انھوں کے وسیلے سے جو دولت ملے اس میں کسی کا حصہ  
 نہیں ہے جو جمع کرے وہی لیوے۔

۲۰۷- سب بھائیوں میں جو بھائی اپنے کام میں ہوشیار ہے اور والد کی دولت میں  
 کی خواہش نہیں کرتا ہی اور سگو اپنے حصہ سے کچھ دولت دیکر لا حصہ کرنا چاہتے کیونکہ اس کے لئے  
 پیچھے سے تکرار کریں کہ ہمارے والد نے حصہ نہیں لیا ہی۔ ہکو حصہ دو۔

۲۰۸- والد کا رویہ ضائع ہوئے خیر بنوا اور اپنی محنت سے جو دولت فراہم کرے سگو اگر اپنی  
 مرضی نہ تو بھائیوں کو نہ لے لے اس دولت میں سے بھائی کو نہ لے نہ لے۔

۲۰۹- والد کی دولت کو کیسے چھین لیا اور والد نے اسکو واپس نہ پایا اور نہ لیا اس  
 دولت کو اپنی محنت سے وصول کرے تو اسکا حصہ اپنے بیٹوں کو نہ لے اور غرضی ہو تو  
 دیوے کیونکہ وہ دولت اپنی کوشش و پیروی سے ہی ہے باپ کی نہیں ہے۔

۲۱۰- ایک دفعہ تقسیم ہو گئی پھر اپنی خواہش سے قابل ہو کر زمین اور بقیہ تقسیم حصص  
 تو برابر گلان کو وہ حصہ نہ لیں جو اسکی بزرگی کی وجہ سے تقسیم اول میں دیا جاتا ہے۔



पत्नीजीवति यः स्त्रीभिरलंकरो धृतो भवेत् ॥ न तं भजेरन्धयादा  
भजमानाः पतन्ति ते ॥ २०० ॥ अनंशी जीवति तौ जात्यंधव-  
धिरोत्तया ॥ उन्नतजडमुकाश्च ये च केचिन्निरिन्द्रियाः ॥ २०१ ॥  
सर्वेषामपि तु न्याय्यं दातुं शक्या मनीषिरागा ॥ ग्रासाच्छादन-  
मत्यन्तं यति तो ह्यद्ववेत् ॥ २०२ ॥ यद्यर्थिता तु दारैः स्यात्की-  
वादीनां कथंचन ॥ तेषामुत्पन्नतन्मनामपत्यं दायमर्हति २०३  
॥ यत्किंचित्पितरि प्रेते धनं ज्येष्ठोऽधिगच्छति ॥ भागो यवी-  
यसां तत्र यदि विद्यानुयायिनः ॥ २०४ ॥ अविद्यानां तु सर्वेषां  
मीहातश्चेद्धनं भवेत् ॥ समस्तत्रविभागस्यापि व्यइतिधार-  
णा ॥ २०५ ॥

۲۰۰ - عورت نے بکالت زندگی شوہر کے جو یوزیب بدن کیا ہے اسکو حصہ لینے والے تقسیم کریں  
تو بیت ہوتے ہیں۔

۲۰۱ - محنت بیت پیدا اس سے اندھا بہرہ آیا وہ وغیرہ سے پیدا ہوا بہتر ارول کو لگا کوئی  
عضو نہ کہنے والا ایسے جو شخص میں وہ حصہ نہیں پاتے۔

۲۰۲ - حصہ لینے والا شائستہ جاننے والا آدمی ان سب کو حسب مقدار کھانا دیکر انارہیت  
اگر وہ بوسے اور اگر وہ بوسے تو بیت ہوتا ہے۔

۲۰۳ - محنت وغیرہ کو شادی کرنے کی خواہش ہو تو شادی کر کے حسب بیعت اس عورت  
میں بیٹا کر کے اس بیٹے کو حصہ دیوے۔

۲۰۴ - بد روفاں والے کے بڑا بھائی قبل تقسیم شراکت کے کچھ دولت جمع کرے تو میں سب  
چھوٹے بھائی پاؤں شہرہ لیک صاحب علم ہوں۔

۲۰۵ - جملہ برادران بے علم کی محنت سے دولت جمع ہو تو میں برابر حصہ کرنا چاہئے وہ دو  
والد کی نہیں ہے یہ شائستہ کا ہے۔

अन्वाधेयं च यद्वत्तं पत्या प्रीतेन चैव यत् ॥ यत्पौ जीवति वृत्तायाः  
पजायास्तद्वत्तं भवेत् ॥ १६५ ॥ ब्राह्मणैर्वायमान्यर्वप्राजापत्ये  
सुयद्वत् ॥ अप्रजायामतीतायां भर्तुरेव तदीयते ॥ १६६ ॥ अ-  
न्यथाः स्याद्वत्तं विवाहेष्वासुरादिषु ॥ अप्रजायामतीता-  
यां मातापित्रोस्तदीयते ॥ १६७ ॥ स्त्रियाः तु यद्वत्तं हि तं पित्रा  
दत्तं कथंचन ॥ ब्राह्मणातिद्वरेत्कन्या तदपत्यस्य वा भवेत् ॥ १६८  
॥ ननिर्हारं स्त्रियः कुर्युः कुदुस्वाद्भ्रममध्यगात् ॥ स्वकारपि च-  
वित्ताद्विस्वस्य भर्तुस्तान्नाया ॥ १६९ ॥

- ۱۹۵- خوش ہو کر جو شوہر ملے دیا۔ بعد شادی کے خاندان شوہر سے جو حاصل ہوا اس کو دونوں  
دھن کو بعد وفات اس عورت کے حصے بیٹے کیوں ہیں۔
- ۱۹۶- براہم دیوارش گاندو پیدا جا پتیہ ان پانچوں دواہ میں جو کچھ استری کو ملا اسکو  
بعد وفات اس لاولد استری کے اسکا شوہر پاتا ہے۔
- ۱۹۷- آستر پشاج۔ راکشس ان تین قسم کی شادیوں میں جو دھن استری کو ملا اسکو بعد  
وفات اس لاولد استری کے اس کے مان باب پاتے ہیں شوہر نہیں پاتا۔
- ۱۹۸- برہمن کے گھر میں چاروں دھن کی عزت شادی کی پہلی مہین میں برہمنی کیساتھ  
ہو اور دونوں کی استریاں لاولد دیوہ ہوں اور انکو کی طرح بچے دھن دیا ہوتا اس میں کو بعد  
وفات ان استروئیک برہمنی کی کیسا پارے اگر کیسا نہ تو اسکا بیٹا پاتا ہے۔
- ۱۹۹- براہو وغیرہ بہت لوگوں کا جو سادہ دارن دھن کو اسکو استری وغیرہ دے دیوہ  
کے نہ کیوں اور بدرون اجازت شوہر کے شوہر کا دیا ہوا دھن بھی نہیں اس سے  
تائب ہوتی کیہ استروئیک کے دھن نہیں ہیں۔

ब्रह्मार्पणं ब्रह्माग्नौ ब्रह्माय नमः ॥ इति यजुर्वेदः ॥ इति यजुर्वेदः ॥  
 तानां सर्वाभावे हरेन्त्यः ॥ १८६ ॥ संस्थितस्यानयत्यस्यमो-  
 त्रात्तु चमाहेत ॥ तत्र यद्रिवथ जातस्यात्तत्तस्मिन्प्रतिपादये-  
 त ॥ १८७ ॥ होतुयो विवदयातां द्वाभ्यां जातोस्त्रियाधने ॥ तयो-  
 र्यद्यस्य पित्रां स्यात्तत्ताय ह्यहोतनेतरः ॥ १८८ ॥ जनन्यां संस्थिता-  
 यां तु सगं सर्वे सहोदराः ॥ भजेरन्नात्कं शिष्यं भगिन्यश्च सना-  
 यः ॥ १८९ ॥ यास्तासां स्युर्दुहितस्तस्मात्तस्मात्पि यथाहृतः ॥ माता-  
 मन्नाधनात्किंचित्त्वे सं प्रीतिपूर्वकम् ॥ १९० ॥ अथान्यथा-  
 वाहनि कंदत्तं च प्रीति कर्मणि ॥ धातमात्पितृणां संवद्धि-  
 स्त्रीधनं स्मृतम् ॥ १९१ ॥

۱۸۹۔ راجہ برہمن کی دولت کو نہ لیوسے گو دیگر درون کی دولت کو بحالت عدم موجودگی  
 انکے فرزند وغیرہ مرتد ہوالا کے لے لیوسے۔

۱۹۰۔ بعد وفات لاد لڑائی کے ادھنی زوجہ مطابق حکم ششتر وغیرہ کے اپنے کو ترک کرکے اپنی  
 بیٹیا پیدا کرکے تو اس بیٹے کو سب دولت دیوسے۔

۱۹۱۔ ایک عورت کے دو مرد سے دو لڑکے پیدا ہوں اور والد کی دولت کیسے مگر اگر کرتے  
 ہوں تو جسکے والد نے جو دولت اس عورت کو دی ہو وہ دولت وہی پاک و دوسرا نہ پاسے۔

۱۹۲۔ بعد وفات والد کے سب برابر حقیقی و کمکاری ہیشیرہ برابر حصہ کرکے والدہ کی دولت برابر  
 ۱۹۳۔ والدہ کی دولت کو دختر پاک و دختر کو بھی نانی کی دولت میں سے کچھ لادو

محبت کے دنیا چاہئے۔

۱۹۴۔ وقت شادی کے گن کے فوراً والد وغیرہ نے جو دین دیا ہو اور وصیت کے وقت جو  
 دین دیا جاتا ہو اور فوتی دل سے جو تھوسہ دینا ہی بھائی نے جو دین دیا ہو اور وصیت کے وقت  
 والدہ نے جو دیا ہو یہ چھ قسم کے دین استری کے ہیں یہ ریشون لے کہا ہے۔

سर्वासा मेकपत्नीना मेकाचेत्सु त्रिणी भवेत् ॥ सर्वास्तास्तेन-  
 पुत्रेणाग्राहपुत्रवती मनुः ॥ १८३ ॥ अयसः अयसोऽलाभेयापी-  
 यान् रिवयमर्हति ॥ बहवश्चेत्सु सदृशाः सर्वे रिवयस्य भागिनः  
 ॥ १८४ ॥ न भ्रातरो न पितरः पुत्रारिवयहराः पितुः ॥ पिता हरेत्  
 पुत्रस्य रिवयं भ्रातरस्य च ॥ १८५ ॥ त्रयाराणां सुदृकं कार्यं त्रिषु  
 पिराडः प्रवर्तते ॥ चतुर्थः संप्रदाते वा यंच मोनोपयद्यते ॥ १८६  
 ॥ अनन्तरः स पिराडा इत्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् ॥ अत ऊर्ध्वं स कु-  
 ल्यः स्यादाचार्यः शिष्यसेवका ॥ १८७ ॥ सर्वेषामप्यभावे तु  
 ब्राह्मणारिवयभागिनः ॥ त्रैविद्याः शुचयो दाक्षास्तथा ध-  
 र्मो न ह्यीयते ॥ १८८ ॥

۱۸۳- ایک آدمی کے چار پانچ زوجہ ہوں ان سب میں ایک پتروان ہو تو اس کے ہونیسے  
 سب زوجہ پتروان کہلاتی ہیں ایسا تو کون جی سے کہتا ہے۔

۱۸۴- بارہ طرح کے بیٹوں میں بحالت نمونے اول اول کے دو سر دوسرے دولت کو پاتے  
 ہیں اگر بہت بیٹے جفت ہوں تو دولت کو بھی جفت پاتے ہیں۔

۱۸۵- باپ اور بھائی دولت کو ہمیں پاتے بیٹا ہی دولت کو پاتا ہے بیٹا تو باپ اور  
 بھائی دولت کو پاتے ہیں۔

۱۸۶- باپ اور دادا اور پردادا ان تینوں کو پٹا اور جل دینا چاہیے چوتھا دینے والا پانچواں  
 کوئی نہیں۔

۱۸۷- سپنڈ یعنی سات پشت میں جو دم آدمی کا قریب ہو وہ دولت کو پاتا ہے اگر سپنڈ نہ ہو  
 تو سات پشت کے اوپر والا دولت کو پاتا ہے اگر وہ بھی ہو تو آچارج دولت کو پاتا ہے اگر چارج بھی نہ ہو تو چارج

۱۸۸- یہ سب نمونے تینوں کے پٹے دے لے اور اندریوں کے پٹے دے لے صاحب لالہ درہن  
 لوگ دولت کو پاتے ہیں اس ریت سے دھرم کا ماش نہیں ہوتا۔

मातापितृविहीनोयस्यक्तोवास्यादकारणात् ॥ आत्मानं-  
स्पर्शयेद्यस्मैस्वयंदत्तस्तु संस्तुतः ॥ १७७ ॥ यंब्राह्मणास्तु ब्रह्म-  
यां कामादुत्पादयेत्स्तुतम् ॥ स पारयन्नेव शवस्तस्मात्पारशवः-  
स्तुतः ॥ १७८ ॥ दास्यांवादासदास्यांवायः शूद्रस्य सुतो भवेत् ॥  
सोऽनुजातो हरेर्दशमिति धर्मो व्यवस्थितः ॥ १७९ ॥ श्वेत्रजा-  
दीन्सुतानेतानेकादशयथोदितान् ॥ पुत्रप्रतिनिधीनाहुः क्रि-  
यालोपान्मनीषिणः ॥ १८० ॥ यस्य तेऽभिहिताः पुत्रः प्रसंगा-  
दन्यबीजजाः ॥ यस्य ते बीजतो जातास्तस्य तेनेतरस्य तु ॥ १८१  
भ्रातृणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान्भावेत् ॥ सर्वास्तांस्तेन  
पुत्रेणानुचिरामनुव्रवीत् ॥ १८२ ॥

۱۶۷۔ جس لڑکے کے مان باپ مر گئے ہوں یا بلا سب مان باپ نے اسکو ترک کر دیا ہو وہ لڑکا اپنے کو آپ جھکو دیوے وہ اسکا سویم و ست نام پڑھا کہلا تا ہے۔

۱۶۸۔ مشہور و محبت کے غلبہ سے شادی کی پوری شودرات کی عورت میں جو کراپیلا  
وہ زندہ ہی مرد ہے اسلئے وہ لڑکا برہمن کا شودر خواہ پارشوام بنیا کلمنا ہے۔

۱۶۹- دای خواہ دای کی دای میں شوہر سے لڑکا پیدا ہوا وہ والد کے حکم سے جھٹے پاس لکھتا ہے یہ دھرم بن داخل ہے۔

۱۸۰۔ کشتیبرج وغیرہ جو گیارہ بیسٹین انکو سپرٹون نے برین لحاظ کر پیٹھ دان وغیرہ کا نام لکھا ہے۔  
نہو جاوین بحال فرزند قائم کیا ہے۔

۱۸۱۔ دوسرے نطفہ سے جو لڑکے پیدا ہوئے ان کے مین وہ سب بحالت موجودگی اور تمام بیٹے کے مین درہ جو چکے نطفہ سے پیدا ہوئے اسے ایسا کہنا ہے دوسرا نہیں۔

۸۶۔ ایک باپ نے پیدا ہوئے چار پانچ بھائیوں میں ایک بھائی بھی تیرہ سالہ تو اس کے بڑے سے سب بھائی تیرہ سالے کہلائے میں اس بات کو من حی لکھا۔

यागभिरीसंस्त्रियतेजाताजातायिवासती॥ वोढुःसगर्भो  
भवतिसहोदइतिचोच्यते॥ १७३॥ क्रीणीयाद्यस्त्वयत्यार्थ  
सातायित्रीर्यमनिकात्॥ सक्तीतकःसुतस्तस्यसहशोसहशो  
यिवा॥ १७४॥ यापत्यावापरित्यक्ताविधवानाखयेच्छया॥  
उत्पाद्येत्युनभूत्वास्योनर्भवउच्यते॥ १७५॥ साचेरसतयो-  
निःस्याज्जतमत्यागतायिवा॥ योनर्भवेनभर्त्रासायुनःसंस्का-  
रमहेति॥ १७६॥

۱۶۱- وخت حاملہ ہے اور سب کوئی جانتا ہے یا نہیں جانتا اور اس ختر کی شادی ہو  
شادی کے اسی محل سے لڑکا پیدا ہوا تو وہ لڑکا شادی کر کے نواسے کا سونہ نام بیٹا کہلاتا ہے۔  
۱۶۲- جس لڑکے کے مان باپ واسطے بنائے فرزند اپنے خے فید کرین اور وہ لڑکا اپنے برابر  
صفت رکھتا ہو یا اپنی صفت کے خلاف ہو مگر ذات میں اپنے برابر ہو وہ لڑکا خریٹے والے کا کریت  
نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۶۵- جس عورت کو شوہر ترک کیا ہو وہ یا زن بیوہ اپنی فوسش سے پھر دوسری زوجہ ہو کر  
اس آدمی سے بیٹا پیدا کرے تو وہ بیٹا پیدا کر کے نواسے کا پونہ نام بیٹا کہلاتا ہے۔  
۱۶۶- جس عورت کی شادی ہو گئی ہے مگر اس کے حمل نہیں ہوا وہ دوسری شوہر کی بیٹہ بن  
جک تو اس آدمی کے ساتھ پھر شادی کے لائق ہوتی ہے خواہ کما شوہر کو چھوڑ کر دوسری  
شوہر کی بیٹہ ہو بیکر شوہر کے حمل سے محفوظ رہی ہو چھو کما شوہر کی بیٹہ لیوے تو پھر اس کے  
ساتھ شادی کے لائق ہوتی ہے۔

۰ دیکھو یا گئیہ لک سمیت چار ادھیانوک نمبر ۶۷- وہ سمیت سندرجہ لک شید کا ویر مشیت لک تین اور اولی اور دایین  
سرت اور قوت ویر سنگھ اور تیرار نیک سو بھاشی سانا چارج۔

यस्तत्पुत्रः प्रमीतस्य स्त्रीवस्य व्याधितस्य वा ॥ स्वधर्मरात्रिपु-  
 त्तायां सपुत्रः क्षेत्रजः स्मृतः ॥ १६७ ॥ मातापितावारधातां  
 यमद्विः पुत्रमापदि ॥ सहशं प्रीति संयुक्तं सजेयौ दत्विमः सु-  
 तः ॥ १६८ ॥ सहशंतु प्रकुर्स्याद्यं गुरादौ यविचक्षरासु ॥ पुत्रं  
 पुत्रगुरोर्युक्तं सविज्ञेयश्च कृत्रिमः ॥ १६९ ॥ उत्पद्यते गृहे यस्य  
 न च ज्ञायेत कस्यसः ॥ स गृहे गृह उत्पन्नस्तस्य स्याद्यस्य तत्पुत्रः  
 ॥ १७० ॥ मातापितृभ्यामुत्पद्यंत्यौ रन्वतरेरात्रा ॥ यं पुत्रं परि-  
 दृक्ष्णीयादपविद्धः स उच्यते ॥ १७१ ॥ पितृवेश्मनिकन्यातु यं पु-  
 त्रं जनयेद्ब्रह्मः ॥ तं कानीनं वदेन्नाम्ना बोधुः कन्यासमुद्भवम् ॥  
 १७२ ॥

- ۱۶۷- محنت اور بیمار و وفات یافتہ اس قسم کے آدمیوں کی زوجہ میں از رو دھوم والہ  
 وغیرہ کے حکم سے دیور وغیرہ نے جو بیٹا پیدا کیا وہ کشتیج کہلاتا ہے۔
- ۱۶۸- مان باپ وقت مصیبت میں آپ اپنے ہجوم بیٹے کو پانی سے ششکلب کر کے براہ  
 محبت دیوین وہ بیٹا ونگ لینے مہینی کہلاتا ہے۔
- ۱۶۹- جو لڑکا ہجوم اور عیب و ہنر کو جانتے والا اور بیٹوں کی صفقوں سے بھرا ہوا اسکو اپنا بیٹا  
 بتاوے وہ بیٹا کرترم کہلاتا ہے۔
- ۱۷۰- گھر میں پیدا ہوا اور نہیں معلوم کہ کس قسم سے پیدا ہوا تو حاکم عورت پر یا بڑے گھر میں نام بیٹا کہلاتا ہے
- ۱۷۱- مان باپ دو لون کے خواہ ایک غلطی جس لڑکے کو ترک کیا اس بیٹے کو دوسرے بیٹے نے  
 اپنا بیٹا کیا تو وہ بیٹا لینے والے کا بیٹا آپ پر حرام نام کہلاتا ہے۔
- ۱۷۲- بد لون شادی ہوئے دختر کے بچانے والد خلوت میں جس لڑکے کو پیدا کیا وہ لڑکا  
 اس دختر سے شادی کرینوالے کا کانین نام بیٹا کہلاتا ہے۔

यद्येकरिक्थिनो स्यातामौरसक्षेत्रजौ सुतो ॥ यस्य यत्पैतृकं  
 रिक्थं सतजृल्लीतनेतरः ॥ १६८ ॥ सकस्यौरसः पुत्रः पित्रस्य  
 वसुनः प्रभुः ॥ शेषागामान्दशं स्याथं प्रद्यात्तु प्रजीवनम् ॥  
 १६९ ॥ यद्यंतु क्षेत्रजस्यांशं प्रद्यात्पैतृकाज्जनात् ॥ औरसो  
 विभजन्दायं पित्र्यं यंच ममेव वा ॥ १७० ॥ औरसक्षेत्रजौ पुत्रौ  
 पितरिक्थस्य भागिनौ ॥ दशापरे तुक्रमशो गोत्र रिक्थांश-  
 भागिनः ॥ १७१ ॥ स्वस्यैवे संस्तुतायां तु स्वयमेवाव्येक्षियम् ॥  
 तमौरसां विजानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम् ॥ १७२ ॥

۱۶۲- جس آدمی کا تم بیماری وغیرہ سے فانی ہو گیا ہو اسکی عزت میں لا دل و نور والد وغیرہ کے  
 حکم سے بیٹا پیدا کیا اور پھر والد وغیرہ سے نطفہ کی ترقی پاکر اس آدمی نے اپنی عورت سے بیٹا پیدا کیا  
 تب اسکی دولت کے مالک کشتیرج دادرس نام دو بیٹے ہوئے اسپرین جی کہتے ہیں کہ جبکہ تم شیرو  
 جو پیدا ہوا ہو وہ اسکی دولت کو یاد ہے۔

۱۶۳- ایک ہی بیٹا اور اس نام والا اپنے باپ کی تمام دولت کا مالک ہے وہ اور بھائیوں  
 کو رحم سے کھانا اور کپڑا دے۔

۱۶۴- والد وغیرہ کے حکم سے اگر کا پیدا کر نیوالا صاحب اولاد ہو تو کشتیرج اور اس دونوں بیٹے اپنے  
 والد کی دولت کے چھ حصہ یا پانچ حصہ کریں ایک حصہ کو کشتیرج کیو یا تیماندہ دولت کو اور باقی  
 لیوے اگر کشتیرج صاحب صفت ہو تو دولت کے پانچ حصہ کرنا چاہئے اور اگر وہ بے صفت ہو تو  
 چھ حصہ کرنا چاہئے۔

۱۶۵- کشتیرج دادرس یہ دونوں والد کی دولت کو لے سکتے ہیں یا تیماندہ جو ش بیٹے  
 ہیں وہ گوتراور دولت دونوں کو سلسلہ سے لینے والے ہیں۔

۱۶۶- جو اپنی پوزیتا ستر کی بیٹا پیدا ہو وہ دادرس نام بیٹا کا ہو وہ سب بیٹوں سے افضل



समवर्णासु ये जाताः सर्वे पुत्राद्विजन्मनाम् ॥ उद्धारं न्यायसेह-  
त्वा भजे रन्ति ते समसम् ॥ १५६ ॥ अहस्य तु सर्वगो विना न्यामा-  
र्या विधीयते ॥ तस्यां जाताः समांशाः स्युर्यदि पुत्र शतं भवेत् ॥  
१५७ ॥ पुत्राच्चाश्शयानाहन्तरां स्वार्थं भुवो मनुः ॥ तेषां व-  
ड्वन्धु राया राः षडरायादवान्धवाः ॥ १५८ ॥ श्रौरसः सोम-  
जश्चैव दत्तः कृत्रिमस्य च ॥ श्रुतो त्यन्तोऽपविद्धश्च रायादा-  
वान्धवाश्च यद्व ॥ १५९ ॥ कानीनश्च सहोदश्च क्रीतः यौनर्भ-  
वस्तथा ॥ स्वयं दत्तश्च शौडश्च षडरायादवान्धवाः ॥ १६० ॥  
यादृशं फलमाप्नोति कुलधैः संतंजलम् ॥ तादृशं फलमा-  
प्नोति कुपुत्रैः सन्नरस्तमः ॥ १६१ ॥

۱۵۶۔ برہمن و کشتری و دیشیہ کی مقوم عورت میں جو لڑکا پیدا ہو وہ بڑے کو ادھار نام حصہ  
دیگر باقی ماندہ دولت کو برابر حصہ کرے۔

۱۵۷۔ شودر کیواسطے خاص اپنی ہی ذات کی زوجہ، دوسری ذات کی نہیں اسلئے  
اگر چہ ستوار کے ہوں تو بھی برابر حصہ پاتے ہیں۔

۱۵۸۔ برہماجی کے بیٹے میں جن نے جو آدمیوں کے بارہ طرح کے بیٹے کہے ہیں ان میں اول  
کے چھ بھندہ اور دایا دکھانے میں اور پچھلے چھ خلاف اسکے میں پچھلے بارہ لڑکے کہیں گے

۱۵۹۔ وہ بارہ ہیں۔ اڑس کشتیچہ۔ دکت۔ کرترم۔ کوڈھو میں۔ اپ بھندہ یہ چھ دایا و بھندہ کہلاتے  
ہیں ۶ بھندہ بھائی کو کہتے ہیں اور دایا دھڑک لڑکہ بڑی کو کہتے ہیں۔

۱۶۰۔ کانین۔ سہوڑم۔ کر میت۔ پونر کھو۔ سویم۔ دت۔ شودریہ چھ اوایا و بھندہ کہلاتے ہیں ان  
بارہ قسم کے بیٹوں کی شرح و صفات بلوک ۱۶۱، ۱۶۲، ۱۶۳، ۱۶۴ میں لکھی ہے۔

۱۶۱۔ خراب نام کو پر چڑھ کر دیا سے پار ہو جو ال جیسا نتیجہ ہاگ و گیا ہی نتیجہ نالائق بیٹے سے  
نرک پار اترتے وقت پاتا ہے۔



हरेतन्ननियुक्तायां जातः पुत्रो यथो रसः ॥ सोऽत्रिकस्य तु तद्बीजं  
धर्मतः प्रसवश्च सः ॥ १४५ ॥ धनं यो विदुयाद्भ्रातृमृतस्य स्त्रिय  
मेव च ॥ सोऽपत्यं भ्रातृत्वाद्यदद्यात्तस्यैव तद्धनम् ॥ १४६ ॥  
यानियुक्तान्यतः पुत्रं देवराज्ञाप्य वाप्नुयात् ॥ तं कामजमरि-  
क्योऽप्यथोत्पन्नं प्रचक्षते ॥ १४७ ॥ एतद्विधानं विज्ञेयं विभा-  
गस्यैकयो नियु ॥ बह्वीषु चैकजातानां नानास्त्रीषु निबोध-  
त ॥ १४८ ॥ ब्राह्मरास्याश्च पूर्वैराचतस्तस्य दिस्त्रियः ॥ ता-  
सां पुत्रेषु जातेषु विभागोऽयं विधिः स्मृतः ॥ १४९ ॥

۱۴۵۔ جطرح اور عیسا دولت کو لیتا ہے اسی طرح جوڑ کا سسر وغیرہ کے حکم سے عورتیں  
پیدا کیا وہ بھی دولت کو لپیوسے کیونکہ وہ شیتزدائے کایج سے اور اسکی پیدائش عزم  
۱۴۶۔ برادر وفات یافتہ کی دولت ورڈو کو چولیوسے وہ اس عورت میں بیٹا کر کے اسی  
بیٹے کو دولت دیوسے۔

۱۴۷۔ عورتیں سسر وغیرہ کے حکم سے دیور خواہ سینہ لینے رشتہ دار سے بیٹا پیدا کرے۔  
اور ایسا سمجھا جا کہ وہ بیٹا کام سے پیدا ہوا ہے تو دولت ہمیں پاتا اور وہ بیٹا مرد  
پیدا ہوا ہے بیڑش لوگوں نے کہا ہے۔

۱۴۸۔ بہت سے ہجوم عورتوں میں تقسیم حصص مطابق بیان بر قوہ بالا جالو مختلف اقوام  
کی بہت سی عورتوں میں ایک سے پیدا ہونے سب بیٹوں کی تقسیم حصص آگے کہنگے۔  
۱۴۹۔ ایسا سے جائز ورن کی عورتیں جب برہمن کے گھروں اور ان عورتوں سے جو  
بیٹے پیدا ہوں انکی حصص کے تقسیم کو آگے کہیں گے۔

۱۵۰۔ درشنہ نیک کام سے پیدا ہونے کی علامت یہ لکھی ہے کہ وقت جماع عورت کے منہ سے ٹکاؤ اور یہ حصص  
لگاؤ صرف تمام حصص میں عضو مضمون داخل کر نیے جو بیٹا پیدا ہوا وہ بیٹا پیدا ہونے کے لائق و کام پیدائش  
ہے برخلاف اس طریق کے پیدا ہوا وہ کام سے پیدا ہوا کہا جاتا ہے

मातुः प्रथमतः पिराडं निर्वपेत्पुत्रिकासुतः ॥ द्वितीयं क्षुपितु-  
स्तस्यास्तृतीयं तत्पितुः पितुः ॥ १४० ॥ उपपन्नो गुरोः सर्वैः पुत्रो-  
यस्य तु तत्त्रिजः ॥ सहस्रैस्तैव तद्विषयं संयातोऽप्यन्नगो व्रतः ॥  
१४१ ॥ गोत्रविषये जनयितुर्न ह्येदं त्रिजः क्वचित् ॥ गोत्रविषया-  
नुगः पिराडोऽप्येति ददतः स्वधा ॥ १४२ ॥ अनियुक्ता सुतश्चैव  
पुत्रिशयाप्तश्च देवरात् ॥ उभौ तौ नार्हौ भागं जास्मात्ककाभ-  
जौ ॥ १४३ ॥ नियुक्तायामपि पुमान् नार्यजातो विधानतः ॥  
नैर्वाहः पैतृकं विषयं पतितो त्याहितो हिमः ॥ १४४ ॥

۱۴۰- پیر کا بیٹا بیٹا پنڈ والہ کو دیوے دوسرا بیٹا ناگو تیرا بیٹا باپ کو دیوے -  
 ۱۴۱- دوسرے گوتے سے بھی لڑکا آیا ہوا رہبھت موصوف ہو تو جگہ دہ بنی ہوا رہی تمام  
 دولت کو پاتا ہے -  
 ۱۴۲- پیدا کر نیوالے کے گوتہ اور دولت کو فرزند تیشی بنین پاتا ملک حکما بستی ہوا رہی گوتہ  
 اور دولت کو پاتا رہی اور اسی کو پیر دیتا ہے جس سے پیدا ہوا اس کو بیٹہ بنین دیتا -  
 ۱۴۳- اب یہ عورت نے بد دن حکم والہ وغیرہ کے جو لڑکا دیور وغیرہ سے پیدا کیا اور کسی  
 عورت نے سچا لیت عدم موجودگی فرزند با جانت کسیر وغیرہ دیور وغیرہ سے لڑکا پیدا کیا پھر لڑکا  
 قسم کے لڑکے حصہ بنین پاتے کیونکہ پیدا لڑکا دوسرے شوہر سے پیدا ہوا -  
 ۱۴۴- اور حالیکہ عورت کسیر وغیرہ کے حکم کو پار خلافت طریق سے بیٹا پید کرے تو وہ بیٹا  
 باپ کی دولت کو بنین پاتا کیونکہ وہ تپت سے پیدا ہوا -

۷ تپتہ اسکو کہتے ہیں کہ جو اپنی برائی سے ذہن کے دھبہ سے گر گیا ہے۔

پوत्रیکاयां कतायांतुपरिपुत्रोऽनुजायते॥ समस्तत्रविभा-  
गः स्याज्ज्येष्ठतानास्ति हि स्त्रियाः॥ १३४॥ अपुत्रायां कता-  
यांतुपुत्रिकायांकथंचन॥ धनंतत्पुत्रिकामर्त्ताहरेतेवाविचा-  
र्यन्॥ १३५॥ अकतावाकतावापियंविन्देत्सहशात्सुतम्॥  
यौत्रिमातामहस्तेनद्यात्पिराडं हरेद्धनम्॥ १३६॥ पुत्रेरातो-  
कानूजयति यौत्रेगानन्यमसुते॥ अथपुत्रस्य यौत्रेगात्रध-  
स्यानोति विद्वयम्॥ १३७॥ पुत्रान्नोनरकाद्यस्मात्त्रायते पित-  
रंसुतः॥ तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयं भुवः॥ १३८॥ यौ-  
त्रहो हि त्रयोर्लोकेषु विशेषो नोपपद्यते॥ हो हि त्रयोऽपि तत्पुत्रेन  
सन्तारयति यौत्रवत्॥ १३९॥

۱۳۴- لا ولد آدمی کے اگر تیر کا کرنے کے بعد (یعنی لڑکی کو یکا فرزند قرار دینے کے بعد)  
لڑکا پیدا ہو تو اس مقام پر اس لڑکے کے ساتھ بیٹے کا حصہ برابر ہو تا ہے کیونکہ عورتوں کو بزرگی  
میں ہے اس سے بزرگی کا حصہ پیدا سے گی۔

۱۳۵- اگر تیر کا سے لڑکا پیدا ہو تو تیر کا مر جائے تو اس کے مرنے کے بعد اسکی دولت  
کو اسکا شوہر لیوے اس میں کچھ بچا رہے۔

۱۳۶- بیٹے کو بیٹا کر کے مانا ہو یا بیٹا نہ مانا ہو لیکن وہ بیٹی اپنے مقوم شوہر سے بیٹا پیدا  
کرتے تو وہ بیٹا اپنے مانا لا دل کی دولت لیوے اور مانا کو شوہر دیوے کی چیز مانا بیٹا لا کر  
۱۳۷- بیٹا کے وسیلہ سے اندر لوگ وغیرہ کو فتح کرتا ہے اور پوتائے کے وسیلے سے بے انتہا پھل کو پاتا  
ہے اور پوتائے کے وسیلے سے سورج لوگ کو پاتا ہے۔

۱۳۸- بیٹے نام و فرخ کا ہے اترنے محافظ کے ہیں چونکہ بیٹا اپنے کو و فرخ سے بچاتا  
اس سے پتر کہتا ہے اس بات کو شرعی برہما جی نے کہا ہے۔

۱۳۹- دنیا میں پوتا اور نانی دونوں برابر ہیں نانی بھی مانا کو پرک میں شامل ہوتا ہے تاکہ لاوے

अनेन तु विधानेन पुराचक्रैः ययुर्विकाः ॥ विवृष्ट्यर्थस्ववंश-  
स्य स्वयं रसः प्रजायति ॥ १२८ ॥ ददौ सदश धर्मा य कश्यपाय च  
योदश ॥ सोमाय राज्ञे सत्कृत्य प्रीतात्मा सप्तविंशतिम् ॥ १२९ ॥  
यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेणादुहिता समा ॥ तस्या मात्मनितिष्ठं  
त्यां कथमन्योधनं हरेत् ॥ १३० ॥ मातुस्तु यौतुकं यस्यात्कुमारी  
भाराय च सः ॥ दौहित्रस्य च वहेत् पुत्रस्यास्थितं धनम् ॥ १३१ ॥  
दौहित्रो ह्यस्थितं रिक्थं यमपुत्रस्य पितुर्हरेत् ॥ स यवदद्याद्दौ-  
पिरा दौपित्रे माता महाय च ॥ १३२ ॥ यौत्रदौहित्रयोर्लोकेन-  
विशेषोऽस्ति धर्मतः ॥ तयोर्हि माता पितरौ संभूतो तस्य देहतः  
॥ १३३ ॥

۱۲۸- اگلے زمانہ میں ترقی نسل کی واسطے دکن پر جا پت نے اس طرح دختر کو بجا سے  
فرزند کے مانا ہے۔

۱۲۹- خوشی سے بہ تو وضع تمام دکن پر جا پت نے دھرم کو دش کنیا اور کیسب رش کو  
تیرہ کنیا اور چند رمان کو ستائیس کنیا دین۔

۱۳۰- جیسے اپنی آتما ہے ویسے بیٹا ہے اور بیٹا کے برابر کنیا ہے اسلئے آتما کے برابر کنیا کو  
ہونے پر کس طرح دوسرا آدمی دولت کو لے لے۔

۱۳۱- بعد وفات والدہ کے اسکی پوتی تمام دولت حکما آگے بیان ہوگا اسکی کماری کنیا  
پاتی ہے اور جبکہ بیٹا ہوا اسکا سب دھن ناتنی لینے لڑکی کاڑگا پاتا ہے۔

۱۳۲- جو شخص بیٹا نہ لکھتا ہو اسکی تمام دولت ناتنی پا دے اور وہ دو پند ویسے ایک  
پاپ کو اور ایک اپنے مانا کو۔

۱۳۳- دنیا میں پوتا اور ناتنی میں خصوصیت نہیں ہے، دونوں برابر ہیں کیونکہ ایک کے  
والدہ کی اور ایک کے والدہ کی سپد آیتیں ایک ہی سے ہے۔

एकं द्रव्यं भस्मं चारं संहरत सर्वजः ॥ ततोऽपरे ज्येष्ठ दद्यात्तदू-  
 नानां स्वमाहृतः ॥ १२३ ॥ ज्येष्ठस्तु जातो ज्येष्ठायां हरे ह्ययमथोड-  
 श ॥ ततः स्वमाहृतः शेषाभजेरन्निति धारणा ॥ १२४ ॥ सदृश-  
 स्त्रीयुजातानां पुत्रारामविशेषतः ॥ नमाहृतो ज्येष्ठमस्ति जन्म-  
 तो ज्येष्ठ्यमुच्यते ॥ १२५ ॥ जन्मज्येष्ठेन चाह्वानं स्वब्राह्मणस्या-  
 स्वयिस्मृतम् ॥ यमयोश्चैव गर्भे युजन्मतो ज्येष्ठता स्मृता ॥ १२६ ॥  
 ॥ अपुत्रोऽनेन विधिना सुतां कुर्वीत पुत्रिकाम् ॥ यदपत्यं भ-  
 वेदस्यां तन्मम स्यात्त्वधाकरम् ॥ १२७ ॥

۱۲۳ - پہلی شادی سے جو لڑکا بیچھے پیدا ہو وہ ایک اچھا بیل اور دھاریلو کے اور بھائی  
 اس بیچھے بیل سے چھوٹا بیل اور دھاریلو بن والدہ کی شادی کے سلسلہ بزرگی کے کی جاتا جا  
 ۱۲۴ - بڑی عورت میں پہلے لڑکا پیدا ہو تو پندرہ گنوار ایک بیل لوے کے بعد چھوٹی عورت میں  
 جو لڑکے پیدا ہوئے ہیں وہ اپنی والدہ کی شادی کے سلسلہ بزرگی کو پار کر لیتا باقی ماندہ گنوار کا  
 حصہ لے لیں۔

۱۲۵ - اپنی ذات کی عورت سے جتنے لڑکے پیدا ہوئے ہیں انھوں میں والدہ کی شادی کے حساب بزرگی  
 بنیں۔ بلکہ پیدائش کے حساب سے بزرگی ہے۔

۱۲۶ - ایسا نہیں کہ صرف فقیر حصص میں پیدا کس سے بزرگی ہو بلکہ جو بشوم لکھ میں انوکے  
 ملائے کیواسطے سو براہمنی نام منتر پیلے پیدا ہوئے لڑکے کے نام سے کہا جاتا ہے کہ غلامی لڑکے کا باپ  
 لکھ کر نہ ہے ایسا نہیں کہ لڑکا اور جو دو لڑکے ساتھ ہی پیدا ہو میں اس منظم پر اگر چہ شپام  
 حاصل میں پہلے لطف سے بیچھے پیدا ہو گا اور پچھلے لطف سے پیلے پیدا ہو گا تاہم جو پہلے پیدا ہو گا  
 وہی بڑا کہا دینگا۔

۱۲۷ - کہنا دان کے وقت داماد ایسی صلاح کرو کہ ہر گھو میں بیٹا نہیں ہے اس سٹی سے جو  
 پہلے پیدا ہو گا وہ ہمارا مترادھ کرم کرنیوالا ہو اس طرح دختر کو بیٹے فرزند قرار دے۔

सकाधिकं हरेत्येवः पुत्रोऽध्यर्द्धततोऽनुजः ॥ अंशमंशयवी  
यांसद्रतिधर्मो व्यवस्थितः ॥ ११७ ॥ स्वर्भ्योऽशोभस्तुकन्याभ्याः  
प्रदद्युभातरः शयकः ॥ स्वात्कारंशाच्चतुर्भागं पतिताः स्युरदि-  
त्सवः ॥ ११८ ॥ अजाविकंशैकशफं न जातु विषमं भजेत् ॥ अ-  
जाविकं तु विषमं ज्येष्ठस्यैव विधीयते ॥ ११९ ॥ यवीयान् ज्ये-  
ष्ठभार्यायां पुत्रमुत्पारयेद्यदि ॥ सप्तस्तत्र विभागः स्यादिति ध-  
र्मो व्यवस्थितः ॥ १२० ॥ उपसर्जनं प्रधानस्य धर्मतो नोपपद्यते  
॥ पिता प्रधानं प्रजनेतस्माद्धर्मैरातं भजेत् ॥ १२१ ॥ पुत्रः कनि-  
ष्ठो ज्येष्ठायां कनिष्ठायां च पूर्वजः ॥ कथं तत्र विभागः स्यादिति  
चेत्संशयो भवेत् ॥ १२२ ॥

۱۱۷۔ بڑا بھائی دو حصہ لیوے اُس سے چھوٹا بیٹا دو حصہ لیوے سے چھوٹا ایک حصہ لیوے۔  
یہ دھرم کی پستھ ہے۔

۱۱۸۔ سب بھائی علیحدہ علیحدہ اپنے اپنے حصہ موٹی چھٹہ شیرہ کو دین نہ دین تو نیت ہو

۱۱۹ - بکری و بھیڑ و ایک گھروالے (یعنی گھوڑا وغیرہ) کیسب طاق ہوں (یعنی چاہے جانی اور پانچ گھوڑے ہوں) تو طاق کا عدد کرنا چاہئے جو باقی ہے وہ در الیوس۔

۱۲۰۔ چھوٹا بھائی بڑے بھائی کی زوجین میں پیدا کرے تو اس بٹیکے کے ساتھ چاچا لوگ برابر تقسیم حصہ کریں اس بٹیکے کو بڑے بھائی کے برابر حصہ نہ دیں دھوم نہ مچے۔

۱۲۱۔ افضل تو غیر افضل کرنا دھرم کے خلاف ہی پیدا کرنا میں والد افضل ہی ایسے دھرم کی والد کی خوشگوار ہی کرے

۱۲۲۔ ایک بکے دوزخ میں اور جو ٹیڑی زوجہ لڑکا بیٹے پیدا ہوا اور ٹیڑی زوجہ کے پیچھے ہوا اس مقام پر تقسیم حصہ طرح کرنا چاہئے ایسی حالت میں متبہتہ میں تصفیہ کرنے کو شوک آئندہ میں کہیں



ज्येष्ठस्यविंशउद्धारःसर्वद्रव्याच्चयद्गरम्॥ ततोर्द्धमध्यमस्या-  
स्यासुरेयंतुयवीयसः॥ ११२॥ ज्येष्ठश्चैवकनिष्ठश्चसहरेतांय-  
थोदितम्॥ येऽन्येज्येष्ठकनिष्ठाभ्यांतेषांस्यान्मध्यमंधनम्॥  
११३॥ सर्वेषांधनजातानामादरीताश्चमप्रजः॥ यच्चमातिश-  
यंकिंचिदशतश्चाभुयाद्गरम्॥ ११४॥ उद्धारोनरशस्यस्ति सं-  
यन्नानांस्वकर्मसु॥ यत्किंचिदेवदेयंनुज्यायसेमानवर्द्धनम्॥  
११५॥ एवंसमुद्भूतोद्धारसमानंशान्प्रकल्पयेत्॥ उद्धारोऽनुद्भू-  
तेलेषामियंस्यादंशकल्पना॥ ११६॥

۱۱۲- تمام چیزوں میں افضل چیزیں اور بیٹوں حصہ بڑے کو دیا جائے اور بچے کو چالیسواں  
حصہ اور چھوٹے کو اتنی دان حصہ دیگر جو باقی رہے اسکو برابر حصہ کر کے اور سب بیویوں  
۱۱۳- بڑے اور چھوٹے کو جیسا کہ ہے ویسا ہی دینا اور بچے کو دولت بھی اور سب  
مستم کی دینا چاہیے۔

۱۱۴- تمام دولت میں جو دولت افضل ہے اور مستم دولت میں جو دولت افضل ہو اگر کوئی  
دوسرے جو چار پانچ میں انہیں سے سچا دس چار پانچ ایک چار پانچ ان تینوں چیزوں کو برابر  
لیوے لیکن اس قسم کی تقسیم کو بوقت جانتا جبکہ بڑا بھائی صاحب صفت ہو اور بھائی صاحب  
۱۱۵- سب بھائی اسے کرم میں مقرر ہوں تو جو تقسیم اور کر کے آئے ہوں وہ کرنا بلکہ بڑے کی  
تقسیم قائم رکھنے کیو اسلئے کچھ ایک چھوٹی چیز دینا۔  
۱۱۶- اس طرح بڑے کو اور ہزار نام حصہ دیگر باقی ماندہ اشیاء کو برابر حصہ کرنا اور حصہ نہ کر  
خوب سے تو آگے جو حصہ مقرر کر نیوے وہ کرے۔

۱۱ شرح ۲۰ و ۵۰- ان سب عددوں میں سے صفر دور کیا جائے تقسیم حصص ہوگی۔

ج्यےنجاتماत्रेगापुत्रीभवतिमानवः॥ पितृगामन्त्राश्चैव  
 सतस्मात्सर्वमर्हति॥ १०६॥ यस्मिन्त्रांसन्नयति येनचानंत्य  
 मश्नुते॥ सखधर्मजः पुत्रः कामजानितराचिदुः॥ १०७॥ पि-  
 तेवपालयेत्पुत्रान्ज्येष्ठोभ्रातृन्यवीयसः॥ पुत्रवद्यायिवर्त्ते-  
 न्ज्येष्ठेधातरिधर्मतः॥ १०८॥ ज्येष्ठः कुलं वर्द्धयति विनाश-  
 यतिवापुनः॥ ज्येष्ठः पूज्यतमोलोके ज्येष्ठः सस्त्रिगर्हितः १०९  
 ॥ योज्येष्ठोज्येष्ठवृत्तिः स्यान्मातेव हि यितेवसः॥ अज्येष्ठवृत्ति-  
 र्यस्तु स्यात्संयुज्यस्तु वन्धुवत्॥ ११०॥ एवं स हवसे शुर्वाष्ट्य-  
 ग्वाधर्मकाम्यया॥ षष्ठ्यविवर्द्धते धर्मस्तस्माद्गम्याष्ट्यकृत्ति-  
 या॥ १११॥

- ۱۰۶- بڑے بیٹے کے پیدا ہونے سے آدمی صاحب اولاد کہلاتا ہے اور پتر و مکے قرض سے  
 چھوٹ جاتا ہے اسلئے بڑا بیٹا سب دولت لینے کے لائق ہوتا ہے۔  
 ۱۰۷- جس کے پیدا ہونے سے باپ قرض سے ادا ہو جاتا ہے اور مکت پاتا ہے وہی بیٹا و حرم  
 پیدا ہوتا ہے۔ اور سب کام سے پیدا ہونے میں ریشیوں نے کہا ہے۔  
 ۱۰۸- باپ کی طرح بڑا بیٹا سب بھائیوں کی حفاظت کرے اور بڑے بھائی کے پاچھوٹے  
 بھائی بیٹے کی طرح رہیں۔  
 ۱۰۹- بڑا بیٹا ہی خاندان کو ترقی دیتا ہے اور نیست نابود بھی کرتا ہے اور دنیا میں بڑی تعظیم  
 کے لائق ہے اسلئے لوگوں نے اسکی بڑائی مہین کی ہے۔  
 ۱۱۰- جو بزرگی اختیار کرتا ہے وہ ماں باپ کے برابر ہے اور جو بزرگی مہین اختیار کرتا ہے وہ مثل  
 بھائی کے قابل تعظیم ہے۔  
 ۱۱۱- اس طریق سے سب شامل ہو کر مہین یا و حرم کر سکی خواہش سے علیحدہ مہین جو کہ علیحدہ  
 رہنے سے و حرم ترقی پاتا ہے اسلئے علیحدہ رہنا و حرم سے شامل ہے۔

नानुशुश्रुमजात्वेतत्पूर्वेष्वपि हि जन्मसु ॥ शुल्कसंज्ञेन मूल्ये-  
न दत्तं दुहितृविक्रयम् ॥ १०० ॥ अन्योन्यस्याव्यभिचारे भवे-  
दामरगान्तिकः ॥ सवधर्मः समासेन ज्ञेयः स्त्रीपुंसयोः परः ॥  
१०१ ॥ तथानित्यं ये यातां स्त्रीपुंसौ तु कृतक्रियौ ॥ यथाना-  
भिचरेतां तौ विमुक्तावितरेतरम् ॥ १०२ ॥ सवस्त्रीपुंसयोरुक्तो  
धर्मो बोरतिसंहितः ॥ आपद्यत्यप्राप्तिश्च दायभागनिबोध-  
तः ॥ १०३ ॥ ऊर्ध्वपितृश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ॥ भजेर-  
न्यैव कंरिक्थमनीशास्ते हि जीवतोः ॥ १०४ ॥ न्येव सवतुष्टुत्ती-  
यात्पित्र्यंधनमशेषतः ॥ शेषास्तमुपजीवेयुर्यथैव पितरन्त-  
या ॥ १०५ ॥

۱۰۰۔ معاوضہ لیکر پوشیدہ کتیا کا بیجا پہلے جہنم میں بھی پہن سنا۔

۱۰۱۔ مرتے دم تک دونوں کی جدائی نہ ہو مجاہد پر دم استری پریش کا چاہنا۔

۱۰۲۔ استری پرش: ایسی تدبیروں سے زندگی بسر کریں کہ جس سے باہم جدائی نہ ہو۔

۱۰۳۔ استرعی پرش کا دھرم مع محبت باہمی کے بیان کیا اور وقت نصیبت میں اول

کے حاصل کرنے کو بھی بیان کیا اب اس کے بعد تقسیم حصص کو بھی بیان کرتے ہیں۔

۱۰۴۔ مان باپ کے مرنے کے بعد سب بلکہ مان باپ کی دولت کے برابر حصہ کریں گی

زندگانی والدین سب بڑے بہتر نہ بنا لیجئے گے ہیں۔

۱۰۵۔ مان باپ کی تمام دولت کو بڑا بیٹا ہی لیوے اور چھوٹا اور سمجھلا بھالی سب بڑے

بھالی سے اوقات گزاری کریں جس طرح والد سے پرورش پاتے تھے۔

ت्रिंषद्वर्षोद्दहेत्कन्यां हृद्यां द्वादशवार्षिकीम् ॥ अष्टवर्षोऽष्ट-  
 वर्षीवाधर्मेसीदतिस्त्वरः ॥ ६४ ॥ देवदत्तांपतिर्भार्याविन्दते  
 नेच्छयात्मनः ॥ तांसाध्विंविभयान्नित्यं देवानांप्रियमाचरन् ॥  
 ६५ ॥ प्रजनार्यस्त्रियः सृष्टाः सन्तानार्यं च मानवाः ॥ तस्मात्साधा-  
 रणोधर्मः शुतीपत्यासहोदितः ॥ ६६ ॥ कन्यायांदत्तशुल्का-  
 यां न्रियेतयदिशुल्कदः ॥ देवरायप्रदातव्यायदिकन्यानुमन्य-  
 ते ॥ ६७ ॥ आदसीतनशुद्धोऽपिशुल्कंदुहितरंददन् ॥ शुल्कं-  
 हिगुल्लङ्घनं ते छन्नंदुहितविक्रयम् ॥ ६८ ॥ एतत्तुनपरेचकु-  
 र्नाथो जालुमानवाः ॥ यदन्यस्यप्रतिज्ञाययुनरन्यस्यरीयते  
 ॥ ६९ ॥

۹۴- تیس برس کی عمر کا لڑکا اور بارہ برس کی دختر تخت جگر کا دواہ کرے یا چوبیس برس کا  
 لڑکا اور آٹھ برس کی لڑکی کا دواہ کرے یہ مناسب وقت دکھایا گیا نہیں ہے اتنی برت میں  
 دید پڑھ سکتا ہے اسکے بعد گھر سے آئیں اور نکرے۔

۹۵- ویو تاؤن کی دی ہوئی کنبیا کو شوہر پاتا ہے اپنی خواہش سے نہیں سئلے دیوتاؤں کی  
 بوجھ کرتا ہوا اس شیک چلن عورت کی ہر روز پرورش کرے۔

۹۶- محل رہنے کیواسلے عورت کو اور محل قائم کرنے کیواسلے مرد کو یہاکیا اسلے دید میں  
 استری پیش کا سا دھارن دھوم ہے لینے زوجہ کے ساتھ ہی شوہر لگن ہو تو غیرہ کرم کرے  
 ۹۷- کنبیا کا معاوضہ دیکر معاوضہ دینے والا مرگا تو اسکے بھائی کے ساتھ اس کنبیا کا دواہ  
 کرے بشرطیکہ وہ کنبیا منظور کرے۔

۹۸- شوہر بھی کنبیا کو دیکر معاوضہ نہ دیوے اسکے لینے سے کنبیا کا پوشیدہ بچہ والا کتا ہوا  
 ۹۹- ایک کو ککر دوسرے کو دینا اس بات کو کسی چھوٹے بڑے نے کبھی نہیں کیا۔

काममामसातिहेतुहेतुमत्यपि॥ नर्चैनांप्रयच्छेतुगु-  
राहीनायकहिंचित॥ ८६॥ श्रीराध्यागयुदीक्षेतकुमा-  
र्युतुमतीसती॥ ऊर्ध्वतुकारेतस्माद्धिरेतसदृशंपतिम्॥  
८७॥ अरीयमानामर्त्तास्मधिगच्छेद्यदिस्वयम्॥ नैनः किं-  
चिरवाप्तोतिनचयंसाधिगच्छति॥ ८८॥ अलंकारंनदीत-  
पित्र्यंकन्यास्वयंवरा॥ मातृकंधातृदत्तंवासेनास्याद्यदितं  
हरेत्॥ ८९॥ पित्रेनरद्याच्छुल्कंतुकन्यास्यतुमतींहरन्॥ सहि-  
स्वाम्यारतिजामेददत्तांप्रतिरोधतात्॥ ९०॥

۸۹- کنیا باجین ہو کر بھی تاز لیست گھر میں سے لے کر اس کنیا کو کبھی بلجڑا دی کو نہ دیوے۔  
۹۰- تین تین برس تک باجین کنیا اچھے شوہر کی امید میں رہے اس کے بعد اپنے ہی ہوا فاق  
شوہر حاصل کرے۔  
۹۱- والد وغیرہ شادی نہیں کرتے اور کنیا آپ سے قبول کرے تو اس کنیا کو اور بڑے عیب  
نہیں ہے۔  
۹۲- اپنی طرف سے شوہر کو قبول کر نیوالی دختر کے ماں باپ بھائی وغیرہ کے دیئے  
ہوئے زیور وغیرہ کو نہ لےوے اگر لےوے تو جو کمائی ہے۔  
۹۳- باجین دختر سے شادی کر نیوالا شوہر دختر کے باپ کو کچھ شلگ (لینی سادھ)  
نہ دیوے۔ کیونکہ اولاد و برہم پیدا ہو نیکی وجہ سے باپ کی ملکیت قائم نہیں رہتی۔

+ یعنی اگر پہلے ہی سے شادی ہوتی تو بعد فرہنت جین کے حمل قائم ہو جاتا پس سب سے پہلی شادی کے حمل سے پہلے ہو  
باپ کی ملکیت جاتی ہے۔

अधिविन्नातुयानरीनिर्गच्छेद्विषितायहात॥सासद्यःसन्नि-  
 रोद्धव्यात्याज्यावाकुलसन्निधौ॥८३॥प्रतिषिद्धापिवेद्यातु  
 मद्यमभ्युदयेष्वपि॥प्रेक्षासमाजंगच्छेद्वासादराड्याकृया  
 लानिवद्॥८४॥यस्मिन्नाश्वयराश्वैवविन्देन्मोषितोहिजाः  
 ॥तासांचराश्वमेरास्याह्येष्ठंयुजाचवेश्मच॥८५॥भर्तुः  
 शरीरशुश्रूषांधर्मकार्यचनैत्यकम्॥स्याच्चैवकुर्यात्सर्वेषांना-  
 स्वजातिःकथंचन॥८६॥यस्तुतत्कारयन्मोहात्मजात्यास्थि  
 तयान्वया॥यथाब्राह्मराचांडालःपूर्वदृष्टस्तथैवसः॥८७  
 ॥उत्तमायाभिहृषायचरायसदृशायच॥अत्राग्रामपितां  
 तसौकन्यादद्याद्यथाविधि॥८८॥

۸۳- جس عورت کے اوپر دوسرا دواہ شوہر نے کیا اور وہ عورت غصہ ہو کر گھر سے نکل جاتی ہو  
 تو اس کو روک کر گھر میں رکھنا خواہ خانہ ان کے روپر و ترک کرنا چاہیے۔

۸۴- کستری وغیرہ کی زوجہ شوہر وغیرہ سے محفوظ ہو اور شادی وغیرہ کاموں میں بھی منع  
 شراب کو پیو یا ناچ رنگ کے حلیم میں چلی جا تو چھوٹی سونا دھڑوے۔

۸۵- بہرہن کستری دیشیہ بیسبہ درن کی اور دوسرے درن کی عورتوں سے شادی کریں  
 تو ان عورتوں کے درجہ کی برائی اور پو جا اور گھر یہ سب بلحاظ سلسلہ درن کے مقدم ہونے پر  
 ۸۶- سب درنوں میں جو اپنے درن کی استری میں ہی شوہر کے ذاتی وحشی کام دقیم و عوم  
 کا کام کریں دوسرے درن کی استری نہ کریں۔

۸۷- جو شخص بحالت شوہر اپنی ذات کی عورت کے ان دونوں کاموں کو سب دوسری ذات کی عورت  
 سے کرنا ہی تو جیسا بلہی میں شوہر سے چاہا ال پیدا ہوا ویسا ہی وہی یہ بیہوش نہ کیا ہے۔

۸۸- اپنے کل میں بہت اچھا چارچ اور خوبصورت اور مقوم کرکے تلبڑی چوٹی بھی ہو  
 (یعنی دواہ کے لائق نہ تو بھی اسکا دواہ شاستر کے موافق کر دینا چاہیے۔

अतिक्रामेत्प्रसक्तं यामतं रोगार्तमेव वा ॥ सात्रीन्मासान्परि-  
त्याज्याविभूषणापरिच्छदा ॥ ७८ ॥ उन्मत्तं पतितं ह्लीबमबीजं  
पायरोगिराम ॥ न त्यागोऽस्ति हि वं त्याश्च न च दाया पवर्तमम् ॥ ७९ ॥  
मद्यपासाधुवृत्ताचप्रतिकूलाचयाभवेत् ॥ व्याधिता  
वाधिवेत्तव्याहिंसाऽर्थघ्नीचसर्वदा ॥ ८० ॥ वन्द्याष्टमेऽधिवे-  
द्याब्दे रशमेतु मृतप्रजा ॥ एकादशे स्त्रीजननीसद्यस्त्वप्रिय-  
वादिनी ॥ ८१ ॥ यारोगिरागीत्यानुहितासम्यक्ताचैव शीलतः  
॥ सानुजाप्याधिवेत्तव्यानावमन्याचकर्हिचित् ॥ ८२ ॥

۸۰۔ تار بازو نش بازو ملین شوهر کی بے نظمی جو عورت کرتی ہے اسکو تین مہینہ تک

زیور اور کپڑا نہ مینا چاہئے۔

۸۱۔ اہمیت اور اپنے درن کے دھرم کو نہ کر نیوالا دغمت و کسی بیماری کی وجہ سے لطفہ نہ

دلا دیا پ رنگ ایسے شوہر سے فساد کر نیوالی عورت کو ترک کرنا مگر اسکی دولت نہ لینا۔

۸۰۔ تیراب پینے والی اور سادھون کی سیوا کر نیوالی اور دشمنی کر نیوالی اور بیمار یوں سے بھری

ہو کی اور گھات کر نیوالی اور ہر روز دولت کو مینت دنا ہو کر نیوالی عورت ہو تو دوسرا دواہ کرنا چاہئے

۸۱۔ بائجہ عورت اور جبکی اولاد نہ جیتی ہو اور جو صرف دفتر می پیدا کرتی ہو ایسی عورت ہونے

پر جس سلسلہ آٹھویں دسویں گیارھویں سال دوسرا دواہ کرنا چاہئے اور پندرہ بان عورت کے

اوپر تو فوراً دوسرا دواہ کرنا چاہئے۔

۸۲۔ جو عورت ملین ہو لیکن خیر خواہ اور بامروت ہو تو اسکی اجازت سے دوسرا دواہ

کرنا چاہئے مگر اسکی بے قدری ہرگز نہ کرنا چاہئے۔

विधायवृत्तिभार्यायाः प्रवसेत्कार्यवान्नरः ॥ अचत्तिकार्य-  
ताहिस्त्रीप्रदुष्येत्स्थितिमत्यपि ॥ ७४ ॥ विधायप्रोषितेवृत्तिं  
जीवेन्नियममास्थिता ॥ प्रोषितेत्त्वविधायैवजीवेच्छित्तो-  
गर्हितैः ॥ ७५ ॥ प्रोषितो धर्मकार्यार्थप्रतीक्ष्योऽद्योनरस्समा-  
॥ विधायैवदयशौर्यवाक्यार्थत्रीस्तुवत्सराज्ञ ॥ ७६ ॥ संव-  
त्सारं प्रतीक्षेत द्विवर्ती योषितं पतिः ॥ ऊर्ध्वसंवत्सरात्तेनां वा-  
यं हत्वानसंवसेत् ॥ ७७ ॥

۶۴۔ اہل مطلب سفر کرنے سے پہلے عورت کے کھانے پینے کا بندوبست کروے تب  
پردیش کو جائے کیونکہ جو کھانے کی شدت سے جیادار عورت بھی دوسرے کی خوش کریگی۔  
۶۵۔ کھانے پینے کا انتظام کر کے پردیش جانے کے بعد اوسکی زوجہ ہم سے بکر زندگی بسر کرے۔  
اور بدولت انتظام خور و نوش کے شوہر کے سفر کرنے میں سوت کاٹنے سے اور لائق توفیق  
دستکار یوں سے اوقات گزاری کرے۔

۶۶۔ دھوم کا برج کرنے کے واسطے عورت پردیش گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل آٹھ ہفت  
تک کرے اور او دیا پر ہنسنے کیواسطے پردیش گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل چھ برس  
تک کرے اور روزگار اور پیش کو اپنے پردیش گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل میں برس تک کرے۔  
۶۷۔ مرد ایک سال تک لڑائی جھگڑا نہ کرنے والی عورت کا انتظار کرے اوسکے بعد بھی  
اگر لڑائی جھگڑا نہ کرتی ہے تو زیور وغیرہ جو دین دیا سکودا پس بیکرا کے ساتھ جماعت کرے  
کرے مگر کھانا کھڑا دیے جائے۔

۶۸۔ اسکی بیکرا کرنا چاہئے اسکایانہ اور بہت میں بولاؤں میں جی کے شہر اور اس طرح پر بھی ۱۷ کے اسٹوک سٹو  
لاکڑاؤں کو پڑھنا چاہئے۔



यस्याप्रियेतकन्यायावाचासत्येकतेयतिः॥ तामनेनवि-  
धानेननिजोचिन्तेतदेवरः॥६६॥ यथाविध्यभिगम्येनांशु-  
ल्लवस्त्रांशुचित्रताम्॥ मियोभजेताप्रसवात्सकत्सकहताह-  
तौ॥७०॥ नदत्वाकस्यचित्कन्यांपुनर्दद्याद्विचक्षणाः॥ इत्या-  
युनःप्रयच्छन्निप्राप्नोतिपुरुषानृतम्॥७१॥ विधिवत्प्रतिगृ-  
ह्यापित्यजेत्कन्यांविगर्हिताम्॥ व्याधितांविप्रबुधांवाछम-  
नाचोपपादिताम्॥७२॥ यस्तुदोषवतींकन्यामनारव्यायो-  
पयादयेत्॥ तस्यतद्वितथंकुर्यात्कन्यावातुर्दुरात्मनः॥७३॥

۶۹۔ یہ عورت میں بیٹے کی پیدائش و عدم پیدائش کو بیان کیا اب اسکی دوسری کیفیت بیان کرتے ہیں کہ جس دختر کو کسی کو زبان سے دینے کو کہہ چکے اور وہ شخص جبکو دینے کو کہا قبل شادی ہو چکے ہو گیا تو اسکا برابر حقیقی اس دختر کی شادی مطابق طریقہ مندرجہ ذیل سے کرے۔  
۷۰۔ بانی سے برت کر نیوالی سفید کپڑے پہنے ہوئے کنیا کا دواہ شاستر کی ریشے کر کے بعد فراغت حیض حمل رہنے والی راتوں میں ایک ایک یار حمل ہے تک اس سے جماع کرے اس شے اولاد ہوگی وہ اسکی ہوگی جبکو وہ دختر دانی اقرار پر پہلے دی گئی تھی۔  
۷۱۔ عقل مند آدمی ایک شخص کو کنیا دیکر پھر اس کنیا کو دوسرے کو نہ دے اگر وہ بے توہارا آدمی کے قتل کے برابر عذاب ہوتا ہے سات قدم پھرنے سے پہلے عورت کے دھرم کی پیدائش نہیں ہوتی تب دوسرے کو دینے کی سکھار ہوئی اسلئے اس بچن کو کہا۔  
۷۲۔ نفوس کے لائق اور آفت آمیز اور نکار اور سخت عورت کو شاستر کے طریق سے دوا کر کے ترک کرنا چاہیے۔  
۷۳۔ عیب دار کنیا کا عیب نہ کہہ کر اسے دینے والے دُر آتما کا کنیا دان بے فائدہ ہے۔

नान्यस्मिन्विधवानाशेनियोक्तव्याद्विज्ञानिभिः ॥ अन्यस्मिन्  
हि नियुंजानां धर्महन्तुः सनातनम् ॥ ६४ ॥ नो द्वाहिके युग्मं वेयुनि-  
योगः कीर्त्यते क्वचित् ॥ न निवाहविधावुक्तं विधवावेदनं यु-  
नः ॥ ६५ ॥ अयं द्विजैर्हि विद्वद्भिः पशुधर्मो विगर्हितः ॥ मनुष्य-  
गामपि प्रोक्तो वेनेराज्यं प्रशासति ॥ ६६ ॥ समहीमस्विलंभुं-  
जन् राजर्षिप्रवरः पुरा ॥ वरानासंकरं चक्रे कामोपहतचेत-  
नः ॥ ६७ ॥ ततः प्रभृतियो मोहात्प्रमीतयति यांस्त्रियम् ॥ नि-  
योजयत्यपत्यार्थं तं विगर्हन्ति साधवः ॥ ६८ ॥

۴۴۔ اب بیٹا پیدا کرنے کیو اسلے والد و خیر کے حکم کی ممانعت لکھتے ہیں کہ برائے و کشتی و  
تینوں درن بیچہ نکورت میں بیٹا پیدا کر کے اسلے حکم نہ دیوین کیونکہ حکم دینے سے قدیم  
وہم ناش ہوتا ہے۔

۶۵۔ ۱۳۰۷ء کے شہر میں ایسا حکم کہیں نہیں لکھا ہے اور یہ عورت کے ساتھ جماع نہیں لکھا ہے۔  
۶۶۔ راجہ بین کی راج میں اس لکھنؤ و عہد کو آؤ وہیں کے واسطے راجہ بین نے کہا اسکو  
پینڈت برہمنوں نے بڑا کہا۔

۶۶- زمانہ قدیم میں راجہ شیون نے فضل راجہ پنڈے (جسکی عقل غلبہ کا یہ کہ خراب ہو گئی تھی) نام

۴۔ اُس دن سے متوہ کر کے اولاد کی خواہش سے بیوہ عورت سے جماع کو جو حکم دیتا ہے۔  
اسکی تیرائی سا دھ لوگ کرتے ہیں۔

देवराष्ट्रस्यिराडाहस्त्रियासम्पद् नित्युक्तया ॥ प्रजेसिताधि  
 गन्तव्यासन्तानस्यपरिसये ॥ ५६ ॥ विधवायां नित्युक्तस्तुष्टता  
 क्तोवाक्यतोनिशि ॥ एकमुत्प्राश्येत्युन्नद्धितीयकथंचन ॥  
 ६० ॥ द्वितीयमेके प्रजनं मन्यन्ते स्त्रीयुतद्विहः ॥ अनिर्वृत्तं नियो-  
 गार्थं पश्यन्तो धर्मतस्तयोः ॥ ६१ ॥ विधवायां नियोगार्थं निर्वृ-  
 त्तं तु यथाविधि ॥ गुरुवच्चक्षुषावच्चवर्त्तयातां परस्परम् ॥ ६२  
 ॥ नित्युक्तौ यौ विधिं हित्वा वर्त्तयातां तु कामतः ॥ तावुभौ प-  
 तितौ स्यातां स्तुवा गगुरुतत्परी ॥ ६३ ॥

۵۹- اولاد کے نمونے میں سسر وغیرہ کے حکم کو پا کر عورت رشتہ دار سے پسند یا بددلو سے اولاد  
 و نچو اہ حاصل کرے۔

۶۰- والد کا حکم پا کر بدین گئی لگا کر خاموش ہو کر بیوہ عورت میں روکا پیدا کرے سو اگر ایک  
 لڑکے کے دوسرا لڑکا بھی نہ پیدا کرے۔

۶۱- ایک بیٹا بننا اور بچے اولاد ہونا دونوں برابر میں شجر کو کون کی اپنی بحث سے اور والد  
 وغیرہ کے حکم سے جو بیٹا پیدا ہوئے اس سے مطلب حاصل نہ لیا مانتے دے اور والد وغیرہ کے  
 حکم سے بیٹا پیدا ہونے کے طریق کو جاننے دے جو دوسرا چارج ہیں وہ بیوہ عورت میں دوسرے  
 بیٹے کی پیدائش کو بھی دھوم سے مانتے ہیں۔

۶۲- جب حمل پیدا ہو چکا تب بڑا بھائی مانند گردے اور چوٹے بھائی کی زوہ مانند بیوہ کے  
 باہم رہیں مگر بہت کو سو وقت جانتا جب چوٹے بھائی کی زوہ میں والد وغیرہ کا حکم ہو۔

۶۳- والد وغیرہ کے حکم کو پا کر اور طریق کو چھوڑ کر خواہش سے بڑا بھائی چوٹے بھائی کی زوہ سے  
 یا چھوٹا بھائی شجر بھائی کی زوہ سے جماع کریں تو دونوں اپنے دن و آئینہ کے درجے گرا جائے  
 پھر بڑا بھائی بیوہ سے جماع کر لے والا کہلاتا ہے اور چھوٹا بھائی گریختی سے جماع کر لے والا  
 کہلاتا ہے۔

کریا سنیو یگما لیتہی جارجی یلہی یاتہ ॥ تسمہ ہما گینو ہسہ  
 وی جی سہنیک اے بچ ॥ ۵۳ ॥ آوہا تاہتہ وی جی سہنیک پری  
 ہتہ ॥ سہنیک سہنیک تہی جی نوا لہتہ فہلہ ॥ ۵۴ ॥ رے  
 دہمہ گہا شہنیک سنیو دہا جی لہتہ ॥ ویہ گہا مہیو گہا  
 ویہ گہا ۵۵ ॥ رے تہہ سار فہلہ ویہ جی سہنیک پری  
 کیہ تہہ ۵۶ ॥ آتہ پری پری سہنیک سہنیک سہنیک  
 ۵۷ ॥ آتہ پری پری سہنیک سہنیک سہنیک سہنیک  
 ۵۸ ॥ آتہ پری پری سہنیک سہنیک سہنیک سہنیک  
 ۵۹ ॥ آتہ پری پری سہنیک سہنیک سہنیک سہنیک  
 ۶۰ ॥ آتہ پری پری سہنیک سہنیک سہنیک سہنیک

۵۳۔ اس وقت میں جو پیدا ہو وہ چار اور تھار دونوں کا ہووے لہذا میں دیکھ رہا ہوں  
 کیا اور کس حصہ دار تھم والا اور کھیت والا دونوں ہوتے ہیں۔

۵۴۔ تھم جو ہے اور کس کھیت میں پڑا اسکا پھل کھیت والا ہی پاتا ہے صاحب تھم نہیں

پاتا۔ ۵۵۔ گتہ گھوڑا۔ اونٹ کبری بھینس سہی بھینس کی سہی لہتہ میں اس دھوم کو جانا

۵۶۔ بھوک جی کہتے ہیں کہ آپ لوگوں سے تھم دھن کی فضیلت دیگر فضیلت کو کہا اس کے بعد

وقت نصیبت میں غور زون کا دھوم کہتے ہیں۔

۵۷۔ بڑے بھائی کی زوجہ چھوٹے بھائی کی گریہ تہی کہاتی ہے اور چھوٹے بھائی کی زوجہ بڑے

بھائی کی بیوی ہو کہلاتی ہے۔

۵۸۔ وقت نصیبت نہو اور والد وغیرہ کا حکم بھی ہو لیکن بڑے بھائی کی زوجہ چھوٹے بھائی

اور چھوٹے بھائی کی زوجہ بڑے بھائی جماع کرے تو دونوں تہت تہتیں یعنی درنہ اور تہم کے

درجہ سے گرجاتے ہیں

सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रहीयते ॥ सकृदाह ददानीति  
 श्रीरायेतानि सतां सकृत् ॥ ४७ ॥ यथा गोऽश्वो मृदासीधुमहि-  
 म्यजाविकामुच ॥ नोत्पादकः प्रजाभागी तथैवान्यांगना स्व-  
 पि ॥ ४८ ॥ येऽक्षेत्रिणा बीजवन्तः परक्षेत्रप्रवापिणः ॥ तैर्बै-  
 स्यस्य जातस्य न लभन्ते फलं क्वचित् ॥ ४९ ॥ यदन्यगोयुद्धमो-  
 वत्सानां जनयेच्छतम् ॥ गोमिनामेव ते वत्सामो घंस्यन्ति तमा-  
 र्थमम् ॥ ५० ॥ तथैवाक्षेत्रिणा बीजं परक्षेत्रप्रवापिणः ॥ कु-  
 र्वन्ति क्षेत्रिणामर्थं न बीजी लभन्ते फलम् ॥ फलं त्वनभिसन्धा-  
 यक्षेत्रिणां बीजिनां तथा ॥ प्रत्यहं क्षेत्रिणामर्थो बीजाद्यो-  
 निर्गरीयसी ॥ ५२ ॥

۴۷۔ تقیم حصہ کینا دان دینگے تینوں باتیں بھلے لوگوں کی ایک ہی دفعہ ہوتی ہے۔  
 ۴۸۔ جطرح کو گھوڑا ادھڑٹ لٹوڑی بھیض لکڑی بھینڈ اٹھون میں بچ پیدا کر نیا لے گا مالک  
 بچ کو نہیں پاتا اسطرح دوسرے کی عورت میں تخم ڈالنے والا اولاد کو نہیں پاتا۔  
 ۴۹۔ دوسرے کے کھیت میں تخم ڈالنے والا اس تخم کے متروک بھی نہیں پاتا۔  
 ۵۰۔ دوسرے کی گوسفین دوسرے کا بیل بچھڑا پیدا کرے تو گنو کا مالک ان بچھڑوں کو پاتا ہے اور  
 میل کا لطف بے فائدہ پاتا ہے۔

۱۷۔ اسطرح دوسرے کیفیت میں بیج بونے والا کیفیت والے کو مطلب کرتا ہے آپ پھل کو  
مہین پاتا۔

۵۲۔ اس عورت میں جو پیدا ہو وہ بیمار اور تنہا در دونوں کا ہوگا ایسے خیال کو دلیں  
نہ کھکر جو پیدا کیا وہ بڑا کاظم دلی کا ہوگا تخم سے طرف افضل ہے۔

अथ गायत्रीयुगीताः कीर्तयन्ति पुराविदः ॥ यथा बीजं न च  
प्रव्यं पुंसां परपरिग्रहे ॥ ४२ ॥ नश्यतीत्युयथाविदः स्वेविदः म  
नुविद्व्यतः ॥ तथानश्यति वैसिप्रं बीजं परपरिग्रहे ॥ ४३ ॥ य  
थोपपोमांश्च विवीं भार्यां पूर्वविदो विदुः ॥ स्थाराण्येदस्य केरा  
रमाहः शल्यवतो मृगम् ॥ ४४ ॥ सतावानेन पुरोधो यज्ञाया  
त्मा प्रजेतिह ॥ विप्राः प्राहुस्तथा चैतद्यो भर्ता सा स्मृतांगना  
॥ ४५ ॥ न निष्कय विसर्गाभ्यां भर्तुं भार्या विमुच्यते ॥ एवं धर्म  
विजानीमः प्रजाप्रतिविनिर्मितम् ॥ ४६ ॥

۴۲- دوسری عورت میں تخم نہ ڈالنا چاہیے اسباب میں اگلے زمانہ کے جانسنے والے ریش لوگوں  
نے ہوا کا کما ہوا آئین جو خاص چھند سے شامل ہے بیان کیا ہے بلکہ پھر عمل کیا ہے۔

۴۳- کنہی نے آسمان پر پرند کو تیرا را پھر دوسرا آدمی نے اسی پرند پر تیرا تو دوسرا آدمی کا  
تیرا نکال ہوا کیونکہ شکار تو پہلے تیرا نکالو لگتا ہے اسی طرح دوسری عورت میں تخم ضائع جاتا  
یعنی جسکی عورت ہر اسی کو بچہ کا انا دہ ہوتا ہے۔

۴۴- اول راہ برتھوئے اس برتھوئی کو لیا پھر تیرے را چاؤن لیا تا ہم یہ برتھوئی را جب  
برتھوئی کی استری سے اور جسے اپنی بی بی زمین کو برابر کیا اسکا کھیت ہوا اور جسے اول تیرے  
مارا اسی کا شکار ہے یہ اگلے زمانہ کے جانسنے والوں نے کہا ہے۔

۴۵- ایک ہی پریش بین بنو نا بلکہ اپنا جیم و عورت دا اولاد یہ ب ملکر پیش لکھا تا یہ پریش بین  
نے کہا ہے۔ جو بشویر ہے ہی عورت ہی یہ ریش لوگوں نے کہا ہے۔

۴۶- استری فردخت کرنے اور ترک کرنے سے استری کے دھرم سے علیحدہ بین ہوتی اول  
ہی شری برصا جی نے یہ تیغ دھرم کی کی یہ ہم جانتے ہیں ایسا من جی نے کہا ہے۔

यादृशं तूष्यते बीजं सेवे कालोपपादिते ॥ तादृशो ह तित्त -  
 स्मिन् बीजं सैव्यं जितं गुरौ ॥ ३६ ॥ इयं भूमिर्हि भूतानां शाश्व-  
 ती यो निरुच्यते ॥ न च यो निगुराणां चिद् बीजं पुष्यति पुष्टियु-  
 ॥ ३७ ॥ भूमावप्येक केहरे कालो मानि कृषी बलैः ॥ नाना रू-  
 पाणि जायन्ते बीजानीह स्वभावतः ॥ ३८ ॥ ब्रीहयः शालयो-  
 मुज्जास्तिलामावास्तथायवाः ॥ यथा बीजं प्ररोहन्तिलसुना-  
 नी सवस्तथा ॥ ३९ ॥ अन्यदुप्तं जान मन्यदित्येतन्नोपपद्य-  
 ते ॥ उप्यते यद्विद्यद् बीजं तत्तदेव प्ररोहति ॥ ४० ॥ तत्त्वाज्ञेन-  
 विनीतेन ज्ञानविज्ञानवेदिना ॥ आयुष्कामेन वसन्नज-  
 लयस्योषिति ॥ ४१ ॥

۴- تخم ریزی کے وقت جیسا تخم کھیت میں لویا جاتا ہے ایسی ہی اس کی صفات پتہ چلائی  
 ۵- پانچ غنہ سے پیدا ہونے والے جاندار میں اونکی پیدائش کا سبب طرف ہو اور  
 کوئی چیز ہونے اور اگلنے کی صفت کو سوا تخم کے مضبوطی نہیں ہوتی ہے اس لیے تخم ہی مقدم اور  
 ۶- ایک ہی کھیت میں کاشتکارے تخم ریزی کے وقت جو دکنڈم وغیرہ تخم کو بویا اور وہ  
 تخم اپنی عادت سے انواع و اقسام کا ہوتا ہے زمین تو ایک ہی صورت کی ہے اور تخم  
 ایک صورت کا نہیں پس تخم ہی افضل ہے۔  
 ۷- جیسے ساٹھی و دھان و مونگ تل ماش جو دامن و اکھیرے پٹنے کے مختلف  
 صورت سے پیدا ہوتے ہیں۔

۸- ایک چیز کو بویا اور دوسری چیز پیدا ہوئی ایسا نہیں ہوتا بلکہ جو کچھ ہیں وہی اگتے۔  
 ۹- متخل و متوافع و دشمن و کامل و کبیان کبیان یعنی دید و شاستر کے جاتنے والے عمر کی  
 خواہش کریں اے جو آدمی ہیں وہ دوسری عورت میں تخم کو نہ ڈالیں۔

व्यभिचारात्तु भर्तुः स्त्रीलोके प्राप्नोति निन्द्यताम् ॥ स्त्रालयो  
 निंचाप्नोति पापरोगे च पीड्यते ॥ ३० ॥ पुत्रं प्रत्युदितं सद्भिः पू-  
 र्वजैश्च महर्षिभिः ॥ विश्वजन्यमिमं पुराणमुपन्यासं निबोधत  
 ॥ ३१ ॥ भर्तुः पुत्रं विजानन्ति श्रुतिद्वैधं तु भर्तारि ॥ आहूतत्वार-  
 कं केचिदपरे सेविरां विदुः ॥ ३२ ॥ सेत्रभूतास्मृतानां रीबीज-  
 भूतः स्मृतः पुमान् ॥ सेत्रबीजसमायोगात्संभवः सर्वदेहिना-  
 म् ॥ ३३ ॥ विशिष्टं कुत्रचिद्बीजं स्त्रीयोनिस्त्वेव कुत्रचित् ॥ उ-  
 भयंतु समं यत्र सा प्रसूतिः प्रशस्यते ॥ ३४ ॥ बीजस्य चैव योन्या  
 च बीजमुत्कृष्टमुच्यते ॥ सर्वभूतप्रसूतिर्हि बीजलक्षणा ल-  
 सिता ॥ ३५ ॥

۳۰- دو سر مرد کے ساتھ جماع کرنے سے عورت دنیا میں مذہب کے قابل ہوتی ہے اور عین  
 کا جنم پاتی ہے اور باپ و گون سے دو کھی و کلیش دان ہوتی ہے۔  
 ۳۱- اچھے قدیم بڑے لوگوں نے بابت اولاد کے سنار کے بھلا کیوں اسلے جس پاک و  
 کو کہا ہے اسکو کہتے ہیں۔  
 ۳۲- باپ کا بیٹا ہے ایسا سب بیٹا ہیں اور باپ کی بابت دو طرح کی تشریح کوئی کہتا  
 کہ تخم دالے کا بیٹا اور کوئی کہتا ہے کہ طرف (یعنی کثیر) دالے کا بیٹا ہے۔  
 ۳۳- عورت طرف کی صورت ہے اور تخم مرد کی صورت ہے طرف اور تخم کی آئینہ ش سے بنت  
 تخم و اردن کی پیدائش ہے۔  
 ۳۴- کہیں تخم بڑا ہے کہیں طرف بڑا، جہاں دونوں برابر ہیں وہ اولاد بہت اچھی ہے۔  
 ۳۵- تخم اور طرف دونوں میں تخم بڑا ہے سب جانداروں کی پیدائش تخم کے نشان  
 سے جاتی جاتی ہے۔



एताश्चान्याश्चलोकेऽस्मिन्पक्षप्रसृतयः ॥ उत्कर्षयोषित-  
 प्राप्ताः स्यैः स्वैर्भर्तृगुरौः शुभैः ॥ २४ ॥ एयोदितालोकयात्रा-  
 नित्यं स्त्रीपुंसयोः शुभा ॥ प्रेत्येह च सुखोदकांश्च जाधर्मानि  
 बोधत ॥ २५ ॥ प्रजनार्थमहाभागाः पूजाहो यद्ब्रवी प्रयः ॥ स्त्रि-  
 यः श्रियश्च गोहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन ॥ २६ ॥ उत्पादनमप-  
 त्यस्थजातस्य परियालनम् ॥ प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यहं-  
 स्त्रीनिबन्धनम् ॥ २७ ॥ अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रूषारतिक-  
 त्तमा ॥ वाशधीनस्तथा स्वर्गः पितृणां मात्मनश्चह ॥ २८ ॥ य-  
 तिया नाभिचरति मनोवाग्देहसंयता ॥ सा भर्तृलोकानाञ्जी-  
 तिसद्भिः सा धीतिबोध्यते ॥ २९ ॥

۲۴- سو آنکے اور بھی عورتیں ذیل قوم سے پیدا ہو کر اس لوگ میں اپنے شوہر دن کی  
 عظمت سے عظمت کو پہنچ گئیں۔  
 ۲۵- عورت و مرد کی قدیم نیک چلتی کو کہا اب اس لوگ میں اور پر لوگ میں اور زمانہ  
 میں سکھ کر اسے جو رعایا کا دھرم ہے اسکو کہتے ہیں۔  
 ۲۶- گھر میں پیدا کئے گئے اسے بڑی قسمت دلی ہو جائے لائق گھر کی بیچ دان استری اور  
 اور شہی میں ان دونوں میں خصوصیت کچھ نہیں ہے، دونوں برابر ہیں۔  
 ۲۷- بیٹا اور بیٹی کی پیدائش اور پیدائش کی انکی حفاظت اور دنیاوی مراسم قدیم  
 سپھون کا ظاہری سبب عورت ہی ہے۔  
 ۲۸- اولاد اور دھرم کا راج اور اہم سپوا اور اپنا اور اپنے بزرگوں کا سونگ سبب عورت کے  
 اختیار میں ہیں۔

۲۹- جو عورت دل و زبان و بدن کے عیب سے علیحدہ ہو کر اپنے شوہر کو چھوڑ کر غیر و کا چل  
 بین کرتی وہ بہت نوک کو پاتی ہے اور دنیا میں اسکو کچھ لوگ سادھن دیونیک چل گئیں۔

تथा च श्रुतयो बह्व्यो निगीता निगमे बह्वि ॥ स्वातन्त्र्याय परी  
 क्षार्थं तासां श्रुत निष्ठाः ॥ १९ ॥ यनो माता प्रलुप्तो भवि च  
 रस्य प्रसिद्धता ॥ तिथीतः पिता हता भित्त्यस्यैतन्निर्दर्शनम् ॥  
 २० ॥ ध्यायत्यनिष्टं यत्किंचित्पाशां प्राहस्य चेत्तसा ॥ तस्यै-  
 यन्नभिचारस्य निहवः सस्य गुच्यते ॥ २१ ॥ यादृग्गुरो न भर्ता-  
 स्त्री संयुज्येत तथा विधि ॥ तादृग्गुरा सा भवति समुद्रो वनि-  
 कागा ॥ २२ ॥ असमात्ता वसिष्ठेन संयुक्ता ॥ धमयो निजा ॥  
 शांतीमन्त्रपालेन जगामाभ्यर्हणीयताम् ॥ २३ ॥

۱۹- بھنلی کرنا عورتوں کی عادت ہے یہ مین پہلے کھارے کہ ہم مین جانتے ہیں کہ برہن ہیں  
 یا غیر برہن ہیں اسکو پرکھتے دیکھتے دیکھتے  
 ۲۰- اپنی والدہ کی بھنلی یا مٹی دیکھ کر کہنا چاہتے کہ میری والدہ غیرت پرنا ہو کہ غیرت پر  
 رفت کیا تو والدہ کے پرچ روپ (یعنی صورت لطف) اس غیرم کو میرا والد پاک کرے  
 ۲۱- جو عورت دل سے اپنے شوہر کا کچھ برا خیال کرتی ہے اس بھنلی کی نیت کا پاک کر نیوالا  
 پہلا کما ہوا منتر ہے سن وغیرہ شیون نے کہا ہے۔  
 ۲۲- جس طریق سے جیسے آدمی سے عورت وصل پاتی ہے ویسی ہی آپ بھتی ہے جیسے  
 سمندر سے ندی۔  
 ۲۳- زویل قوم سے پیدائش والا نام عورت نے لبتھ رتھ سے وصل کیا دونوں بوجھ  
 قابل ہوتے۔

۴- دل دربان کو کچھ فعل سے اپنے شوہر کو چھوڑ کر غیر فری خواہش کر دہ پرت برا کہلائی، اگلے سوا نیت برا کہلائی ہے  
 اس شوہر کو صورت شرم کا ل سے تین شخص عورتوں کی بھنلی کی عادت ظاہر کر نیوالا یہ منتر چنانچہ اس کی مین کام آتا ہے

पानं दुर्जनसंसर्गः यत्पाचविरहोऽदनम् ॥ स्वप्नोऽन्यरोहवास-  
 च्चनारीसंदूषणानिषद् ॥ १३ ॥ नैतारूपं परीक्षन्ते नासां वय-  
 सिसंस्थितिः ॥ सुखं वा चिरुखं वा पुमानित्येव भुंजते ॥ १४ ॥  
 ॥ योश्च ल्याच्चलचित्ताश्च नैस्ते ह्याच्च स्वभावतः ॥ रक्षिताय-  
 त्ततोऽपीह भर्तृत्वे ता विजुर्वते ॥ १५ ॥ सवं स्वभावं ज्ञात्वाऽऽ-  
 सा प्रजापतिनि सर्गजम् ॥ परमं यत्समातिष्ठेत्पुरुषोरक्षरांप्र-  
 ति ॥ १६ ॥ शाय्यासनमलंकारं कामं क्रोधमनार्जवम् ॥ द्रोह-  
 भावं कुचर्यां च स्त्रीस्यो मनुरकल्पयत् ॥ १७ ॥ नास्ति स्त्रीणां-  
 क्रियामं वैरिति धर्मो व्यवस्थितिः ॥ निरिन्द्रियाह्यमंशाश्च स्त्रि-  
 योऽनृतमिति स्थितिः ॥ १८ ॥

۱۳۔ عورتیں کیواسطے چھ باتیں داخل عیب میں شراب کا پینا بدی صحبت شوہر دوستی  
 اور اوراد وغیرہ کو نہایت سونا دوستی کے گھومین رہنا۔

۱۴۔ عورتیں صورت و عمر کو نہیں دیکھتی ہیں تو بصورت ہو یا بر صورت ہو لیکن مرد ہونے  
 کو بھوک کرتی ہیں۔

۱۵۔ عورت توبہ پر نیکی سے محفوظ بھی ہوتا ہم اپنی بد اطواری قتل و طبعی و بیو خالی دعوات  
 این باتوں سے شوہر کو رنجیدہ کرتی ہے

۱۶۔ وقت پیدائش سری بر سماجی سے عورتوں کی یہ عادت جائز تھا کیوں سطر مرد تدبیر کرے۔  
 ۱۷۔ پلنگ دامن دنا و غیرہ بنائے کی عادت و کام کرو دھ و کھو پرین و لسانیت بد چلنی

ان سب کو من جی نے شرم پیدائش میں عورتوں کو دیا اسلئے توبہ سے حفاظت کرنا چاہئے۔  
 ۱۸۔ عورتوں کی کریمائتوں سے نہیں ہے یہ دھرم میں داخل ہو اندری اور شتران دونوں

سے عورت علیحدہ ہو دروغ کے مانند نامبارک ہو یہ شتر کا علم ہے۔



पुरुषस्य स्त्रियाश्चैव धर्म्यवर्त्मनिति सतोः ॥ संयोगो विप्रयो-  
गे च धर्मान्वस्यामि शाश्वतान् ॥ १ ॥ अस्वतंत्राः स्त्रियः का-  
र्याः पुरुषैस्त्रैर्विवानि शम् ॥ विषयेषु च सज्जन्यः संस्थाप्या  
आत्मनो वशे ॥ २ ॥ पितरक्षति कौमारं भर्तारसति यौवने ॥  
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रान् स्त्रीश्चातंज्यमर्हति ॥ ३ ॥ कालेऽदाता  
पितावाच्यो वाच्यश्चानुपयन्यति ॥ मृते भर्तारि पुत्रस्तु वा-  
च्यो मातुररक्षिता ॥ ४ ॥ सूक्ष्मेभ्योऽपि प्रसंगेभ्यः स्त्रियोरप्य  
विशेषतः ॥ इयोर्हि कुलयोः शोकमावहेयुररक्षिताः ॥ ५ ॥ इ-  
मं हि सर्ववर्णानां पश्यन्तो धर्ममुत्तमम् ॥ यत्तत्त्वे रक्षितुं भार्या  
भर्तारो दुर्बला अपि ॥ ६ ॥

- ۱- دھرم کی راہ پر چلنے والے جو مرد و عورت ہیں ان دونوں کے وصل و جدائی میں جو دھرم تسلیم ہے اسکو کہتے ہیں۔
- ۲- رات دن عورتوں کو شوہر وغیرہ کے وسیلے سے بے اختیار کرنا سنا ہے جو عورت یسبوں میں لگی ہے اسکو اختیار میں رکھنا چاہئے۔
- ۳- م- لڑکپن میں باپ اور جوانی میں شوہر اور بڑھاپے میں بیٹا عورتوں کی حفاظت کرے کیونکہ عورتیں خود مختار ہونیکے لائق نہیں ہیں۔
- ۴- کہنا دان کیونکہ کہنا کو نر یوں تو باپ اسکا پاپی ہوتا اور جیسے فراغت ہو کر شوہر اس سے جماع کرے تو وہ پاپی ہوتا ہے اور بحالت ذنات شوہر کے بیٹا اپنی ماں کی حفاظت کرے تو وہ پاپی ہوتا ہے۔
- ۵- خود ہی جیسے بھی خصوصاً عورتوں کی حفاظت کرنا چاہئے عورتیں غیر محفوظ رہنے سے دونوں کل دینے خاندان شوہر و خاندان والد کو رنج پہونچائی ہیں۔
- ۶- رب دونوں کے لئے تم دھرم کو دیکھو جو کمر در شوہر بھی عورت کی حفاظت کیوں سلوک و کوشش و تدبیر ہیں

वैश्यश्चंद्रो प्रयत्नेन स्वानि कर्माणि कारयेत् ॥ तो हि च्युतो स्वक-  
र्मभ्यः क्षोभयेतामिदं जगत् ॥ ४१८ ॥ अहन्यहन्यवेक्षेत कर्मा-  
न्तान्वाहनानि च ॥ आथ व्यथोचनियता वाकरा न्कोशमेव च  
॥ ४१९ ॥ एवं सर्वानि मान् राजान्यनहारात्समापयन् ॥ व्यपोह्य  
किं त्विदं सर्वं प्राप्नोति परमां गतिम् ॥ ४२० ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायाम-

दशमोऽध्यायः ८

۱۸- ویشیہ اور شور یہ دونوں اپنے کام سے بیکار ہونے پاویں اگر یہ دونوں اپنے  
دھرم سے علیحدہ ہوں تو زمانہ کو پراشتوب کریں۔  
۱۹- کام کا ہو جانا دسواہی و حاصل زر و فرخ و خزانہ و معدن ان سہوں کو ہر روز راج  
ملاحظہ کیا کرے  
۲۰- اس طریق سے راجہ تمام کاموں کو کرتا ہوا پاپ کو چھوڑ کر پرگت کو پاتا ہے۔

من جی کا دھرم بسترگ جی کی شکستا کا

آٹھوان اوہیائے سماپت ہوا۔

शृङ्खलकारयेदास्यं क्रीतमक्रीतमेव वा ॥ दास्यायेव हि स्तृष्टोऽ-  
 मो ब्राह्मणस्य स्वयं भुवा ॥ ४१३ ॥ न स्वामिना न स्तृष्टोऽपि शू-  
 द्रो दास्यादिमुच्यते ॥ निसर्गजं हित तस्य कस्तस्मात्तदपोहति  
 ॥ ४१४ ॥ ध्वजाहृतो भक्तदासो यद्वजः क्रीतदन्त्रिभौ ॥ ये त्रिको-  
 दराददासश्च स तैते दासयोनयः ॥ ४१५ ॥ भार्या पुत्रश्च दासश्च  
 त्रयशपाधनाः स्मृताः ॥ यत्ते समधिगच्छन्ति यस्य ते तस्य तद-  
 नम् ॥ ४१६ ॥ विश्वध्वं ब्राह्मणाः शूद्राद्व्योपादानमाचरेत् ॥  
 न हि तस्यास्ति किञ्चित्त्वं भर्तृहार्यधनो हि सः ॥ ४१७ ॥

۳۱۳- جو شود خرید کیا ہو یا نہ خرید کیا ہو اس سے داس کا کام کرانا چاہئے کیونکہ  
 برہمن کا داس کرم کی واسطے سہری برہمن کی لئے شود کو پیدا کیا ہے۔

۳۱۴- جو مالک داس کرم سے داس کو آزاد نہیں کرتا تو وہ داس اس کرم سے آزاد نہیں  
 ہوتا کیونکہ داس کرم شود کے سوا دوسے پیدائش اس کرم کو کون چھوڑا سکتا ہے۔

۳۱۵- وہ جو بابت بھگت داس کھڑے داس سے پیدا ہوا تو اسے لیا ہو دان میں ملا ہو  
 بزرگوں سے چلا آیا تو داس یہ سنا تو بقی داس ہی ہیں۔

۳۱۶- رزق و فرزند داس یہ بیٹوں بے زرہن اور دولت کو فراہم کریں تو جسکے بیٹوں  
 ہیں اسکی دولت ہو۔

۳۱۷- برہمن داس شود سے دولت لے لےوے اس میں کچھ بچا نہ کرے کیونکہ وہ دولت  
 کچھ اسکی ملکیت نہیں ہے وہ بے زرہ ہے وہ جو دولت فراہم کرے اس دولت کا مالک اسکا  
 سوا ہی ہے۔

۳- جبکہ میدان جنگ سے بچ کر کے لائے۔

۴- یعنی جو جن کی واسطے داس کرم کو منظور کریں والا

۵- یعنی کسی قصور کی مزا کے عوض میں داس بھلاؤ کو منظور کریں والا۔

یمنابیکینچیدا ساناں ویشی ریتا پرا دت: ॥ تھامسے رے دات-  
 وینس پرا گس سوتو: شات: ॥ ۴۰۵ ॥ سب نئی یاقینا سوتو و  
 بھار سنی نیرا ی: ॥ داسا پرا دھ سوتو رے دیکے ناسی نی پھ:  
 ॥ ۴۰۶ ॥ با ساجی کارے دے شے کوشی دے کا بیکے بھ ॥ یمن نا  
 ر سراجے کد سس ہند دیکے جانا ۥ ۴۱۰ ॥ سنجی چے بے شے چ  
 برا سراجے کد کیشی تے ॥ بیکے داسا پرا دھ سوتو رے دیکے ناسی  
 کاسی ۥ ۴۱۱ ॥ داسی کد کارے دے کد بیکے داسا پرا دھ سوتو رے  
 دیکے ناسی ۥ ۴۱۲ ॥

۴۰۸۔ کشتی میں لاٹون کے قہور سے کسی چیز کی بنیادی ہو تو اسکو سب ملاح ملکر اپنے حصے  
 سے دیں۔

۴۰۹۔ لاٹون کے قہور سے پانی میں برہا آئی چیزوں کی تیغ کو کما۔ آفت آسانی ملاٹون  
 کا جرم دینا نہیں ہے۔

۴۱۰۔ دیشیہ کا کام کھیتی کرنا اور سونو ملینا اور چار پاکی پر دوش کرتا ہے ان سب کاموں  
 کو دیشیہ کو کرادے برہمن اور کشتی اور دیشیہ کی سوا تھوڑوں سے کرادے۔

۴۱۱۔ جو کشتی یا دیشیہ رزق نہ ملے سے پریشان ہو اسکو برہمن ہم سے کام کو کرانا ہوا  
 پرورش کرے۔

۴۱۲۔ جو برہمن کشتی دیشیہ جیو وغیرہ سنگ کو پا کر کام کرنی خواہش میں کرتے ہو  
 جو برہمن بوسیدہ اپنے پر بھاد کے وجہ سے کام کرنا آگے اس برہمن سے راجہ چھوڑ  
 دے۔





شुल्कस्थानेषुकुशलाः सर्वपरायविचक्षणाः ॥ कुर्युरर्थय-  
थापरायंतनोविंशन्धपोहरेत् ॥ ३६८ ॥ राज्ञः परव्यातभाराद्वा  
निप्रतिषिद्धानियानिच ॥ तानिनिर्हेरतोलोभात्सर्वद्वारं हरे-  
न्नुपः ॥ ३६९ ॥ शुल्कस्थानं परिहरन्मकाले क्रयविक्रयी ॥  
मिथ्यावादीच संख्याने शब्धोऽष्टगुरासत्ययम् ॥ ४०० ॥ आ-  
गमं निर्गमं स्थानं तथा वृद्धि सया बुभौ ॥ विचार्य सर्वपरायानां  
कामयेत्क्रयविक्रयी ॥ ४०१ ॥ यंचरात्रे पंचरात्रे पक्षे पक्षेऽथ-  
वा गते ॥ कुर्वीत चैवांप्रत्यक्षमर्घ्यं संस्थापनं नृपः ॥ ४०२ ॥ ल-  
लामानं प्रतीमानं सर्वं च स्यात्सुललसितम् ॥ यदसु यदसु च मा-  
सेषु पुनरेव परीक्षयेत् ॥ ४०३ ॥

۸۹۳۔ خراج سلطنت کو جاننے والے اور ہر چیز کو فروخت کر سہنے ہوئی ارباب الیاء آدی جن کی جو قیمت مقرر کر کے آئین جو نفع ہو اس کے پیشوں حصہ کو راجہ لے لے۔  
۸۹۴۔ راجہ کے لائق جو چیز ہے اور جن چیز کو دوسرے کے پاس فروخت کرنے کو راجہ کے منج کیا ہے ان چیزوں کو جس قیمت سے دوسرے مقام پر فروخت کرے تو اس کا تمام مال راجہ لے لے۔  
۹۰۰۔ ہر قیمت نام پر راجہ کا حصول لیا جاتا اس مقام کو ترک کر دینا والا ہے وقت خرید و فروخت کر دینا والا تو دل میں کہہ کر لے والا حصول ہر کاری کا بہت چند تاوان دیوے۔  
۹۰۱۔ سب چیز کا انا جانا و قیام در دال کو دیکھ کر خرید و فروخت کرنا چاہئے۔  
۹۰۲۔ بعد از خرید و بیع پانچ دن یا ہفتہ پہلے کے سب چیزوں کی قیمت قائم کرے۔  
۹۰۳۔ شہ دولہ و سیر دیاچ سیری وغیرہ پرستہ دوروں وغیرہ کے باشندوں کی کمی بیشی کو راجہ دیکھے پھر چھوٹے چھوٹے زمینداروں کا امتحان کرے اور سب چیزوں پر راجہ مقرر کرے۔

प्रातिवेश्यानुवेशीचकल्याणोविंशतिदिने ॥ अर्हावभोजय-  
न्विप्रोदरादमर्हतिमायकम् ॥ ३६२ ॥ ओत्रियः ओत्रियंसाधुं  
भूतकल्येषभोजयन् ॥ तदन्तद्विगुरांराप्योहिरायं चैवमायक  
म् ॥ ३६३ ॥ अन्योजडः पीठसर्पिस्सप्तत्यास्थविरश्चयः ॥ ओत्रि-  
येषूपकुर्वन्चनराप्याः केनचित्करम् ॥ ३६४ ॥ ओत्रियं व्याधि-  
तातौचबालवद्व्यवकिंचनम् ॥ महाकुलीनमार्यचराजासंपूजये-  
त्सरा ॥ ३६५ ॥ शास्त्रलीफलकेशलक्षणे निज्यान्नेजकः शनैः  
॥ नचवासां सिवासोभिर्निहोन्नचवासयेत् ॥ ३६६ ॥ ननुवायो  
रशयलंरघादेकपलाधिकम् ॥ अतीऽन्यथावर्त्तमानोराप्यो  
द्वावशकंरमम् ॥ ३६७ ॥

۹۲- شکل شانت کرم بین برہمن کو دیشیہ بھوجن کرانا ہوا اور اپنے گھر کے روپر دروازے  
اپنے گھر سے ایک گھر جوڑ کر دو سیر گھر میں رہے وہاں بیتی برہمن کو بھوجن کرادے تو ایک  
ماستہ چاندی دے دیتے۔

۹۳- شادی وغیرہ خوشی کے کاموں میں دیدیا پاشی اور اپنے گھر کے سنیایا ایک گھر جوڑ  
کر دو سیر گھر میں رہا دیدیا پاشی برہمن کو بھوجن کرادے تو ایک ماستہ چاندی بھوجن کا دو چھتہ دان دیوے۔

۹۴- اندھا بہر انکڑا ستر برتن کی عمر والا دھن دھانیہ سے دیدیا ٹھیکوں کا پکار کر بنوایا  
ان سب کو راجا بوجہ دھالی ہونے خزانے کے اپنے لینے کے لائق محصول کو نہ لیبے۔

۹۵- دیدیا پاشی یا دھنی ملک ٹھکانے زبڈ خزانے فیاض دان سب کو بھوجن کرادے جو  
۹۶- سیر کے چلنے پانا پرستی سے دھولی کپڑے دھوے اور ایک کپڑا دوسرے کو نہ دیوے۔

اور بہت دن تک اپنے گھر میں نہ رکھے۔

۹۷- کپڑا بننے والا کپڑا بنا لیا اسطے بمقدار وزن دین گنڈہ چیس کے سوت لیبے تو  
بمقدار وزن گیا رہ گنڈہ کے کپڑا دیوے اس کم دیوے تو بمقدار بارہ پن دس روپے کو دیکر مالک سوت کو انہی کو

यस्य स्तेनः पुरेनास्ति नान्यस्त्रीगोनवुष्टवाक् ॥ नसाहसिकद-  
राडघ्नो सराजाशक्तलोकभाक् ॥ ३८६ ॥ सतेषां निग्रहो राजः  
पंचानां विषये स्वके ॥ सा आ ज्य कृत्स जात्येषु लोके वैधव्यश-  
स्करः ॥ ३८७ ॥ अहं त्विजं यस्य जेद्या ज्यो यान्त्रं च त्विजं त्वजे-  
द्यदि ॥ शक्तं कर्म रायदुष्टं च तयोर्दराडः शतं शतम् ॥ ३८८ ॥  
न मातानपितानस्त्रीनपुत्रस्त्यागमर्हति ॥ त्यजन्नपतिता-  
नेतानराजा दराड्यः शतानिवद् ॥ ३८९ ॥ आश्रमे बुद्धिजाती-  
नां कार्ये विवर्तामिधः ॥ न विद्वयान् नृपो धर्मचिकीषन् हित-  
मात्मनः ॥ ३९० ॥ यद्यार्हमेतानम्यर्च्य ब्राह्मणैः सह पार्थिवः  
॥ सांत्वेन प्रशमय्यादौ स्वधर्मं प्रतिपादयेत् ॥ ३९१ ॥

۳۸۶ - چور اور دوشمیر کی زوجہ جماع کر نیوالا اور کھوٹے بچن بولنے والا اور بزدلی  
کام کر نیوالا اور ڈنڈا وغیرہ سے ماریوالا سب کی راج میں نہیں ہیں نہ راجہ اندر لوک کو تیار کر  
۳۸۷ - اپنی راج میں ان پانچوں کو نرا دینے والا راجہ راجاؤں میں نہایت راجہ کا کام نہیں  
اور اس دنیا میں نیکی ناپا ہے۔

۳۸۸ - اپنے کام میں لائق اور کھوٹے بچے علیحدہ کر لو اگر ایمان ان دونوں میں سے  
ایک کو ایک ترک کرے تو ترک کر نیوالے کو ستوں ڈنڈ دینا چاہیے۔

۳۸۹ - سان ویاپ وزوجہ و فرزند جو اپنے درن سے بھڑشت ہو گئے ہوں ان میں سے کسی  
ایک کو ترک کرے تو وہ چھ سو پن ڈنڈ کے لائق ہوتا ہے۔

۳۹۰ - اگر ستھہ وغیرہ شرم میں برہمن دشتیری و ویشیہ کے باہم بحث مطالب شاستری کی ہوتی  
ہو تو اپنا بھلا چاہنے والا راجہ ساہس کر کے ایسا نہ بولے کہ یہ مطلب شاستر کا ہے۔

۳۹۱ - راجہ مع برہمنوں کے بحث کر نیوالوں کو حسب لیاقت آرام صورت کام سے بوجھ  
کر کے اس کے عقد کو دور کر کے اپنے دھرم کو بیان کرے۔



वैश्यः सर्वस्वदण्डः स्यात्संवत्सरनिरोधतः ॥ सहस्रं सत्रियोदंज्यो  
मौराज्यं मूर्ध्नि चार्हति ॥ ३७५ ॥ ब्राह्मणीयं च गुप्तांतुगच्छेता-  
वैश्यमर्थिवौ ॥ वैश्यं च शतं कुर्यात्सत्रियस्तु सहस्रिराम् ॥  
३७६ ॥ उभावपि तु तावैव ब्राह्मणायामुभया सह ॥ विलुप्तौ श्व-  
इव दण्डयोर्दण्डयो वा कदाग्निना ॥ ३७७ ॥ सहस्रं ब्राह्मणो  
दण्डयोगुप्तां विषां बलाद्बज्जन् ॥ शतानि यं च दण्ड्यस्यादि-  
च्छत्या सहसंगतः ॥ ३७८ ॥ मौराज्यं प्राणान्ति को दण्ड्यो-  
ब्राह्मणस्य विधीयते ॥ इतरेषां तु वर्णानां दण्डः प्राणान्ति  
को भवेत् ॥ ३७९ ॥

۳۷۵ - محفوظ برہمنی سے جماع کرنے میں دیشیہ کو ایک سال تک چلیا بین قید رکھنا چاہیے  
اس کے بعد سب مال کا چھین لینا یہ سزا اس کو دینا چاہیے اور اسی جرم میں کشتی کو ہزارین ڈنڈ  
دیوے اور گریہ کے پیشانیے موندو موندو دیوے۔

۳۷۶ - شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ برہمنی سے جماع کرنے پر کشتی دیشیہ پانچ سو روپے  
دہزارین ڈنڈ دیوے۔

۳۷۷ - شوہر وغیرہ سے محفوظ برہمنی سے جماع کرنے پر کشتی دیشیہ دو سو روپے  
کی طرح ڈنڈ کے لائق ہیں یعنی سب اعضا سے مفرد کرنا چاہیے خواہ لال کش سے ڈھلک کر  
دیشیہ کو اور پھر تر لے کر ہری سے ڈھلک کر کشتی کو جلانا چاہیے یہ سزا برہمنی جہاں صفت  
کی جماع میں جانا چاہیے۔

۳۷۸ - شوہر وغیرہ سے محفوظ برہمنی کے ساتھ زبردستی جماع کرنے پر برہمن کو ہزارین ڈنڈ  
دینا چاہیے اور اس برہمنی کی خواہش سے جماع کرنے پر برہمن کو پانچ سو روپے ڈنڈ دینا چاہیے  
۳۷۹ - سزا قتل کے مقام میں برہمن کو موندو موندو موندو موندو موندو اور دیگر قوم کو قتل  
ہی کی سزا دینا چاہیے۔

यातुकन्यां प्रकुर्यात्स्त्रीसासद्यो मौगड्यमर्हति ॥ अंगुल्योरेव  
वाह्ये संसरो गृहं नंतथा ॥ ३९० ॥ भर्तारं लंघयेद्यात्स्त्री जाति  
गुरा र्पिता ॥ तां श्वभिः स्वास्ये द्राजा संस्थाने बहु संस्थिते ३९१  
॥ पुमांसं दाहयेत्पापं शयने तप्त आयसे ॥ अभ्यास्युश्च काष्ठा  
नितत्र ह्येतपापकृत ॥ ३९२ ॥ संवत्सराभि शस्तस्य दुष्टस्य हि  
गुरा रोद्मः ॥ ब्राह्म्या सह संवासे चारा बाल्या तावदेव तु ॥ ३९३  
शूद्रो गुप्तमगुप्तं वा द्वे जातं वर्गा मावसन् ॥ अगुप्तमंग सर्वस्यै गु  
प्तं सर्वैराहीयते ॥ ३९४ ॥

۳۹۰- جو استری کنیا کی فرج میں اذ لگی ڈالکر با عیب کرے اور سکا موٹو نوڈا اور انگلیاں  
کاٹنا اور گریہ پر چڑھ کر شہزادہ پر گشت کرے اور اس کے گھر میں کسی بیشیہ دیکھ کر بغیر منہ پر لڑائی  
۳۹۱- زنان و دختران کے غور سے اپنے شوہر کو ترک کر نیوالی عورت کو راجہ بہت آدمیوں  
کے روبرو کنوٹن سے بھوجن کرا دے۔

۳۹۲- دو سرے کی عورت مرقومہ بالا سے جماع کر نیوالے آدمی کو لوہے کے گرم پلنگ  
میں سٹولا کر چار و طرف لکڑی رکھ کر آگ لگا دے جس سے وہ پانی جل جا۔

۳۹۳- دوسری عورت رخصت ہو کر جکا جینو وغیرہ وقت تکلوٹہ شاستر پہنیں ہو اسکی عورت  
اور چاندال کی عورت۔ انھوں سے جماع کر کے نالائق آدمی بغیر پائے منہ کے ایک سال کے  
بعد پھر اسی عورت سے جماع کرے تو جو منہ کہہ آئے ہیں اسکی دو چند میزا دیوے۔

۳۹۴- براہمن کستری ویشیہ کی عورت شوہر وغیرہ سے محفوظ نہ خواہ محفوظ ہو اس سے جماع  
کرنے پر اس شوہر کا عضو تناسل قطع کرنا و تمام دولت چھین لینا و منہ قتل دینا چاہئے مگر اس  
غیر محفوظ عورت سے جماع کر نہیں قطع عضو تناسل و تمام دولت چھین لینا صرف ہی سزا دینا  
چاہئے اور محفوظ عورت سے جماع کرنے میں دو لون منہ ہا مرقومہ بالا منہ قتل دینا چاہئے

کनیاں بجنی شتھ ہن کی چیر پیرا پیت ॥ جघन्यं सेवमा-  
 नात्तु संयतां वासयेद्दे ॥ ۳۶۵ ॥ उत्तमां सेवमानस्तु जघन्यो  
 वधमर्हति ॥ शुल्कं दद्यात्सेवमानः समाभिच्छेत्पिताय हि ॥  
 ۳۶۶ ॥ अभिषेक्तुयः कन्यां कुर्याद्दप्ये रामानवः ॥ त-  
 स्यात्सुकर्त्यं श्रृंगुल्यौ दशडंचार्हति षड्शतम् ॥ ۳۶۷ ॥ सका-  
 मां दूषयंस्तुल्यो नां गुलिच्छेदमाप्नुयात् ॥ द्विशतं तु रमं-  
 ष्यः प्रसंगविनिवृत्तये ॥ ۳۶۸ ॥ कन्यैव कन्यां या कुर्यात्त-  
 स्याः स्याद्विशतो रमः ॥ शुल्कं च द्विगुरां दद्याच्छिफाशे-  
 वाप्नुयाद्दश ॥ ۳۶۹ ॥

۳۶۵ - اپنی ذات سے اونچی ذات کو چاہنے والی کینیا تھوڑا بھی ڈنڈہ نہیں پاسکتی اور اپنی  
 ذات سے نیچے ذات کو چاہنے والی کینیا کو گھومنا بندھکر رکھنا چاہیے۔

۳۶۶ - جو اونچی ذات کی کینیاں خواہش کرتی ہوں یا نہ کرتی ہوں اس سے بڑی آدمی ہمارے  
 وغیرہ کرنا والا تفاوت ذات کی سبب سے قطع اعضا و قتل کے لائق ہوتا ہے اور خواہش کرتی ہوں والی  
 ہمقوم کینیا کو کچھ دیکر اس سے جماع وغیرہ کرنا والا سزا کے لائق نہیں ہوتا اور اگر اس کینیا کا  
 باپ راضی ہو تو اس کو کچھ سزا دینا دیکر سزا دی کرے۔

۳۶۷ - جو آدمی زبردستی اور مفروری سے اپنی ذات کی کینیا کی فرج بین جو کرنا قابل جماع ہے  
 انگلی ڈالکر باعیب کرتا ہے اس کی دو انگلی کا سزا چاہیے اور چھ سو پن ڈنڈہ لیا جاسکتا ہے

۳۶۸ - اگر خواہش کرتی ہوں والی ہمقوم کینیا کو بطریق مرقوم بالا باعیب کرے تو قطع انگلی کی  
 سزا دینا چاہیے لیکن کچھ سزا دینے کے واسطے دو سو پن ڈنڈہ لیا جاسکتا ہے۔

۳۶۹ - جو کینیا دوسری کینیا کی فرج بین انگلی ڈالکر باعیب کرے اس کو دو سو پن ڈنڈہ دینا چاہیے  
 اور انگلی ڈالنے والی کینیا کا باپ دو چھ سو دھندہ (شک) دیوے



मिथुकावन्दिनश्चैवहीहिताः कारवस्तथा ॥ संभाषणांसहस्री  
भिः कुर्युरप्रतिवारिताः ॥ ३६० ॥ न संभाषां परस्त्रीभिः प्रतिवि  
द्धः समाचरेत् ॥ निषिद्धो भाषमारास्तु सुवर्गादराडमर्हेति ॥  
३६१ ॥ नैष चारादरेषु विधिर्नात्मोपजीविसु ॥ सज्जयन्ति  
हिते नारीर्निगृह्यन्त्यायन्ति च ॥ ३६२ ॥ किंचिदेव तु दाप्यः स्था  
त्संभाषान्नामिराचन् ॥ प्रैष्यासु चैकमक्तासुरहः प्रव्रजिता  
सु च ॥ ३६३ ॥ योऽकामां दूषयेत्कन्यांससद्यो बधमर्हेति ॥  
सकामां दूषयस्तुल्यो न बधं प्राप्नुयान्नरः ॥ ३६४ ॥

۳۱۵ - جبکہاری و بھاٹ و نکیت (یعنی جسے گیتہ کیو اسطے دیکھائی گئی) - اور سونین بنایا  
یہ سب بھیکہ وغیرہ اپنے کام کیو اسطے عورتوں سے بائین کریں - تو انکو منع کرنا چاہئے -

۳۱۶ - ایک بار منع کیا کہ تم اس عورت سے نہ بولنا اور پھر وہ آدمی اسی عورت سے بائین  
کرے تو ایک ستیرن (یعنی سولہ ماٹھ) سونا دینا دیوے -

۳۱۷ - نہ اور گانے بجانے کی عورت اور جو شخص عورت کے قبیلہ میں سے اپنی اوقات بکیر  
پہن انکی عورتوں کے واسطے آئین بند رہا نہیں کیونکہ وہ لوگ خود اپنی عورتوں کو پوشیدہ رکھتے ہیں  
۳۱۸ - لیکن تمام کے دوسرے کی عورتیں میں سوا اسطے انھوں کے ساتھ بات کرنے سے بات  
کرنا والا تھوڑا سا دنگ پاوے آدمی اور ایک گھر میں جس عورت کو روک کر رکھا ہو وہ - اور سیاستی  
کی عورت انھوں کے ساتھ بات کرنا والا تھوڑا سا دنگ پاوے -

۳۱۹ - جو ہمقوم دختر خواہش نہیں کرتی اور مرد سے جماع کرتا ہو اسکو قطع عقوبت  
کی سزا اسی وقت دینا چاہئے لیکن برہمن کو یہ سزا نہ دینا چاہئے کیونکہ اسکو سزا سے بدلی ہوئی  
مخالفت ہو اور جو شخص خواہش کرنا والا دختر ہمقوم سے جماع کرے وہ سزا قطع اعضا نہ پاوی

پرستھ پتھیا پھوٹ: संभावां योजयन् नरहः ॥ पूर्वमाक्षारितो दो-  
 षः प्राप्नुयात् पूर्वसाहसम् ॥ ३५४ ॥ यस्त्वनाक्षारितः पूर्वमभि-  
 भाषेत कारणात् ॥ न दोष प्राप्नुयात् किंचिन्न हितस्य व्यतिक-  
 मः ॥ ३५५ ॥ यस्त्विद्यं योऽभिवर्देत् तीर्थेऽप्यथेवनेऽपि वा ॥ न-  
 दीनां वापि संभेदे संग्रहणमाप्नुयात् ॥ ३५६ ॥ उपचारक्रि-  
 याकेलिः स्पर्शाभूषणावाससाम् ॥ सहस्रपद्मासनं चैव सर्वसं-  
 ग्रहणं स्मृतम् ॥ ३५७ ॥ स्त्रियं प्रोददेशीयः स्पृष्टो वा सर्वयेत्त-  
 या ॥ यस्परस्यानुमते सर्वसंग्रहणं स्मृतम् ॥ ३५८ ॥ अजा-  
 ह्यराः संग्रहणो प्राणांतं दण्डमर्हति ॥ चतुर्णामपि वरानां  
 दारारस्य तमाः सदा ॥ ३५९ ॥

- ۵۴- دو سکر کی عورت سے جو شخص خلوت میں بائین کرتا ہے اور پہلے سے اسکا  
 عجیب جانا گیا ہے اسکو پوربیا ہنس نزدینا چاہئے۔  
 ۵۵- جنکا عجیب پہلے سے جانا نہیں گیا ہے اور کسی باعث سے خلوت میں دوسرے  
 کی عورت سے بائین کرتا ہے تو اسکو دتوڑ دینا چاہئے۔  
 ۵۶- پانچمین جانیکارستہ اور گھاس پھوس سے شامل اور آدمیوں سے علیحدہ رکھا جائے گا تو کباب  
 ہوا اور خیل اور ہندی کا شکر ان مقامات میں دوسرے کی عورت سے بائین کرے تو سنگسن تمام پاپ کو پاتا ہے  
 ۵۷- الا ہننا عطر لگانا اور کپڑا اور زیور بچھنا اور حکمہ دہلگیری وغیرہ کرنا ایک چارپائی پر  
 بیٹھنا یہ سب سنگسن کہلاتا ہے اس بات کو سن وغیرہ شیون کے کہا ہے۔  
 ۵۸- جس مرد کی عورت کی ران وغیرہ کو چھو آخواہ عورت نے مرد کے فوط وغیرہ کو پکڑا اور مرد  
 عصہ نہ کیا تو باہمی محبت سے یہ سنگسن کہلاتا ہے سن وغیرہ شیون کے کہا ہے۔  
 ۵۹- سوچا برا ہونے کے اور ذات دانوں کو سنگسن کی عورت میں قتل کی سزا دینا چاہئے  
 کیونکہ چار وورن کی استری نہایت حفاظت کے لائق ہیں۔

آत्मناںपरिवाराںदक्षिणानांचसंगरे॥ स्त्रीविप्राभ्युप-  
 तौचघ्न्यमेरानदुष्यति॥ ३४६॥ गुरुवाबालवृद्धौवाघ्राह-  
 रांवाचहृत्तम॥ आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारय-  
 न॥ ३४७॥ नाततायिवधेरोबोहन्तुर्भवतिकश्चन॥ प्रकाशं  
 वाऽप्रकाशंमन्युस्तंमन्युश्छति॥ ३४८॥ परदारमिम-  
 र्येषुप्रवृत्तान्दत्तमीपतिः॥ उद्वेजनकरैर्दरांडैश्चिच्छयित्वा  
 प्रवासयेत्॥ ३४९॥ तत्कमुद्योहिलोकस्यजायतेवरासंक-  
 रः॥ येनमूलहरोधर्मःसर्वनाशायकल्पते॥ ३५०॥

۴۹- اتما اور گیتی کے سامان اور استغری اور براسمن انھوں کی حفاظت کرتے ہیں اور  
 میدان جنگ میں دھرم سے ماریو لے کر دوش بہنیں ہوتا۔  
 ۵۰- گرد و بالک بوڑھا و بہت پڑھا ہوا براسمن یہ سب اٹھایا ہو کر آدین تو انکو مارنا  
 چاہئے۔ کچھ کار نکنا چاہئے۔  
 ۵۱- آتسانی کے قتل میں ماریو لے کر پاپ بہنیں ہوتا جو شخص ظاہر یا پوشیدہ ماریو لے  
 کے کر دھم سے مارے گئے اسکے ظاہر و پوشیدہ کر دھم کو سلسلہ وار پاتا ہے۔  
 ۵۲- آدمی دوسری عورت سے بر فلی کر نیوالے ہیں انکو ابھی تک کر نیوالے نوٹس کے  
 وسیلے سے بدن پر نشان کر کے ملک سے باہر نکال دے۔  
 ۵۳- زمانہ میں عورتوں کی بر فلی سے ورن سکریپا آتسانی اور اس ورن سنگر  
 سے جو اکھاڑ نیوالا دھرم پیدا ہوتا ہو جس سے جنگ کی ناسخ ہوئی ہے۔

۱- انگ لگانا و زبردیا کسی دولت و کھیت و عورت کو چھین لینا ان کاموں کا کر نیوالا آتسانی کہلاتا ہے۔

अनेनविधिना राजाचुर्वाणाः स्तेननिग्रहम् ॥ यशोस्मिन्प्राप्तु-  
यालोकेप्रेत्यचानुत्तमं सुखम् ॥ ३४३ ॥ ऐन्द्रस्थानमभिप्रेष्य  
शास्त्रासयमव्ययम् ॥ नोपेक्षेत क्षरामपिराजासाहसिकं नरम्  
॥ ३४४ ॥ बाणदुष्टात्तत्क्षराञ्चैव दराडेनैव च हिंसतः ॥ साहसस्थान-  
रः कर्त्ता विज्ञेयः पापहृत्तमः ॥ ३४५ ॥ साहसेवर्त्तमानन्तु यो म-  
र्ययति पार्थिवः ॥ स विनाशं व्रजत्याशु विद्वेयं चाधिगच्छति ॥  
३४६ ॥ न मित्रकारणाद्वा राजा विपुलाद्वा धनप्राप्तात् ॥ समुत्त-  
जेत्साहसिकान् सर्वभूतमथावहान् ॥ ३४७ ॥ रास्त्रं द्विजातिभि-  
र्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यते ॥ द्विजातीनां च वर्णानां विषये काल-  
कारिते ॥ ३४८ ॥

۳۴۴۔ اس طریق سے چورن کا ڈنڈ دینے والا راجہ اس نوک بین پس اور پرنوک بین تم شکھ کو یاد ہے۔

۴۴۔ جہاں اندکی پدوی پانے کی خواہش کر نیوالا اور نواں شیکیناسی کا چاہنے والا  
وہ زبردستی بھی زبردستی سے کام کر نیوالے آدمی کی دلوری ٹکرس ۔

۵م نم۔ گالی وینے والا اور چوڑوٹوں سے ماریو والا ان محبوب ساسس کریو والا پانی ہے  
۶م نم۔ جوراچہ زبردستی سے کام کریو الے آدمی کے جرم کا تحمل کرنا ہی وہ جلد عداوت  
وفا کو مانتا ہے۔

۴۴۔ تمام جانداروں کو خوف دینے والے اور زبردستی سے کام کرنے والے آدمی کو  
راہ دوستی سے یا بہت دولت پانے سے رہانہ کرے۔

۸۴- دھوم بٹھانے کی حالت میں زمانہ کی تخریب کو بہن کشتری دیشیہ تینوں ورین ہتھیاروں کو دھارن کریں۔

अष्टापाद्यन्तु दृष्टस्य स्तेये भवति किल्बिषम् ॥ योऽशौचतुर्वेस्य  
 स्यद्वा त्रिंशत्सन्त्रियस्य च ॥ ३३७ ॥ ब्राह्मणस्य चतुःषष्ठीः पूर्वा-  
 वापिशतस्य वेदः ॥ द्विगुणा वा चतुःषष्टिस्तद्वेदगुणा विद्विंसः  
 ॥ ३३८ ॥ वानस्य त्वं मूलफलं दावन्पर्यंतं येव च ॥ तृणां च गो-  
 भ्यो ग्रासार्थं मस्तेयमनुरज्ज्वीत ॥ ३३९ ॥ योऽदत्तादायिनो ह-  
 स्तास्त्रिप्तेत ब्राह्मणो धनम् ॥ याजनाध्यापनेनापियथा स्ते-  
 नस्तथैव सः ॥ ३४० ॥ द्विजो ध्वगः क्षीराद्यतिर्ह्यविशुद्धे च मूल-  
 के ॥ आदत्तानः परस्मै ज्ञानदराडं दत्तमर्हति ॥ ३४१ ॥ असंधि-  
 तानां सन्धाता सन्धितानां च मोक्षकः ॥ दाता शवरयहर्ता च-  
 प्राशः स्याद्यौरकिल्बिषम् ॥ ३४२ ॥

۳۳۷- جو شورو دیشیہ دشتی دبر این چیزوں کے گن اور دوش کو مہین جانتے اور لگا کر چری  
 مین جو ڈنڈ کہا ہے اسکا آٹھ گنا سو لہ گنا بیٹیس گنا۔

۳۳۸- چونسٹھ گنا یا تلو گنا یا ایک سو اٹھائیس گنا دس سلاہ دار شورو دیشیہ دشتی پر این پان  
 در حالیہ چیزوں کے گن و دوش کو چانتے ہوں۔

۳۳۹- جو دخت و غیرہ میٹھی حفاظت مین بہنیں ہے اس دخت کا مول پھل و پھول اور ہون  
 کیوں اسے لکڑی اور گونے کے گھائی کے واسطے گھاس وغیرہ ان سب کو کیوں لڑا شکو سزا نہ دیا کر وہ اور  
 نہیں ہے مین جی نے کہا ہے۔

۳۴۰- جو براہمن چور کو پکڑے گا اور بکیرا کر اس کے ہاتھ سے دولت لینے کی خواہش کرتا ہے وہ براہمن شرمیل  
 الہ ۳۴۱- براہمن دشتی دیشیہ پر سب ہتھ مین چلے جاتے ہوں اور گھاس کے کو کچھ پاس نہ تو دوسرے  
 کے کہیتے و گنا لینے اور دوشوں کے لیوں تو ڈنڈ کے لائق نہیں مین۔

۳۴۲- دوسرے کا گھوڑا جو بندھا بہنیں ہے، اسکو غور سے باز رہے والا اور طویل مین بند ہو  
 گھوڑے وغیرہ کو چھوڑ نیوالا اور غلام اور گھوڑا اسی گھوڑا کو لیجا نیوالا چرکے پاپ کو پاتا ہے۔

परिपूतेषु धान्येषु शाकमूलफलैषु च ॥ निरन्वये शतं दण्डः  
 सान्वये ऽर्द्धशतं दण्डः ॥ ३३१ ॥ स्यात्साहसं त्वन्वयवत्प्रसमं क-  
 र्म यत्कृतम् ॥ निरन्वयं भवेत्स्तेयं हत्वा पव्ययते च यत् ॥ ३३२  
 ॥ यत्स्वेतान्युपहृष्टानि द्रव्याणि स्तेनयेन्नरः ॥ तमाद्यं दंड-  
 ये राजायश्चाग्निचौरयेद्ब्रह्मात ॥ ३३३ ॥ येन येन यथांगेन  
 स्तेनो न्ययुविचेष्टते ॥ तत्तदेव हरेत्तस्य प्रत्यादेशाय पार्थिवः ॥  
 ३३४ ॥ पिताचार्यः सुहृन्माताभार्या पुत्रः पुरोहितः ॥ नाद-  
 राड्यो नाम राज्ञो ऽस्तियः स्वधर्मो न तिष्ठति ॥ ३३५ ॥ कार्या-  
 परां भवेद्दराड्यो यत्रान्यः प्राक्तनोजनः ॥ तत्र राजा भवेद्दंड्यः  
 सहस्रमिति धारणा ॥ ३३६ ॥

اسم سم - صاف و صفائی و ساگ و گل و پھل و پھون میں سے کسی ایک چیز کے چورائیں جو پائیں  
 اگر مال کا رشتہ دار ہو یعنی مہوٹنی وغیرہ رشتہ رکھتا ہو تو پچاس پن و ڈھار اگر رشتہ اور نسبت  
 نہ رکھتا ہو تو سو پن و ڈھار دیوے -

سم سم - مالک کے دیکھتے ہوئے زبردستی سے چیز کو لیا دے اور وقت ہتھکار کے  
 لینے سے انکار کرے تو وہ بھی چور کہلاتا ہے -

سم سم سم - چور آدمی دوسری چیز کو چور کیا اگر ہونے کے مقام میں اگر ہونے کی گن کو اور گھڑی لگے چور  
 وہ پرتھم سانس ڈھار پا دے اور اگر سنبھال میں جو کچھ خرچ ہو وہ گن مالک اس کو دیوے -

سم سم سم - جس جس عضو سے دوسری چیز کو چور ا دے اس اس عضو کو قطع کرنا چاہی تاکہ اور ایسا کام کرے  
 ۵ سم سم - راجہ کے نزدیک کوئی آدمی ایسا نہیں کہ وہ بحالت بھڑی قابل سزا ہی ہو بلکہ مان دیاب

درا چارج و دوست و رفیق و عزیز و بہت سب کے دھرم میں قائل ہوں تو لائق سزا دینے کے ہیں -

۶ سم سم - جس جرم میں سزا کا رکھ اور آدمی کارشاپن و ڈھار کے لائق ہوئے ہیں اس جرم میں  
 ہزار پن و ڈھار کے لائق ہوتا ہے -

गोशुब्राह्मरासंस्थासुसुखायाश्चभेदने ॥ पशुनां हसोर्ध्वेव  
सद्यः कार्योऽर्धपादिकः ॥ ३२५ ॥ सूत्रकार्यासकिरावा-  
नांगीमयस्थगुडस्य च ॥ दध्नः क्षीस्य चक्रस्य पानीयस्य त-  
रास्य च ॥ ३२६ ॥ वेराण्वैदलभाराडानां लवराणां तथैव च ॥  
सूत्रग्रानां च हसोऽसो भस्मन एव च ॥ ३२७ ॥ मत्स्यानां पशि-  
राणां चैव तैलस्य च घृतस्य च ॥ मांसस्य मधुन श्वैव यच्चान्यत्पशु-  
सम्भवम् ॥ ३२८ ॥ अन्येषां चैव मादीनामद्यानां मोदकस्य च  
॥ यवान्नानां च सर्वेषां तन्मूल्याद्द्विगुणोद्दमः ॥ ३२९ ॥ पुष्प-  
सुहरिते धान्ये गुल्मवल्लीनगेषु च ॥ अन्येष्वपरिपूते सुदराडः  
स्यात्पचकृषालः ॥ ३३० ॥

۳۲۵۔ بر آہن کی گتو چھین لینے اور سواری کے واسطے بانجھ گتوں کی ناک چھیننے اور کبرا  
دھیرہ وغیرہ گیتے کے لائق چار پائیوں کے چورانے میں آدھا پائون فوراً کاٹنا چاہیے  
۳۲۶۔ اور نانام سوت اور کپاس کا سوت اور دھوا اور گوبرا اور گڑ اور دی اور دو دھوا وغیرہ  
اور جل اور تیل لینے گھاس وغیرہ۔

۳۲۷۔ اور بانس کے ٹکڑے کا بنا ہوا پانی کا برتن اور مٹی کا برتن دھٹی دراکھ و نمک۔  
۳۲۸۔ دھچکلی و ہرنڈ و تیل و گھی و گوشت و شراب و قشام مرگ چرم و شاخ و کوزن وغیرہ۔  
۳۲۹۔ اسی قسم کی اور جو چیزیں ہیں وال و بھات و لہر و وغیرہ پکوان انہیں سے کسی ایک  
چیز کے چھ پائین اسکی قیمت سے دو چھ تا دان دیوے۔

۳۳۰۔ بھولے ہوئے گیتے میں قائم شہرہ و حانیہ اور مع پوست گم لتا و رخت اور ایک آدمی  
کے ایجا نیلے لائق و حانیہ انہیں سے کسی چیز کے چورا نہیں ملک وقت کو دیکھ کر ایک ماشرہ  
یا چانری تا دان دیوے۔

धान्यं दशभ्यः कुम्भेभ्यो हरतोऽभ्यधिकं बधः ॥ शेषेभ्येकादशगु-  
 रांदाप्यस्तस्य चतुर्दशम् ॥ ३२० ॥ तथा धरिममेयानां शताभ्य-  
 धिके बधः ॥ सुवर्गा रजतादीनां सुतमानां च वाससाम् ॥ ३२१ ॥  
 पंचाशतस्य भ्यधिके हस्तच्छेदनमिष्यते ॥ शेषेभ्येकादश-  
 गुरांभूत्याहरादं प्रकल्पयेत् ॥ ३२२ ॥ पुरुषाणां कुलीनानां  
 नारीणां च विशेषतः ॥ सुख्यानां चैव रत्नानां हररो बधमर्ह-  
 ति ॥ ३२३ ॥ मन्त्रायश्नां हररो शस्त्राणां भौषधस्य च ॥ का-  
 लमासाद्यकार्यं च दशदं राजा प्रकल्पयेत् ॥ ३२४ ॥

۳۰۵۔ دہل کی کتب خانہ سے زیادہ غلطی ہوئی کہ جو کہ تو اسکو منرا بدنی دینا مگر چور و مالک کی حیثیت  
 دیکھ کر تنبیہ قطع اعضا و قتل کی منراؤن کو دینا چاہئے اگر اس مقدار سے کم چور اسے تو مال مسروقہ  
 کا گیارہ گنا تاوان دینا چاہئے اور شے مسروقہ تو مالک پاوے۔

۳۰۶۔ سونامہ چاندی دھپ لہنراں سمجھوں کو سو گندے سے اور چورانیو سے کو قتل کرنا چاہئے  
 منرا کا حکم اخیر لکھتے زمانہ و چور و مالک کی تو سینت و حیثیت دیکھ کر دینا چاہئے اس طرح اسلوک تمیزہ  
 میں بھی جانتا۔

۳۰۷۔ اگر شہید مر قومیہ بالا پچاس گندے سے اور سو گندے کے اندر ہو تو اسے چور ہونے  
 میں ہاتھ کاٹنا اور پچاس گندے کے نیچے جتنا ہو اسکا گیارہ گنا تاوان دیکو۔  
 ۳۰۸۔ خاندانی آدمی یا بیٹے خاندان کی عورت یا عہدہ جو اسے سمجھوں میں سے کسی ایک  
 چیز کے چور ہونے یا غائب کر دینے میں قتل کرنا۔

۳۰۹۔ ہاتھی گھوڑا بھینس گھوہ سمجھیاں اور وہ ان سمجھوں میں سے کسی ایک کے چور ہونے میں قتل  
 وغیرہ زمانہ و مطلب کو دیکھ کر تنبیہ قطع اعضا و قتل کی منرا راجہ دیوے۔

۳۰۱۰۔ گندے پیسے کے وزن کو درون کہتے ہیں اور ۲۰ درون کا ایک گندہ کہلاتا ہے۔



راجا ستنے ننگنہ ویموکت کیشی نڈا ورتا ॥ آچھارو ننگ-  
 تے ی مے وکرماسی شا دیمام ॥ ۳۱۴ ॥ سوا تھنا دایم سول-  
 ل یو ڈن واپی روارم ॥ شکتی و بھت سوا مایا رند مے-  
 ووا ॥ ۳۱۵ ॥ شامنا دوا مینو سوا ستن: ستیا دیموکت ॥  
 آشا سیتا توت راجا ستن سوا پوتیک لیلی م ॥ ۳۱۶ ॥ آنا  
 دے پورا ہا ماری پلوی ماریا پچارا گی ॥ یو ریشی شیا شیا ش-  
 ستی نورا ج نیک لیلی م ॥ ۳۱۷ ॥ راج نیرت رگ ڈا سول کتا-  
 پا پانی مانوا: ॥ نیرملا: سوا مایا نیرملا: سول تینو-  
 ی تھا ॥ ۳۱۸ ॥ سول سول دھن کوا پادری دیا دپ: پپام ॥ س-  
 رانڈ پامو یا مایا ت دت سیم مایا مہر ॥ ۳۱۹ ॥

۳۱۴۔ برہمن کا دیش ماشہ سونا وغیرہ چورانی والا آپسے چونی کو کھول کر دوڑ کر راجہ کے  
 روبرو جا کر۔  
 ۳۱۵۔ موئل یا کھیر کی لاشی یا دونوں طرف سے تیز برہمی یا لوہے کا ڈنڈا کہہ کر پڑ کر  
 کہے کہ ایسا کام کرنیوالا مین ہوں مجھ کو سزا دیجئے۔  
 ۳۱۶۔ راجہ اسکو سزا دے یا چھوڑ دے تو وہ مجرم چوری کے پاپ سے چھوٹ جائے اور اگر  
 اسکو جرم سے سزا نہ دیوے تو چور کے پاپ کو پاوے۔  
 ۳۱۷۔ استقامت حاصل کرنیوالا دھمپ عورت و جیلا و کیگی کرنیوالا و جو یہ سب پاپ کو سلا  
 بھیجنے دینے والے و شوہر و گھر و راجہ کھن میں دھوٹے ہیں۔  
 ۳۱۸۔ جلیج مین کرنیوالا مین جلیج مین سطح پاپ کرنیوالا راجہ کی سزا یا کھنڈا پر کھنڈ مین جلیج مین  
 ۳۱۹۔ کونین سکرشی اور گھڑا چورانیوالا و پوسا کو کرنیوالا ایک ماشہ سونا تادان و جو  
 اور گھڑے اور تھی کو کونین پر رکھ دے۔

अरक्षितारं राजानं बलिषड्भागहारिराम् ॥ तमाहुः सर्वलोक  
 स्य समग्रमलहारकम् ॥ ३०८ ॥ अनयेक्षितमर्यादं नास्तिकं  
 विप्रलुप्यकम् ॥ अरक्षितारमत्तारं नृपं विद्याधोगतिम् ३०९  
 ॥ अधार्मिकं त्रिभिर्न्याये निपुल्लीयात्प्रयत्नतः ॥ निरोधनेन  
 बन्धेन विविधेन बन्धेन च ॥ ३१० ॥ निग्रहे राहिया पानां साधू-  
 नां संग्रहे राच ॥ द्विजातयश्चेत्याभिः पूयन्ते सततं नृपाः ॥  
 ३११ ॥ सत्तव्यं प्रभुनानित्यं क्षिपतां कार्म्यैराणान्दृशाम् ॥ बा-  
 लकद्रातुराणां च कुर्वता हितमात्मनः ॥ ३१२ ॥ यः क्षिप्तो म-  
 र्घयत्यात्मेन तेन स्वर्गो महीयते ॥ यस्त्वेवमर्यान्मम तेन रंकं ते  
 न गच्छति ॥ ३१३ ॥

۳۰۸- جو راجہ رعیت کی حفاظت نہیں کرتا اور رعیت سے اپنا حصہ لینے محصل لیتا ہے۔  
 وہ تمام آلائش و آفت کو لیتا ہے۔

۳۰۹- مہراجا کو چھوڑنے والا اور ناستک (یعنی پرلوک کو نہ ماننے والا) اور کوٹنے والا اور  
 رعیت کی حفاظت نہ کرنے اپنا محصل لینے والا جو راجہ وہ نہ رک میں جاتا ہے۔  
 ۳۱۰- روکنا اور باندھنا اور انواع اقسام کی سزائے بدنی و دنیا ان تینوں سزاؤں کو کہتے  
 تہہ بریک بھرتوں کو سزا دیوے۔

۳۱۱- بھرتوں کو سزا دینے اور سادھو مہاتماؤں کی حفاظت اور نگہ کرنے سے راجہ بامتنہ  
 برہمن و کشتری و درویشیہ کے پاک ہوتا ہے۔

۳۱۲- اپنا بھلا چاہنے والا آدمی سعی و دعا علیہ بالاک اور پورے اور دلچسپی آدمیوں کی  
 باتوں کی برداشت کرے جو کہ رنج کی حالت میں کہتے ہوں۔

۳۱۳- نصیبت زدہ کی نالائقی باتوں کو کہ جو برداشت کرتا ہے وہ لوگ میں عزت پاتا  
 اور جو حکومت کی خیال سے برداشت نہیں کرتا وہ نہ رک میں جاتا ہے۔

परमं यत्नमातिष्ठेत्स्तेनानां निग्रहे नृपः ॥ स्तेनानां निग्रहादस्य  
 यशोराष्ट्रं च वर्धते ॥ ३०२ ॥ अभयस्य हि यो हाता स पूज्यः स तं  
 नृपः ॥ सत्रं हि वर्धते तस्य सदैव अभयदक्षिराम् ॥ ३०३ ॥ सर्वतो  
 धर्मवद्भागो राज्ञो भवति रक्षतः ॥ अधर्मादपि यद्भागो भ-  
 वत्यस्य ह्यरक्षतः ॥ ३०४ ॥ यदधीते यच्च जते यद्दाति यदर्चति  
 ॥ तस्य यद्भागभागानां सभ्यं भवति रक्षणात् ॥ ३०५ ॥ रक्ष-  
 न्धर्मैराभूतानि राजा वध्यांश्च धातयन् ॥ यजते ऽहरहर् यज्ञैः  
 सहस्रशतदक्षिणैः ॥ ३०६ ॥ यो ऽरक्षन्वत्तिमादत्ते कस्य तुल्यं  
 च यार्थिभ्यः ॥ प्रतिभागं च दराडं च सद्यो नरकं व्रजेत् ॥ ३०७

۳۰۲۔ چورون کو سزا دینے میں بڑی تدبیر کرے اس سے راجہ کا پیش (سیکنا می) اور راج ترقی پاتا ہے۔

۳۰۳۔ رعیت کو بیچون کرنا اور راجہ ہر ایک وقت پر لائق تعظیم ہوتا ہے اور ہمیشہ اس کی بیچون دکشنادالی بگیہ بڑھتی ہے۔

۳۰۴۔ چاروں طرف سے رعیت کی حفاظت کرنے سے رعیت کے وھرم کا چھوٹا حصہ راجہ پاتا ہے اور حفاظت نہ کرنے سے اس کے وھرم کا چھوٹا حصہ پاتا ہے۔

۳۰۵۔ رعیت کی حفاظت کر نیسے رعیت کے لئے ہونے پانٹھ و بگیہ دان و پوچاکے چھوٹا حصہ راجہ پاتا ہے۔

۳۰۶۔ وھرم سے سب جانداروں کی حفاظت کرتا ہوا اور قطع اعضا و قتل کے لائق مجرموں کو سزا دینا ہوا راجہ لاکھ دکشنادالی بگیہ کو ہر روز کرتا ہے۔

۳۰۷۔ جو راجہ بدون حفاظت کرنے رعیت کے رعایا سے محسولات وغیرہ لیتا ہے وہ راجہ جلد نرک میں جاتا ہے

مनुہی مارو سیکھن چور کی لکھن سبھو ॥ پراپا مہ  
 تھو گوجو ہڈیا دیو ॥ ۲۵۵ ॥ سھو کارا پھو نا  
 ہینا پانہ شاتوہم ॥ پانہ پانہ ہڈیا دیو ۲۵۶ ॥  
 گھو ہڈیا دیو ۲۵۷ ॥ گھو ہڈیا دیو ۲۵۸ ॥  
 گھو ہڈیا دیو ۲۵۹ ॥ گھو ہڈیا دیو ۲۶۰ ॥  
 گھو ہڈیا دیو ۲۶۱ ॥ گھو ہڈیا دیو ۲۶۲ ॥  
 گھو ہڈیا دیو ۲۶۳ ॥ گھو ہڈیا دیو ۲۶۴ ॥  
 گھو ہڈیا دیو ۲۶۵ ॥ گھو ہڈیا دیو ۲۶۶ ॥  
 گھو ہڈیا دیو ۲۶۷ ॥ گھو ہڈیا دیو ۲۶۸ ॥  
 گھو ہڈیا دیو ۲۶۹ ॥ گھو ہڈیا دیو ۲۷۰ ॥

۲۹۶۔ آدمی کے مارنے میں جلد چور کی طرح مجرم ہوتا ہے اتم سبھو ہڈیا دیو ۲۹۷۔  
 اور گھو ہڈیا دیو ۲۹۸۔ گھو ہڈیا دیو ۲۹۹۔ گھو ہڈیا دیو ۳۰۰۔ گھو ہڈیا دیو ۳۰۱۔

۲۹۶۔ چھوٹے چار پائیہ کے مارنے میں دھوکہ میں لینے دھوکہ دیو ۲۹۷۔ اور چور ہڈیا دیو ۲۹۸۔  
 ہڈیا دیو ۲۹۹۔ ہڈیا دیو ۳۰۰۔ ہڈیا دیو ۳۰۱۔

۲۹۸۔ گد باکری بھیڑا ہڈیا دیو ۲۹۹۔ گد باکری بھیڑا ہڈیا دیو ۳۰۰۔ گد باکری بھیڑا ہڈیا دیو ۳۰۱۔  
 ۲۹۹۔ استری دیشا غلام و شاگرد و برادر حقیقی ہڈیا دیو ۳۰۰۔ استری دیشا غلام و شاگرد و برادر حقیقی ہڈیا دیو ۳۰۱۔

۳۰۰۔ پشانی چھوڑ کر لکھن میں مارنا چاہتے اسکے خلاف تنبیہ کرے تو چور کے پاپ کو پاک  
 لینے تنبیہ و جرمانہ کے لائق ہو دے۔

۳۰۱۔ سب مار پیٹ کے جرموں کی تفتیح کو بیان کیا اسکے بعد چور کی سزا دی گئی کی طرح  
 بیان کرینگے۔

छेदने चैव यंत्राणां यो कत्रस्योस्तथैव च ॥ आक्रन्दे वाप्यपै-  
 हीति न दशडं स नुरवतीत ॥ २६२ ॥ यत्रापवर्त्तते युग्यं वैशराया-  
 त्वाजकस्य तु ॥ तत्र स्वाभिभव इराड्यो हिंसायां द्विशतं रम-  
 म् ॥ २६३ ॥ प्राजकश्चेद्भवेदाप्तः प्राजको दशडमर्हति ॥ यु-  
 ग्यस्याः प्राजकेऽनाप्ते सर्वे दशड्याः शतं शतम् ॥ २६४ ॥ स-  
 चेत्तुं यमिसंरुद्धः पशुभिर्वारयेन वा ॥ प्रमाययेत्पाराभृत-  
 स्तत्र दशडोऽविचारितः ॥ २६५ ॥

۴۰۴۔ ہانڈھے کا چڑا چارپائیہ کے گلے کی رسی کوڑا سب ٹوٹ گئے ہوں اور آواز سنو  
 سارنقی (یعنی رتھ ہانڈے والا) نے پکارا ہو کہ ہٹ جاؤ تو رتھی دسارنقی دالاک رتھ نہیں  
 کیجو ڈنڈ نہ دینا چاہیے۔

۴۰۵۔ جس مقام پر رتھ سارنقی کے مقصور سے جیسا چلنا چاہیے ویسا نہیں چلنا ہوا اور اس  
 چال سے کوئی مر گیا ہے تو اس مقام پر بدوٹن سیکھ ہوئے سارنقی کو رتھ پر نوکر رہنے سے  
 دالاک رتھ کا دو سو تین ڈنڈ دیوے۔

۴۰۶۔ سارنقی رتھ ہانڈے میں ہوشیار ہو اور رتھ سے کوئی مر گیا ہو تو سو تین ڈنڈ سارنقی  
 دیوے سارنقی ہوشیار ہو اور رتھ سے کوئی مر گیا ہو تو بدوٹن سیکھ ہوئے سارنقی کو رتھ پر مقرر  
 کرنے سے دالاک رتھ دسارنقی رتھ کا سواریہ سب سو تین ڈنڈ دیوے۔

۴۰۷۔ سارنقی کے روپر دو سار رتھ آیا خواہ بہت گنود خیرہ چارپائیہ روپر دالے اور ٹھوکر  
 رتھ رک گیا اور سارنقی آپ رتھ کو پیچھے لیجانے کی قدرت نہیں رکھتا ہوا اور ٹھوکر سے کو  
 کوڑا مار کر آگے لیجاتا ہے اس میں کوئی مر گیا تو بچا کر مکرنا سارنقی کو ڈنڈ دینا۔

श्रृंगावपीडनायां च बराशो शीतयोस्तथा ॥ समुत्थानव्ययं  
हायः सर्वदराडमया पिवा ॥ २४७ ॥ इव्याशिहिंस्याद्योयस्य  
ज्ञानतोऽज्ञानतोपिवा ॥ सतस्योत्थास्येतुष्टिराज्ञोदघाच्चत-  
त्समम् ॥ २४८ ॥ चर्मचर्मिकभांडेयुकाष्ठलोष्ठमयेषुच ॥ मू-  
ल्यात्पंचगुराशोदराडः दुग्धमूलफलेषुच ॥ २४९ ॥ यानस्यै-  
वयातुश्चयानस्वामिनयवच ॥ दश्रातिवर्त्तनान्याहुः शोषेद-  
राडोविधीयते ॥ २५० ॥ चिन्ननास्येभग्नयुगेतिर्य्यक्षप्रतिमु-  
खागते ॥ अक्षभंगेचयानस्यचक्रभंगेतथैवच ॥ २५१ ॥

۳۸۷۔ ہاتھ پاؤں وغیرہ میں سوراخ کرنے اور خون نکلنے سے روک دینے والا آدمی اسے حمی کو خراج و خوراک داندیہ آتے دلون کا دیوبے جیتے دنون میں دوزخ می بھیج البدن بوجاہ اور اگر اس فرح کے دینے سے انکار کرے تو خراج اور دوزخ دونوں دیوبے۔

۲۸۸۔ کوئی آدمی دانستہ خواہ نا دانستہ کیسی دولت پر باد کرے تو شوکر راضی خوش گزرے  
اور اس دولت کے برابر راہ کو ڈروں و لوے۔

۳۸۹۔ چڑا چڑے کا برتن کاٹھ کا برتن مٹی کا برتن پھول پھول پھول انھوں کو برباد کنیوالا  
صل چیز سے بکھٹا دینا دلوے۔

۲۹۰- سواری و سوار و سواری کا مالک ان سب کو در مقام پر دیکھنا چاہیے اور مقام پر  
دیکھنا سیکھنا۔

۲۹۱۔ میل کے تاریخ کی رسی اور جالوٹ گیا ہوں میں کے اونچے نیچے ہونے سے رختہ وغیرہ  
شیر ہا ہو گیا ہوا در و در آیا ہوں ختم کے پایہ کے اندر کی لکڑی ٹوٹ گئی ہو ٹھوٹکا پایہ ٹوٹ گیا ہو۔

सहासनमभिप्रेसुखत्वाद्यस्यावकसजः ॥ कल्यांकतांकोनि-  
 र्वास्यः स्थिचंचास्यावकर्तयेत् ॥ २८१ ॥ अवनिधीवतोदर्या  
 द्वावोद्योद्येदयेनृपः ॥ अवसूत्रयतोमेद्वमवशार्धयतोशुद्धम् ॥  
 २८२ ॥ केशोयुगुक्ततोहस्तोद्येदयेदविचारयन् ॥ पादयोर्द्वि-  
 कायांचशीवायां हृषरोषुच ॥ २८३ ॥ त्वग्मेदकः शतंरराज्यो  
 लोहितस्यचदर्शकः ॥ मांसमेत्तातुषस्तिष्ठान्वास्वस्थ  
 मेदकः ॥ २८४ ॥ वनस्पतीनांसर्वेषामुपभोगंयथायथा ॥ तथा  
 तथादमः कार्योहिंसायामितिधारणा ॥ २८५ ॥ मनुव्यासां  
 पञ्चनांचदुःखायप्रवृत्तेसति ॥ यथायथामहद्दुःखंरराज्यं  
 तथातथा ॥ २८६ ॥

۳۸۱- چھوٹا آدمی بڑے آدمی کے ساتھ ایک آسن پر بیٹھے تو اسکی کمر میں نشان کر کو نکال  
 دیوے خواہ اسطرح اسکے پوتر کو کاٹ دے کہ وہ مرنے نہ پاوے۔

۳۸۲- غرور سے بدن پر تھوکے تو دونوں ہونٹھے چھید ڈالے اور پیشاب کرے تو عقب و مناسل  
 کاٹ ڈالے اور براز کرے تو مقعد کاٹ ڈالے۔

۳۸۳- جو شودر برابر اس کے بال و پائون و دارنہی دکلا و فوط کو غرور سے پکڑیو، اسکا  
 ہاتھ کاٹنا چاہئے یہ نہ خیال کرنا چاہئے کہ اسکو تکلیف ہوگی۔

۳۸۴- جلد بدن کو چھیدنے والا خون لگانے والا یہ دونوں یون و ڈنڈ پائون اور گوشت  
 بدن کو علیحدہ کر نیوالا چھتک ڈنڈ کو پاؤ اور اسٹخوان بدن کو چھیدنیوالا ویش سے نکالا جاو  
 یہ وڈر کیاں ذات میں جانتا چاہئے۔

۳۸۵- تمام درختوں کا جیسا تفرق کر دیا ویا وڈنڈ پاوے مارنے میں ویسا ہی  
 جانتا یہ شتر کا حکم ہے۔

۳۸۶- آدمی و چار پایا انھون کو جیسا جیسا دکھ دو دیا ویا وڈنڈ پاوے۔

ماतरپیترंजायांभ्रातरंतनयंशुतम् ॥ आसारयाञ्छतंराघः  
पत्न्यानंवाददहुरोः ॥ २७५ ॥ ब्राह्मराक्षत्रियाभ्यांतुदराडःका  
र्योविजानता ॥ ब्राह्मरोसाहसःपूर्वःसत्रियेत्येवमध्यमः ॥  
२७६ ॥ विदुश्चद्वयोरेवमेवस्वजातिंप्रतितत्त्वतः ॥ छेदवर्जंप्ररा  
यनंदराडस्येतिविनिश्चयः ॥ २७७ ॥ राघदराडविधिःप्रोक्तो-  
न्नात्मपारुष्यस्यतत्त्वतः ॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिदराडपारुष्य  
निर्णायम् ॥ २७८ ॥ येनकेनचिदंगोनहिंस्याच्चच्छेष्टमन्यजः ॥  
छेत्तव्यंतत्तदेवास्यतन्मनोरनुशासनम् ॥ २७९ ॥ पाशिसुच-  
म्यदराडंवापाशिक्षेदनमर्हति ॥ पादेनप्रहरन्कोपात्पादच्छे  
दनमर्हति ॥ २८० ॥

۲۷۵۔ تا پتا استری بھائی بیٹا گروان سب کو اگر ایسا کہے کہ تم پاتلی ہوا اور گرو کو راہ نیکو  
تو سون ڈنڈ دیوے۔

۲۷۶۔ برہمن کو کشتری یا کشتری کو برہمن کلمات حقارت آمیز با دار بلند کو تو برہمن کو  
پورب سہس ڈنڈ اور کشتری کو بدیم ساسہس ڈنڈ دیوے۔

۲۷۷۔ اسٹیج ویشہ اور شودر میں بھی اپنی ذات میں سوا زبان میں سوراخ کرنے کے  
باقی سب ڈنڈ جانتا یہ شاستر کا حکم ہے۔

۲۷۸۔ سخت گفتاری کی سزا ڈن کا بیان کیا اسکے بعد مار پیٹ کی سزا ڈن کا طریق کہہ رہے ہیں۔

۲۷۹۔ چانڈال وغیرہ جس عضو سے بڑے آدمیوں کے عضو پر ضرب کرے اس عضو کو کاٹ ڈالنا  
یہی سن جی کا حکم ہے۔

۲۸۰۔ ہاتھ کے ضرب سے مارے تو ہاتھ کاٹنا چاہیے پاتوں کے ضرب سے مارے تو پاؤں  
کاٹنا چاہیے۔



समवर्गोद्दिजातीनां द्वादशैव व्यतिक्रमे ॥ चारेष्ववचनीयेषु त-  
देवद्विगुरां भवेत् ॥ २६६ ॥ सकजातिर्दिजातींस्तु वाचा रासुरा  
याक्षिपन् ॥ निह्वायाः प्राप्नुयाच्छेदं जघन्यप्रभवो हि सः ॥ २७०  
॥ नामजातिग्रहं त्वेषामभिज्ञेहेराकुर्वतः ॥ निसेष्योऽयो मयः  
शंकुर्ज्वलनास्येदशांगुलः ॥ २७१ ॥ धर्मोपदेशं दर्पेणावि-  
प्राणामस्य कुर्वतः ॥ तत्रमासे च ये तैलं वक्रे श्रोत्रे च पार्थिवः  
॥ २७२ ॥ श्रुतदेशं च जातिं च कर्म शरीरमेव च ॥ वितथेन ब्रुवन्  
र्षाद्वाप्यः स्याद्दिशतं दमम् ॥ २७३ ॥ कारां वाप्यथ वा खं जम-  
न्यं वापितथाविधम् ॥ तथ्येनापि ब्रुवन्नायो दराडं कार्वाय-  
णावरम् ॥ २७४ ॥

۲۶۹- بہتر میں سخت گفتاری مردہ بالا کے کرنے سے بارہ پن اور جو بات کہنے کے لائق  
ہیں ہے اس کے کہنے سے جو میں پن ڈنڈ ہوتا ہے۔

۲۷۰- اگر شودر برہمن یا گشتری یا ویشیہ سے سخت زبانی کرے تو اس کی زبان میں سواخ  
کیا جائے کیونکہ وہ عفو حقیر سے لینے پاتون سے پیا ہوگا۔

۲۷۱- جو شودر دارے تو فلائے برہمن سے بچے ایسا باوا رہنڈ برہمن وغیرہ کے نام اور  
ذات کو کہے تو اس کے منہ میں بارہ انگل کی سچ آہنی چلی ہوئی ڈالنا چاہیے۔

۲۷۲- جو شودر برہمن کو غور سے دھرم کا پیدلش کرے تو اس کے منہ اور کان میں گرم  
تیل راجہ ڈالے۔

۲۷۳- اہل بیان ذات میں ڈنڈ کہتے ہیں کہ جو شخص کسی غور سے کہے کہ تمہارا بیٹا نہیں ہے تم اس ملک میں پیدا  
ہو تمہارا یہ ذات نہیں ہے تمہارا جیو وغیرہ نہیں ہے ایسا غور سے کہنے دلاؤ تو کچھ ڈنڈ دیوے۔

۲۷۴- جو کانیا لنگرہ اس لنگرہ راستی سے بھی کانیا لنگرہ نہ کسنا چاہئے اور جو کبھی کہے تو ایک  
کارشاپن ڈنڈ دیوے۔

سامانتاश्चेन्मृषाब्रूयुःसेतौविवदतां नृणाम्॥ सर्वेष्टयकृष्टय-  
 न्दराड्याराजामध्यमसाहसम्॥ २६३॥ गृहं तडागमारामं शे-  
 त्रं वा भीषया हरन्॥ शतानि पंचदराड्यः स्यादज्ञानाद्विशतो-  
 दमः॥ २६४॥ सीमायामभियन्त्यायां स्वयं राजैव धर्मवित्॥  
 प्रदेशेऽभूमिभेदेऽनुपकारदिति स्थितिः॥ २६५॥ एषोऽस्ति  
 लेनाभिहितो धर्मः सीमाविनिर्गाये॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि  
 वाक्यारुध्यविनिर्गायम्॥ २६६॥ शतं ब्राह्मणामाशुश्रयस्त-  
 त्रियोऽस्राडमर्हति॥ वैश्योऽप्यर्धशतं द्वे वा शूद्रस्तु वधमर्हति॥  
 २६७॥ पंचाशद्वाह्मणोऽस्राड्यः क्षत्रियस्याभि शंसने॥ वैश्ये  
 स्यादर्धपंचाशच्छूद्रैश्चादशकोदमः॥ २६८॥

۲۶۳- گانون والے جھوٹے بولین تو راجہ ایک ایک کو دھیم ساہن ڈنڈ دیوے۔  
 ۲۶۴- گھر تالاب باغیچہ کعبتہ ان سب کو خون و کھارک حصن لینے والے کو پانسون ڈنڈ دیوے  
 اور اکیان سے چھین لینے والے کو دو تونوں ڈنڈ دیوے۔  
 ۲۶۵- نشان و گواہ وغیرہ مرقومہ بالا کے نمونے بین و عزم جاننے والا راجہ اس شخص  
 کو زمین دیوے جہاں زمین کے پانے سے بہت پکار ہوتا ہو یہ شاستری کی مراد ہے۔  
 ۲۶۶- یہ تین تین حدود کی کمی بیشی کے باعث گفتاری جرم اور سزا کی بھیج کر نیگے۔  
 ۲۶۷- اگر کشتی کسی برہمن کو چور کے تو تونوں ڈنڈ دیوے اور اگر دیشیہ ایسی بات کہے تو  
 ڈنڈ دیوے یا دو تونوں ڈنڈ دیوے اور اگر شودر ایسی بات کہے تو قطع عضو کے لائق ہے۔  
 ۲۶۸- اگر برہمن سخت بات مرقومہ بالا (لینے چور) کشتی کو کہے تو پچاس ڈنڈ دیوے  
 کو کہے تو پچیس پن ڈنڈ دیوے شودر کو کہے تو بارہ پن ڈنڈ دیوے۔

ساکھभावेतुचत्वारोग्रामाः सामन्तवासिनः ॥ सीमाविनिर्गा  
यंकुर्युः प्रयताराजसन्निधौ ॥ २५८ ॥ सामन्तानामभावेतुमौ-  
लानांसीनिसाक्षिराणाम् ॥ इमानप्यनुयुज्जीतपुरुषान्वन  
गोचरात् ॥ २५९ ॥ व्याधाच्छाकुनिकानोपान्कैवर्तान्मूल  
खानकान् ॥ व्यालयाहानुच्छृत्तीनन्याश्चवनचारिराः ॥  
२६० ॥ तेष्वस्त्यथाब्रूयुः सीमासन्धिबुलक्षराणाम् ॥ तत्त-  
थास्थापयेद्वाजाधर्मेराग्रामयोर्द्वयोः ॥ २६१ ॥ क्षेत्रकूपत-  
डागानामारासम्यग्रहस्यच ॥ सामन्तप्रत्ययोज्ञेयः सीमामे-  
तुविनिर्गायः ॥ २६२ ॥

۲۵۸ - گواہ بھی نہ ملین تو گانوں کے چاروں طرف کے رہنے والوں میں سے چار آدمی ایک  
تدبیر سے راجہ کے دربار و حد کی تیقح کرن۔

۲۵۹ - گانوں کے رہنے والے بھی نہ ملین تو جو لوگ اور آبادی گانوں کے پشت و پشت اسی  
گانوں کے رہنے والے بھی نہ ملین تو جو لوگ اور آبادی گانوں کے پشت و پشت اسی گانوں کے رہنے والے  
ہوں ان کے تیقح حدود کرانا چاہئے یہ بھی نہ ملین یا تیقح نہ کر سکیں تو جنگل کے رہنے والوں کو  
تیقح کے واسطے حکم دینا چاہئے۔

۲۶۰ - شکاری اور پرندہ پر نیوے اور گنہ پر نیوے کو پھلی بچنے سے اوقات کیریوے کو کدو مل اڈکھا کر نیوے  
وے دسانپ پر نیوے دے دیکھ سے اوقات کیریوے کے جنگل کے رہنے والے یہ سب بے مطلب کیوے  
اس گانوں کے ہر وقت جنگل کو جاتے ہوئے اس گانوں کی حد کو جانتے رہے ہوتے ہیں۔

۲۶۱ - وقت استفسار کے پرہب جیانشان حد کا بیان کریں اسی طرح راجہ دھرم سے  
دونوں گانوں کی حدود قائم کرے۔

۲۶۲ - کہیت - کنواں - تالاب باغیچہ گھران سمجھوں کی حد کی تیقح گانوں والوں کی بیان  
سے جانا چاہئے۔

سہتے لینگے نہی تہی ماں را جاویدرمان یو: ॥ پوربھو کتھا چس تات  
 سدرک سٹیا گمےن چا ॥ ۲۵۲ ॥ ی دس شای سب سٹیا لینگا نام-  
 پیرشہ ॥ سا سٹیا پتھ ی سب سٹیا تہی ماوا دینیرا یو: ॥ ۲۵۳ ॥  
 پامو ی ک کولاناں چس مہ سٹیا سٹیا سٹیا: ॥ پٹھیا: سٹیا-  
 م لینگا نیت یو شے و ویدا دینو: ॥ ۲۵۴ ॥ تہ پٹھا سٹیا یو-  
 یو: س مٹا: سٹیا نیت یو: ॥ نیت یو: یو: سٹیا سٹیا سٹیا: ॥  
 سٹیا شے و نام ت: ॥ ۲۵۵ ॥ شہو مٹیا سٹیا تہو: سٹیا سٹیا  
 سٹیا سٹیا: ॥ سٹیا تہ: شای تہ: سٹیا سٹیا سٹیا سٹیا سٹیا: ॥  
 ۲۵۶ ॥ یو: سٹیا نیت یو: سٹیا سٹیا سٹیا سٹیا سٹیا: ॥ یو: سٹیا تہ-  
 نیت یو: سٹیا سٹیا: سٹیا سٹیا تہ مٹیا: ॥ ۲۵۷ ॥

۲۵۲- یہ سب نشانات اور زمانہ ماضی میں قبضہ و تصرف اور مالہ وغیرہ پانی کا راستہ ان کے  
 وسیلے سے راجہ حدود کی تہیج و تصفیہ کرے۔

۲۵۳- جب نشان کے دیکھنے میں شک ہو تب گواہوں کے بیانات سے متاع حدود کی تہیج  
 و تصفیہ کرے۔

۲۵۴- گاون کے آدمیوں اور فریقین کے روئے و گواہوں کے نشانات حدود پوچھا جائے  
 ۲۵۵- دس سب ایک صلاح ہو کر جیسا تصفیہ کریں سطح حدود ہی کرے اور ان سب  
 گواہوں کا نام بھی تصفیہ حدود کے کاغذ پر لکھے۔

۲۵۶- دس سب گواہوں کی مالا اور لال کپڑے پہن کر تہیج کا ڈھیلہ رکھا اور تہیج  
 کرنے والے سے ایسا کلام کر نشان وقوع و کھلاؤ گے تو تمہارا پیٹہ جاتا رہے گا جسکے بیون کا  
 تیون حد کی تہیج کریں۔

۲۵۷- درجہ تہیج کریں تو پوچھا جائے بیانی کے پاک ہو جاتے ہیں اور غلط تہیج کریں  
 تو ہر ایک دو تہیج تاوان دیوے۔

सीमावसांश्चकुर्वीतन्यग्रीधाश्वत्थकिंशुकान्॥शात्मली  
 मालतालांश्चसीरिशाश्चैवपादयान्॥२४६॥शुल्मान्वेगां-  
 श्विविविधाञ्चमीवलीस्थलानिच॥शरान्कुञ्जकशुल्मांश्च  
 तथासीमाननश्यति॥२४७॥तडागान्युदयानानिवायःप्र-  
 खरानिच॥सीमासन्धिशुकार्याशिदेवतायतनानिच॥  
 २४८॥उपच्छन्नानिचान्यानिसीमालिंगानिकारयेत्॥सी-  
 माज्ञानेनृगांवीक्ष्यनित्यंलोकेविपर्ययम्॥२४९॥अप्रम-  
 नोऽस्थीनिगोवालांस्तुषान्भस्मकपालिकाः॥करीयमिष्ट-  
 कां गाराञ्चकरीवाबालुकास्तथा॥२५०॥यानिचैवंप्रकारा-  
 र्णिकालाद्भूमिर्भक्षयेत्॥तानिसन्धिशुसीमायामप्रवा-  
 शानिकारयेत्॥२५१॥

۲۴۷۔ برگرد پیلی۔ ڈھانک۔ سنبھل۔ شال۔ مال۔ شیر۔ دار وخت۔ زمین سے کسی ایک کو حد کے  
 درمیان میں لگانا چاہیے۔

۲۴۸۔ جھاڑی۔ دبائش۔ دانوع۔ اقسام کے کم و زیادہ کیلئے۔ دخت۔ اور اونچی زمین اور میرٹھی  
 جھاڑی۔ زمین سے کسی ایک کو حد کے درمیان لگانا چاہیے۔ اس سے حد کا نشان ملتا ہے۔

۲۴۹۔ تالاب۔ چاہ۔ وادی۔ دھیرنا۔ دیو۔ استھان۔ زمین سے کسی کو حد کو کیٹیڈین  
 قائم کرنا چاہیے۔

۲۵۰۔ حدود کی پیمائش میں آدمیوں کو اولٹ۔ پلٹ۔ دیکھا اور بھی پوشیدہ نشانات قائم کرنا چاہیے۔  
 ۲۵۱۔ پتھر۔ پڑی۔ گدیوں کے بال۔ بھوسہ۔ راکھ۔ ٹھکرا۔ کرکڑی۔ اینٹ۔ کوہلا۔ کھوہ۔ باو۔

۲۵۲۔ جگہ بہت دن نہیں نہ کھائے ایسی جو چیزیں ہیں ان سب کو حد کے اندر رکھنا چاہو۔  
 پوشیدہ نشانات ہیں۔

سے تھے دھنئے بھوت پش: س پا ہ پ را م ہ تہ ۱۱۔ س ر ب ت ر س ر ہ د ی: س-  
 ت ر ک س ی ت ہ ا ر ر ا ۱۱۔ ۲۸۱ ۱۱۔ س ن ر ہ ش ا ہ ا گ ا س ت ا ہ د ی ا ن ہ  
 پ س ت ت ا ۱۱۔ س پ ا ل ا ن و ا ب ی پ ا ل ا ن و ا ن س ا ڈ ی ا ن س ن ر ب و-  
 ت ۱۱۔ ۲۸۲ ۱۱۔ س ت ر ی س ی ا ت ی ہ ر ڈ ہ ا م ا گ ا ہ ر ا ی ر ا ہ م ہ ت ۱۱۔ ت ت ہ  
 ۱۱۔ ر ہ ر ڈ ہ ا ت ی ا ن ا م ج ا ن ا ت س ہ ی ی س ی ت ۱۱۔ ۲۸۳ ۱۱۔ س ت د ی د ا ن-  
 م ا ت ہ د ی م ر م ک: س ی ی و ی پ ت: ۱۱۔ س و ا م ن ا ن ا چ ی س ن ا ن ا چ پ ا ل ا  
 ن ا ن ا چ ی ت ر م ہ ۱۱۔ ۲۸۴ ۱۱۔ س ہ ا ن ا پ ر ت س م ی ت ن ہ ی و ا ر ہ ا م ی ہ  
 د ی ہ: ۱۱۔ ج ی ہ م ا س ن ی ہ س ہ ا م ا م ی ک ا ش ہ س ہ ت ی ۱۱۔ ۲۸۵ ۱۱۔

۲۸۱۔ راستہ اور گاؤں کے متصل واسے کویت کے سوا دوسرے کھیت میں چار پائے  
 اس کھیت کی چیر کو بر باد کرے تو چرواہا نلوں کو ڈیوے اور جرم کے موافق مالک چار پائے  
 یا چرواہا لقیلاً حاصل کر ارضی مالک زمین کو دیوے۔

۲۸۲۔ چرواہا ساقہ ہو یا نہ ہو ایسی گتہ جو بیچے ہوئے دن نہ گزے ہوں اور وہ  
 دن کے اندر کھیت کو بر باد کرے یا ساقہ کھیت کو بر باد کرے تو ستر کے لائق نہیں ہو یہ  
 من جی نے کہا ہے۔

۲۸۳۔ بٹائی کے کھیت کے غلو وغیرہ کو کاشتکار کے چار پائے کھالیا ہو یا وقت ترود کے  
 تخم تری نہ کی ہو تو جبقہ سانغ سرکاری کا نقصان ہو اور ستر کا دن گنا دوں دیوی اور اگر کاشتکار  
 کے کوثر دن نے ہو تو فی سے اسکی زرعہ کا مطابق بیان بالا لکھا ہو تو نو کرسچ گنا تا دوں  
 دیوے۔

۲۸۴۔ مالک چرواہا و چار پائے ہونے کے جھگڑے میں سطر حلی بدھ دھواتما راہ کرے۔  
 ۲۸۵۔ دو گاؤں کی حدود کے جھگڑے کے تصفیہ کو چیمہ کے مہینہ میں بروقت ظاہر ہو  
 نشانہ حدود کے کرے۔

अजाविकेतुसंरुद्धैः पालेन नायति ॥ यां प्रसह्यवकीह-  
न्यात्पालेतत्किल्बिषं भवेत् ॥ २३५ ॥ तासांचेद्वरुद्रानांचर-  
न्तीनां मिथो वने ॥ यासुत्सुत्यवकीहन्यान्पालस्तत्र किल्बि-  
षी ॥ २३६ ॥ धनुशतं यरीहारो ग्रामस्य स्यात्समन्ततः ॥ शम्भा-  
यातास्त्रयो वापि त्रिगुराणो नगरस्य तु ॥ २३७ ॥ तत्रापरिवृतं  
धान्यं विहिंस्युः पशवो यद्दि ॥ न तत्र प्रशायेद्दराडं नृपतिः य-  
सुरसिराणाम् ॥ २३८ ॥ हतितत्र न कुर्वीत यासुद्रो न विलोकये-  
त् ॥ छिद्रं च वारयेत्सर्वं स्वस्वकारमुखानुगमम् ॥ २३९ ॥ यथि-  
सेत्रे परिष्ठे त्रामन्तीयेऽथ वा पुनः ॥ स पालः शतश्राडाहो-  
विपालान्वाशयेत्यश्नुत् ॥ २४० ॥

۲۳۵۔ بکری یا بھیری کو بھیڑ پانے گھیرا اور اس وقت ہمیں آیا اور زیر دستی سے بھیڑے  
نے بکری یا بھیری کو مارا تو اسپر پالی ہوتا ہے۔

۲۳۶۔ اسپر کی حفاظت میں ہو کر قتل میں چرتی ہوئی بکری یا بھیری کو شیر اچھلکار  
تپ اسپر کا دوش ہمیں ہے۔

۲۳۷۔ گلوں کے چرنے کی دھڑلے گانوں کے چاروں طرف تلوار و ہتھیار دہنی چاروں طرف تک زبردستی  
نکڑا یا ہاتھ سے لٹھی بھیگنا جہاں جا کر لٹھی گرے اتنی زمین کی سہ پندرہ زمین تک کھیتی نہ کرنا  
اور شہر کے چاروں طرف زمین مرقومہ بالا کا سہ چھوڑنا۔

۲۳۸۔ احاطہ نہ رکھنے والی غیر مرزومہ زمین کے رو برو و دھانبہ سے اسکو چار پائے پر یاد کر  
تو راج اسپر کو سزا دیوے۔

۲۳۹۔ احاطہ لیا بناؤ کہ جگہ اونٹ نہ دیکھ سکے تمام سوراخوں کو بند کر دیں کہ شہر اسکا منہ نہیں جا سکے  
۲۴۰۔ سڑنے کے پاس کا کھیت یا گانوں کے پاس کا کھیت احاطہ نہ رکھنا ہوا اس کھیت کی چیز کو چاہا  
نے پر یاد کیا ہو تو اسپر سڑپن ڈنڈ دیوے اور جس چار پائے کے ساتھ اسپر نہوا اسکو اپنے کھیت سے نکال دی۔

دیواککوتیپالوگشویسوامینیتکھہ ॥ یوگسہمے ۵ ن-  
 یاتھچتوپالوککوتیپالوگشویسوامینیتکھہ ॥ ۲۳۰ ॥ گوپ: کسیرتھتو-  
 ستسودھیاہشاتوچرام ॥ گو: سوامینیتکھہ: سا: سوامینیتکھہ:  
 ۵ ۲۳۱ ॥ ن: سوامینیتکھہ: ۵ ۲۳۲ ॥ ہین: پورککوتیپالوگشویسوامینیتکھہ:  
 ۵ ۲۳۳ ॥ ک: سوامینیتکھہ: ۵ ۲۳۴ ॥ ی: سوامینیتکھہ: ۵ ۲۳۵ ॥  
 ۵ ۲۳۶ ॥

۲۳۰۔ دن میں گنو چرانے والے کے پاس گنو موصوفہ مالک کی حفاظت بنو کے تو وہ گنو  
 چرانے والا ملزم ہوتا ہے اور رات میں مالک کے گھر میں اسیر کی سپردگی ہوئی گاسے کی حفاظت  
 بنو کے تو مالک ملزم ہوتا ہے اگر رات میں بھی اسیر کے گھر کو رہے اور اس کی حفاظت بنو کے  
 تو اسیر ہی ملزم ہوتا ہے۔  
 ۲۳۱۔ جس اسیر کی کچھ مزدوری مقرر نہیں ہوئی وہ مالک کی جھلجھلک سے دن گنو چراوے  
 تو ایک اچھی گنو کا دو دھکیوے۔  
 ۲۳۲۔ جو گنو کم ہو جائے یا کپڑا اسکو کھاجا یا کتہ مار ڈالے یا میٹھی زمین پر لگا لیا اسیر سے  
 غلطی ہو کر مر جائے تو اسکا مادان اسیر دیوے۔  
 ۲۳۳۔ آواز دیکر جو لہجائے تو اسکو اسیر نہ دیوے بے تعلک اسوقت مالک کو جھڑکے۔  
 ۲۳۴۔ مر جانے پر گنو کے اعضا کو مالک کو دکھلاوے اور گنو کا کان اور چڑا اور بال لبت  
 دینی حصہ رگ زیر نمان، ان سب کو گنو کے مالک کو دیوے۔



अकन्येतितुयः कन्यां ब्रूयाद्देवे रामानवः ॥ सशतस्रासुपाह  
 रडंतस्यारोयमदर्शयन् ॥ २२५ ॥ पारिग्रहशिकामंत्राः  
 कन्यास्वेवप्रतिष्ठिताः ॥ नाकन्यासुकचिन्हरांलुमधर्म  
 क्रियाहिताः ॥ २२६ ॥ पारिग्रहशिकामंत्रानियतं सरलस  
 राम् ॥ तेषां निष्ठातु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे ॥ २२७ ॥ य  
 स्मिन् यस्मिन् कते कार्ये यस्येहानुशयो भवेत् ॥ तमनेन विधा  
 नेन धर्मोपधिनिवेशयेत् ॥ २२८ ॥ यश्च सुस्वामिनां चैव पा  
 लानां च व्यतिक्रमे ॥ विचारं संप्रवक्ष्यामि यथावद्दर्शितस्तत्त्व  
 तः ॥ २२९ ॥

- ۲۲۵- دشمنی سے کتیا کو یا عیب کے اور اس عیب کو ثابت نہ کرے تو تلوین ڈنڈ دیوے۔  
 ۲۲۶- وداہ کرکے کتیا کو کتیا ہی کو کہا ہے اور جو کتیا یعنی باعیت، اسکی دھرم کر یا تو پ  
 ہو جاتی ہے اسکو وداہ کا منتر نہیں ہے۔  
 ۲۲۷- نیم کر کے وداہ کے منتری سے زوجہ کہلاتی ہے اس زوجیت کی تکمیل ساتوین پھر  
 دلینی بھالور میں ہوتی ہے وداہ میں منتر سے سات پھر مرد و عورت پھر تے پن ساتوین  
 پھر میں وہ کتیا اس مرد کی زوجہ ہو جاتی ہے۔  
 ۲۲۸- جو جو کام کرتے ہوئے حکو منوس ہو اسکو اس طریق سے دھرم کی راہ پر قائم  
 کرے۔  
 ۲۲۹- جو پایہ کے مالک اور اس کے رکھنے والے اپیر وغیرہ انھوں کے جھگڑے کو  
 جیون کا تیون دھرم سے کہینگے۔

یوگرامہشسंधानां कृत्वा सत्येन संविद्म ॥ विसंवदेन्नरो लोमा  
 तं राट्वा द्विप्रवासयेत् ॥ २१९ ॥ निष्ठुह्यदापयेच्चैनं समयव्यभि-  
 चारिशाम् ॥ चतुःसुवर्गान् वरिणिष्कांश्च तमानं च राजतम्  
 ॥ २२० ॥ सतह्राडविधिकुर्याद्धर्मिकः प्रथिवीपतिः ॥ ग्राम  
 जातिसमूहेषु समयव्यभिचारिशाम् ॥ २२१ ॥ क्रीत्वा विक्रीय  
 वा किंचिद्यस्यैवानुशयो भवेत् ॥ सोऽन्तर्दशाहातद्व्यं दद्याच्चै-  
 वादरीतच ॥ २२२ ॥ परेणातुदशाहस्य न दद्यान्नापिराययेत् ॥  
 आदरानोददच्चैव राजा दशज्यः शतानि यद् ॥ २२३ ॥ यस्तु दो-  
 षवती कन्यामनाख्याय प्रयच्छति ॥ तस्य कुर्यान्नुपोदराडं  
 स्वयं यसावतीं पराणान् ॥ २२४ ॥

۲۱۹- آدمی کا تون دلائے علاقہ کی صلاح کو آتی سے کر کے پھر طے سے سکونین کرتا ہے  
 اسکے راج سے باہر نکال دینا چاہئے۔

۲۲۰- پکڑ کر اس سے چار تین چھ فشک ایک ست مان (یعنی ۳۰ روپے) چاندی تاروں  
 لیوے اور تین حصہ معاملہ کی خوردی و بزرگی پر پھر کر کے ایک ایک کو یا سب کو لے لیا۔

۲۲۱- دھرماتاراہ گرام جات کے سٹوہ میں صلح چھوڑنے والوں کی اس دھرم کو کر کے

۲۲۲- کسی چیز کو بول لیکر یا فروخت کر کے پھینکا دے دینی کچھ اچھا بیچا یا اچھا نہ مول لیا  
 ایسا لے تو دن دن کے اندر پھر بھار کرے۔

۲۲۳- دین دن کے بعد پھر بھار لینا ہوتا اور اگر کرے تو چھ سوین دھرم لے لیا۔

۲۲۴- جو شخص عیب دار لڑکی کا عیب نہ لکھ کر اس کا دواہ کرے وہ چھ سو لے لیا۔

دلوے۔

यदिसंसाधयेत्तत्तुर्धास्त्रोभेनवायुनः ॥ राज्ञाहायः सुवर्गस्थि-  
 तस्यस्तेयस्यनिष्कृतिः ॥ २१३ ॥ दत्तस्यैवोदिताधर्म्यायथावद-  
 नपक्रिया ॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि वेतनस्यानपक्रियाम् ॥ २१४ ॥  
 ॥ भूतो नार्त्तो न कुर्याद्योर्धात्कर्म यथोदितम् ॥ सदराच्चः कृ-  
 द्वाला न्यद्यौ न देयं चास्य वेतनम् ॥ २१५ ॥ आर्त्तस्तु कुर्यात्त्व-  
 स्थः स न्यथा भाषितमादितः ॥ स दीर्घस्यापि कालस्य तत्त्व-  
 भेदेन वेतनम् ॥ २१६ ॥ यथोक्तमार्त्तः सुस्थो नायस्तत्कर्म न क-  
 रयेत् ॥ न तस्य वेतनं देयमल्पो न स्यापि कर्मणाः ॥ २१७ ॥ यथ-  
 धर्मोऽखिलेनोक्तो वेतनादानकर्मणाः ॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि  
 धर्मसमयभेदिनाम् ॥ २१८ ॥

۲۱۳۔ جب لو بھ سے وہ نہ لےوے خواہ وہ اتنا دینے کو کہہ کر نہیں دیتا ہے اور لینے والا بڑا بیکار  
 و حرم میں نہیں لگتا تو راہد ان دونوں سے اس چوری کے پریشانت کیوں اسلئے ایک سیرن دیتا ہے  
 اور اس درمیانہ کو داتا تاکہ یہ تو دینڈ لینے ہی سے ثابت ہے۔  
 ۲۱۴۔ دی ہوئی چیز کو وہ اس لینے کے طریق کو کہا اب اس کے بعد مزدوری کی مزدوری نہ دینے کے طریق  
 کو کہتے ہیں۔

۲۱۵۔ صحیح و سالم آدمی ایک کام کو کرنا قبول کیا اور نہ کاربانی خودی سے نہیں کرتا ہے تو راہد  
 اس سے آٹھ رتی سونا تا داں لےوے اور مزدوری اسکو دلاوے۔

۲۱۶۔ کام کر نہ والا آدمی بیماری میں مبتلا ہو کر کام کو ترک کرے اور تندرست ہو کر کام کو چھلے دے تو مزدوری  
 ۲۱۷۔ بیمار ہو یا تندرست ہو کام کر نہ والا جس کام کو قبول کرے اس کام کو کرنا ہی اور وہ کام پورا ہونے سے  
 مقور ارہ گیا ہے اسکو نہ آپ کرنا ہے نہ دوسرے ختم کرنا ہے تو اسکو بھی کچھ نہ دینا چاہئے۔  
 ۲۱۸۔ مزدوری نہ دینے کے طریق کو کہا اب اس کے بعد کوئی کام کرنے کی صلاح کرے اسکو نہیں کرتا اسکا وہ کام  
 نہ دینا چاہئے۔

यस्मिन्कर्मशियास्त्युरुक्ताः प्रत्यंगदसिराः ॥ ससवता  
 आदरीतभजेस्सर्वसवा ॥ २०८ ॥ रथं हरेतवाध्वर्युर्ब्रह्माधा-  
 नेचवाजिनम् ॥ होतावायिहरेदश्वमुज्जाताचाप्यनः क्रये  
 ॥ २०९ ॥ सर्वेषामर्द्धिनो मुख्या तदर्थेनार्द्धिनोऽपरे ॥ तृती-  
 यिनस्तृतीयांशाश्चतुर्थ्यांशाश्चपादिनः ॥ २१० ॥ सम्भूयस्या-  
 निकर्माशिकुर्वद्भिरिहमानवैः ॥ अनेनविधियोगेनक-  
 र्तव्यांशप्रकल्पना ॥ २११ ॥ धर्मार्थयेनदत्तं स्यात्कस्मै-  
 चिद्याचतेधनम् ॥ यश्चाचनतथातत्पान्नदेयंतस्यतद्भ-  
 वेत् ॥ २१२ ॥

۲۰۸- جن کام میں جس انگ کی جو دشت ہے اسکو اس انگ کے کرم کرنیوالے پا دیں خواہ سب  
 رنگ ملکر بانٹ لیں۔

۲۰۹- ادھویج رتھ کو پادے برہما اور ہوتا گھوڑا کو پا دیں اور گانا گاڑی کو پاوے۔  
 ۲۱۰- جن گیارہ کی تلوگوں کو دشت ہے اسکی تقسیم کا طریق لکھتے ہیں کہ گیارہ میں ستر رنگ ہوتے  
 ہیں انہیں چار رنگ مقدم میں لینے ہوتا اور چھوٹے برہما اور گانا گیارہ چار مقام دشت کی نصف پا دیں  
 اور میرا برہم پرست ہوتا ہوتا چھوٹی پرست ہوتا چار مقدم رنگ کا اور ہا پا دیں اور چھوٹا گیارہ  
 آگست پرست ہوتا چار مقدم رنگ کا تقسیم حصہ پا دیں اور اگر اس وقت انتہا تو اس پرست ہوتا چار  
 مقدم رنگ کا چھ حصہ پا دیں اس مقام پر سب کو مطابق بیان کے دشت لے لیتے سب کا  
 اور ہا اگرچہ پچاس ہے تو ہی انوالیسٹم لیتا تب پہلی کہی ہوئی تعداد پوری ہوگی۔

۲۱۱- اپنے کام کو مل کر کرنے والے آدمی اس طریق سے حصہ میں کریں۔  
 ۲۱۲- کسی نے کسی مانگنے والے کو دھرم کیونکہ دیا اور وہ لیکر دھرم میں کچھ نہیں لگاتا  
 تو اس دولت کو اس سے واپس پھیر لے۔

अथसूलमनाहार्यप्रकाशकप्रशोधितः॥ अदराज्योमु-  
च्यतेराज्ञानाधिकोलभतेधनम्॥ २०२॥ नान्यदन्वेनसंसृष्ट  
रूपंविश्रयमर्हति॥ नचासारंनचन्यूनंनदूरेरातिरोहितम्॥  
२०३॥ अन्यांचेदशयित्वान्याबोहुःकन्याप्रदीयते॥ उमेतेष  
कस्यलोकैर्नवहेदित्यब्रवीन्मनुः॥ २०४॥ नोन्मत्ताथानकुचि-  
न्यानचयास्पृष्टमैथुना॥ पूर्वदोषानभिरव्याध्यप्रदातादराड  
मर्हति॥ २०५॥ ऋद्विभ्यदिद्वतोयज्ञेस्वकर्मपरिहाययेत्॥  
तस्यकर्मानुरूपेरादेशोऽशःसहकर्तृभिः॥ २०६॥ दक्षिणा-  
मुचदत्तासुस्वकर्मपरिहाययन्॥ कृत्स्नमेवलभेतांशमन्ये-  
नैवचकारयेत्॥ २०७॥

۲۰۲ - جس سے مراد لہا اسکو دکھلا نہیں سکتا اور جس کے روبرو مول لیتا ثابت کرتا ہے تو اسکو  
راجمہرا دوپے اور مول لی ہوئی چیز کو جبکی چیز برباد ہوتی ہے وہ مالک پاؤں جتنے روپیہ وہ  
چیز مول لی گئی اتنا روپیہ مول لینے والے کا گیا۔

۲۰۳ - زعفران وغیرہ چیزوں میں کسٹم ملا کر فروخت نہ کرنا اور ناکارہ چیز کو اچھی مکھڑ فروخت  
نکرتا ورنہ میں کم نہ تولنا روبرو رہنا اور رنگ سے اچھا بنا کر فروخت نہ کرنا۔

۲۰۴ - اور کینا دکھلا کر دوسری کینا دیکھو تو دواہ کر نیوالا ایک ہی شک (معاوضہ) سے ددلو  
کینا کا دواہ کرے میں جی نہیں کھا ہے۔

۲۰۵ - جو کینا بیاہ سے دکھی یا گورھ میں ہے یا سیانترت میں یا عیب ہے اسکا دواہ بدلو  
اسکے عیوب ظاہر کئے ہونے کو دوپے تو اس میں کینا کا دینے والا نہ اس کے لائق ہے۔

۲۰۶ - یکے میں دین لیکر جو توگ اپنے کام کو نہ کریں تو جتنا کام کیا ہے اتنا ہی حصہ کم کرنے  
کے ساتھ پاؤں۔

۲۰۷ - تمام دکتاں کے بیماری وغیرہ سے اپنے کام کو ترک کرے تو ہیا کم دے دیکر سے کرا دوپے



نیکسپسٹیا پھرتارم نیکسپسٹیا رमेवच ॥ सर्वैरुपाधैरन्विच्छे-  
 च्छपथैश्चैवेदि कैः ॥ १६० ॥ यो नیکسپسٹیا नार्यपति यश्चानि-  
 सिष्ययाचते ॥ तावुभौ चौरवच्छास्यो दाप्यौ वा तत्समं दमम् ॥ १६१ ॥  
 नیکسپسٹیا पहरतारंतत्समं दापयेहमम् ॥ तथोपनि-  
 धिहर्तारमविशेषेणापार्थिवः ॥ १६२ ॥ उपधाभिश्चयः कश्चि-  
 त्यरद्रव्यं हरेन्नरः ॥ ससहायः सहन्तव्यः प्रकाशं विविधैर्वधैः ॥ १६३ ॥  
 नیکस्योयः कृतोयेनयावांश्चकुलसन्निधौ ॥ ता-  
 वानेव सविज्ञेयो विभुवन्दराडमर्हति ॥ १६४ ॥ मिथोरायः  
 कृतोयेनगृहीतो मिथश्चववा ॥ मिथश्चप्ररातव्यो यथा रा-  
 यस्तथाग्रहः ॥ १६५ ॥

- ۱۶۰۔ شے امانت کو لینے والا اور بردن امانت رکھنے کے اُسکو مانگنے والا ان دونوں کو بین  
 جو قسم اور تمام تدبیریں لکھی ہیں اُنکے وسیلے سے اصل مطلب کو جانے۔  
 ۱۶۱۔ جو شخص شے امانت کو بینین دیتا اور چویدون رکھنے کے امانت کو مانگتا ہے وہ نو کو جو  
 کی طرح سزا دینا چاہئے یا شے امانت کے برابر تادان لینا چاہئے۔  
 ۱۶۲۔ سرکشادہ و سرمہبران دونوں قسموں کی امانتوں کو جو بینین دیتا ہے اُسکو ان دونوں  
 قسم کی امانت کے برابر تادان دینا چاہئے۔  
 ۱۶۳۔ جو شخص فریب کر کے کسی کی دولت لیتا ہے اُسکو سب دروگاران اُس شخص کے سب  
 آدمیوں کے رد و انواع و اقسام کی سزا دیکر مارے۔  
 ۱۶۴۔ کل کی موجودگی میں جتنی امانت رکھی ہے اُمین خلاف بیان کرے تو تہائی تادان  
 دیوے۔  
 ۱۶۵۔ جسے بغیر گواہ کے دیا تو وہ بے گواہی لیوے کیونکہ جیسا دینا ویسا لینا۔

نيسے پوپنيدھي نيتن نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥  
 تاپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥  
 ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥  
 ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥  
 ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥  
 ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥  
 ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥  
 ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥  
 ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥  
 ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥ نرے پوپن نھرے ॥

۱۸۵۔ جو چیز جانی ہوئی امانت رکھی جا اور جو چیز غیر جانی ہوئی امانت رکھی جا (ان دونوں طرح کی) امانت کو مالک کے بیٹے وغیرہ کو نہ دیوے بلکہ جی امانت ہو اسی کو دیوے۔  
 ۱۸۶۔ کوئی آدمی کچھ امانت رکھ کر مر گیا تو جس کے پاس بیٹے امانت ہو وہ از خود اس چیز کو اس کے سپرد کرے جسے متوفی کے مال پر تصفیہ پایا ہو اور متوفی کے بیٹے وغیرہ اور راجہ و دونوں اس سے دوسری چیز نہ طلب کریں (یعنی یہ نہ کہیں کہ دوسری چیز بھی تمھارے گھر امانت رکھی ہو اسکو بھی لاؤ۔)

۱۸۷۔ سام نام تہذیب جو قریب سے علیحدہ ہے اس کے ذریعہ سے براہ محبت جس کے پاس امانت رکھی گئی ہے اس کے آچرن کو بجا کر کے اپنا مطلب حاصل کرے۔  
 ۱۸۸۔ امانت کا طریقہ بیان کیا اور بند چیز کو جیسے دیباہی کا اثر فی کو توڑ کر نہیں سے کچھ نہ لےوے تو کچھ دوش نہیں پاتا۔

۱۸۹۔ امانت رکھی گئی چیز جو رچی ہو یا پانی میں بگی ہو یا آگ میں جل گئی ہو تو جس کے پاس رکھی گئی ہے وہ نہ دیوے بشرطیکہ اس میں سے کچھ آپ نہ لی ہو۔



कुलजैवतसम्पन्नेधर्मज्ञेसत्यवादिनि ॥ महापक्षेधनिन्या  
येनिक्षेपंनिक्षिपेद्बुधः ॥ १७६ ॥ योयथानिक्षिपेद्ब्रह्मेयमर्थं  
यस्यमानवः ॥ सतथैवब्रहीतव्योयथारायस्तथाग्रहः ॥ १८०  
॥ योनिक्षेपंयाच्यमानोनिक्षेप्नुर्नप्रयच्छति ॥ सयाच्यः प्राङ्नि  
वाकेनतन्निक्षेप्नुरसन्निधौ ॥ १८१ ॥ साक्ष्यभावेप्रसाधि-  
भिर्वयोरूयसमन्वितैः ॥ अपदेशैश्चसंन्यस्यहिररायंतस्यत  
त्त्वतः ॥ १८२ ॥ सद्यदिप्रतिपद्येतयथान्यस्तंयथाकृतम् ॥ न  
तत्रविद्यतेकिंचिद्यत्परेरभियुज्यते ॥ १८३ ॥ तेयान्नदद्याद्य  
दितुतडिरायंयथाविधि ॥ उभौनिगृह्यदाप्यःस्यादितिध-  
र्मस्यधारणा ॥ १८४ ॥

۱۶۹۔ کلیں ساوہو اپنے خاندانی عاید دہ چار کر خوالا دھرم چاہینے والا دسج بولنے والا دست بیٹے پوتے والا دو دستند جو آدمی ہے اوسکے پاس امانت کر رکھنا چاہئے۔

۱۸۰۔ جزادی جس آدی کے ہاتھ میں جس چیز کو سطح دیکو وہ اس آتش چیز کو سطح لیوے  
جیادو یا ویسا لےنا۔

۱۸۱۔ جانی ہوئی چیز کو انٹار کھنے والے نے اپنی حیر کو اس آدمی سے جکے پاس امانت رکھی ہو مانگا اور وہ مہینہ دیتا ہو تب امانت رکھنے والے کی غیر حاضری میں جکے پاس امانت رکھی گئی اس حاکم کو ۱۸۲۔ گواہ کے ہونے میں امانت میں خیانت کرنی والا قصص یا ایلیان نمکد مالیک کو اگر چیز امانت نہ ہو مہینہ دیتا ہے تو اس کے پاس کچھ سونا رکھا کر۔

۱۔ بعدہ امانت رکھنے والا اپنی امانت کو اس لئے امانت دار سے طلب کرے اگر وہ دیکھ  
 تو اسکو سچا جانتا اور اس سے جو شخص اپنی امانت مانگتا ہے وہ جھوٹا ہے۔

۱۸۴- اور جیکہ ابالہیان دربار یادگیل کو جنھوں نے سوتا وغیرہ کوئی چیز امانت رکھی، انکو بھی وہ امانت دار نہ دلوں گے تو اس سے دونوں امانت کو راجہ لیوے یہ بات دھرم من درمل ہے۔

यत्त्वधर्मोराकार्याशिभोहात्कुर्यान्नराधिपः॥ अचिरात्  
 दुरात्मानं वशे कुर्वन्ति शत्रवः॥ १७४॥ कामक्रोधौ तु संयम  
 योऽर्थान्धर्मोरापश्यति॥ प्रजास्तमनुवर्त्तन्ते समुद्रमिव सि  
 न्धवः॥ १७५॥ यः साधयन्तं छन्देन वेदयेद्भनिकं नृपे॥ स राजा  
 तत्र तुर्भा गंदाप्यस्तस्य च तद्भनम्॥ १७६॥ कर्मणापि समं कु  
 र्याद्भनिकाया धर्मशक्तिः॥ समोऽवकृष्टजातिस्तुरद्याच्छे  
 यांस्तु तच्छनैः॥ १७७॥ अनेन विधिना राजा मिथो विवदतां च  
 राम्॥ साक्षिप्रत्ययसिद्धान्तकार्याशिसमतानयेत्॥ १७८॥

۱۶۴- جہاں جہاں سے اور جہاں سے کام کو کرے اس دہہ تہا را جہ کو دشمن لوگ اپنے قابضین کر لیتی ہیں

۱۶۵- جہاں جہاں کام کر دو کہ چھوڑ کر دوسرے مطلب کو دیکھتا ہے اس کے پیچھے سب رعیت رہتی ہے جیسے سب نئی سمد کے پیچھے رہتی ہیں ایسے سمد میں جا کر انھیں سب عیال دہنیں ہوتی ہیں اس طرح را جہ سے رعیت علیحدہ نہیں ہوتی۔

۱۶۶- جو قرض دینے والا قرضدار سے اپنے لئے ہوتے دھن کو اپنے زور سے لیتا ہے اور قرضدار را جہ کے پاس جا کر نالہ کرے تو را جہ اس قرضدار سے قرضہ کا چوتھا حصہ نادان پر لیکوے اور قرضہ دہندہ کو زور قرضہ والا دے۔

۱۶۷- اگر شخص زور قرضہ دہندہ کا مقوم یا زریل قوم ہو اور قرضہ ادا کرنے کی استطاعت نہ رکھتا ہو تو قرضہ دہندہ کا کام کر کے قرضہ ادا کرے اور اگر قرضہ دہندہ کی قوم سے اونچی قوم والا ہے تو وہ قرضہ دہندہ کا کام نہ کرے بلکہ آہستہ آہستہ جب کچھ لے تب دے۔

۱۶۸- اس طریق سے جو سمد بہانہ بحث کر نیوالے آدمیوں کے گواہوں سے ثابت ہو را جہ زمین ملک باتون کو رد کرتے اصل مطلب کو پہچان لے۔

अथः परार्थेक्षिश्यनिसासिराः प्रतिभुक्तलम् ॥ चत्वारस्त-  
पचीयन्नेविप्रश्चाव्योचशिङ्गः नृपः ॥ १६६ ॥ अनादेयं ना-  
दरीतपरिशीराऽपिपार्थिवः ॥ नचादेयं सृष्टोऽपि स-  
ह्यमप्यर्थमुत्तजैव ॥ १७० ॥ अनादेयस्य चादानादादेय-  
स्य च वर्जनात् ॥ सौर्वल्यं व्याप्यते राज्ञः संप्रत्येह च नश्यति ॥  
१७१ ॥ स्वादानादृशं संसर्गात्त्वबलानां चरसरात् ॥ बलं सं-  
जायते राज्ञः संप्रत्येह च वर्जते ॥ १७२ ॥ तस्माद्यमश्च स्वायी-  
स्वयं हित्वा प्रियाप्रिये ॥ वर्त्तेत याम्यया च त्याजितक्रोधो-  
जितेन्द्रियः ॥ १७३ ॥

۱۶۹- گواہ و ضامن دکل تہ تینوں دوستوں کے واسطے تکلیف اٹھاتے ہیں اور برہمن دوتہند  
دیشا راجہ یہ چار دوستوں کے واسطے ترقی پاتے ہیں سلیسے پہلے کہ ہوئے تین آدمی دل ہی  
اپنے کام کو منظور کریں یعنی گواہی و ضامنی دے دو ہار دیکھنا ان کا من کو نہ کریں اور کھیلے گی  
جو چاہیں وہ سلسلہ سے اپنے کام میں قوت سے مشغول ہو رہے ہیں برہمن دوتا کو دوتہند قوت  
کو مینا فرم کر یہ اسے کو راجہ ہو ہار کر نوازے کو زور سے کام میں مشغول کریں۔

۱۶۰- راجہ اگرچہ بے زر ہو لیکن جو چیز لینے کے قابل بنیں گے اسکو ہرگز نہ لیوے اور اگرچہ بڑا ہند  
ہو لیکن جو چیز چھوٹی بھی لینے کے قابل ہو اسکو لیوے۔

۱۶۱- لینے کے لائق چیز کو ترک کرنے سے اور نہ لینے کے لائق چیز کو لینے سے راجہ کی کم قوتی ظاہر  
ہوتی ہے اور وہ راجہ جس کو کم میں اور پر لوک میں نامش کو پاتا ہے۔

۱۶۲- لینے کے لائق چیز کو لینے سے اور ہجوم کا ہجوم کے ساتھ شاستر کے موافق شادی وغیرہ  
نسبت کرانے سے کم قوت و عیال کی حفاظت کرنے سے راجہ کو قوت ہوتی ہے اور وہ راجہ جس کو  
اور پر لوک میں بڑھتا ہے۔

۱۶۳- سلیسے راجہ راج کے مانند زخوب و نام زخوب کو ترک کر کے کر دھو اندر لے کر جویت کر دے۔

آधिष्ठापनिधिश्चोभौनकालات्ययमہت: ॥ अवहार्योभवे  
 तानीदीर्घकालमवस्थितौ ॥ १४५ ॥ संप्रीत्याभुज्यमानानिन  
 नश्यन्तिकराचन ॥ धेनुशुद्धोबहन्श्वोयश्चदम्यः प्रयुज्यते ॥  
 १४६ ॥ यत्किंचिदशवर्षाणिसन्निधौ प्रसूतेधनी ॥ भुज्यमा-  
 नंपरेस्त्यागानसतल्लभ्यमहति ॥ १४७ ॥ अजडश्चेदपोगण्डो  
 विषयेवास्यभुज्यते ॥ भजनंतद्यचहारेणभोक्तातद्व्यमहति  
 ॥ १४८ ॥ आधिः सीमाचालधनं निक्षेपोपनिधिः स्थियः ॥ रा-  
 जस्वञ्चोतियस्वंचनभोगेनप्रशाशयति ॥ १४९ ॥

۱۴۵۔ شے مرہونہ براہ محبت استعمال کیلئے کسی کو کوئی چیز امانت دینا۔ یہ دونوں قسم کی چیز  
 جو وقت مالک طلب کرے اس وقت دینا چاہئے یہ نہ کہ اس وقت دینے کی اور بہت دن  
 بات رہنے سے یہ دونوں چیز کا لہدم نہیں ہو جاتی ہیں اصل مالک کی ملکیت قائم رہتی ہے جب تک  
 رکھی ہے وہ مالک نہیں ہوتا ہے۔

۱۴۶۔ گتو اور اونٹ اور گھوڑا اور بیل ان سب کو مالک کی محبت سے جو کوئی استعمال کر تو اس کی  
 وہ چیزیں میں اس کی مالکیت زائل نہیں ہوتی ہے۔

۱۴۷۔ مالک دیکھتا ہے اور منع نہیں کرتا ہے اس کی چیز کو دس برس تک دوسرے آدمی نے  
 استعمال کیا پھر مالک اس چیز کو پا نہیں سکتا۔

۱۴۸۔ کیونکہ استعمال کرنے والا کہتا ہے کہ یہ دلو انہ بائع نہیں ہے، اس کے دیکھتے ہوئے سنے  
 استعمال کیا ہے تب وہ کچھ جواب نہیں دیکھتا اس واسطے یہ بارے وہ خارج ہوتا ہے استعمال کرنے والا  
 اس چیز کو پاتا ہے۔

۱۴۹۔ شے مرہونہ و حدود و بائع کی دولت و امانت جو دیکھ کر اور شمار کر کے کیسے پاس رکھی جائے اور  
 دینی جو بدوں دیکھائے اور شمار کرنے کے سر بند چیز کیسے پاس امانت رکھی جائے وہی و ناجی دولت  
 و دیرخوان کی دولت یہ سب استعمال کرنے سے کا لہدم نہیں ہوتی ہیں نیز اصل مالک کی ملکیت قائم رہتی ہے

वसिष्ठविहितां वद्विंशजे द्वित्वविवर्दिनीम् ॥ असीतिभागं  
 शुक्लीयान्मासाद्वाधुविकः शते ॥ १४० ॥ द्विकंशतं वा शुक्ली-  
 यात्सतां धर्ममनुस्मरन् ॥ द्विकंशतं हि शुक्लानोनभवत्यर्थ-  
 किल्विधी ॥ १४१ ॥ द्विकंचिकंचतुष्कंचयंचकंचशतंसम-  
 म् ॥ मासस्य वद्विंशुक्लीयाद्वर्गानामनुपूर्वशः ॥ १४२ ॥ न-  
 त्वेवाधोसोयकारे कौसीरी वद्विमाश्रयात् ॥ नचाधेः का-  
 लसंरोधान्निसर्गोऽस्ति न विक्रयः ॥ १४३ ॥ नभोक्तव्यो  
 बलाराधिर्युज्जानो वद्विमुक्तजेत् ॥ मूल्येन तोषयेद्देनमा-  
 धिस्तनोऽन्यथा भवेत् ॥ १४४ ॥

۱۴۰- لیست جی کا کہا ہوا سود جو روپیہ کا بڑھا ہوا ہے اسکو ترک کرے اور تین سو روپیہ کا  
 دان حصہ لینے فیصدی سو اڑھائی سو روپیہ مقرر کرے۔

۱۴۱- خواہ ۱۰ حصے کو کون کون کریم خیال کر کے فیصدی دو سو روپیہ مقرر کرے اس کے لینے  
 سے درجہ پانچ سو روپیہ۔

۱۴۲- ہر ماہ سے فیصدی دو سو روپیہ شتری سے تین سو روپیہ دیشیہ سے چار سو روپیہ سود  
 پانچ سو روپیہ سود فیصدی باہواری لیتے۔

۱۴۳- اب بن کے قواعد لکھتے ہیں کہ جو فیق دینے والی مثل زمین وغلام و گنہ وغیرہ بن  
 کیجائے اس میں سود نہ لینا چاہیے جب بن کو بہت دن ہو جائے اور بن بھگتیا روپیہ لیا  
 تھا اس سے دو چار روپیہ فیق شری مہو نہ سے مالک نے پایا تب اس شے مہو نہ کو کسی کو دیدیو  
 یا فروخت کر دے ایسا لکھ کے کہ جب تک زر اصل بنیاد سے تب تک اس کی فیق کو حاصل کرنا نہ  
 ۱۴۴- زبردستی سے شے مہو نہ کو لقمہ نہ کرے اگر کرے تو سو چھوڑ دے یا جسکی جبری  
 اسکو قیمت دیکر راضی کرے اگر ایسا کرے تو شے مہو نہ کا چرہ موتا ہے۔

سربھا: यद्यवोमध्यस्त्रियवंत्वेककथालम् ॥ पंचकथाल-  
कोमायस्तेसुवर्गास्तुषोडश ॥ १३४ ॥ पलसुवर्गाश्चत्वारः प-  
लानिधरणां दश ॥ द्वेकथालेसमधृते विज्ञयोगैष्यमायकः ॥  
१३५ ॥ तेषोडशस्याङ्गमां पुराणाश्चैव राजतः ॥ कार्षापरांतु-  
विज्ञेयस्तान्त्रिकः कार्षिकः पराः ॥ १३६ ॥ धरणा निरशज्ञेयः  
शतमानस्तुराजतः ॥ चतुःशोचर्गाको निष्को विज्ञेयस्तु प्रमा-  
णातः ॥ १३७ ॥ पराणां देशते सार्द्धे प्रथमः साहसः स्मृतः ॥ म-  
ध्यमः पंच विज्ञेयः सन्नखंत्वेव चोत्तमः ॥ १३८ ॥ ऋगोदेये प्रति-  
ज्ञाने पंचकं शतमर्हति ॥ अथ नृवेत द्विपुरांत न्यनोरनुशास-  
नम् ॥ १३९ ॥

۱۳۴- چوتیسوں کا ایک مدھیم چوتین جو کی ایک تی پانچ رتی کا ایک یا شہ سورا شہ کا ایک  
سبرن ہوتا ہے۔

۱۳۵- چار سبرن کا ایک پل ویش پل کا ایک دھرن ہوتا ہے اپ روپیہ کی وزن کی مقدار  
کو کہتے ہیں۔ کہ دو رتی کا ایک یا شہ۔

۱۳۶- اس اور سورا شہ کا ایک دھرن ہوتا ہے اور اسکو پران بھی کہتے ہیں سورا شہ کا ایک  
مرک اور کارشک پن کہتے ہیں۔

۱۳۷- ویش دھرن کا ایک ست مان چار سبرن کا ایک تشک ہوتا ہے۔  
۱۳۸- رٹھائی نٹوپن کا پورب ساہس اور پانسوپن کا مدھیم ساہس اور سبرلین کا اتم ساہس  
ہوتا ہے۔

۱۳۹- دربار میں جا کر مروض کئے کہ فارض کا فرضہ ہو کو دنیا ہو تو فیصدی پن پر پانچ پن ٹو  
دیوے اور اگر کئے کہ ہم قرضدار نہیں ہیں اور گواہ تحریر کے ذریعہ سے مدعی کا دعویٰ ثابت ہو  
تو فیصدی پن پر ویش پن ویش مدعا علیہ دیوے پن جی کا حکم ہے۔

अदराड्यान्सराडयनराजादराड्यांश्चैवाप्यदराडयन॥ अयशो  
महाराप्नोतिनरकंचैवगच्छति॥ १२८॥ बागदराडमप्रथमंकुर्या  
प्रिदराडंतदनन्तरम्॥ तृतीयंधनदराडन्नुवधदराडमतः परम्  
॥ १२९॥ वधेनापियरात्वेतानिग्रहीतुंनराक्रुयात्॥ तदैवुस-  
र्वमप्येतत्प्रयुज्जीतचतुष्टयम्॥ १३०॥ लोकसंव्यवहारार्थयाः  
संज्ञाः प्रथिताभुवि॥ ताश्चरूपसुवर्णानांताः प्रवक्ष्याम्यशेष-  
तः॥ १३१॥ जालान्तरगतेभानौयत्तद्वह्मं दृश्यतेरजः॥ प्रथमं  
तत्प्रसारानां त्रसरेणुं प्रचसते॥ १३२॥ त्रसरेणावोऽष्टौ विज्ञे-  
या लिख्येकापरिमारातः॥ ताराजसर्वयस्तिस्वस्तेत्रयो गौर-  
सर्वयः॥ १३३॥

۱۲۸۔ جو سزا کے لائق نہیں ہے، اسکو سزا دینے سے جو سزا کے لائق ہے اسکو سزا نہ دینے سے راجہ بدنام ہوتا ہے۔ اور ترک میں جاتا ہے۔

۱۲۹۔ اول تو مجھے اچھا نہیں کیا پھر کیا نہ کرنا ایسی باتوں سے خون دینا یہ پہلا ڈنڈ ہے اس کے بعد یہ کہنا کہ جھکو گننت ہے بڑا پاپی و نور کھڑی تیری زندگی نہویہ و سزا دینا ہے دھن ڈنڈ تیسرا ڈنڈ ہے اعضا کاٹ ڈالنا چوتھا ڈنڈ ہے۔

۱۳۰۔ من کسی عضو کے کاٹ ڈالنے سے بھی مجرم کو قابو میں نہ کر سکے تو چاروا و ڈنڈ دیوے اس۔ جلوت کے اچھے بیو بار کے دسٹے تانیا دروپا و سونا ان کے وزن کی مقدار رکھی ہو اس سب کو میں کہتا ہوں۔

۱۳۱۔ چھ ڈنڈے من سوچ کی کرن آنے سے جو ذرہ دیکھ پڑتا ہے وہ مقدار میں اول کہلاتا ہے اسکو ترمین کہتے ہیں۔

۱۳۲۔ آٹھ ترمین کا ایک لکشا تین لکشا کی ایک رائی اور تین رائی کی ایک پیل ستر کہتے ہیں۔

کৌٹما سٹھ کورواں سٹھیاں ویاں مہا مہا کوٹھ : ॥ پواسے ہڈ  
 یاتنا براہما گاتھ ویاں مہا : ॥ ۱۲۳ ॥ دشا سٹھیاں نیراڈ سٹھ  
 تھ : سٹھیاں مہا : ۵ بڑی تھ ॥ سٹھیاں ویاں نیراڈ سٹھ  
 بڑی تھ ॥ ۱۲۴ ॥ ۵ پٹھیاں سٹھیاں نیراڈ سٹھیاں  
 نیراڈ سٹھیاں ویاں نیراڈ سٹھیاں : ۱۲۵ ॥ سٹھیاں  
 دشا کا لہو تھ : ॥ سٹھیاں دشا کا لہو تھ : ۵ پٹھیاں  
 تھ : ۱۲۶ ॥ سٹھیاں دشا کا لہو تھ : ۵ پٹھیاں  
 تھ : ۱۲۷ ॥

۱۲۳۔ کشتری ویشیہ شورہ تینوں درن گواہ ہو کر چھوٹھ بولیں تو وہ سٹھیاں  
 دیکر اپنے راج سٹھیاں سے باہر نکال دے مگر بھین کو جرم مقررہ بالا میں صرف اپنے راج سٹھیاں  
 سے باہر نکال دے کسی جائیداد کو ضبط نہ کرے۔

۱۲۴۔ کشتری ویشیہ شورہ ان تینوں درنوں کے ڈھکے مقامات سے سٹھیاں کے بیٹے میں جی  
 کہے براہمن تو مردن پائے سٹھیاں کے چلا جائے۔

۱۲۵۔ سٹھیاں سٹھیاں سٹھیاں سٹھیاں سٹھیاں سٹھیاں سٹھیاں سٹھیاں سٹھیاں  
 جائیداد جہتیم یہ دن و نر دینے منرا کے مقام ہیں۔

۱۲۶۔ خواہش سے متواتر جرم کرنا مقامات جرم وقت جرم جرم کا جرم و جائیداد وغیرہ سٹھیاں  
 بڑا چھوٹا جرم ان سب کو دیکھ کر منرا کے لائق آدمیوں کو منرا دینا چاہیے۔

۱۲۷۔ دھرم کے خلاف جو منرا ہے وہ لیش اور کیرت کو نابود کرتی ہے اور پھر لوگ میں ہو کر  
 کو بھی چھوڑتی ہے اس لیے دھرم کے خلاف منرا نہ دینا چاہیے۔

”جو نیکنای بجات زندگی ہو ہو کوشش کرتے ہیں اور جو نیکنای بد رفتا ہو ہو کوشش کرتے ہیں“



लोभान्मोहाद्भयान्मैत्रात्कामात्क्रोधात्तथैव च ॥ अज्ञानाद्वा  
 लभावाच्च साध्यं वितथमुच्यते ॥ ११८ ॥ यथा मन्यतमे स्थाने  
 यः साध्यमच तं वरेत् ॥ तस्य दराडविशेषांस्तु प्रवक्ष्याम्यनुपूर्व-  
 शः ॥ ११९ ॥ लोभात्सहस्रं दराड्यस्तु मोहात्पूर्वं तु साहसम् ॥  
 भयाद्द्वौ मध्यमौ दराडौ मैत्रात्पूर्वं चतुर्गुराम् ॥ १२० ॥ कामाद्दश  
 गुरां पूर्वक्रोधात्तु त्रिगुरां परम् ॥ अज्ञानाद्देशतेश्चोर्वालिश्या  
 च्छतमे चतु ॥ १२१ ॥ यतानाहः कीदृसास्ये प्रोक्तान् दराडान् नीधि-  
 मिः ॥ धर्मस्याप्यभिचारार्थमधर्मनियमाश्च ॥ १२२ ॥

۱۱۸۔ ٹوٹھ۔ مودہ ڈر تتر تا کام کر دھم اگیان لکین ان سبوں میں سے کسی ایک سے کچھ بڑے  
 گواہ لوگ جھوٹھ بولتے ہیں۔

۱۱۹۔ انکے سوا اور تعامات میں جھوٹھی گواہی دے تو اسکے واسطے خاص سزا مسلہ اور  
 کہیں گے۔

۱۲۰۔ اگر گواہ ٹوٹھ سے جھوٹھ بولے تو ہزار میں جرمانہ دیوے اور اگر مودہ سے جھوٹھ بولے تو  
 بمقدار پورب ساہس جرمانہ دیوے اور اگر خوف سے جھوٹھ بولے تو بمقدار دو دھم ساہس  
 جرمانہ دیوے اور اگر عجاظ دوستی جھوٹھ بولے تو بمقدار چار پورب ساہس جرمانہ دیوے۔

۱۲۱۔ اگر گواہ کام کے غلبہ سے جھوٹھ بولے تو دوش اورب ساہس جرمانہ دیوے اور اگر گروہ  
 سے جھوٹھ بولے تو بمقدار تین اتم ساہس جرمانہ دیوے اگر انبیتا سے جھوٹھ بولے تو بمقدار دو  
 پن جرمانہ دیوے اور اگر لکین سے جھوٹھ بولے تو بمقدار ایک سو پن جرمانہ دیوے۔

۱۲۲۔ ادموم کے بندھونے اور دھرم کے جاری ہونے کے واسطے پنڈتوں نے یہ دھرم گواہوں  
 کے جھوٹھ بولنے میں کہا ہے۔

काभिनीशुविवाहेषुगवांभक्ष्येतथेन्धने॥ब्राह्मणाभ्युपयत्तौच  
शपथेनास्तिपातकम्॥११२॥सत्येनशापयेद्विप्रंसत्रियंवा  
हनाशुयैः॥गोबीजकांचनेर्वैश्यंशूद्रं सर्वंस्तुपातकैः॥११३॥  
अग्निंवाहारायेतेनमशुचैर्ननिमज्जयेत्॥पुत्रहारास्पृश्यायेन  
शिरांसिस्पर्शयेत्पृथक्॥११४॥यमिच्छेन्नदहत्यग्निरापोनो  
नाजयन्तिच॥नचार्तिमुच्यतिसिप्रंसत्रेयःशपथेशुचिः॥  
११५॥वत्सस्यह्यभि शतस्यपुरात्रात्रायवीयसा॥नाग्निर्द-  
राहरोमापिसत्येनजगतःस्पृशः॥११६॥यस्मिन्यस्मिन्विना  
रेवकौत्सास्यंकातंभवेत्॥तत्तत्कार्यंनिवर्ततदृतंचाप्य-  
कातंभवेत्॥११७

۱۱۳۔ عورت و دواہ و گلو کے کھانے کی چیز و ایندھن و برہن کی حفاظت میں جو مضمحل قسم

کھا نیسے آپ نہیں موتا

۱۱۔ برہنہ کوچ کی قسم اور شتری کو سواری اور ہتھیاروں کی اور ویشیہ کو گھوڑے اور بچہ اور سونا کی اور شودر کو تمام یا لون کی قسم دلاوے۔

۱۴- آگ کو اٹھوا دے اور پانی میں ڈبا دے اور عورت کے پیشانی کے شمر کو چھوا دے۔

۱۱۔ جگر اگٹ جلاوے یا پانی نہ ڈباوے یا جو جلدی ہو کہ نہ پاوے اسکو قسم میں پاک جانتا چاہئے۔

۱۱۶۔ اگلے زمانہ میں تنہا نش کے چھوٹے بھائی نے انکو عیب لگایا اور تنہا نش نے اپنی صفائی کے واسطے آگ کو اٹھایا لیکن تمام دنیا کے عمل نیکی پر جاننے والی گن گن نش کا

۱۱۶۔ جو جو کام گواہوں کے سج بولنے سے صحیح ہو گئے ہیں اور پھر پیچھے سے گواہوں کا جھوٹا بیان بالکل نہیں بنایا۔

कुम्भाराडेर्वापिनुहयाद्घृतमनौयथाविधि॥उदित्वावा  
वारुणायाम्रुचेनाद्यैवतेनवा॥१०६॥त्रिपक्षाद्ब्रुवन्सास्य-  
मृणादिबुनरोऽगदः॥तद्वरांप्राप्नुयात्सर्वदशबन्धंचसर्वतः॥  
१०७॥यस्यदृश्येतसप्राहादुक्तवाक्यस्यसाक्षिणाः॥रोगोऽभि-  
र्जातिमरणाद्वरांदाप्योदमंचसः॥१०८॥असाक्षिकेषुत्वर्थे-  
बुमिथोविचरमानयोः॥अविन्दंस्तत्त्वतःसत्यंशपथंनपि  
लभयेत्॥१०९॥महर्षिभिश्चरेवैश्वकार्यार्थशपथाःक-  
ताः॥वशिष्टस्यापिशपथंशपेवैयवनेन्ये॥११०॥नवद्याश-  
पथंकुर्यात्त्वल्येऽप्यर्थेनरोबुधः॥द्वयाहिशपथंकुर्वन्त्येवहच  
नश्यति॥१११॥

۱۰۶- خواہ کو شمانڈنتر جو پیر دیدین ہے اسکو پڑھکریا اہ تم اپوسٹھان دوزن منتر پڑھیں  
کسی ایک منتر کو پڑھ کر پھر پھر لکھی سے ہوں کہ سے شاستری بدم کے سوانت۔  
۱۰۷- قرین غیرہ کے مقدمات میں تندرست گواہ ڈیر مہینہ کے اندر کچھ نہ کہے تو جس مقدمہ  
میں گواہ ہوا اس مقدمہ کے قرضہ کو دسویں حصہ دینا کو دیوے۔  
۱۰۸- عدالت سے گواہ گواہی دیکر آئے اور سات دن کے اندر بیماری داگ کا لگنا تو سزا  
موت نہیں سے کوئی ایک سچ گواہ کو ہو تو وہ گواہ اس قرضہ کو اور اس قرضہ میں دسویں حصہ دینا کو دیوے۔  
۱۰۹- جس مقدمہ میں گواہ نہیں ہے، اور غور کرنے سے حاکم اصلی بات کو نہیں پاسکتا تب  
آگے لکھی ہوئی سوگند کے وسیلے سے اصلی بات کو دریافت کرے۔  
۱۱۰- دلوٹا اور بڑے بڑے رش لوگوں نے کام کیو اسطے سوگند کھائی ہے اور بواستر کے  
جھگڑے میں بیشش رش نے پیوں کے بیٹھے سیدمان نام راجہ کے روبر و قسم کھائی تھی  
۱۱۱- تھوڑے مطلب میں بھی نادان آدمی جھوٹی سوگند نہ کھاوین کیونکہ جھوٹی قسم کھا  
سے اس لوگ میں اور پر لوک میں فشت ہوتا ہے۔

افسوسمیدیتیاہ: ستریاں اہو گے چمے شونہ ॥ افسوس چوہر لے  
 سوسرے شرم مہے شونہ ॥ ۱۰۰ ॥ راتانہو بانوہے سہل سوانہ  
 تہا مہو ॥ افسوس تہا ہر سہل سوانہ ॥ ۱۰۱ ॥  
 مہو سکاں وارہا جیکاں ستا کارو کوشی لوانہ ॥ پھیاں  
 وارہا جیکاں سہل سوانہ ۱۰۲ ॥ تہا ہر سہل سوانہ  
 ۱۰۳ ۥ شونہ جاناں نہاں نہاں ۥ نہاں سوانہ لوانہ ۥ نہاں  
 ۱۰۴ ۥ نہاں سوانہ لوانہ ۥ نہاں سوانہ لوانہ ۥ نہاں  
 ۱۰۵ ۥ نہاں سوانہ لوانہ ۥ نہاں سوانہ لوانہ ۥ نہاں

- ۱۰۰۔ پانی، عورت، جملہ، موتی، جواہرات وغیرہ کے مقدمات میں بھی مثل زمین کے جاننا۔
- ۱۰۱۔ جھوٹے بولنے میں افسوس و دشمن کو دیکھ کر جیسا دیکھا اور سہل سوانہ، دیکھا سہل سوانہ بولو۔
- ۱۰۲۔ گیتوں کی حفاظت سے اوقات بسر کرنا والا دیکھ کر کام کرنا والا دیکھ کر کیسے میں بنانا والا
- گانے والا غلامی کرنا والا بیان لینے والا جو کہ میں ہے اسکو ستور کی طرح ماننا چاہئے۔
- ۱۰۳۔ دیکھ دو اور سہل سوانہ کی نظر سے جھوٹے بولنے میں سہل سوانہ سے نہیں کرتا اور اسکی
- بانی میں وغیرہ دیوتا کی بانی کے برابر سمجھتے ہیں۔
- ۱۰۴۔ جہاں سہل سوانہ سے براہین کثرتی دیکھ کر شوق قتل مہو ہوا بان جھوٹے بولنا
- سہل سوانہ سے بھی زیادہ چھوٹا ہے۔
- ۱۰۵۔ جھوٹے بولکر کثرت میں اگر سہل سوانہ کی جگہ پر تب جھوٹے بولنے کے پاپ چھوڑ

अन्धोमत्स्यानिवाशनातिसनरः कशटकैः सह ॥ योभायतेऽर्थ  
 वैकल्यमप्रत्यक्षं सभागतः ॥ ६५ ॥ यस्यचिद्वाहिवदतः सोऽत्रतो  
 नाभिशंकते ॥ तस्मान्देवाः श्रेयांसं लोकेऽन्यं पुरुषं विदुः ॥ ६६  
 ॥ यावतोवाचवाचस्मिन्हन्ति साक्ष्येऽनृतम्बदन् ॥ तावतः  
 संव्ययातस्मिन् ह्यशुभं स्यान्नुपूर्वशः ॥ ६७ ॥ पंचयच्च नृते-  
 हन्ति दशहन्ति गवानृते ॥ रातमश्वा नृते हन्ति सहस्रं पुतथा-  
 नृते ॥ ६८ ॥ हन्ति जातान्जातांश्च हिररायार्थे नृतं वदन् ॥ सर्व-  
 भूम्यनृते हन्ति मास्मभूम्यनृतं वदीः ॥ ६९ ॥

۹۵۔ جو آدمی دربار میں جا کر رشوت لیکر جھوٹا بولتا ہے وہ اندھے کی طرح پچھلی کوچ کا ٹولہ  
 کے کھانا ہے۔

۹۶۔ جس آدمی کے بولتے ہوئے انتہا تماشا کہ نہیں کرتی ہے اس سے اچھا دوست آدمی  
 کو اس لوگ میں دیوتا لوگ نہیں جانتے۔

۹۷۔ جس کام میں جھوٹ بولنے سے جتنے رشتہ داروں کو مارتا ہے وہ سب اس  
 لوگوں سے سنئے۔

۹۸۔ پیش یعنی چار بابہ کے مقدمہ میں جھوٹی گواہی دینے سے پانچ اہت کی فدا کرتا ہے اور  
 گنو کے مقدمہ میں ستر اہت کی اور گھوڑے کے مقدمہ میں ستواہت کی اور آدمی کے  
 مقدمہ میں ہزار اہت کی فدا کرتا ہے۔

۹۹۔ سونے کے مقدمہ میں جھوٹی گواہی دینے سے بولے اور ہونیوالے رشتہ داروں کے  
 فدا کرتا ہے اور زمین کے مقدمہ میں جھوٹی گواہی دینے سے سب کو نابود کرتا ہے اور  
 زمین کی بابت گواہی دینے میں کبھی جھوٹ بولے۔

ब्रह्मघोषेऽस्मत्तालोकायेचस्त्रीबालधातिनाम्॥ मित्रद्रुहः  
 कृतमस्यतेतेस्युर्बुधतोसुधा॥ ८६॥ जन्मप्रभृतियत्किंचित्यु-  
 रायंभद्रत्वयाकृतम्॥ तत्तेसर्वशुनोगच्छेद्यद्विब्रूयास्त्वमन्य-  
 था॥ ८७॥ सकोहमस्मीत्यात्मानंयत्त्वंकल्याणामन्यसे॥ नि-  
 त्यंस्थितस्तेहद्येषपुरायपापेक्षितामुनिः॥ ८८॥ यमोवैवस्व-  
 तोदेवोयस्तवैवहृदिस्थितः॥ तेनचेदविवाहस्तेमागंगांमाकु-  
 रूवामः॥ ८९॥ नग्नोसुराडःकयालेनभिसार्थीमुत्पियामितः  
 ॥ अन्यःशत्रुकुलंगच्छेद्यःसाक्ष्यमन्दतंवहेत्॥ ९०॥ अवाक्  
 शिरास्तमस्यन्येकित्विषीनरकं व्रजेत्॥ यःप्रश्नं वितथंब्रूया-  
 त्सहःसन्धर्मनिश्चये॥ ९१॥

۸۹- ہماجن اور ہستری اور بالک ان تینوں کا مارینو والا اور دوستی و شہنی کرنے والا اور ابلکا کو نمائے والا ان سب کو بولک ملتا ہے وہی کوک جھوٹھ بولنے سے نکلوئے۔

۹۰- جو مہینہ تمام جہیم میں تھنے کیا ہو وہ سب جھوٹھ بولنے سے کٹھ کو لے۔

۹۱- اپنے کو تم ایسا مانتے ہو کہ میں اکیلا ہوں سو نہ مانو کیونکہ ہمیشہ سے تمہارا حسنین میں پاپ اور غیبت کا دیکھنے والا منیشور قائم ہے

۹۲- یم راج و دیو سوت دیوتا تمہارے دل میں قائم ہے اسکے ساتھ اگر تمہاری بحث ہو تو گنگا اور کرشنتر میں بن جائے جھوٹھ بولنے سے یم راج کے ساتھ بحث ہوگی تو اس پاپ کے دور ہونے کے واسطے گنگا جی اور کرشنتر میں جانا پڑیگا۔

۹۳- گوگاہ جھوٹھ بولے وہ برہمنہ مونڈ مونڈ ائے ہوئے جھوٹھ بیاس سے دکھی اندھا ہوگی جیسکھ مانگئے کیوں اسے کیاں کیکر دہن کے خاندان میں جاوے۔

۹۴- جو شخص دھرم کے پتے کر نہیں پوچھا گیا اور جھوٹھ بولا وہ پانی نیچے شر کے ہوئے بنت اندھیا لے رک میں جاتا ہے

आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी गतिरात्मा तथात्मनः ॥ मावमांस्थाः  
 स्वमात्मानं नृणां साक्षिरासुत्तमम् ॥ ८४ ॥ मन्यन्ते वै पापक-  
 तो न कश्चित्पश्यतीति नः ॥ तांस्तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्यैवा-  
 न्नरपुरुषः ॥ ८५ ॥ द्यौर्भूमिरायो हृदयं च चार्काग्नि यमानि-  
 लाः ॥ रात्रिः सन्ध्ये च धर्मश्च वृत्तज्ञाः सर्वदेहिनाम् ॥ ८६ ॥ रे-  
 वब्राह्मणानि ध्ये सास्यं प्रच्छेदतं हि जाना ॥ उरुः सुखान्  
 प्राङ् सुखान्वा पूर्वाह्ने वै शुचिः शुचीन् ॥ ८७ ॥ ब्रूहीति ब्राह्म-  
 णां प्रच्छेत्सत्यं ब्रूहीति पार्थिवम् ॥ गौबीजकां च नैर्वैश्यं शूद्रं  
 सर्वैस्तु पातकैः ॥ ८८ ॥

۸۴۔ آتمائی گت اور گواہ آتما ہی ہے اسلئے سب آدمیوں میں اتم اپنی آتما ہی اُسکا پکا  
 نکرنا چاہئے۔

۸۵۔ باب کرنیوالے یہ جانتے ہیں کہ بھوکوئی زمین دیکھتا ہو اور اُس پاپ کو دیکھتا ہو  
 اور اپنے جسم کے اندر رہنے والا پریش دیکھتا ہے۔

۸۶۔ سورگ بخوم۔ جل ہر دے میں رہنے والا جو آتما سوچ چند سان اگن ہم کراچ ہو آتما  
 یہ دونوں سزا دیا یہ سب آدمیوں کے کرم کو دیکھتے د جانتے ہیں۔

۸۷۔ وقتا اور براہمن کے سامنے گواہان قوم براہمن ویشیہ پاک ہو کر پو پ مہ  
 یا انز مہ کھڑے ہو دیں اوسنے حاکم پاک ہو کر دن کے حصہ اول میں سوال کرے۔

۸۸۔ کو۔ اس طرح براہمن سے پوچھے سوچ کو اس طرح کشتی سے پوچھے کیو اور بیج اور سونا  
 کی قسم دے کر ویشیہ سے پوچھے اور جھوٹے بولنے سے سب پاپوں کے بھوک کرنیوالے  
 ہو گے ایسا کھر شور سے پوچھے۔

स्वभावेनैव यद् व्युत्पद्यते व्यावहारिकम् ॥ अतो यदन्यद् द्वि-  
 बुधर्मार्थतदर्थकम् ॥ ۵۵ ॥ समान्नः साक्षिराः प्राप्ता नर्थ-  
 प्रत्यर्थि सन्निधौ ॥ प्राड्विवाकोऽनुयुक्ती त विधिनानेन साह-  
 चन ॥ ۵۶ ॥ यद्दयोरनयोर्वैत्य कार्येऽस्मिन्चेष्टितं मिथः ॥ तद्-  
 त सर्वसत्येन युक्ता कं हात्र साक्षिता ॥ ۵۷ ॥ सत्यं साक्ष्यं ब्रुवन्सा-  
 क्षी लोकानामोति युक्कलान् ॥ इह चानुत्तमां कीर्तिं वागैषा-  
 ब्रह्मा पूजिता ॥ ۵۸ ॥ साक्ष्येऽनृतं वरेन्याशौर्वज्यते वारुणो भूष-  
 म् ॥ चित्रशः शतमाजातीस्तस्मात्साक्ष्यं वरेहतम् ॥ ۵۹ ॥ सत्ये-  
 न पूयते साक्षी धर्मः सत्येन वर्ज्यते ॥ तस्मात्सत्यं हि वक्तव्यं स-  
 र्ववर्तो बुसाक्षिभिः ॥ ۶० ॥

۵۸۔ اپنی طبیعت سے قویات کے اسکو قبول کرنا چاہئے (یعنی سچ اظہار کرنا چاہئے)  
 اور جو بات سکھانے سے کہے وہ بے فائدہ ہے اسکو قبول نہ کرنا چاہئے۔

۵۹۔ راجہ کے حکم سے مقدمہ فیصل کرنا والا بیراجن دربار میں مدعی و مدعا علیہ کے رویہ و مطالبات  
 طریقہ مندرجہ آئینہ بوسیدہ سام نام تدریک کے گواہوں کو حکم دے۔

۶۰۔ کہ مدعی و مدعا علیہ کے مقدمہ تدریس باہم ٹھہر میں آگے ہولے حال کو جو کچھ تم جانتے ہو  
 برستی تمام کہو اس مقدمہ میں تمہاری گواہی ہے۔

۶۱۔ گواہی میں سچ بولنے سے اونچا لوک (یعنی برہم لوک وغیرہ) کو پاتا ہے اور اس لوک میں  
 بڑی نیکیاں کو پاتا ہے اور بائی اسکی شہری برہما جی کو پتہ ہوتی ہے یعنی برہما جی اسکی تعریف کرتے ہیں

۶۲۔ گواہی میں جھوٹ بولنے سے دوسرے قابو میں پڑ کر تو ختم تک برن دیوتا کے پاس منت  
 باندھا جاتا ہے اس سے بچی گواہی دینا چاہئے۔

۶۳۔ سچ بولنے سے گواہ پاک ہوتا ہے اور اسکا وہم ترقی پاتا ہے اسواسطے سب لوگ  
 میں گواہ سچ بولنا چاہئے۔



بھلن پری شکتی یا تاسا سیدھین را دھپ: ॥ سمبھو تھو گو تھ  
 دھان گو رادھیدھ جوتھ مان ॥ ۵۳ ॥ سمبھو دھنا تاسا سھن  
 رادھیدھ سیدھ جوتھ مان ॥ ۵۴ ॥ سا سیدھ دھن تھو تھو  
 دھن تھو تھو تھو تھو تھو تھو تھو تھو تھو تھو تھو تھو  
 ۵۵ ॥ یوا نین بھو ۵ پی سھت شھو  
 ۵۶ ॥ یوا نین بھو ۵ پی سھت شھو  
 ۵۷ ॥ یوا نین بھو ۵ پی سھت شھو  
 ۵۸ ॥ یوا نین بھو ۵ پی سھت شھو  
 ۵۹ ॥ یوا نین بھو ۵ پی سھت شھو  
 ۶۰ ॥ یوا نین بھو ۵ پی سھت شھو

۳۶۔ جان گواہوں کے دو قسم کے بیان ہوں وہاں زیادہ تھو دو گواہوں کا بیان  
 ماننا چاہیے اگر تھو دھین برابر میں اور دو قسم کے بیان ہیں تو گواہان ملحق و حسب صفت کہ  
 بیان کو ماننا چاہیے اور صاحب صفت کے دو قسم کے بیانوں میں برابر میں کے بیان کو ماننا  
 چاہیے۔

۳۷۔ حالات پچھم دیدہ و بگوش خود شنیدہ میں گواہی دینا ٹھیک ہے اور اس میں سچ بولنے  
 سے دیہم دار نفہ کا نقصان نہیں ہوتا۔

۳۸۔ جو شخص اہم ذاتی پچھم دیدہ و بگوش شنیدہ کے برخلاف اچھے لوگوں کی سمجھ میں گواہی  
 دیتا ہے وہ بچے شہر کے ہونے تک میں جانتا ہے سو رکھ کو نہیں ملتا۔

۳۹۔ تم اس میں گواہ ہو طرح نہیں کہ اس کی کیفیت مقدمہ کو دیکھا ہے اس کو طلب کر کے  
 مقدمہ حال پوچھا جاوے تو حسب طرح دیکھا اور سنا ہے اسی طرح سے بیان کرے۔

۴۰۔ طبع رکھنے والا ایک آدمی بھی گواہ ہو سکتا ہے اور طہارت رکھنے والی بہن بھی  
 گواہ نہیں ہو سکتی کیونکہ عورتوں کی عقل ایک حالت پر قائم نہیں رہتی اور آدمی عیب  
 ہیں وہ بھی گواہ نہیں ہو سکتے۔

स्त्रीणां सास्यं स्त्रियः कुर्युर्द्विजानां सदृशा द्विजाः ॥ शूद्राश्च स-  
न्नः शूद्राणां संत्यानामंत्ययोनयः ॥ ६८ ॥ अनुभावी तु यः कश्चि-  
त्कुर्यात्सास्यं विवादिनाम् ॥ अन्नर्वैश्मन्यरायेवाशरीरस्यापि  
चात्यये ॥ ६९ ॥ स्त्रियाथ्यसंभवे कार्यं बालेन स्थविरेणावा ॥ शि-  
ष्येणावन्धुना वा पिदासेन मृतकेन वा ॥ ७० ॥ बालवृद्धा तु गरा-  
चसास्येषु च दत्तां मृदा ॥ जानीयादस्थिरां वा च सुस्तिक्तमन-  
सांतया ॥ ७१ ॥ साहसेषु च सर्वेषु स्तेयसंग्रहणेषु च ॥ वाग्वद-  
योऽप्यारुध्येन परीक्षेत साक्षिणाः ॥ ७२ ॥

۶۸- جو رتوں کی گواہ عورتیں ہودین و چون گواہ منج ہودین شور و دنگ گواہ شور ہودین  
چاڈاڑال کے گواہ چاڈاڑال ہودین -  
۶۹- مدعی اور مدعا علیہ کے مطالب کو جو جانتا ہو وہ گواہ ہو و جھگڑا گھران و دونوں کے اندر  
و جانکشی ان تینوں طرح کے مقدموں میں قرض لینے میں جو لکشن گواہوں کے لئے گئے ہیں  
انکا اور نہ کرنا لینے اس مقام پر کسی نہیں کرنا -  
۷۰- ان تینوں مقدموں میں اگر گواہ مرد تو مرد بالا کے نمونے پر عورت و لڑکے و بڑھے و شہداء  
و شکر و غلام و مرد و عورت سب بھی گواہ ہودین -  
۷۱- گواہی میں بالکے بڑھے و دکھی و اذیت و غیرہ کی بات متہر جانتا -  
۷۲- زور سے کام کرنا (شکست زنی وغیرہ) اور چوری اور عورت کو زبردستی بیجانا  
اور سخت زبانی کرنا اور لاشی و غیرہ سے مارنا ان مقدموں میں گواہوں کی گواہی  
متہر ہونا چاہئے -

एहि राः पुत्रि रा मोलाः सत्र विदुः श्रुयोनयः ॥ अथ्युक्ताः सा  
 स्यमर्हन्ति नये कोचिदनापदि ॥ ६२ ॥ आमाः सर्वेषु वरौषु का-  
 र्याः कार्येषु साक्षि राः ॥ सर्वधर्मविरोधु व्याविपरीतांस्तु वर्ज-  
 येत ॥ ६३ ॥ नार्थसम्बन्धिनो नामानसहायानवैरि राः ॥ न ह-  
 सरोषाः कर्तव्याः न व्याध्यात्तानवृषिताः ॥ ६४ ॥ न साक्षी न्य-  
 तिः कार्यो न कारककुशीलयो ॥ न श्रोत्रियो न लिंगस्थो न-  
 संगे र्यो विनिर्गतः ॥ ६५ ॥ नाध्यधीनो न वक्तव्यो न स्सुर्न विक-  
 र्मकृत् ॥ न वज्रो न शिशुर्न को नान्यो न विकलेन्द्रियः ॥ ६६ ॥ ना-  
 र्त्तो न मत्तो नोक्तो न सुहृत्पापी यपीडितः ॥ न अमा र्त्तो न कामा-  
 र्त्तो न कुज्जो नापितस्करः ॥ ६७ ॥

۶۲۔ وقت مصیبت ہونے پر جو کوئی ملے دی گواہ تجزیہ کر لیا نہ پتا ہے بلکہ عیالدار صاحب اولاد  
 و خاندانی شترمی و دیشیہ ستودرات بدعی کی گواہی دینے کے لائق ہوتے ہیں۔

۶۳۔ سب درونوں کے کام میں سچ بولنے والے تمام دھرموں کو جاننے والے حص  
 نہ رکھنے والے جو آدمی ہیں وہی گواہی دینے کے لائق ہوتے ہیں اور جو صفات مذکورہ بالا  
 نہ رکھتے ہوں انکو گواہ نہ کرنا چاہئے۔

۶۴۔ جس طلب کی بحث ہے اسے نسبت رکھنے والا و دوست و سردار نہی والا دشمن اور جکا  
 عیب جگہ دیکھتے ہیں آیا ہوا اور بیا دھوسے و کچی اور دوش والا۔

۶۵۔ اور راج اور سونین بنایو والا اورٹ وغیرہ و بیپرہنے والا اور ہم چاری غیر مذہب سے جو لگا لگیا

۶۶۔ و غلام بیچ کر کم نہی والا و چورہ برخلاف کرم نہی والا اسی برتس سے زیادہ عمر والا و سولہ برس  
 کم عمر والا و کیلا و چاندل وغیرہ و کوئی ایک عضو نہ رکھنے والا۔

۶۷۔ اور دکھی اور بھگتے کا بچہ وغیرہ کے نشہ میں مست و مجبور و بھوت وغیرہ کا خلل کھو والا  
 بھوکھ پیاس کی تکلیف رکھنے والا و معنی دکھاریو سے دکھی و کر و دھو و چوران سیکو گواہ نہ کرنا چاہئے

بھوہی تھوکتھن بھوہی تھوکتھن بھوہی تھوکتھن ॥ نہ چ پوریا پرانہ دھات  
 سما دھاتھوہی تھوکتھن ॥ ۲۴ ॥ ساکھیا: سانی مہوہی تھوکتھن  
 دھوہی تھوکتھن ॥ ۲۵ ॥ دھرم سھ: کارہوہی تھوکتھن ॥ ۲۶ ॥  
 مہوہی تھوکتھن ۲۷ ॥ ۲۸ ॥ مہوہی تھوکتھن ۲۹ ॥  
 مہوہی تھوکتھن ۳۰ ॥ ۳۱ ॥ مہوہی تھوکتھن ۳۲ ॥  
 مہوہی تھوکتھن ۳۳ ॥ ۳۴ ॥ مہوہی تھوکتھن ۳۵ ॥  
 مہوہی تھوکتھن ۳۶ ॥ ۳۷ ॥ مہوہی تھوکتھن ۳۸ ॥  
 مہوہی تھوکتھن ۳۹ ॥ ۴۰ ॥ مہوہی تھوکتھن ۴۱ ॥  
 مہوہی تھوکتھن ۴۲ ॥ ۴۳ ॥ مہوہی تھوکتھن ۴۴ ॥  
 مہوہی تھوکتھن ۴۵ ॥ ۴۶ ॥ مہوہی تھوکتھن ۴۷ ॥  
 مہوہی تھوکتھن ۴۸ ॥ ۴۹ ॥ مہوہی تھوکتھن ۵۰ ॥

۵۶ - اور جب حاکم نے حکم دیا کہ بولو تب بولتا نہیں ہے اور جو بیان کہے ہوئے دعوے  
 گوہی و تجربہ وغیرہ سے ثابت نہیں کرتا اور جو اول و آخر بات کو نہیں جانتا یہ سب اپنے  
 مطلب کا تقاضا کرتے ہیں۔  
 ۵۷ - ہمارے گواہ ہیں ایسا کہ اگر گواہوں کو حاضر نہیں کرتا ان سبوں سے حاکم اس کو  
 پاریو والا جانے۔

۵۸ - جو مدعی حاکم کے روبرو کہتا ہے اور مدعا علیہ کے سامنے کچھ پوچھتا نہیں ہے وہ بیوہ یا  
 کا بڑا جھوٹا مقصد روبرو قتل و جرماتہ کے لائق ہوتا ہے۔

۵۹ - جو مدعی یا مدعا علیہ جتنے دھن کو جھوٹا بیان کرتا ہے اتنے دھن کا وہ چندتاوان  
 دونوں سے راجہ لیوے اور یہ دونوں ادھر م کے جاتے والے ہیں۔

۶۰ - جب مدعا علیہ عدالت میں آکر کہے کہ ہم نے اس کا دھن نہیں لیا ہے تب مدعی حاکم کے  
 روبرو دھن سے زیادہ گواہوں کے وسیلے سے اپنے دے ہوئے دھن کو ثابت کرے۔

۶۱ - جو کو امان دینے وقت مقدمہ میں مقرر ہو کر چاہے جیسا وہ گواہوں کو سچ بولیں یا کہہ دے۔

अर्थऽपव्ययमानहृकरोनविभावितम्॥ हापयेइ निकस्यार्थं दराडे लेशं च शक्तितः॥ ५१॥ अपन्हवेऽधमर्गास्य देहीत्युक्तस्य संसदि॥ अभियोक्तादिशोद्देश्यं कर्मावा न्यदुद्दिशेत्॥ ५२॥ अद्देश्यं यच्च दिशति निर्दिश्या यद्गुते च यः॥ यच्चाधरोत्तरानर्थान्विगीतान्नावबुध्यते॥ ५३॥ अपदिश्या यद्देश्यं च पुनर्यस्त्वयथावति॥ सम्यक्प्रशिहितं चार्थं पृष्टः सन्नाभिनन्दति॥ ५४॥ असंभाष्ये साक्षिभिश्च देशे संभावते सिधः॥ निरुच्यमानं प्रश्नं च नेच्छेद्यच्चापि निश्च्यते त॥ ५५॥

۵۱۔ مدعی کے عرض کئے ہوئے دعوے سے مدعا علیہ نے انکار کیا اور مدعی نے گواہی گواہان پیشی دستاویزات وغیرہ سے اپنے دعوے کو ثابت کیا تو راجہ قمرض دینے والے کے روپیہ کو نقص مفروض سے دلا دے اور بلحاظ حیثیت سزا بھی شخص مفروض کو دیوے۔  
۵۲۔ عدالت میں حاکم نے شخص مفروض سے کہا کہ قمرض دینے والے کا روپیہ دے دو اور قمرض نے جواب دیا کہ اپنے نہیں لیا ہے اسوقت مدعی گواہی و تحریر وغیرہ وجہ ثبوت کو پیش کرے۔

۵۳۔ جس شہر میں مدعا علیہ کا قیام کیس وقت میں بھی ممکن نہیں اور مدعی اس شہر کو کبھی نہیں کہ اس شہر کو جیتے نہیں لیا اور وہ مدعی اول آفر خلافت بولتا ہے۔

۵۴۔ اور جو کہتا ہے کہ اسے میرے ہاتھ سے سہقر سونا لیا ہے ایسا کبھی بھر کے کہ میرے لڑکے کے ہاتھ سے لیا ہے اور جس باٹ کو حاکم پوچھتا ہے اسکو ثابت نہیں کرتا۔

۵۵۔ اور جو خلوت میں گواہوں سے گفتگو کرتا ہے اور سوال کو قائم کرنے کے واسطے حاکم سوال کرتا ہے اسکا جواب نہیں دیتا اور جو ایک مقام میں قائم نہیں رہتا۔



दातव्यं सर्ववर्गोभ्यो राजा चौरैर्हृतं धनम् ॥ राजा तदुपशुंजा  
नचौरस्याप्नोति किल्बिषम् ॥ ४० ॥ जातिजानपदान्धर्मान्  
राधीधर्माश्च धर्मवित् ॥ समीक्ष्य कुलधर्माश्च स्वधर्ममप्रतिपा-  
लयेत् ॥ स्वानिकर्माणि कुर्वाणा दूरे भक्तोऽपि मानवाः ॥ प्रि-  
याभवन्तिलोकस्य सेवे कर्मरायवस्थिताः ॥ ४१ ॥ नोत्साद-  
येत्त्वयं कार्यं राजानां व्यस्य पूतयः ॥ न च प्रापितमन्येन प्रसे-  
दर्थं कथंचन ॥ ४२ ॥ यद्यानयत्यहं कथां तेर्त्तस्य ह्यगयुः पर-  
म् ॥ न येन न्यानुमानेन धर्मस्य ह्यतिः परम् ॥ ४३ ॥ सत्यमर्थ-  
चसम्पश्येत्तत्मानमथ साक्षिणः ॥ देशं रूपं च कालं च व्यव-  
हारविधौ स्थितः ॥ ४४ ॥

۴۰۔ راجہ چور کی چورائی ہوئی چیز کو لیکر سب درون کو دیوے (یعنی جلی چیز ہے سکو دیوی  
اگر اس چیز کو راجہ آپ لے لے تو جو پاپ چور کو ہوتا ہے وہ راجہ کو ہووے  
۴۱۔ جات دھرم و دیش دھرم و سمیر داے وغیرہ دھرم و کل دھرم ان سب دھرموں کو  
دیکھ کر اپنے دھرم کو قائم کرے۔

۴۲۔ اپنے کرم کو کرتے ہوئے دوسری رہنے والے آدمی سنار کو پیار سے ہوتے ہیں  
۴۳۔ راجہ راجہ کے نوکر آپ سے کام کو پیدا لکیریں اور بری و بدعا علیہ کے عرض کئے ہوئے  
کام کو دولت کی حرص سے ترک کرے (اس مقدمہ کا فیصلہ راستی سے کرے)۔  
۴۴۔ جس طرح شکاری آدمی زخمی ہر ک بدن سے زمین پر قطرات خون گرنے سے اسکا  
مقام ڈھونڈ لیتا ہے اسی طرح راجہ خیال سے دھرم پر کو حاصل کرے

۴۵۔ راجہ طریقہ ہر بار پر قائم ہو کر راستی و صل مطلب آتا (یعنی بخیر وغیرہ) دگواہ و دیش  
دروپ و کال ان سب کو دیکھے۔





प्रराष्ट्रस्वामिकं रित्यं राज्ञ्यं निधापयेत् ॥ अर्वाक्य-  
 व्याघ्रेत्वासी पराणां ह्यतिहरेत् ॥ ३० ॥ समेदमितियो ब्रूयात्  
 सोऽनुयोज्यो यथाविधि ॥ संवाचकस्य संख्याहीनत्वासीत द्वय-  
 मर्हति ॥ ३१ ॥ अवेद्यानो न ह्यस्य देशं कालं च वि-  
 थं प्रमाणां च तत्समं दराडमर्हति ॥ ३२ ॥ आदरीताथ वद्भारां  
 प्रराष्ट्राधिमता ब्रूयः ॥ दशमं द्वादशं वापि सतां धर्ममनुस्मर-  
 न् ॥ ३३ ॥ प्रराष्ट्राधिगतं द्रव्यं सिद्धेद्युक्तैरधिष्ठितम् ॥ यांस्तथ  
 चौराश्चुल्लीयात्तान् राजेभेन घातयेत् ॥ ३४ ॥

۳۵ - جس دولت کا کوئی مالک نہیں ہے اس دولت کو تین سال تک راجہ اپنے پاس رکھے اگر تین سال کے اندر اس کا مالک آئے تو اس دولت کو پاکہ اور بعد تین سال کے راجہ آپ لے لے۔

۳۶ - جو آدمی راجہ کے روبرو جا کر کہے کہ یہ چیز مجاہی ہے تو اس سے بابت صورت لے لے اس چیز کے سوال کرے جب وہ اس چیز کی تعداد و صورت کو صحیح بتلا دے وہ اس چیز کو پاوے۔

۳۷ - جب اوپر کی چیز کی تعداد و رنگ اور مقام و وقت کو نہ بتلا دے تب اس چیز کے برابر نہرا پاوے۔

۳۸ - اس چیز کے چھٹھو لپن دسویں بارھویں حصہ کو بطور خراج حفاظت کے لے لے اچھے لوگوں کے دھرم کو خیال کرتا ہو اور راجہ حصہ کا تقرر مالک کے بے صفتی و صاحب صفتی کو دیکھ کر کرے۔

۳۹ - پڑی ہوئی چیز لے تو اس کی حفاظت اچھے لوگوں سے کرا کے رکھے اور راجہ اس کی پورانے والوں کو بھی ہاتھی سے مراد دے۔

अर्थानर्थानुभूतुद्धाधर्माधर्मोचकेचलो॥ वराक्रमेरासर्वा  
 शिपश्येत्कार्थशिकार्थिराम॥ २४॥ बाह्येर्विभावयेलिंगे  
 र्मानमन्त्रगतंनराम॥ स्वस्वर्गीगिताकारेश्वसुवाचेष्टितेन-  
 च॥ २५॥ आकारैरिंगितैर्गत्याचेष्टयामाधितेनच॥ नेत्रवक्त्र  
 विकारैश्चष्ट्यतेऽन्मर्गतमनः॥ २६॥ बालरायारिकंरिक्थंता-  
 वज्ञानात्तुपालयेत्॥ यावत्तस्यात्समावृत्तोयावच्चातीतशेश-  
 वः॥ २७॥ वसापुत्रासुचैवंस्याद्रक्षणांनिष्कुलासुच॥ पतिव्र-  
 तासुचस्त्रीसुविधवास्वातुरासुच॥ २८॥ जीवन्तीनांतुतासां-  
 येतन्नेयुःस्वान्धवाः॥ ताञ्छिष्याच्चौरराडेनधार्मिकःपु-  
 थिवीपतिः॥ २९॥

۲۴۔ امر واجب و غیر واجب کو تحقیق کر کے اور صرف و محرم و احرام پر لحاظ کر کے ان رشتوں  
 پر اس میں و کثرتی وغیرہ کے سب مفومات کو درجہ وار دیکھیے۔

۲۵۔ سزا و صورت و قیادہ و اشارہ وغیرہ علامات پر دلی کے ذریعہ سے آدمیوں کے  
 مافی الضمیر کو جاننے کے لیے۔

۲۶۔ صورت و بشرہ و رفتار و گفتار و چہرہ و اشارہ چشم انھوں کے وسیلے سے دل کی  
 بات جانی جاتی ہے۔

۲۷۔ لا وارث لکے کی دولت کو اس کے چچا وغیرہ لیتے ہوں تو اس دولت کو راجہ قنوت  
 کہتے اپنے پاس رکھتے جب تک کہ اس کا سوا درتن کرم نہ ہو اور عہد طفولیت آخر نہ ہو۔

۲۸۔ یا بچہ دلا دل و خاندان سے نکالی ہوئی پت پرتا وراثت و رکنی ان سب کی دولت  
 کی حفاظت راجہ کر کے کوئی لینے نہ پاوے۔

۲۹۔ ان سمجھنے کے جیسے جی انکی دولت کو انھوں کے رشتہ دار لے لیں تو وہ ہمارا راجہ  
 اس دولت کے لینے والے کو چور کی طرح سزا دیوے۔

पादो धर्मस्य कर्तारं पादः साक्षिगान्धच्छति ॥ पादः सभासदः  
 सर्वान्याहो राजानन्धच्छति ॥ १८ ॥ राजा भवत्यनेनास्तुमुच्य-  
 त्ते च सभासदः ॥ सनगच्छति कर्तारं निन्दाहोयत्र निन्दते ॥  
 १९ ॥ जातिमात्रोपजीवी चाकामं स्याद्वाक्षराब्रुवः ॥ धर्मप्र-  
 वक्तान्धपतेर्न तु शूद्रः कथंचन ॥ २० ॥ यस्य शूद्रस्तु कुरुते राजो  
 धर्मविवेचनम् ॥ तस्य सीदति तदाष्ट्रं पंकोगोरिव पश्यतः ॥ २१  
 ॥ यदाष्ट्रं शूद्रं धृषिचं नास्तिकाक्रान्तमद्विजम् ॥ विनश्यत्याशु  
 तत्कत्तनं दुर्भिसन्याधिपीडितम् ॥ २२ ॥ धर्मासनमधिष्ठाय सं-  
 वीतांगः समाहितः ॥ पराम्यलोकपालेभ्यः कार्थ्यैर्ष्यमा-  
 रभेत् ॥ २३ ॥

۱۸- ادھرم کے چار حصہ ہوتے ہیں ایک ایک حصہ کو ادھرم کر نیوالا دگا اور دوسرے کو راجہ  
 یہ چار روپائے ہیں۔

۱۹- جوان ہند کے قابل آدمی ہند کو پاتے ہیں وہاں راجہ پاپ سے علیحدہ ہوتا ہے  
 اور سچا بن جیتنے والے وزیر بھی پاپ سے چھوٹ جاتا ہے کہ وہ ادھرم کر نیوالے ہی کو  
 پاپ لگتا ہے۔

۲۰- جو ذات ہی میں برہمن ہوا اور برہمن کا کرم کچھ بھی نہ کرنا اور دوسرے کو بھی دھرم کو دھرم کا  
 آپدیش کر سکتا ہو اور شورو کیسی ہی بودہ آپدیش نہیں کر سکتا۔  
 ۲۱- جس راجہ کے دھرم کا بجا شوہر کرتا ہے اس راجہ کا راج اس کے دیکھتے ہی دیکھتے ٹٹ  
 جاتا ہے جیسی دلدل میں گھونٹھنس کر مر جاتی ہے۔

۲۲- جس راجہ میں سودر اور ناشک بہت ہیں برہمن کو شتمی و دیشیہ نہیں دے سکتا  
 راجہ فقط اور آفت سے بریشان ہو کر جلد ٹٹ جاتا ہے۔

۲۳- دھرم سچا بن چھوڑ کر پون سو بدن کو چھپا کر کیل ہو کر لوکیا لون کو پر نام کر کے کام کا لکھنا شروع

धर्मो विदुः स्वधर्मैरासमां यत्रोपतिष्ठते ॥ शल्यं चास्य न कंत  
 न्ति विदुः स्तत्र सभासदः ॥ १२ ॥ सभां वा न प्रवेक्ष्यं वक्तव्यं वा-  
 समञ्जसम् ॥ अत्रुवन्विब्रुवन्वापिनरो भवति किल्विधी ॥ १३ ॥  
 यत्र धर्मो ह्यधर्मैरासत्यं यत्रानुचेन च ॥ हन्यते प्रेक्षमा रानां  
 हतास्तत्र सभासदः ॥ १४ ॥ धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षि-  
 तः ॥ तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीत ॥ १५ ॥ ह-  
 यो हि भगवान् धर्मस्तस्थयः कुरुते ह्यलम् ॥ वधतानं विदुर्देवा-  
 स्तस्माद्धर्मो न ह्योपयेत ॥ एकस्व सुहृद्धर्मो नियतेऽप्यनुधा-  
 नेयः ॥ शरीरेशा समन्नाशं सर्वमन्यद्भिगच्छति ॥ १७ ॥

۱۲۔ دھرم سے بید ہا ہوا دھرم میں سمجھائیں رہتا ہے وہ سمجھائے شیئے والے اس دھرم کو  
 دوزخ میں کر سکتے ہیں۔ سب سمجھائے شیئے والے دھرم سے بید ہونے لگے ہیں۔  
 ۱۳۔ سب سمجھائیں جانا چاہیے ہے اگر جانا تو بھیج بات کہنا چاہیے اگر جان کر بھیج نہ بولے یا خلاف  
 بولے تو پاپی ہوتا ہے۔

۱۴۔ جہاں دھرم ہے دھرم اور جھوٹے سے بچ مارا جاتا ہے اور دیکھنے والے اس کو دوزخ میں  
 کر سکتے ہیں۔ وہاں کو یا سمجھائے مالک ہی مارے گئے ہیں۔

۱۵۔ مارا گیا دھرم مارتا ہے اور حفاظت کیا گیا دھرم حفاظت کرتا ہے دھرم ہونے مارے  
 اسلئے دھرم کو نہ مارنا چاہیے۔

۱۶۔ جھگڑاں جو دھرم ہے اس کو رکھ لینی بیل کہتے ہیں اور جو اس کو مارتا ہے اس کو بیل کہتے ہیں  
 اسلئے دھرم کو نا بولنا چاہیے۔

۱۷۔ دھرم ہی دوست ہے اور ہی ساتھ جاتا ہے اور زن و فرزند وغیرہ سب ہم کے ساتھ  
 ہی چھوٹ جاتے ہیں۔ اگر کوئی دھرم کو بھڑکاتا ہے دھرم بھی ساتھ جاتا ہے وہ بھی دوست ہے اس کا جواب ہے کہ دھرم ہی  
 دینے کیونلئے اور دھرم ہی دینے کیونلئے ساتھ جاتا ہے تو جیتو دلخواہ دینے کیونلئے ساتھ جاتا ہے دی دوست کھاتا ہے۔

س्रीपुन्धर्मो विभागश्च द्यूतमाह्वयसवच ॥ परान्यद्वा दर्शेता-  
 निव्यवहारस्थिता विह ॥ ७ ॥ सुस्थानेषु भूमिषु विवारां चर-  
 तान्हराम ॥ धर्मशास्त्रवतमाश्रित्य कुर्यात्कार्यं विनिराश्रित ॥  
 ८ ॥ यदा स्वयं न कुर्यात्तु नृपतिः कार्यदर्शनम् ॥ तदा नियु-  
 ज्या द्विद्वंसं ब्राह्मणां कार्यदर्शने ॥ ९ ॥ सोऽस्य कार्यं शि-  
 यश्येत्सम्यैरेव त्रिभिर्वितः ॥ सभा मेव प्रविश्या ग्रामासीन-  
 स्थितसवचा ॥ १० ॥ यस्मिन्देशे निधीरन्ती विप्रा वेद विरह-  
 यः ॥ राज्ञश्चाधिकतो विद्वान्ब्राह्मणास्तां सभां विदुः ॥ ११ ॥

۱- استری پریش کا دھرم تفتیم حاصل نہ اکت۔ تمہارا مٹی و جنگ لوہان وغیرہ  
 لاپس ہیں یہ اٹھارہ طرح کے مقدمات مقدم رکھے گئے ہیں اور سب مقدمات انھیں میں  
 مل ہیں۔

۲- راجہ ہمیشہ دھرم کی پناہ میں ہو کر ان اٹھارہ طرح کے مقدمات میں بہت کار پر واروں  
 کے خاص کاموں کو غور سے دیکھے۔

۳- جب راجہ آپ کا مٹن کو ملاحظہ نہ کرے تب پڑت براہمن کو کام دیکھنے کا حکم دے۔  
 ۴- وہ براہمن عدالتِ عالیہ میں بیٹھ کر خواہ کھڑا ہو کہ تین پیشروں کے ساتھ راجہ کو کام  
 کو دیکھے۔

۵- جس ملک میں ایک براہمن پڑت وید پڑھے ہوئے تین براہمنوں کے ساتھ مقدمات  
 دیکھنے کے واسطے سوائق حکم راجہ کے بیٹھتا ہے اس سبھا کو سری برہما جی کی سبھا جانا چاہئے

۶- جو قول میں کہ نہ دھرم ہو کہ راجہ کے پاس بیٹھتا ہے دھرم نہ اسے غائب نہی سونا آگ پانی اٹھ کر ان کا رد وانی لے  
 گئے ہیں اسباب میں قول بہت دیکھیں سندھ وید پڑت اودے اور پوار و دیشو اودے وید پڑت پڑت وید پڑت پڑت وید پڑت پڑت  
 سکوت و مشیت پران لائق ملاحظہ ہیں لکھن کس کام پر کون کون قوم مقرر کرنا چاہئے۔

व्यवहारान्दिदमुस्तुब्राह्मणैः सहपार्थिवः॥ मंत्रज्ञैः सन्निभि  
 श्वैर्वचिनीतः प्रविशेत्सभाम्॥ १॥ तत्रासीनः स्थितो वापि पा  
 र्श्वो मुखस्य दक्षिराम्॥ विनीतवेषाभरणाः पश्येत्कार्याणि  
 कार्यिणाम्॥ २॥ प्रत्यहं देशद्वेषैश्च शास्त्रद्वेषैश्च हेतुभिः॥  
 अष्टादशसु मार्गेषु निजज्ञानि प्रथक् प्रथक्॥ ३॥ तेषामाद्य-  
 म्परासनं निसेयोऽस्वामि विक्रयः॥ सन्भूय च समुत्थानं द-  
 त्तस्यानपकर्म च॥ ४॥ वेतनस्यैव चारानं संविदश्च व्यतिक्र-  
 मः॥ कथं विक्रयानुशयो विचारः स्वामिपालयोः॥ ५॥ सी-  
 मा विवादधर्मश्च यारुध्यै द्वादशाचिके॥ स्तयंच साहसंचैव  
 स्त्रीसंग्रहसामेव च॥ ६॥

- ۱- راجہ مع شیران سلطنت دہراہستان کے مقدمات کے ملاحظہ کی خواہش سے سادی
- پوشاک پہن کر راج سبھا میں داخل ہو
- ۲- سبھا میں بیٹھ کر خواہ کھڑا ہو کر اسنا ہاتھ اٹھا کر سادی پوشاک پہن کر گاہر پانا
- سلطنت کے کاموں کو دیکھے۔
- ۳- داد و ستد قرضہ وغیرہ اٹھارہ طرح کے مقدمات مفصلہ ذیل کو ملک و قوم و درجہ طاقی
- و شاستر سے جانے ہوئے گواہ و موگند و غیرہ کے وسیلہ سے علیحدہ علیحدہ ہر روز قورکے۔
- ۴- اٹھارہ طرح کے مقدمات میں داد و ستد قرضہ۔ اثاثت۔ لاداری چیز کا بیعنا۔ شراکت
- قرضہ وغیرہ سے انکار کرنا۔
- ۵- تنخواہ یا اجرت کا نہ دینا عسکر کی گناہ خرید و فروخت میں ٹکراؤ و بیچ پیدا ہونا۔ لالچ و
- ذکر کا جھگڑا۔
- ۶- تنازع حدود الاراضی۔ دشنام دی۔ مار پیٹ۔ خفیہ چوری۔ ظاہر ہونے والی دغا بازی
- عورت کا زبردستی لیجانا۔

गत्वा कसान्तरं त्वन्यत्समनुज्ञाय तं जनम ॥ प्रविशेन्नोजन-  
 र्यं च स्त्रीवतोऽन्तःपुरं पुनः ॥ २२४ ॥ तत्र भुक्त्वा पुनः किंचित्-  
 र्यधो वैः प्रहर्षितः ॥ सविशेत्तु यथा कालमुत्तिष्ठेच्च गतक्षमः  
 ॥ २२५ ॥ एतद्विधानमातिष्ठेद्दोगः पृथिवीपतिः ॥ अश्वस्य  
 सर्वमेतत्तु भृत्येषु विनियोजयेत् ॥ २२६ ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृशुप्रोक्तायां संहितायां  
 राजधर्मो नाम सप्तमोऽध्यायः ७

۲۲۴- دو سکر استھان میں جا کر وہاں کے آدمیوں کو حکم دے کر پھر بھوجن کر لیں  
 اور قون کے عیلات میں داخل ہو۔  
 ۲۲۵- پھر تھوڑا کھانا کھا کر شیریں آواز سے خوش ہو کر خواب میں آرام کر کے گل  
 و محنت کو زخم کر کے وقت مناسب پر خواب سے بیدار ہو۔  
 ۲۲۶- پورا رات تندرست ہو وہ اس طریق پر چلے اگر آپ تندرست ہو تو ان سب لوگوں  
 سلطنت کے کرنے کو مدبروں کو حکم دے۔

مَنْ جِي كَادَ هَشَامَ بَسْتَرِكْ جِي  
 سَنَكْمَتَا كَا سَا تَوَانِ اَوْ هِيَا سَمَا پْتِ هَوَا





सहस्रार्चाः समुत्पन्नाः प्रसमीक्ष्या परोभ्यशाम ॥ संयुक्तां च-  
 वियुक्तां च सर्वोपायान् सहजे ह्युधः ॥ २१४ ॥ उपेतारमुपेयं च स-  
 र्वोपायांश्चक्रे तज्जशः ॥ सतंत्रयं समाश्रित्य प्रयतेतार्थसिद्ध-  
 ये ॥ सर्वं सर्वमिदं राजा सहस्रं मंत्रं च मंत्रिभिः ॥ व्यात्यम्यास्तुत्य  
 मध्याह्ने भोक्तुमन्तः पुरं निशेत् ॥ २१६ ॥ तत्रात्मभूतैः कालज्ञै-  
 र्हार्यैः परिचारकैः ॥ सुपरीक्षितमन्त्राद्यमद्यान्त्रैर्विधाय-  
 हैः ॥ २१७ ॥ विषद्वैरगद्वैश्चास्य सर्वं श्रद्धया शिरो जयेत् ॥ वि-  
 षघ्नानि चरत्नानि निपतो धारयेत्सदा ॥ २१८ ॥

۲۱۴- ایک ہی زمانہ میں خزانہ کا خالی ہونا اور پرکرت کا کوپ اور دوست سے رنج  
 واقع ہونا تو وہ نیکے بلکہ سام وغیرہ جو تدبیر میں امن سے ایک ایک یا سب کو  
 ۲۱۵- تدبیر تدبیر کا بتانے والا تدبیر کے وسیلے سے جو چیز حاصل ہوگی ان تینوں کا اثر  
 کر کے حصول مطلب کی واسطے تدبیر کرے۔

۲۱۶- اس طرح ان باتوں کو وزیروں کے ساتھ بجا کر کے اسکے بعد کسرت یا ورزش کر کے  
 اور وقت دوپہر غسل کر کے کھانا کھانے کی واسطے عمل میں داخل ہو۔

۲۱۷- اپنے برابر کمال کا جاننے والا دولت وغیرہ پائے سے بھیدہ کھولنے والا ایسا  
 جو دولت ہی اور زہر کا دور کر نیوالا جو منتر ہے ان کے وسیلے سے جس غلہ کا امتحان ہو گیا  
 اس کو کھائے۔

۲۱۸- زہر اور بیماری کو فنا کرنے والی جو چیزیں ہیں انکو سب چیزوں میں لانا چاہئے  
 اور جو اہر زہر کے فنا کر نیوالے ہیں انکو ہر وقت زیب بدن کرنا مناسب ہے زہر امیر  
 غلہ کو دیکھنے سے چکرو نام پر نیکی انکھ سترج ہو جاتی ہے اس واسطے اسکو غلہ دکھا کر  
 امتحان لینا چاہئے۔

धर्मज्ञं च कृतज्ञं च दुष्टप्रकृतिमेव च ॥ अनुरक्तं स्थिरमभंग-  
 लुमित्रं प्रशस्यते ॥ २०६ ॥ प्राज्ञं कुलीनं शूरं च दक्षं तारमे-  
 व च ॥ कृतज्ञं धृतिमंतं च कष्टमाह्वरिं बुधाः ॥ २०७ ॥ आर्य-  
 तापुत्रमज्ञानं शौर्यं कल्याणवेदिता ॥ स्थूलतत्त्वं च सततमु-  
 दासीनयुगादयः ॥ २०८ ॥ सौम्यासम्प्रदानित्वं यशुवृद्धि-  
 करोमपि ॥ परित्यजेन्मृगो भूमिभालार्थमविचारयत् ॥ २०९ ॥  
 ॥ आपदर्थं धनं सहायनं सौजन्यैरपि ॥ आत्मानं सततं स-  
 हारैरपि धनैरपि ॥ २१० ॥

۲۰۹- ایک اور دھرم کا جاننے والا مستقل کام شروع کرنا والا اچھی فصلت والا ثابت  
 سے بھرپور دوست ہے وہ نہایت اچھا ہے۔

۲۱۰- جو دشمن ہڈت ہے اور ٹپکے کل میں پیدا ہوئے اور شور مچا رہا ہو اور دانا اور اکل  
 جاننے والا اور دھیر ہے وہ بڑا کھن ہے یعنی وہ قابو میں نہیں آسکتا اس بات کو نیکو  
 نے کہا ہے۔

۲۱۱- جو راجہ اور اس میں دلوں زیادہ جاننے والا دشمن دکر مال ہر ایکے قت ہے  
 بہت دینے والا ہے اسکی پناہ میں ہو کر دشمن کے ساتھ چلے کرے۔

۲۱۲- جو زمین بے عیب اور دھانیہ دینے والی اور پیشہ جانور دن کی ترقی کو بنو  
 اسکو بھی اپنی آتما کی حفاظت کے واسطے ترک کرے یعنی جو دن ترک کرے ایسی زمین  
 کے آتما کی حفاظت نہ کرے تو بھی اس زمین کو ترک کرے اور آتما کی حفاظت اور طرح  
 سے کرے۔

۲۱۳- وقت مصیبت کے دم طے دولت فراہم کرے اور دولت کے دم طے  
 عورت کی حفاظت کرے اور عورت اور دولت کے واسطے سے آتما کی حفاظت کرے۔

سर्वकर्मोत्तमाय तं विधाने दैवमा लुये ॥ तयो र्वैवमचिन्त्यं तु ना  
 युवे विद्यते क्रिया ॥ २०५ ॥ सहवापि जेद्युक्तः सन्धिं कृत्वा प्र  
 यत्नतः ॥ मित्रं हिरण्यं भूमिं वा सयश्च विविधं फलम् ॥ २०६ ॥  
 ॥ याद्विंशतिं च सन्ध्ये तथा कृत्वा च मराजते ॥ मित्रादप्य  
 प्य मित्राद्वा यात्रा फलमवाप्नुयात् ॥ २०७ ॥ हिरण्यं भूमिं स  
 प्राप्स्याद्यार्थि वोन तथै धते ॥ यद्यपि मित्रं भुवं तन्वा वा क्षम  
 याम तिसमम् ॥ २०८ ॥

۲۰۵- دیوکریم اور انش کرم انھیں دونوں کرموں کے اختیار میں کر کے لائق ہر چیز میں  
 انھیں دیوکریم کو لائق فکر کرنے کے نہیں ہے مگر انش کرم میں بجا رہے ہیں اس قسم  
 میں جو کام کرے انکو خوب سمجھ کر کرے۔

۲۰۶- اس طریق سے جنگ کرے اور اگر وہ راجہ دوستی کرے تو جاترا کا پہل دینے  
 دوست وزمین و سونا وغیرہ کا ملنا دیکھ کر اس کے ساتھ ملاپ کرے۔

۲۰۷- راج شیل میں پارشن گراہ اور اگر ندان دونوں راجا دن کی صلح جاترا  
 کرے ورنہ بدون مرضی ان دونوں کے جاترا کرنے سے اندیشہ ہے کہ وہ دونوں  
 جو پارکنگ سے صلح لیکر جاترا کرنے سے دوست خواہش میں جاترا کا پہل ملے گا۔

۲۰۸- زمانہ حال میں کم قوت و دست اور زمانہ مستقبل میں صاحب ترقی و قائم دل دوست  
 کو پارکر راجہ جیسی ترقی پاتا ہے ویسا ترقی سونا وزمین پانے سے نہیں پاتا۔

۱۰ بچے جن میں ۹ باب اور پندرہ کئے وہ دیوکریم کہلاتا ہے۔

۱۰ اس کے میں ۹ باب و پندرہ کئے وہ انش کرم کہلاتا ہے۔

۱۰ پارشن گراہ سے وہ راجہ جو چھ رہتا ہے۔

۱۰ کہ وہ راجہ ہے کہ وہ ان پارشن گراہ کے پنے پر عمل کرتا ہے جو کہ اپنے اشارہ کے خلاف کام کرتا ہے۔

त्रयाराणामस्युपायानां पूर्वोक्तानामसम्भवे ॥ तथा युज्येत  
सम्यक्चोचिजयेतरि पूज्यथा ॥ २०० ॥ जित्वासंयुजयेद्देवान्त्रा-  
हाराणां चैव धार्मिकान् ॥ प्रदद्यात्परिहारांश्च स्व्याययेद्भया  
निचा ॥ २०१ ॥ सर्वेषां ह्यविदित्वेषां समासेन च कीर्यितम् ॥  
स्थापयेत्तत्र तद्वंश्यं कुर्याच्च सममक्रियाम् ॥ २०२ ॥ प्रमाराण-  
निच कुर्वीत तेषां धर्म्यान् यथोदितान् ॥ रत्नेश्च पूजयेद्देवं प्रधा-  
नयुक्तैः सह ॥ २०३ ॥ आराधनमप्रियकरं दानं च प्रियकारक-  
म् ॥ अमोक्षितानामर्थानां काले युक्तं प्रशस्यते ॥ २०४ ॥

۲۰۰- جب تین تزاہر مرقور بالا نہ چل سکیں تب ایسے تدبیر سے جنگ کرے جسکے وسیلے  
فتحیاب ہی ہوا کرے۔

۲۰۱- فتح حاصل ہونیکے بعد دیوتاؤں اور دھرماتما برہمنوں کا پوجن کرے اور سونا  
وغیرہ فتح کی ہوئی چیزوں کو دیوتا اور برہمن لوگوں کے واسطے شکلیں کر کے اس دیش کے  
رہنے والوں کو بطور معافی و دوا کے دے اور سب آدمیوں کو بخوف کرے۔

۲۰۲- مجملاسب کا منشا بھگت اس راجہ کی نسل میں جو ہوا شکوہ کی گئی پڑھلا دے  
اور یہ تم کرنا یہ نکرنا ایسا اس راجہ کو اور اسکے وزیروں کو سمجھا دے۔

۲۰۳- انھوں کا جو آچار شاشن کے موافق دھرم سے شامل ہے  
اسکو پرمان کرے اور مع پردھان آدمیوں کے رتنوں سے راجہ کا پوجن  
کرے۔

۲۰۴- اگرچہ دلخواہ چیزوں کا لینا رنج کا دینے والا ہے اور دان یعنی چیزوں کا  
دینا خاطر خواہ آرام و عیش کا دینے والا ہے یہ بات حلقی ہے تاہم خاص وقت پر دینا لینا  
اچھا ہوتا ہے اسلئے اسوقت دان ہی کرنا چاہئے۔

उपरुध्यादिमासीतराष्ट्रं चास्योपपीडयेत् ॥ दूषयेच्चास्यसत  
तंयवसाचोदकेन्यनम् ॥ १६५ ॥ भिन्धाश्चैवतडागानि प्राका-  
रपरिखास्तथा ॥ समवस्कन्दयेच्चैनं रात्रौ वित्रासयेत्तथा ॥ १६६  
॥ उपजघ्यानुयजपेद्बुधेतैवचतत्कृतम् ॥ युक्तेचदेवेयुज्येतज-  
यप्रेप्सुरपेतमीः ॥ १६७ ॥ साश्नादानेनभेदेनसमस्तैरथवाश्व-  
क ॥ विजेतुं प्रयतेतारीज्युजेनकदाचन ॥ १६८ ॥ अनित्यो-  
विजयोयस्मादृश्यतेयुज्यमानयोः ॥ पराजयश्चसंग्रामेतस्मा-  
द्युद्धं विवर्जयेत् ॥ १६९ ॥

۱۹۵- دشمن قلعہ میں سے یا باہر سے اور جنگ بھی نہ کرتا ہو لیکن بہت بڑا ہو اور  
اوسکی راج کو تکلیف دے اور گھاس اور لکڑی اور پانی انھوں میں ناکارہ چیز  
ڈال کر خراب کرے۔

۱۹۶- تالاب و قلعہ والا خانہ و کھامین ان سب کو کھو دے اور خوف و شرم کو باخوف  
کرے اور برچی لیکرات کو ڈھکانام باج کی آواز سے زیادہ تکلیف دے۔  
۱۹۷- جو لوگ وزیر و غیرہ راجہ کے خاندان میں راج لینے کی خواہش رکھتے ہوں انکو  
توڑ پھوڑ سے مار کر اپنے قابو میں کرے اور انکو قیافہ سے جانے لے کر اپنے قابو میں جو یا نہیں  
فتح کی خواہش کریں والا راجہ خوف چھوڑ کر جب سب گروہ دشمن اپنے ہونے کی راہی  
کرے۔

۱۹۸- سام۔ دان۔ بھیدان میں سے ایک ایک کے وسیلے سے خواہ تینوں کے وسیلے  
سے دشمنوں کو فتح کرنے کیوں سب سے تیز کرے نہ صرف جنگ ہی کے واسطے۔

۱۹۹- کیونکہ جنگ میں فتح ہوتی ہی ہے اور ہین بھی ہوتی ہے اس واسطے جنگ کرنا  
چاہیے۔



دंडव्यूहेनतन्मार्गायायास्तुशकटेनवा॥ चराहमकराभ्यांवासूच्या  
वागरुडेनवा॥ १८७॥ यतश्चभयमाशंकेततोविस्तारयेद्वलं॥ प-  
द्मेनचैवव्यूहेननिविशेतसदास्वयम्॥ १८८॥ सेनापतिवलाध्यसे  
सर्वदिक्षुनिवेशयेत्॥ यतश्चभयमाशंकेत्प्राचींतांकरूपयेदिशं १८९

۱۸۷- ڈنڈ وھئے نہ تانے مارگیا یا یا تو شکر کے تانے والے ۥ چاروں طرف سے خوف  
پیدا ہو تب ڈنڈ پر وہ سے جاوے جب چھ خوف پیدا ہو تب سکٹ پر وہ سے جاوے جب پلوین  
خوف پیدا ہو تب براہ اور گر پر وہ سے جاوے جب آگے پیچھے خوف پیدا ہو تب گر پر وہ سے جاوے  
جب آگے خوف پیدا ہو تب سوچی ہو وہ سے جاوے  
۱۸۸- جھڑن خوف کا خیال ہو اس طرف فوج کو بڑھاؤ پدم پر وہ کر کے شہر سے نکل کر راجہ  
پر شیرہ رہے۔

۱۸۹- سینا پت اور بلا دھیکش کو چاروں طرف میں رکھنا چاہئے اور جس دشا سے خوف  
کا خیال ہو اسکو پورب دشا جانو۔

۱۹۰- ہر دوئی صورت فوج کو تیار کر دینا کہلاتا ہے شرج مکی یہ ہے کہ بلا دھیکش آگے درمیان میں راجہ پیچھے ہٹ کر فرج دونوں  
پلوین باقی آگے روہر دھکھوڑا پھر بارہ اس طرح سے تیار اور چاروں طرف سے برابر ہو وہ ڈنڈ پر وہ کہلاتا ہے۔  
۱۹۱- آگے پیچھے ٹیلا پونج میں ہوتا ہو وہ براہ پر وہ کہلاتا ہے۔

۱۹۲- آگے پیچھے ٹیلا پونج میں ہوتا ہو وہ گر پر وہ کہلاتا ہے۔

۱۹۳- آگے پیچھے ٹیلا پونج میں ہوتا ہو وہ گر پر وہ کہلاتا ہے۔

۱۹۴- چوٹی کی پانت کے مانند آگے بچھا برابر ہو اور پلوین آگے رہیں یہ سوچی ہو کہلاتا ہے۔

۱۹۵- آگے بچھا ٹیلا ہو اور پلوین بہت بڑا ہو وہ گر پر وہ کہلاتا ہے۔

۱۹۶- چاروں طرف برابر فوج اور درمیان میں راجہ اسکو پریم کہتے ہیں۔

۱۹۷- دشا باقی دشا گھوڑا دشا پادہ دشا رتھ کا ایک ایک کتا اسکا نام پکا کہلاتا ہے دشا پکا کہلاتا ہے اسکا نام پکا کہلاتا ہے  
یہ ایک بلا دھیکش کہلاتا ہے۔

مार्गशीर्षे शुभे मासियायाद्यात्रां महीयति ॥ कालगुरां वाय  
 चैत्रं वामासी प्रतियथा बलम् ॥ १८२ ॥ अन्येष्वपि तु कालेषु-  
 यथायस्येद्भवं जयम् ॥ तदा याया द्विगुह्यैव जयसने चोत्थितेरियोः  
 ॥ १८३ ॥ कृत्वा विधानमूले तु यात्रिकं च यथाविधि ॥ उपर-  
 त्वात्स्यदं चैव चारान्सम्यविधाय च ॥ १८४ ॥ संशोध्य त्रिविधं  
 मार्गं त्रिधं च बलं स्वकम् ॥ सायरायिक कल्पेन याया हरिषु  
 रंशने ॥ १८५ ॥ शत्रुसेवी निमित्ते च गृहे युक्ततरो भवेत् ॥ गतप्र-  
 त्यागते चैव सहिकस्य तरो रिपुः ॥ १८६ ॥

۱۸۲- راجہ مجھ مہینہ اکھن میں دشمن کے اوپر جاتے ہوئے خواہ بھاگتے چاہیں اپنی فوج کو ہتھیار کر کے  
 ۱۸۳- دوسرے وقت پر بھی جب یقیناً اپنی فتح جانیے تب بگاڑ کر کے جاوے اور دشمن کے  
 اوپر جب دیکھ دیکھے تب بھی جاوے۔

۱۸۴- اپنے ملک کی حفاظت کر کے اور دستور کے موافق جاتے ہوئے وقت کے کام کو کر کے  
 سواری و پیادہ روزہ وغیرہ ہر رستی تمام ساتھ لیکر دشمن کے ملک میں جا کر جس سے اپنا قیام ہو  
 اوسکو لیکر اور دشمن کے نوکر و نوکر اپنے اختیار میں لے کر اور دشمن کے ملک کا حال جانتے ہوئے  
 واسطے کاٹھک وغیرہ چار قسم کے آدمیوں کو صحبت کرے۔

۱۸۵- تین طرح کے جو اسلحہ ہیں یعنی جانگل انوپ اٹیک انکو صاف کر کے دینی درخت  
 وغیرہ کاٹ کر اور اپنی زمین برابر کر کے اور حقہ طرح کے روپیں دینے باقی گھوڑا رتھ پناؤ  
 فوج۔ گدیگر۔ ان سب کو جوڑ کر ادویہ دست کار وغیرہ سے درست کر کے سنگرام  
 میں نیک طریق سے جلد دشمن کے شہر میں جاؤ۔

۱۸۶- جو اپنا دوست دشمن کی خدمت گزاری پوشیدہ کرتا ہو اور جو نوکر وغیرہ اپنے بیان سے  
 نکال کر بھڑائے ہوں ان دونوں پر ہتھیار ہے کیونکہ انھوں کا ٹھکانا سوا فساد و بربادی کے نہیں ہوتا ہو



यदितत्रापिसंपश्येदोषसंश्रयकारितम् ॥ सुयुद्धमेवतत्रापि  
निर्विशंकः समाचरेत् ॥ १७६ ॥ सर्वोपायैस्तथाकुर्यान्नीति-  
ज्ञः प्रथिवीपतिः ॥ यथास्याभ्यधिकानस्युर्मित्रोदासीनशत्र-  
वः ॥ १७७ ॥ आयतिसर्वकार्यारांतदात्वंचविचारयेत् ॥  
अतीतानांचसर्वेषां गुरादोषौचतत्त्वतः ॥ १७८ ॥ आयत्यां  
गुरादोषजस्तदात्वेसिप्रनिश्चयः ॥ अतीतेकार्यशेषज्ञः श-  
त्रुभिर्नाभिभूयते ॥ १७९ ॥ यथैनंनाभिसंध्युर्मित्रोदासीनश-  
त्रवः ॥ तथासर्वसविदध्यादेवसामासिकोनयः ॥ १८० ॥ य-  
दातुयानमातिचेद्वीराद्वंप्रतिग्रभुः ॥ तदानेनविधानेनयाया  
हरिपुरंशनैः ॥ १८१ ॥

۱۷۶- جب پناہ لینے میں بھی کچھ نقصان سمجھے تب شک کو دور کر کے اچھی لڑائی کرے۔  
۱۷۷- نیت جاننے والا راجہ سب تیرہ دن سے اسے کوایا کرے۔  
جسمین دوست دادا سین دشمن یہ سب اسے سے بڑے  
نہوئے پاؤں۔

۱۷۸- تمام کاموں کا دوش اور گن زمانہ ماضی و حال مستقبل سے نسبت رکھو  
والا آن سب کو کما حقہ خیال کرے۔

۱۷۹- ایسا خیال کرنے والا راجہ دشمنوں سے رنج نہیں پاتا۔  
۱۸۰- عملاً سب نیت کا خلاصہ یہ ہے کہ دشمن اور دوست اور ادا سین سب تکلیف نہ  
دے سکیں یہی تدبیر کرے۔

۱۸۱- جب دشمن کے اوپر جانے کی خواہش ہو تب موافق تیرہ سندرہ ہتھکڑیاں  
آہستہ آہستہ دشمن کے شہر میں جاوے۔

यदाप्रकृष्टामन्येतसर्वास्तुप्रकृतीर्धशम्॥ अत्युच्छ्रितंतथा  
 त्मानंतथाकुर्वीतविग्रहम्॥ १७०॥ यदामन्येतभावेनहृद्यं-  
 दंबलंस्वकम्॥ परस्यवियरीतंचतदायात्यात्रिषुंप्रति॥ १७१॥  
 यदातुस्यात्यरीक्षीणोबाह्वेनबलेनच॥ तदासीतप्रयत्नेन  
 शनकैःसांत्वयन्मरीच॥ १७२॥ मन्येतासिंहराजासर्वथा  
 बलवत्तरम्॥ तदादिधाबलंक्षत्वासाधयेत्कार्यमात्मानः  
 ॥ १७३॥ यदापरबलानाल्लुगमनीयतमोभवेत्॥ तदातुसं-  
 अयेत्क्षिप्रं धार्मिकबलिनन्दयम्॥ १७४॥ निग्रहंप्रकृती-  
 नांचकुर्याद्योऽबिलस्यच॥ उपसेवेततंनित्यंसर्वयत्नेर्यु-  
 संयथा॥ १७५॥

۱۶۰- جب اپنی پرکرت کو بلوان دیکھے اور اپنے کو نہایت اونچا دیکھے تب بگاڑ کرے  
 ۱۶۱- جب اپنی فوج کو زور آور صاحب مہنت دیکھے اور دشمن کی فوج اس کے برخلاف دیکھے  
 تب دشمن کے اوپر بڑھائی کرے۔

۱۶۲- جب سواری فوج اپنے پاس نہوتب دشمن کو سام نام تدریس سے اپنے قابو میں  
 کر کے اپنے مقام پر رہے۔

۱۶۳- جب دشمن کو سب طرح سے زور آور جانے تب اپنی فوج کے دوحہ کرے یعنی  
 کچھ فوج لیکر آپ قلعہ میں رہے اور کچھ لڑنے کو بھیجے اپنے کام کو اس طرح سہم کرے۔

۱۶۴- جب جانے کہ دشمن سے بھاگنے کے تب جلدی سے زور آور دودھرا تاراج کی بناء  
 لیوے۔

۱۶۵- جو راجہ دشمن کی پرکرت اور فوج کو قابو میں کرنے کی طاقت رکھتا ہو اس کی خدمت  
 ہمیشہ اس طرح کرے کہ صبر کرے اور دیکھ کر لڑے۔

एकाकिनश्चात्ययिकेकार्यप्राप्तेयदृच्छया ॥ संहतस्यचमि  
त्रेगाद्विविधयानमुच्यते ॥ १६५ ॥ सीरास्यचैवक्रमशोरे-  
वात्पूर्वकतेनवा ॥ मित्रस्यचानुरोधेनद्विविधंस्मृतमासन-  
म् ॥ १६६ ॥ बलस्यस्वामिनश्चैवस्थितिःकार्यार्थसिद्धये ॥  
द्विविधंकीर्त्यतेहैधंयानुरागंरुगावेरिभिः ॥ १६७ ॥ अर्थसं-  
पादनार्थंचपीड्यमानस्यशत्रुभिः ॥ साधुबुध्यपदेशार्थद्वि-  
विधःसंश्रयःस्मृतः ॥ १६८ ॥ यदावगच्छेदायत्यामाधिक्यं-  
ध्रुवमात्मनः ॥ तदात्वेचाल्पिकापीडांतदासन्धिसमाश्र-  
येत् ॥ १६९ ॥

۱۶۵ - وقت دیشی کا ضروری آپ کیلادش پر چڑھائی کرے یہ پہلی چڑھائی ہو اور دوسری  
کی دوسری چڑھائی کرے یہ دوسری چڑھائی ہے۔

۱۶۶ - پہلے جنم کے پاپ سے یا اس جنم کے پاپ سے باقی وگھوڑا دولت وغیرہ ہاتھ سے  
تکلی دین اسوقت دوسرے راجہ پر چڑھائی کرے خواہ دولت و باقی وگھوڑا وغیرہ سامان  
اپنے پاس موجود ہے اور جاہمین دوست کی حفاظت نہیں ہو سکتی تب اسکے واسطے بھانا  
چاہئے۔ یہ دو طرح کا قیام ہے۔

۱۶۷ - اپنے کام سدھ ہونیکے واسطے باقی وگھوڑا وغیرہ وندیانیت (نیپے سپہ سالار) کو  
دشمن کے کئے ہوئے فساد دور کرنے کیواسطے ایک جگہ پر قائم رکھنا یہ پہلا عہدہ ہوا اور غلہ  
میں مع افسر تمام فوج راجہ کا قائم ہونا یہ دوسرا عہدہ ہے۔

۱۶۸ - دشمن سے دیکھی ہو خواہ دشمن سے دکھ نہ ہو ان دو فائدوں کے لئے طاقتور  
کی پناہ لیو۔ یہ دو طرح کی پناہ ہے۔

۱۶۹ - جب لڑائی کے پیچھے اپنی لڑائی کو یقیناً جانے اور اسوقت غور ہی و عن فیئر  
کا نقصان دیکھے تب صلح کرے۔

تانناروانمیسندھیاکامادیمیرپکرمی: ॥ व्यसैश्चैवस-  
 मरैश्चैवस- ॥ १५६ ॥ सन्धिचविग्रहंचैवयानमा-  
 सनमेवच ॥ द्वैधीभावंसंश्रयंचयद्गुणाश्चिन्नयेत्सदा ॥ १६०  
 ॥ आसनंचैवयानंचसन्धिविग्रहमेवच ॥ कार्य्यवीक्ष्यप्र-  
 युक्तीतद्वैधंसंश्रयमेवच ॥ १६१ ॥ सन्धितुद्विविधंचिद्याश-  
 नाविग्रहमेवच ॥ उभेयानासनंचैवद्विविधः संश्रयः स्मृतः ॥  
 १६२ ॥ समानयानकर्माचविपरीतस्तथैवच ॥ तदात्वायति  
 संयुक्तः सन्धिर्ज्ञेयोद्विलक्षणाः ॥ १६३ ॥ स्वयंकृतश्चकार्या-  
 र्थमकालेकालस्यवा ॥ मित्रस्यचैवाप्रकृतेद्विविधोविग्रहः  
 स्मृतः ॥ १६४ ॥

۱۵۹- ان سب راجاؤن کو سام و غیرہ چار تہ بیرون میں سے جیسا متوقع ہو ایک ایک کیلئے  
 کے دیئے گئے اور اپنی فوج و بہت سے قابو میں کرنا چاہئے۔

۱۶۰- صلح و بگاڑ و دشمنی کے اوپر چڑھائی و قیام و بھید و کسی زور و راجہ کی پناہ لینا اپنا  
 چھ باتوں کو ہمیشہ خیال کرنا چاہئے۔

۱۶۱- کام کا متوقع دیکھ کر تم کو ان چھ باتوں کے جان کی ضرورت ہو وہاں اسکو کرے۔

۱۶۲- صلح - بگاڑ - چڑھائی - قیام - بھید - پناہ لینا - یہ چھ باتوں دو دو طرح کی  
 ہیں۔

۱۶۳- اسوقت یا زمانہ میں منتیہ لانے کے واسطے ایک راجہ کے ساتھ دوسرا راجہ  
 پر چڑھائی کرنا یہ سمان پان کرنا نام صلح کہلاتی ہے اور اگر تم بیان جاؤ گے تو ہم وہاں جائینگے  
 یہ ٹھکر صلح کرے تو وہ سمان پان کرنا نام صلح ہے۔

۱۶۴- وقت پر خواہ بے وقت اپنی خواہش سے آپ بگاڑ کیا یہ پہلا بگاڑ ہوا اور اپنے دوست  
 کی توہین دیکھ کر توہین کرنے والے سے بگاڑ کیا وہ دوسرا بگاڑ ہوا۔

मध्यमस्यप्रचारंचविजिगीषोश्चवेष्टितम्॥ उदासीनप्रचा-  
रंचशत्रोश्चैवप्रयत्नतः॥ १५५॥ एताःप्रवृत्तयोमूलंमराडल-  
स्यसमासतः॥ अष्टौचान्याःसमाख्याताद्यादशीवतुताःस्मृ-  
ताः॥ १५६॥ अमात्यराष्ट्रदुर्गार्थदराडारच्याःयंचचायराः॥  
प्रत्येकंकथिताह्येताःसंक्षेपेरादिसप्ततिः॥ १५७॥ अनन्तर  
मरिंविद्याहरिसेविनमेवद॥ अरिनन्तरंभिन्नमुदासीनंतयोः  
परम्॥ १५८॥

۱۵۵۔ دشمن و دشمن فتح کی خواہش کرنیوالا دشمن ان چاروں کی خواہش لی دست  
کرے اور بچا رہے۔

۱۵۶۔ راج منڈل کی یہ چاروں پرکرت میں آٹھ ساکھا پرکرت میں سب ملکہ ہوتی ہیں  
۱۵۷۔ چار منول پرکرت اور آٹھ ساکھا پرکرت انھوں میں ہر ایک کی پانچ پانچ دہرے پرکرت  
ہیں یہ سب ملکہ ہوتے ہیں۔

۱۵۸۔ اپنے راج کے سامنے کا راجہ دشمن ہے اور اُسکی پیوا کرنے والا بھی دشمن ہے  
اس راجہ کے ملک سے آگے جو راجہ ہے وہ دوست ہے اور دوست سے آگے جو راجہ ہے  
وہ ادا سین ہے۔

۱۔ یہ ہم اسکو کہتے ہیں کہ جو دشمن و دشمن فتح چاہئے والے ان دونوں کے ملک کے بیچ میں راج رکھتا ہو اور انھیں دونوں  
لا جاوے کی صلح و جنگ کر دینے کی طاقت رکھتا ہو۔

۲۔ ادا سین وہ ہے کہ جو دشمن و دشمن فتح چاہئے والے و دشمن ان تینوں کی صلح و جنگ کر دینے کی طاقت رکھتا ہو۔  
۳۔ آٹھ ساکھا پرکرت یہ ہیں دشمن کے ملک کے اگلا دوست و دشمن دوست دوست کا و دشمن دشمن کے دوست کا دوست  
پارشن گراہ اگر تیر پارشن گراہاں سا کر تیرا۔

۴۔ پانچ دہرے پرکرت یہ ہیں۔ وزیر راج۔ قلعہ دولت۔ سزا۔

कल्वंचासविधं कर्म पंचवर्गं चतुर्वर्तः ॥ अनुरागापरागौ-  
चप्रचारं मराडलस्य च ॥ १५४ ॥

۱۵۴-۱- آٹھ کانوں کو اور سندھانت سے پانچ برگ کو بھی بچا رہے اور دوسرا جان  
اور اپنے وزیروں کی محبت و دشمنی کو جانکر ہر شے کی تدبیر کرے۔  
۱- آٹھ کام یہ ہیں۔ رعیت سے محصول لینا۔ نوکران کی خواہش کرنا۔ ہر کوئی کے پہلو کو کام میں  
آگے کرنا اور ان باتوں کا حکم دینا۔ نوکران میں شک ہو تو بھی حکم دینا۔ ہر کوئی کے پاس ہر بات کو فانی کرنا۔  
کے دھن لینا۔ ہر کوئی کے پاس ہر شے کو دینا۔ ہر کوئی کے پاس ہر شے کو لینا۔ ہر کوئی کے پاس ہر شے کو لینا۔  
ہیں۔ جو شخص دوسرے کے دل کا حال چاہے اور جو شخص دوسرے کے دل کا حال چاہے اور جو شخص دوسرے کے دل کا حال چاہے  
آدھے تو اسکو ان باتوں کا حکم دینا۔ نوکران میں شک ہو تو بھی حکم دینا۔ ہر کوئی کے پہلو کو کام میں  
جو بھرت ہو گئے ہیں اسے درجہ سے گر گئے ہیں اور انکا دوش تو جہان میں ستوری ہو گا صاحب عقل و حکمت ہر کوئی کو  
اور بہت پسند ہے اسے یہ کہ اس میں جھگڑا نہ ہو بلکہ اس کے اور جن میں کیا بہت دھان پیدا ہو اس میں کو جو کبھی اسے دیکھ  
وہ جو شے سنبھالی راج کا جو کبھی اسے اور سنبھالیو کو کھانا کھا کر جو شخص جو کبھی اسے دیکھتا اور اسے کلام  
کرے اسکو صاحب عقل و حکمت ہر کوئی کے دل کا حال چاہے اور جو شخص دوسرے کے دل کا حال چاہے اور جو شخص دوسرے کے دل کا حال چاہے  
جو دیش جو کبھی اسے دیکھتا اس میں جھگڑا نہ ہو بلکہ اس کے اور جن میں کیا بہت دھان پیدا ہو اس میں کو جو کبھی اسے دیکھ  
کراوے موٹو موٹا دے ہو یا کھائے ہو اور جو کبھی اسے دیکھتا ہو اسکو پوشیدہ ماسک دیکھ کر بلال خات میں گنگو کڑی  
اور وہ کبھی بہت شدت اور جھل جھل کے ساتھ تپتا کرے ہمیدہ دو مہینہ سے لے کر شے بھی ہرگز وغیرہ کھائے  
اور ان کو جب کوئی بنائے سبط حکم ہو جن کے اور اسے چیلے اسکی کرامات کو مشہور کرین کر گرجی مافی و حال  
درستقبال تینوں زمانوں کا حال جانتے ہیں اس سے لوگ اپنے مطلب کو کہیں گے یہ پانچوں سلسلہ دار کا ایک  
اور سمجھتے۔ گرہ پتہ۔ بیکہ۔ تاپس کہلانے میں پس ان درجوں سے اپنا مطلب حاصل کرے۔

जडसूकान्धवधिरांस्तिर्यग्योनान्वयोतिगान् ॥ स्त्रीन्तेच्छव्या  
धितव्यंगान्मंत्रकालेऽपसारयेत् ॥ १४६ ॥ भिन्दन्त्यवमतामं-  
त्रंतिर्यग्योनास्तथैव च ॥ स्त्रियश्चैवविशेषेणातस्मात्तत्राह-  
तोभवेत् ॥ १५० ॥ मध्यंदिनेऽर्द्धरात्रेवाविश्रांतोविगतकृतमः ॥  
चिन्तयेद्धर्मकामार्थान्सार्वभौमैरेकएववा ॥ १५१ ॥ यस्मिन्विश्र-  
ाजानांतेषांचसमुपार्जनम् ॥ कन्यानांसंयदानंचकुमारराणां  
चरसरासम् ॥ १५२ ॥ दूतसम्प्रेषणांचैवकार्यशेषंतथैव च ॥  
अन्तःपुरप्रचारंचप्रगाधीनांचचेदितम् ॥ १५३ ॥

۱۴۹۔ ہاولا کو لگا۔ نہ صاحبہ آرہے۔ بڑھا دینی ۸۰ برس سے زیادہ عمر کا لکھتے عورت مرلین ایک  
عضو نہ کہنے والا ان سب کو وقت صلاح و شوریہ کے اپنے پاس نہ رکھے۔

۱۵۰۔ یہ سب پہلے جنم کے پاپ سے ایسے ہوئے ہیں اسلئے اپان پاکر بھیہ کو ظاہر  
کردیتے ہیں اور پرند اور بڑھے اور عورت اعفون کی عقل قائم بنیں حتیٰ اس وقت تک یہ بھیہ  
ظاہر کرتے ہیں اس واسطے وقت مشورہ نظام ملک کے یہ لوگ پاس نہ رہنے پادین۔

۱۵۱۔ دو پہر دن یا آدھی رات کے وقت آرام دیکھ لری سے ان مشیروں کے ساتھ یا کھلا  
آپ ہی دھوم دار عقد کر د کام بیکار کرے۔

۱۵۲۔ دھن ملنے کی واسطے ایسی تدبیر سوچے کہ جمیں دھوم ارتقہ کام جو باہم منتقل  
ہیں اعفون کا برو دھو نہ دے اپنے کام سڑھ ہونے کی واسطے کنیان کا دان اور شہید  
شاہتر کے موافق پڑھانے سکھانے کی واسطے راج کماروں کی حفاظت نہ  
باتون کو بھی بیکار کرے۔

۱۵۳۔ سفیر وکیل کو بھیجا باقی رہا ہو اکام شہر کے اندر کا چلن دوسرے راجا ونگا حال  
لائیو الا جو شخص ہے اس کے دل کی خواہش کو جانتا ان سب باتون کو بھی بیکار کرے۔

विक्रोशन्त्योयस्यराष्ट्राजियन्नेरस्युभिः प्रजाः ॥ सम्यश्यतः स-  
 भृत्यस्यस्यतः सनतुजीवति ॥ १४३ ॥ सत्रियस्य परोधर्मः प्र-  
 जानामेवया लनम् ॥ निर्हिणफलमोक्ताहिराजाधर्मेरायुज्य-  
 ते ॥ १४४ ॥ उत्थाययश्चिमेयामेकतशौचः समाहितः ॥ कृताभि-  
 र्वाक्षराणां चार्थप्रविशेतस्युभांसभाम् ॥ १४५ ॥ तत्रस्थितः प्र-  
 जाः सर्वाः प्रतिनच्यविसर्जयेत् ॥ विसृज्यचप्रजाः सर्वामन्त्रये-  
 त्सहस्रंश्रिभिः ॥ १४६ ॥ गिरिदृष्टं समातुह्य प्रासादं वारहोगतः  
 ॥ अश्वराये निशालाके वामन्त्रयेदविभावितः ॥ १४७ ॥ यस्य-  
 मंत्रं न जानन्ति समागम्य प्रथमजनाः ॥ सकृत्कनांश्चिवीभुंक्ते  
 कोशहीनोऽपि पार्थिवः ॥ १४८ ॥

۱۴۳۔ جس راجہ اور راجہ کے اہلکاروں کے دیکھتے ہوئے اسکے راج میں چوروں سے  
 ٹوٹی ہوئی پرچا پکارتی ہے وہ راجہ زندہ نہیں ہے بلکہ مر گیا ہے۔  
 ۱۴۴۔ ہر جاگو یا لٹا کشتریوں کا پر دم دھرم ہے جو راجہ شاستر کے موافق کام کرتا ہے  
 اُسکو دھرماتا کہتے ہیں۔  
 ۱۴۵۔ سپہرات باقی رہے اٹھکرا نشان وغیرہ کر کے یکدل ہو کر اگن ہو تزاور براہمن کا  
 پوجن کر کے دربار میں داخل ہو۔  
 ۱۴۶۔ دربار میں بیٹھ کر سب رعایا کو دیکھ بھال کر بول چال کر خدمت کرے بوندہ وزیروں  
 کے ساتھ انتظام ملک کی بابت مشورہ کرے۔  
 ۱۴۷۔ بیٹا یا لالا خانہ یا جنگل وغیرہ مقام خلوت میں بیٹھ کر لگانے والے آدمیوں کو دود  
 کر کے بچا ملک والی صلاح کا مشورہ کرے۔  
 ۱۴۸۔ سوائے شیردوں کے اور لوگ میل ملاپ کر کے جس راجہ مشورہ کو نہیں بچتے  
 وہ راجہ اگرچہ بے زہ ہو تو بھی پرہتوی پر راج کر سکتا ہے۔



यत्किंचरपिबर्धस्यरापयेत्कारसंज्ञितम् ॥ व्यवहारराजीवंतं  
राजाराद्रेष्टयकृज्जनम् ॥ १३७ ॥ कारुकाञ्जिल्लिपिनश्चैवभृशं  
आतोपजीविनः ॥ सर्वैकंकारयेत्कर्ममासिमासिमहीपति  
॥ १३८ ॥ नोच्छिन्द्यादात्मानोमूलं परेषां चातित्वयाया ॥ उच्छि  
न्त्यात्मानोमूलमात्मानंतांश्चपीडयेत् ॥ १३९ ॥ तीक्ष्णाश्चै  
वभृशश्चस्थात्कार्यवीक्ष्यमहीपतिः ॥ तीक्ष्णाश्चैवभृशश्चैवरा  
जाभवतिसमातः ॥ १४० ॥ अमान्यमुख्यधर्मज्ञं प्राज्ञेदान्तं  
कुलोद्भूतम् ॥ स्थापयेदासनेतस्मिन्निवन्तः कार्यसरोनूरा  
म् ॥ १४१ ॥ सर्वं सर्वं विधायेममितिकर्तव्यमात्मानः ॥ युक्तश्चै  
वाप्रमत्तश्चपरिक्षेहिमाः प्रजाः ॥ १४२ ॥

۱۔ راج بین چھوٹے آدمیوں میں بھی تھوڑا سا گہٹا وغیرہ سال تمام میں بطور محصول کیوں  
۲۔ رستوں میں چھوٹے شہر تھم کے کاریگر و شودر و جسم کی تکلیف سے اوقات بسر کرنے کے  
پتہ دار وغیرہ ان سکھوں سے ہر مہینہ بین ایک ن کام کر اوسے ان کا پس محصول ہے۔  
۳۔ اگر ترقی ضاعے محنت محصول رعیت سے نہ لےوے تو راجہ بنی جزا دکھاتا ہے۔  
اور جس سے زیادہ محصول لےوے تو بھی اس سے ان دونوں کاموں کو نہ کرے اگر کرے تو  
وہ راجہ آپ کو اور رعیت کو دکھی کرتا ہے۔

۱۔ راہِ کام کو دیکھ کر کام کے موافق نرم و سخت ہو کر دینی اچھا کام دیکھ کر نرم ہو اور بُرا کام دیکھ کر سخت ہو ایسا راہِ سب کو اچھا معلوم ہوتا ہے۔

۱۴۱۔ آپ مقدمات فیصلہ کر زمین تکلیف پاک و اپنی جگہ پر ایسے برہمن کو بٹھلا دے جو کہ وزیر عظم ہو اور دھرم کا جاننے والا اور لوگوں پر غالب اور خاندانی ہو۔

۱۴۲۔ اس طرح اپنے کرنے کے لائق کاموں کو جو تیز کرے یہی وہ پن کو چھوڑ کر کشتیوں میں منت تمام رعایا کی حفاظت کرے۔

۱۔ وقت بالنسب شرباب لگتی خوشبودار چیزیں ادویات رس پھول مول میل۔  
 ۲۔ پتا۔ ساگ۔ گھاس چیرا بالنسب کابرتن مٹی کابرتن پتھر کابرتن ان مہوں کے نفع میں  
 چھوٹاں جھڑاں راجہ لیوے۔  
 ۳۔ راجہ راجہ ہو تو بھی دید پڑھنے والے براہمن سے محض لے لیوے اور تمام راجہ براہمن  
 کوئی دید پانچھی کھانے پینے کا دکھو پناوے۔  
 ۴۔ جس راجہ کے راجہ میں دید پانچھی بھوکھا مرے گا اس کا راجہ بہت جلوت جانتے۔  
 ۵۔ براہمنوں کے پڑھنے اور آچرن کو سمجھ کر ان کی ایسی ماس تجویز کرے جو ان کے دھرم کے  
 خلاف نہ ہو اور ان کی حفاظت سب طرف سے اس طرح کرے کہ ج طرح باپ بیٹے کی حفاظت کرتا ہے  
 ۶۔ راجہ کی حفاظت پاکر براہمن ہر روز جو دھرم کرتا ہے اسکے پرنسپل سے راجہ کی دیکھ  
 دیکھ کر پڑھتی ہے۔

परादेशोवक्तव्यमदुक्तव्यवेतनम् ॥ वारामासिकस्त-  
थाच्छाहोधान्यशेरास्तुमासिकः ॥ १२६ ॥ अयविक्रयमधा-  
नंभक्तंचसपरिव्ययम् ॥ योगक्षेमंचतंप्रेक्ष्यवशिजोदायये-  
त्करान् ॥ १२७ ॥ यथाफलैर्नयुज्येत राजा कर्त्ता च कर्मणाम् ॥  
तथावेक्ष्यन्पराद्यैकल्पयेत्सततं करान् ॥ १२८ ॥ यथात्पा-  
त्यमदत्त्याद्यं वार्यो जीवत्सयद्वराः ॥ तथात्पाल्यो गृही-  
तव्यो राष्ट्राज्ञा ज्ञात्वा जिकः करः ॥ १२९ ॥ यंचाज्ञा गच्छादेषो  
राजा पशुहिरण्ययोः ॥ धान्यानामहमोभागः षडोद्धारश-  
स्यवा ॥ १३० ॥

۱۲۶۔ جو شخص گھر کا صاف کر نیوالا اور پانی کا لائو والا، اسکو ایک پن یومید دیوے اور  
مہینہ میں ایک درون ان دیوے اور چھٹے مہینہ دو کپڑے دیوے اور جو شخص آتم کا مہینہ  
ہے اسکو چھ پن یومید دیوے اور چھٹے مہینے چار کپڑے دیوے ہر مہینہ میں چھ درون دیوے  
دیوے چھٹے مہینہ کپڑے دیوے

۱۲۷۔ ان سب باتوں کا پکار کر بنیوں سے محصول لیوے یعنی کس قیمت پر خرید کیا ہے میچے  
میں کتنا ملیگا کتنی دور سے لایا ہے کیا اسکی خوراک میں خرچ ہوا کتنا حفاظت مال میں  
خرچ ہوا ہے کتنا اسکو نفع ملیگا

۱۲۸۔ جس طریق سے کام کر نیوالے کو اور راجہ کو فائدہ ہو اس طریق کو دیکھ کر راجہ پر محصول لائو تو جو راجہ پر محصول  
۱۲۹۔ جیسے جو تک اور پھر اور پھر اور پھر ایسے کھانیکے لائق چیزوں کو قصور قصور اکھائے ہیں اسی  
طرح راجہ راج سے محصول سالانہ کو قصور قصور لیوے۔

۱۳۰۔ پیش اور سونے کے نفع میں سے پچاسواں حصہ لیوے وہاں کے نفع میں آٹھواں یا  
چھٹھواں یا بارھواں حصہ لیوے زمین کی عمدگی وغیرہ کی اور جو تنے کی محنت و برکت کو دیکھ کر محصول تجویز کری

तेषां ग्राम्याणि कार्याणि शयकार्याणि चैव हि ॥ राज्ञोऽन्यः  
सचिवः स्निग्धस्तानियश्चेदतन्द्रितः ॥ १२० ॥ नगरे नगरे चैकं  
कुर्यात्सर्वार्थचिन्तकम् ॥ उच्चैः स्थानं धीरस्य न सत्राणामि-  
नग्रहम् ॥ १२१ ॥ सताननुपरिक्रामेत्सर्वानेव सदा स्वयम् ॥ ते-  
षां च तं परिरायेत्सम्यग्वाङ्मेयुतचरैः ॥ १२२ ॥ राज्ञो हिरसाधि-  
कृताः परस्वादायिनः शदाः ॥ मृत्याभवन्ति प्रायेण तेभ्यो र-  
क्षोदिमाः प्रजाः ॥ १२३ ॥ ये कार्यिकेभ्योऽर्थमेव हस्तीयुः पाप-  
चेतसः ॥ तेषां सर्वस्वमादाय राजा कुर्यात्प्राप्तवानम् ॥ १२४ ॥ रा-  
जकर्मसु युक्तानां स्त्रीणां ये व्यजनस्य च ॥ प्रत्यहं कल्पयेद्वृत्तिं  
स्थानकर्मानुरूपतः ॥ १२५ ॥

۱۲۰- جو وزیر عظم نہایت عاقل دار السلطنت میں راجہ کے پاس رہے والا ہو وہ سستی کو چھوڑ  
کر گانون اور نگر اور پور کے مالکو کا کام اور دیگر کاموں کو بھی دیکھتا اور جانتا ہے۔  
۱۲۱- ہر ایک نگر میں ایک ایسی جوتمام مطلبیوں کا سوچنے والا ہو رکھے اور ایک مکان بڑا  
ادنیٰ جیسا مکان روپ بنادے وہ مکان ایسا خوبصورت ہو جیسے تیار و ہمین چاند ہے  
۱۲۲- وہ وزیر عظم گانون اور نگر وغیرہ کے مالکو کو بے مطلب بھی وقتاً فوقتاً اپنی قوت سے  
دیکھتا اور خزانوں کے وسیلے سے سب کے من کی بات بجالانے۔  
۱۲۳- راجہ کے اکثر عمدہ وارد و سکر کا مال لے لیا کرتے ہیں اور ظالم تہمین سوا سطل ان کے  
ہاتھ سے رعیت کی حفاظت کرے۔  
۱۲۴- دلیپن پاپ کھنے والے جو عمدہ دار رعیت سے روپیہ لیتے ہیں راجہ ان کی تمام جائز  
منصوب کرے اور مالکوں راج سے باہر نکالی دے۔  
۱۲۵- جو عورت نوکر و چاکر راجہ کا کام کرتے ہوں ان کی وجہ سماش ان کے روزمرہ کے کام  
کے موافق مقرر کرے۔

گرامسٹاधिपतिं कुर्याद्दशग्रामपतिं तथा ॥ विंशतीं शंशते शं-  
चमहस्यपतिमेव च ॥ ११५ ॥ ग्रामदीवान् समुत्पन्नान् ग्रामिकः  
शनकैः स्वयम् ॥ शंसे द्वा मश शायशेशो विंशती शिनम् ॥  
११६ ॥ विंशती शस्तु तत्तर्वशते शाय निवेदयेत् ॥ शंसे द्वा मश  
तेशस्तु सहस्यपतये स्वयम् ॥ ११७ ॥ ग्रामिणः प्रदेयानि प्रत्यहं  
ग्रामवासिभिः ॥ अन्नपाने च नादीनि ग्रामिकास्तान्यवा मुया-  
त् ॥ ११८ ॥ दशी कुलक्षुभं जीत विंशीयं च कुलानि च ॥ ग्रामं ग्र-  
मशताध्यक्षः सहस्राधिपतिः पुंसम् ॥ ११९ ॥

۱۱۵۔ لیاقت کے موافق کسی کو ایک گائون کا کیو دسل گائون کا کیو بین گائون کا  
کیو تلو گائون کا کیو ہزار کا مالک کرے۔

۱۱۶۔ گائون بین کچھ واردات ہوتو گائون کا مالک آہستگی دسل گائون کے مالک سے  
کے اور وہ بین گائون کے مالک سے کہے۔

۱۱۷۔ بین گائون کا مالک تلو گائون کے مالک سے کہے اور وہ ہزار گائون کے  
مالک سے کہے۔

۱۱۸۔ ہر دوز جو حصہ راجہ کا مثل اناج اور پان اور لکڑی وغیرہ گائون کے رہنے والوں  
سے لینے کے لائق ہے۔ اسکو گائون کا مالک لیوے۔

۱۱۹۔ دسل گائون کا مالک ایک کل کی مقدار کے موافق زمین اپنے گزراہ کے  
واسطے لیوے اور بین گائون کا مالک پانچ کل کے موافق لیوے اور تلو گائون کا مالک ایک گائون  
درجہ متوسط کو کیو اور ہزار گائون کا مالک ایک پورا اپنے گزراہ کے واسطے لیوے۔

چھیل سے ایک ہل چکا دے ایسے دوہل سے چھہرہ زمین جوتی جائے آہندہ زمین کو کل کہتے ہیں۔

ساماسیनाسوپایانامپیشاڈیتا: ॥ ساماساڈی-  
 شانسنتینیتیراڈاभिहड्ये ॥ १०६ ॥ यथोद्धतिनिर्दिताक-  
 संधानचरसति ॥ तथारक्षेन्पूराहंन्याचपरिपन्थिनः ॥  
 ११० ॥ मोहाज्ञाजान्मराहंयः कर्मयत्यनवेसया ॥ सोऽचिराद्-  
 श्यतेराज्याजीविताच्चसवान्धवः ॥ १११ ॥ शरीरकर्मणातथा-  
 गाः क्षीयन्ते प्राणिनां यथा ॥ तथा राज्ञामपि प्राणाः क्षीय-  
 न्ते राष्ट्रकर्मणा त ॥ ११२ ॥ राष्ट्रस्य संग्रहे नित्यं विधानमिदमा-  
 चरेत् ॥ सुसंगृहीतराष्ट्रो हि पार्थिवः सुखमेधते ॥ ११३ ॥ इयो-  
 स्याराणां पंचानां मध्ये गुल्ममधिष्ठितम् ॥ तथा ग्रामशता-  
 नां च कुर्याद्राष्ट्रस्य संग्रहम् ॥ ११४ ॥

۱۰۹-سام وغيره چار تير دن مين سام وونکي تعريف نيٺت لوگ واسطے ترقی راج کرتے مين۔

۱۱۰-جب طرح کھیتی کرنا والا غلہ کی حفاظت کرنا ہے اور گھاس وغیرہ ادا کھاڑو لٹا ہے سطح راج حفاظت راج کی کرتے اور دشمنوں کو نیست و نابود کرے۔

۱۱۱-جوراج پر دن غور کے موہ سے راج کو دکھ دیتا ہے وہ تھوڑے دنوں میں اپنا راج اور پران اور بھائی بندوں کو نابود کرتا ہے۔

۱۱۲-جب طرح شہر کو دکھ دینے سے پران کو دکھ ہوتا ہے سطح راج دینی عیت اس کے دکھی ہونے سے راج کا پران دکھ پاتا ہے۔

۱۱۳-راج کی ترقی کی واسطے ہمیشہ اس زمین پر چلے جس راجہ کسی راج نے اچھی طرح ترقی پائی ہے وہ راجہ خوشی تمام ترقی پاتا ہے۔

۱۱۴-وہ تین پانچ گاؤں کے بیچ میں ایک حفاظت کا مکان بنادے زمین واسطے انتظام کرنے کے اپنے اہلکاروں کو رکھے۔

नित्यमुद्यतदराडस्य कृत्स्नमुद्दिजते जगत् ॥ तस्मात्सर्वा शोभ-  
 तानि दराडे नैव प्रसादयेत् ॥ १०३ ॥ अमाययैव वर्त्तत न कथंच-  
 न मायया ॥ बुद्धे तारि प्रयुक्तांच मायां नित्यं सुसंयतः ॥ १०४ ॥  
 ॥ नास्य छिद्रं परो विद्याद्विद्या छिद्रं परस्य तु ॥ ग्रहे त्कूर्म इवां-  
 गानिरसे द्विवरमात्मनः ॥ १०५ ॥ वक्वच्चिन्त्येदर्या सिंहवच्च-  
 पराक्रमेत ॥ हक्वच्चालुस्येत शशवच्च विनियतेत् ॥ १०६ ॥  
 एवं विजयमानस्य येऽस्यस्युः परियन्थिनः ॥ तानानयेद्वशं स-  
 र्वान्नामादिभिरुपक्रमैः ॥ १०७ ॥ यदि ते तु न तिष्ठेयुः पापैः  
 प्रथमैस्त्रिभिः ॥ दराडे नैव प्रसादयेत्ताञ्छनकैर्वशमानयेत् ॥  
 १०८ ॥

۱۰۳- جسکی منزلت پرست بر اس راجہ سے تمام عالم ڈرتا ہے اسلئے منرا کے ویلے سے  
 سب جانداروں کو اپنے اختیار میں کرے۔

۱۰۴- آپ فریٹے کرے اور دشمن کے فریب کو ہمیشہ جاتا رہے اور اپنے تابعداروں  
 کی حفاظت تدبیر نیک سے کرے۔

۱۰۵- اس راجہ کے عیب کو دوسرا بھانے گر راجہ دوسرے کے عیب کو جان لیوے طرح  
 کچھ اپنے اعضا کو چھپاتا ہے اس طرح اپنے عیب کو چھپا دے۔

۱۰۶- بگلا کی طرح اپنے مطالب کا غور کرے شکھٹے مانند پراکرم کرے بھیڑیا کی طرح خیر  
 کو لیوے خرگوش کی طرح بھاگے۔

۱۰۷- اس طرح فتح یافتہ راجہ اپنے دشمنوں کو سام لان ڈھبھیلان چارتدبیروں کو اپنے اختیار میں کرے۔

۱۰۸- جب دشمن اور کئی مہتی میں تدبیروں کا یو میں نہ آئے کو دھڑی کے ویلے سے کو  
 قابو میں لاوے۔

۱۰۹- ملالہ وصلح - یہ بچہ وغیرہ دنیا کا منرا - دشمن کی فوج میں پھوٹ کرنا۔

सयौऽनुषङ्गतः प्रोक्तो यो धर्मः सनातनः ॥ अस्माद्दर्मान्न-  
 च वेतसन्नियो घनरगोरिषुत् ॥ ६८ ॥ अलव्यं चैव लिप्सेतल-  
 व्यं रसेत्यलतः ॥ रसितं वद्वेये चैव वज्रपात्रेषु निःसिपेत् ॥  
 सतच्चतुर्विधं विद्यात्सुखार्थप्रयोजनम् ॥ अस्य नित्यमनुष्ठा-  
 नं सम्यक्कुर्यादतन्निः ॥ १०० ॥ अलव्यमिच्छेद्दरादेन लब्धं र-  
 सेन वसेत् ॥ रसितं वद्वेये हृद्या वज्रं रानेन निःसिपेत् ॥ १०१ ॥  
 नित्यमुद्यतदराडः स्थानित्यं विद्वत्पौरुषः ॥ नित्यं संवृत-  
 सवार्यो नित्यं छिद्रानुसार्यरे ॥ १०२ ॥

۹۸۔ پہلوؤں کے دھرم بے عیب قدیم کو کہا کستری لوگ لڑائی میں دشمنوں کو مارتے ہوئے  
 اس دھرم کو نہ چھوڑیں۔

۹۹۔ جو چیزیں ملی راجا کے ملنے کی خواہش کرے اور جو مل گئی اسکی حفاظت توجہ کے ساتھ  
 کرے محفوظ چیزوں کو بڑھاد اور بڑھی ہوئی چیزوں کو سب پاگردن میں قائم کرے۔

۱۰۰۔ راجہ کے پرشارتھے (یعنی شوگر وغیرہ) کا پرپون بھی چار طرح کا ہے اسکو طائے اور شیشی کو  
 ترک کر کے ان چاروں کا سپون لینے استعمال کرے جو اور کے شلوک میں کے گئے۔

۱۰۱۔ جو چیزیں ملی اسکی خواہش کرے اور جو نہ ملے دیر سے حاصل ہوئی مثل مہمانہ وغیرہ  
 اسکی حفاظت کرے جسکی حفاظت دیکھنے سے ہوتی ہے اسکی ترقی دیکھنے سے کرے بیان شروع  
 چیز کو دان سے قائم کرے۔

۱۰۲۔ باقی گھوڑا وغیرہ کی سواری اور جنگ کے قاعدے سیکھنے کی مہارت کرے اور استر  
 وغیرہ کے ویلے سے اپنی شجاعت کی شہرت ہمیشہ کرے اور منہ اور اچار و چہرہ وغیرہ کو  
 ظاہر کرے اور دشمن کے عیب کو جاندار سے ان سب باتوں کو ہمیشہ کرتا رہے۔

یعنی جو تمام جاری اور بان سپند اور نیلای اور زمین اس ہوتی وغیرہ ہنگام رات برہم کریم ہی میں گھر رہا  
 ان لوگوں کو ان چیزوں کو دے۔



नसुप्तन्नविसन्नाहंनमननिरायुधम्॥नायुधमानं पश्यन्ननय-  
रेवासमागतम्॥६२॥नायुधव्यसनप्राप्तंनार्त्तनातिपरीक्षितम्  
॥नमीतंनयरावृत्तंसतान्धर्ममनुस्मरन्॥६३॥यस्तुभीतःपरा-  
वृत्तःसंग्रामेहन्यतेयैः॥भर्तुर्यदुष्कृतंकिंचितत्सर्वप्रतिपद्य-  
ते॥६४॥यद्यास्यसुकृतंकिंचिरमुत्रार्थमुपार्जितम्॥भर्तात-  
त्सर्ववार्त्तेपरावृत्तहतस्यतु॥६५॥रथाश्वंहस्तिनं चबंधनं  
धान्यं पशून्त्रयः॥सर्वद्रव्याणिकुण्डं च यो यज्जयति तस्य त-  
त॥६६॥राज्ञश्चरयुःस्वारमित्येषा वैदिकी श्रुतिः॥राज्ञा च-  
सर्वयोधेभ्यो रातव्यमष्टयजितम्॥६७॥

۹۲- جو شخص سوتا ہو یا زہ اسکے بدن میں ہتھیار ہوڑائی کا ارادہ نہ کرتا ہو  
کسی کے ساتھ تماشہ دیکھنے کو آیا ہو ایسے آدمیوں کو بھی نہ مارے۔

۹۳- جسکا ہتھیار ٹوٹ گیا ہو بسبب جانے فرزند وغیرہ کے رنج میں ہو زخم شدید میں مبتلا  
ڈرا ہو ہوڑائی سے بھاگا ہو یا ہوان سب کو چھپے ہو گو کچھ دھوم کو خیال کر کے نہ مارے۔

۹۴- جو آدمی ڈر کر بھاگ کر ڈرائی میں دوسرے کے ہتھیار سے زخمی ہو کر مارا گیا ہے وہ اپنے  
مالک کے پاپ کو پاتا ہے۔

۹۵- جو آدمی بھاگ کر مارا گیا اسکا پتہ (یعنی نتیجہ فعل نیکی) سوگ کے ملنے کیواسطے جو فرام  
ہوا ہو اسکو اسکا مالک پاتا ہے۔

۹۶- تھک گھوڑا بھٹی۔ چھتری۔ دھن دھانیہ چارپایہ عورت اور تمام دولت سوتا ہوا چاہے  
کے۔ سیاہ و تیل وغیرہ ان سب کو فتح کرے وہی اسکا مالک ہوتا ہے۔

۹۷- سوتا چاندی زمین وغیرہ جو عمدہ چیزیں فتح ہون انکا فتح کرنے والا اپنے راجہ کو  
دلویت یہ دید میں لکھا ہے اور راجہ اس چیز کو ان سب پہلو انون کو تقسیم کرے چھون نے  
ملک فتح کیا ہو۔

پاچھسھینیشیوہا اشدھان تپےवच ॥ अत्यस्वावहवाप्रेत्य  
 शनस्यावाप्यतेफलम् ॥ ८६ ॥ समोत्तमाधर्मैराजात्वाहृतःपा-  
 लयन्प्रजाः ॥ ननिवर्तेतसंग्रामात्सात्रंधर्ममनुस्मरन् ॥ ८७ ॥  
 संग्रामेष्वनिवर्त्तीत्वंप्रजानांचैवपालनम् ॥ शुश्रूषात्राहारा  
 नांचराजांश्चेयस्करंपरम् ॥ ८८ ॥ आहवेयुमिथोऽन्योन्यंजि  
 घांसन्मोमहीक्षितः ॥ युध्यमानाः परंशक्त्यास्वर्गायान्यपरां  
 सुरवाः ॥ ८९ ॥ ननुदैरायुर्धैर्यायुध्यमानेसोरिदम् ॥ नव  
 र्तिभिर्नापिदिग्धैर्नाग्निज्वलिततेजसैः ॥ ९० ॥ नचहन्यात्स  
 लारुहंनलीचंनकतांजलिम् ॥ नमुक्तकेशंनासीनंनतवा-  
 स्मीनिवादिनम् ॥ ९१ ॥

۸۶- جو براہمن ان لیتا ہے اسکی عبادت کی بزرگی اور دینے والے کی توفیق کی وجہ  
 دن کا پھل تھوڑا یا سب پر لوگ مین لیتا ہے۔

۸۷- جو راجہ رعایا کی پرورش کرتا ہو کشتی کے وھرم کا فیال رکھتا ہو اگر اسکو اس  
 پر ایسا چھوڑا راجہ لڑائی کے واسطے بلا دے تو اسکا مقابلہ کرے لڑائی سے منصفہ ہوے۔

۸۸- جنگ میں ثابت قدم رہنا رعیت کی پرورش کرنا براہمنوں کی سیو کرنا یقین کا راجہ  
 کے پر م کلیان کرنے والے ہیں۔

۸۹- لڑائی میں مارتے ہوئے اور لڑائی میں منصفہ نہ پھیر کر جو کشتی مرنے والے سو گمین  
 جاتا ہے۔

۹۰- جو ستھار زہر سے کھجائے گئے اور خشکے اوپر لکڑی اور اندر سے لوہا ہے اور جس تیرکی  
 گالنسی کرنے کی صورت ہے اور جو پتھیا راگ سے گرم کیا گیا ہے پتھیا راگ لڑائی میں نہ لڑتا۔

۹۱- زمین پر کھڑا ہوا اور تخت اور پتھر پڑنے والا اور جسے شتر کے بال کھلے ہوں اور  
 ایسا کہنے والے کو کہ میں تمھارا ہوں اور شیخے ہوئے کو نہ مارے۔

अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चितः॥तेऽस्यसर्वोप  
वेक्षेरन्परांकार्याणिकुर्वताम्॥८१॥आवृत्तानांशुतकुला-  
दिप्राराणांभूजकोभवेत्॥न्याराणामस्योद्योयनिधिबीहोऽ  
भिधीयते॥८२॥नतंस्तेनानचामित्राहरन्निनचनश्यति॥त-  
स्माद्वाज्ञानिधातव्योवाह्यरोह्यस्योनिधिः॥८३॥नस्क-  
न्तेनव्ययतेनविनश्यतिकर्हिचित॥वरिष्ठमग्निहोत्रेभ्योवा-  
ह्यरास्यमुखेद्वतम्॥८४॥सममवाह्यरोरानंदिशुणांवाह्य-  
राब्रुवे॥प्राधीतेशतसाहस्रमनन्तंवेदपाशो॥८५॥

۸۱- ہر ایک جگہ پر ایک ایک عالم عمدہ دارالانواع اقسام کا رکھے وہ عمدہ دارالرحم کے  
نوکروں کا کام سمجھے۔

۸۲- جو برہمن گرو فل میں دیا کو پھر رکھ اپنے باپ کے گھر آدین راجہ انکا پوجن کرے  
وہ برہمن راجہ کے خزانہ بے زداں میں۔

۸۳- جو دولت و سامان برہمن کو دیا جاتا ہے وہ لازوال ہے اسکو چور چور اسین سکتا  
پس راجہ اپنی دولت سے ایسے برہمنوں کی سیوا اور بجا کرے۔  
۸۴- برہمن کے مکھ میں جو ہون کیا گیا یعنی دولت اور تندرہ دن اور شبیوں کی جو انکو بھوج کرایا  
گیا خواہ پریشیر کی خوشی کیوں اسطے بھوجن کرایا گیا وہ گنہگار نہیں نہ خراب جادے نہ دکھ بوجی  
اور الیا ہون (رہنے پر ہم بھوج) اگن ہون سے بڑا ہے۔

۸۵- سو کہ برہمن کے کشتری وغیرہ کو جعفر دیوے اسقدر ملتا ہے سو کہ برہمن کو دینے  
سے دو چند ملتا ہے وید کے ایک سا کھا پڑھے ہوئے کو دینے سے لاکھ گنا ملتا ہے  
تمام وید پڑھے ہوئے کو دینے سے بے نہایت پھل ملتا ہے۔

۸۶- برہمن اسکو کہتے ہیں کہ جو اپنے دن و رات کے معوم میں قائم ہو کر پریشیر کی تپاش کرتا ہے اور گیانی گیانی ہو

تस्याہاسوधमन्धनधान्येनबाह्नैः॥ ब्राह्मणैः शिल्पिभि-  
र्यज्ञैर्यवमेनोरकेनच॥७५॥ तस्यमध्येमुपर्याप्तंकारयेद्गृहमा-  
त्मनः॥ गुप्तं सर्वतुक्तं शुभ्रं जलहससमन्वितम्॥७६॥ तदध्या-  
स्योद्भेदाध्यासवर्गास्तक्षणां चिताम्॥ कुलेमहति सभू-  
तां ह्यारूपगुणां चिताम्॥७७॥ पुरोहितं च कुर्वीत ह्यगुणां दे-  
वचर्त्विजाम्॥ तेऽस्य गृह्यारिक्माणि कुर्युर्वै तानि कानि-  
च॥७८॥ यजेत राजा क्रतुभिर्विविधैरामदक्षिणैः॥ धर्मार्थवै-  
वचिप्रैश्चोद्याद्गोमान्धनानिच॥७९॥ सांवत्सरिकमासे च  
राज्ञा च हारयेद्वलिम्॥ स्याच्चाद्याय परोलोके यत्तत्तपितवन्  
यु॥ ८०॥

۷۵۔ قلم کے اندر یہ سامان موجود ہے یہ تقیہ ہے۔ دھن، سوہا، سوار، براسن، کراکر  
ختر یعنی کل۔ گھاس۔ پانی

۷۶۔ اس قلم کے اندر اپنا مکان ایسا بناوے کہ زمین علیہ علیہ ثورات و دیوتاؤں تقیہ ہے  
اکن کے گھر ہوں اور گھاسین بھی ہو اور سب فضلوں کے پھل پھول بھی موجود ہوں مکان سفید  
اور آئین باؤلی کنواں درخت ہوں۔

۷۷۔ اس مکان میں بیٹھ کر ایسی تم قوم عورت کے ساتھ شادی کرے کہ چھ خاندان کی  
ہو اور دل کو پیاری ہو اور خوبصورت و نہر مند و نیک خلعت ہو۔

۷۸۔ پروہت اور لوگ (یعنی گیارہ گیارہ) ان دونوں کو اختیار دیں دونوں اس کے ہر قیود کو کرے

۷۹۔ ایک پکار کی گیت پڑھتے دے کرے اور دھرم کی بات برائے ہوں کو بھوک دینے  
مکان و چار پائی و زیور و کپڑا وغیرہ ا دھن کو دیوے۔

۸۰۔ راجہ اپنی راج سے اپنا حصہ سالانہ لےوے اور دیگر احکام کی تعمیل کرے اور تمام رعایا کو  
مثل اپنی اولاد کے پرورش کرے اور رعیت اسکو باپ کی طرح سمجھا کر اس کے حکم کی تعمیل کرے

धनुर्दुर्गमहीदुर्गमब्जुर्गवार्द्धमेववा॥ न्दुर्गगिरिदुर्गम्यासमा-  
 श्रित्यवसेत्पुरम्॥ ७०॥ सर्वेशात्प्रयत्नेनगिरिदुर्गसमाश्रयेत्  
 ॥ संवाहिबह्वगुरायेनगिरिदुर्गविशिष्यते॥ ७१॥ त्रीशयद्यान्या  
 श्रितास्त्वेवांशुगगर्ताश्रयाऽप्सराः॥ त्रीशयुत्तराशिराक्रमशः  
 स्रवंगमनरामराः॥ ७२॥ यथादुर्गाश्रितानेतान्क्षोपहिंसन्ति  
 शत्रवः॥ तथारथोनहिसन्ति न्दुर्गसमाश्रितम्॥ ७३॥ एक  
 शतं योधयति प्राकारस्थो धनुर्धरः॥ शतं दशमहत्त्वाशितमा-  
 दुर्गं विधीयते॥ ७४॥

۷۰۔ جبکہ چاروں طرف پانی نہ ہو جان کی زمین ٹھنڈی ہو جبکہ چاروں طرف پانی ہو جبکہ  
 چاروں طرف درخت ہوں جبکہ چاروں طرف آدمی جنگجو ہوں جبکہ چاروں طرف پیادہ ہوں  
 یہ چھ مقامات نائنڈ قلعہ کے ہیں ایسے مقام پر راجہ قیام کرے بیان پروردگار کی فرج  
 نہ جاسکے۔

۷۱۔ جب ملک کے چاروں طرف پیادہ ہیں اس ملک میں قیام کرے جب تک ایسا ملک ملے  
 تب تک دوسرے ملک میں قیام نہ کرے ان سمجھوں میں ایسا ملک بہت ہی اچھا ہے۔  
 ۷۲۔ پہلے تین قلعہ میں ہر ن۔ چوہا جل کے جیور رہتے ہیں پچھلے تین قلعہ میں ستورا آدمی آؤ  
 رہتے ہیں۔

۷۳۔ جطرح ہرن وغیرہ اپنے قلعہ میں رہتے سے دشمنوں سے تکلیف نہیں پاتے  
 اسی طرح راجہ قلعہ میں رہنے سے دشمنوں سے تکلیف نہیں پاتا۔

۷۴۔ قلعہ میں رہنے والا ایک کماندار بیچے رہنے والے سوار آدمی سے لڑائی کر سکتا ہے  
 اور قلعہ میں رہنے والے ایک ستورا آدمی بیچے رہنے والے دس ہزار آدمی سے لڑائی کر سکتا  
 ہیں ایسے قلعہ بنانے کا آپدیش کرتے ہیں۔

अमात्येदराड आयतोदराडेवैनयिकीजिया ॥ नृपतीकोशरा  
 देचदूतेसचिचिपर्ययो ॥ ६५ ॥ दूतसबहिसन्धतेभिनत्येनच  
 सहतान ॥ दूतस्तत्कृततेकर्मभिद्यचेयेनवानवा ॥ ६६ ॥ सवि  
 दारस्यकत्येवनिशुद्धेद्वि-तचेष्टितैः ॥ आकारमिंगितंचेष्टांम  
 त्येवुचचिकीरितम् ॥ ६७ ॥ बुध्वाचसर्वतत्वेनपराजचिकी-  
 रितम् ॥ तथाप्रयत्नमातिष्ठेद्यथात्मानंनपीडयेत् ॥ ६८ ॥ जां-  
 गलंसम्यसम्पन्नमार्थप्राप्तमनाविलम् ॥ रम्यमानतसामन्नं  
 स्वाजीव्यंदेशमाचसेत् ॥ ६९ ॥

۶۵- وزیر کے اختیار میں ہنرا ہے اور سزا کے اختیار میں افساف ہے راجہ کے اختیار میں  
 خزانہ اور راجہ سے دوت کے اختیار میں صلح اور لڑائی ہے -  
 ۶۶- دوت ہی بگڑے ہوئے کو ملاتا ہے اور ملے ہوئے کو بگاڑتا ہے جس سے ملاب اور بگاڑ  
 ہوتا ہے وہ کام دوت ہی کرتا ہے -

۶۷- سب اہلکاروں میں دوت ہی راجہ کی ہمت اور اشارہ اور آثار اور قیافہ سے راجہ کے  
 کرنے کے لائق سب کام کو جانے -

۶۸- اور دوسرے راجاؤں کے دل کی اصل بات اپنی حکمت سے معلوم کرے اور ایسی تدبیر کرے  
 کہ جس سے اپنی آتما کو تکلیف نہ ہو -

۶۹- جس ملک میں ٹھوڑا پانی اور کھاس ہو اور میت ہو اور دھوپ اور غلہ ہو اسکو  
 جانگل دیش کہتے ہیں آئین اور جس ملک میں اچھے آدمی ہوں اور بیمار ہوں اور وہ  
 ملک پھل و پھول لٹاؤ وغیرہ سے منور ہو اور وہاں کے سب سمت کے آدمی ملازم ہوں اور  
 زراعت و تجارت وغیرہ دولت ملنے کی تدبیریں وہاں پر باسانی تمام ممکن ہوں ایسی  
 ملک میں راجہ قیام کرے -

नित्यं तस्मिन्समाञ्चलः सर्वकार्याणि निःसिपेत ॥ तेन सा ई-  
 विनिश्चित्य ततः कर्मसमाश्रयेत् ॥ ६६ ॥ अन्यानपि प्रकुर्वीत  
 शुचीनाञ्ज्ञानवस्थितान् ॥ सम्यगर्थसमाह्वं न मात्यान्सुप-  
 शीक्षितान् ॥ ६७ ॥ निर्वर्त्तेतास्य यावद्भिरितिकर्त्तव्यतान्भिः ॥  
 तावतोऽतन्निदानं सान्द्रकुर्वीत विचक्षणान् ॥ ६८ ॥ तेषाम-  
 र्थे नियुक्तीत शूरान् सान्द्रकुलोद्भूतान् ॥ शुचीनां कर्मकर्त्तृ-  
 भीरून् च निवेशने ॥ ६९ ॥ दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशार-  
 दम् ॥ इंगिताकारवेदज्ञं च चिरसंकुलोद्भूतम् ॥ ७० ॥ अचुर-  
 त्तः शुचिरसः स्मृतिमान् देशकालचित् ॥ वपुष्कान्भीतभीर्वा-  
 ग्मी दूतोरञ्जः प्रशस्यते ॥ ७१ ॥

۵۹- اعتماد پکارا اسی بر این فریر کے ساتھ یقین کر کے کام شروع کرے۔  
 ۶۰- جو آدمی پاک بین اور سب باتوں کے جانو والا اور اچھی راہ سے دولت حاصل کرے  
 بین اور عمدہ طریق سے جنگا اٹھان ہو گیا ایسے اور بھی وزیر مقرر کرے۔  
 ۶۱- جتنے آدمیوں سے مطلب حاصل ہو سکے اتنے آدمیوں کو نوکر رکھے مگر وہ آدمی چلاک  
 و ستعد ہو شیار و کام کرنے میں صاحب بہت ہوں۔  
 ۶۲- ان آدمیوں میں جو ہوشیار و عمدہ خاندانی و پاک و نجو ہوں و صاحب ہوں انکو وہ کام  
 سپرد کرے جس میں دولت کی پیدائش ہو اور جو آدمی و زمینوں کے بین انکو قلعہ کے اندر رکھے  
 ۶۳- جو آدمی شاستر کا جاننے والا اور ارشاد دین اور قیافون کا سمجھنے والا اور پاک اور  
 ہوشیار اور عمدہ خاندان ہو سکود دولت دینی سفیر وکیل مقرر کرے۔  
 ۶۴- جو دولت اپنے مالک کو خوش رکھنے والا و پاک و ہوشیار و سب باتوں کو یاد رکھنے  
 والا و ملک و وقت کا جاننے والا و اچھی صورت و شکل والا و اچھی تقریر کو قبول و خوش نما  
 وہ دوست راجہ کو چھو ہوتا ہے۔

व्यसनस्य च तस्योच्च व्यसनं कष्टमुच्यते ॥ व्यसनयोऽधोव्रज-  
 तिरवर्थात्यवसनीकृतः ॥ ५३ ॥ मीलाब्धस्त्रविदः शूराल्लब्ध-  
 लक्षान्कुलोज्जतान् ॥ सचिवाश्चप्रचाद्यैवाप्रकुर्वीतपरीक्षिता-  
 न् ॥ ५४ ॥ अपियत्सुकरं कर्म तदप्येकेन दुष्करम् ॥ विशेषतो  
 सहायेन किं नुराज्यं महोदयम् ॥ ५५ ॥ तैः सार्धं चित्तवनि-  
 त्यं सामान्यमधि विधहम् ॥ त्यानं समुदयं गुप्तं लब्धप्रम-  
 नानि च ॥ ५६ ॥ तेषां स्वस्वमभिप्रायमुपलभ्य पृथक् पृथक् ॥  
 समस्तानां च कार्येषु विदध्याद्वितमात्मनः ॥ ५७ ॥ सर्वेषां तु  
 विशिष्टेन ब्राह्मणेन विपश्चिता ॥ संवयेत्यसंमंत्रराजा वाङ्म-  
 रायसंयुतम् ॥ ५८ ॥

۵۳- ان اٹھارہ کلام میں ہیں اور موت میں پہلے نہ ہوں ہے کیونکہ میں دال انزک میں  
 جاتا ہے اور جسے میں کو ترک کیا وہ منزل کے بعد سوگ میں جاتا ہے اور میں نے  
 ۵۴- جو لوگ شستر کے جاننے والے۔ و شجاع و حکم انداز ہوں اور اچھے خاندان میں پیدا  
 ہوتے ہیں ان کا امتحان لیکر راجہ انکو اپنا وزیر بنا دے اور وہ وزیر بعد میں سات یا آٹھ  
 ۵۵- جو کام سہل ہے وہ بھی کیلے نہیں ہو سکتا اور راج کا جو بڑا بھاری کام ہے اسکی  
 ۵۶- ان وزیروں کو ساتھ امور و مفصلہ ذی پر روز بروز کرے اور صبح و شام و غرضانہ و شہر و راج و رخصت خانہ وغیرہ  
 و فوج کی پرورش و غلہ و سونا وغیرہ کی سپدائش کا مقام و اپنی و راج کی حفاظت اور  
 ہو کے دھن کو اچھے لوگوں کو دان دینا۔

۵۷- وزیر لوگ جو صلاح دین کے واسطے ملے با ایک ہی دفعہ سمجھ کر حکم مناسب دے  
 اپنا بھلا ہو۔

۵۸- سب وزیروں میں جو اچھا ہو اسکی ساتھ چھ گن والے پر مقرر دی صلاح کو بجا دے چھ گن  
 جو حکمیر لگا دے چھ لاکھ۔



پیشہ نئے ساہسندو ہر دھرمی سہا رتھ دھرمی ॥ ۴۷ ॥ ۴۸ ॥ ۴۹ ॥ ۵۰ ॥ ۵۱ ॥ ۵۲ ॥ ۵۳ ॥ ۵۴ ॥ ۵۵ ॥ ۵۶ ॥ ۵۷ ॥ ۵۸ ॥ ۵۹ ॥ ۶۰ ॥ ۶۱ ॥ ۶۲ ॥ ۶۳ ॥ ۶۴ ॥ ۶۵ ॥ ۶۶ ॥ ۶۷ ॥ ۶۸ ॥ ۶۹ ॥ ۷۰ ॥ ۷۱ ॥ ۷۲ ॥ ۷۳ ॥ ۷۴ ॥ ۷۵ ॥ ۷۶ ॥ ۷۷ ॥ ۷۸ ॥ ۷۹ ॥ ۸۰ ॥ ۸۱ ॥ ۸۲ ॥ ۸۳ ॥ ۸۴ ॥ ۸۵ ॥ ۸۶ ॥ ۸۷ ॥ ۸۸ ॥ ۸۹ ॥ ۹۰ ॥ ۹۱ ॥ ۹۲ ॥ ۹۳ ॥ ۹۴ ॥ ۹۵ ॥ ۹۶ ॥ ۹۷ ॥ ۹۸ ॥ ۹۹ ॥ ۱۰۰ ॥

۴۸۔ جو چیزیں کرو دھرم سے پیدا ہوتی ہیں وہ یہ ہیں۔ بدوں جانے عیب کو کہنا اپنے بل سے کام کرنا۔ دھرم سے کیونکر مار ڈالنا۔ دھرم کی عظمت کو نہ سنا۔ کیونکر دھرم سے عیب لگانا۔ دھرم سے کوئی اور نام نہ خواہ جو چیز دینے کے قابل ہے اس کو نہ دنیا سخت نہیں سے گفتگو کرنا۔ دھرم سے تاثر نہ کرنا۔

۴۹۔ اوپر جو دھرم کی باتیں وہ جب ترک کہہ آئے ہیں ان کی بڑی لالچ سے لینے لالچ کر کے وہ پیدا ہوتی ہیں اس واسطے لالچ کو حکمت عملی سے چھوڑنا چاہیے اس کو قابو میں کرنے سے سب قابو میں ہو جاتی ہیں اس بات کو عقل مند نے کہا ہے۔

۵۰۔ کام سے پیدا ہوتی چیزوں میں شہ اپنا۔ پالنا کھیلنا۔ عورت کی اطاعت نہ کرنا کھیلنا یہ چاروں ایک سے ایک زیادہ زبوں ہیں۔

۵۱۔ کرو دھرم سے پیدا ہوتی چیزوں میں دھرم سے مارنا۔ گالی دینا۔ دینے کے لائق چیز کو نہ دنیا بہترین ہمیشہ بہت زبوں ہیں۔

۵۲۔ یہ سب تو ایک جگہ رہتے ہیں ان میں درجہ بدرجہ ایک سے ایک زیادہ زبوں ہیں۔

بے بیخبر ہستیوں کی دنیا میں تیرا شہر ہے ॥ آنکھیں  
 کھلیں تو دنیا کی باتیں سنا کر دل سے ॥ ۴۳ ॥ رنج و غم  
 سے بے پروا ہو کر دنیا کی باتیں سنا کر ॥ جیتے ہو تو دنیا کی باتیں  
 سنا کر ॥ ۴۴ ॥ دھرم کا نام سنا کر ॥ دنیا کی باتیں  
 سنا کر ॥ ۴۵ ॥ دنیا کی باتیں سنا کر ॥ دنیا کی باتیں  
 سنا کر ॥ ۴۶ ॥ دنیا کی باتیں سنا کر ॥ دنیا کی باتیں  
 سنا کر ॥ ۴۷ ॥ دنیا کی باتیں سنا کر ॥ دنیا کی باتیں  
 سنا کر ॥ ۴۸ ॥ دنیا کی باتیں سنا کر ॥ دنیا کی باتیں  
 سنا کر ॥ ۴۹ ॥

۴۳۔ تین دن کے جاننے والوں سے تینوں دیکھ کر اٹھ اٹھ اور نیت جاننے والوں سے  
 نیت شاستر کو اور ہر دم دیا جانے والوں سے ہر دم دیا کو شستے اور حصول دولت کی توہیر  
 جاننے والوں سے کھیتی اور تجارت اور حفاظت چار پایہ وغیرہ کو سیکھئے۔

۴۴۔ رات دن اندریوں کو قابو میں کرنے کی کوشش کرے جو راجہ جیتندر سیلے  
 اپنے نفس پر غلبہ ہے وہ تمام رعایا کو اپنے اختیار میں رکھ سکتا

۴۵۔ دس چیز کام سے پیدا ہوتی ہیں اور آٹھ چیز کردہم سے پیدا ہوتی ہیں  
 اور ناکارک واجب ہے۔

۴۶۔ کام سے پیدا ہوتی چیزوں میں معروف ہونے سے راجہ کے دھرم اور راجہ کا  
 نامش ہو جاتا ہے اور کردہم سے پیدا ہوتی چیزوں میں معروف ہونے سے  
 راجہ آپٹ جاتا ہے۔

۴۷۔ جو چیزیں کام سے پیدا ہوتی ہیں وہ ہیں۔ شکر کھیلنا پالک کھیلنا دن میں  
 دو سو کاغذ کاغذ کرنا عورت کی خدمت کرنا۔ شراب پیکرست ہو جانا۔ ناچا۔ گانا بجانا  
 بے فائدہ کھوٹنا

ब्राह्मणान्पर्युयासीत प्रातस्तथा ययार्थिवः ॥ त्रेविद्यवृद्धा-  
 न्विदुषस्तिष्ठेतेषांचशासने ॥ ३७ ॥ वृद्धांश्चनित्यंसेवेतविप्रा-  
 न्चेदविदः शुचीन् ॥ वृद्धसेवीहिसततंरसोभिरपिपूज्यते ॥ ३८ ॥  
 तेभ्योऽधिगच्छेद्विनयंविनीतात्मापिनित्यशः ॥ विनीतात्मा  
 हिनृपतिर्नयिनश्यतिकर्हिचित् ॥ ३९ ॥ बहवोऽविनयान्गृह्य  
 राजानःसपरिच्छदाः ॥ बन्स्थात्रपिराज्यानिविनयात्यति  
 पेक्षिरे ॥ ४० ॥ वेनोविनद्योऽविनयान्गृह्यश्चैवयार्थिवः ॥ सु-  
 दासोयवनश्चैवसुसुरवोनिमिरेवच ॥ ४१ ॥ पृथुस्तुविनयाज्ञा-  
 ज्यंप्राप्तवान्मनुरेवच ॥ कुवेरश्चधनैश्चर्य्यब्राह्मणायचैवगा-  
 धिजः ॥ ४२ ॥

۴۷- راجہ وقت صبح شکر رگ برسام دیدن کے ارتھ جاننے والے براہمنوں کا درشن اور  
 اور پوچھ کرے اور انکا تابع حکم رہے۔  
 ۴۸- کچھ نر اور بڑھے وید پڑھنے والے براہمنوں کی ہر روز خدمت کرے ایسا پاکیزہ  
 سے بھی پوچھا پاتا ہے۔

۴۹- پیداہشی عقل اور ویڈنشا ستر کے پڑھنے سے جو عقل پیدا ہوا ان دونوں کی وجہ  
 اگر مزاج ملائم ہوتا ہم مجر اور یا وقی عاجزی کے براہمنوں سے عاجزی کیا کرے تاکہ کبھی نشا نہ  
 ۵۰- بہت راجہ عاجزی نکرے سے مع اپنی راجہ دولت کے بگڑنے اور جنگل میں رہنے  
 والے راجاؤں نے عاجزی کرنے سے راجہ کو پایا ہے۔  
 ۵۱- بین نش جنین کا بیٹا شد اس سکھ نم یہ سب راجا لوجہ عاجزی نکرے کے مٹ گئے۔  
 ۵۲- عاجزی کرنے سے پر قوت بن گئے راجہ پایا اور کبیر جگو ان کے بھندارے کے  
 جزا پنی ہوئے اور بوا ستر کستری سے براہمن ہو گئے۔

شुचिनासत्यसन्धेनयथाशास्त्रानुसारिरागा॥ प्रशोतुंशक्यतेदंडः  
सुसहायेनधीमता॥ ३१॥ स्वराष्ट्रेन्यायवृत्तःस्याद्भृशदंडश्चश-  
त्रुघ्न॥ सुहृत्त्वजिह्वाः स्निग्धेषुबाह्वारोबुधमान्वितः॥ ३२॥ स-  
बन्धतस्यनृपतेःशिलोज्जेनापिजीवतः॥ विलीर्यतेयशोलोके  
तैलविन्दुरिवाम्भसि॥ ३३॥ अतस्तुविपरीतस्यनृपतेरजितात्म-  
नः॥ संक्षिप्यतेयशोलोकेघृतविन्दुरिवाम्भसि॥ ३४॥ स्वस्वध-  
र्मोनिविद्यानांसर्वेषामनुपूर्व्यशः॥ वरानानामाश्रमारांचरा-  
जामृष्टोऽभिरक्षिता॥ ३५॥ तेनयद्यत्सम्यत्येनकर्तव्यंरक्षताप्र-  
जाः॥ तत्तद्वोऽहंप्रबक्ष्यामियथावदनुपूर्व्यशः॥ ३६॥

۳۱- جو راجہ پاکے مسح پونے والا و شاستری ریت پر چلے والا و پنہار کھنے والا و دشمن  
ہے وہ اس ہزار کے دیکھتا ہے۔

۳۲- اپنی راج میں انصاف کے موافق چلے اور دشمنوں کو ہراسے سخت دیوے اور  
دفا دار و دوستوں کے ساتھ مہربانی کرتا رہے اور کم منظور والے بڑا مہنوں کی عفو و تقصیر  
کرتے

۳۳- اس ریت سے راجہ رکھش اور اچھے سے اوقات گزاری کرے تو اس کا لیش لوک  
میں پھیل جائے جیسے پانی میں تیل کا بوند پھیل جاتا ہے۔

۳۴- جو راجہ اسکے برخلاف ہو اور جس نے اپنے نفس کو منسوب نہیں کیا اس کا لیش لوگ میں  
نہیں پھیلتا ہے جیسے گھی کا بوند پانی میں نہیں پھیلتا ہے۔

۳۵- جو درن اور آشرم اپنے اپنے دھرم پر ثابت قدم ہیں انھوں کی حفاظت  
کے لئے راجہ پیدا کیا گیا ہے۔

۳۶- بھوک جی مہاراج کہتے ہیں کہ اسے رش لوگو جو راجہ اپنے اہلکاروں کے رعایا  
کی حفاظت میں متوکل رہتے ہیں انکے کر نیکی لائق کا مونکو سلسلہ سے ہم آپ لوگوں کے کینکے

यत्रश्यामोलोहिताक्षोदशदश्वरतियायहा ॥ प्रजास्तत्रनसु-  
ह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति ॥ २५ ॥ तस्याहुः सम्यगोतांराजा-  
नांसत्यवादिनम् ॥ समीक्ष्यकारिणां प्राज्ञं धर्मकामार्थकोवि-  
दम् ॥ २६ ॥ तं राजा प्रसायत्सम्यक्प्रविर्गोराभिबर्जते ॥ का-  
मात्माविषमः सुदोदरादेनैव निहन्यते ॥ २७ ॥ दराडो हि सुम-  
हत्तेजो दुर्ध्वश्चाकृतात्मभिः ॥ धर्माद्विचलितं हन्ति नृपमेव  
सवान्धवम् ॥ २८ ॥ ततो दुर्गचराष्ट्रं च लोकं च सचराचरम् ॥ अं-  
तरिक्षगतांश्चैव मुनीन् देवाश्च योडयेत् ॥ २९ ॥ सोऽसहायेन-  
मूढेन लुब्धेनाकृतबुद्धिना ॥ न शक्योन्यायतोनेतुं सत्तै न वि-  
ययेषु च ॥ ३० ॥

- ۲۵- جهان سیاہ رنگ سبز آنکھ والا ناسخ کر نیوالا ڈنڈ گھوڑا ہے وہاں پر جا کو وہ  
ہینن ہوتا لیکن اس حالت میں کہ جب ڈنڈ دینے والا آدمی اچھی طرح سے ڈنڈ کو دے دے۔  
۲۶- جو راجہ سچ بولنے والا وغور کرنے والا اور دھرم و رتھ کام متینوں میں ہوشیار اچھی طرح  
سے جانتے والا ہی اس ڈنڈ کا دینے والا ہے۔  
۲۷- اس ستر کو دینے سے راجہ و دھرم و رتھ و کام سے بڑھتا ہے جتنے آدمی کامی کر دے  
پنج پن و سب ستر ہی مارے جاتے ہیں۔  
۲۸- مزا نہایت پر طحال ہے جو راجہ شاستر کو نہیں جانتا وہ ستر آدمی کو اختیار نہیں کر سکتا  
وہی ستر آدمی راجہ اور اسکے رشتہ داروں کو معیت و نالود کر دیتی ہے۔  
۲۹- وہی ستر قلعہ و آج و ساکن و متحرک عالم و انتر کش یعنی عالم بالا میں جو من و دیوتا کو  
پن آنکو تکلیف دیتی ہے  
۳۰- جو راجہ اپنا ہینن رکھتا اور چاہل اور لالچی اور دنیاوی عیش میں بھولا ہوا ہے وہ نہایت  
کے موافق مزا نہیں دے سکتا۔

समीक्ष्य सधृतः सम्यक् सत्त्वरंजयति प्रजाः ॥ अस्मीक्ष्य प्रणी-  
तस्तु विनाशयति सर्वतः ॥ १६ ॥ यदि न प्रणयेद्राजा दराडवं-  
ज्येष्ठतद्धितः ॥ शूले मत्स्यानि वाप्यस्यन्दुर्वलान्वलवत्तरा-  
॥ २० ॥ अद्यात्काकः पुरोडाशं च लिह्याद्विस्तथा ॥ स्वा-  
स्यं च न स्यात्कस्मिंश्चित्पर्वर्ते ताधरोत्तरम् ॥ २१ ॥ सर्वो दराडनि-  
तोलोको दुर्लभो हि शुचिनरः ॥ दराडस्य हि भयात्सर्वजगद्भोगा-  
यकल्पते ॥ २२ ॥ देवदानवगन्धर्वारसांसि पतंगो रगाः ॥ तेषां  
भोगाय कल्पन्ते दराडे नैव नियोदिताः ॥ २३ ॥ दुष्येयुः सर्ववर्णा-  
श्च भिक्षोर्न्म सर्वमेतव ॥ सर्वलोकप्रकोपश्च भवेद्दराडस्य विभ्र-  
मात् ॥ २४ ॥

۱۹۔ جب غور کر کے اچھی طرح سے منرا دیکھتی ہے تب تمام رعایا کو آرام ملتا ہے اور جب ہی  
منرا بد دن غور کر کے بے محابا دیکھتی ہے تب تمام رعایا کو سب طرح سے سزا دیتی ہے۔

۲۰۔ اگر راجہ سستی کر کے اشخاص (اجب) تقزیر کو منرا نہ دیوے تو زیر دست آدمیوں کو  
زبردست آدمی جیسا مشکل کر دیوں۔

۲۱۔ اگر منرا نہ تو دیوتاؤں کا حصہ کو کو ا کھا دالے اور کوئی مالک نہ ہے بلکہ پلٹ ہو جا

۲۲۔ جتنے جاندار ہیں سب منرا کے لائق ہیں پاک آدمی تا تو ان میں منرا کے خوف سے سب  
جاندار کام کرنے کی طاقت رکھتے ہیں۔

۲۳۔ دیوتاؤں کو کشش کبھی سانپ یہ سب منرا کے وسیلے سے کام کرنے کی طاقت  
رکھتے ہیں۔

۲۴۔ منرا کے لائق آدمیوں کو منرا نہ دینے سے اور منرا نہ دینے کے لائق آدمیوں کو منرا  
دینے سے تمام دن دشت ہو جائیگے اور مر جاد ا ٹوٹ جائیگی تمام عالم درہم برہم  
ہو کر ملبہ جائیگا۔

तस्माद्धर्मयमिदेषुसव्यवस्येन्नराधिपः॥ अनिष्टंचाप्यनि  
 षेवुतंधर्मनविचालयेत्॥ १३॥ तस्यार्थेसर्वभूतानांगोपारं  
 धर्ममात्मजम्॥ ब्रह्मतेजोभयंदराडमस्तुजत्पूर्वमीश्वरः१४  
 ॥ तस्यसर्वाशिभूतानिस्थावराशिचराशिच॥ भयाज्ञेगा-  
 यकल्पन्नेस्वधर्मानचलन्तिच॥ १५॥ तन्देशकालौशक्तिं  
 चविद्यांचावेस्यतत्त्वतः॥ यथार्हतःसंप्रगायेन्नेखन्याय-  
 वर्त्तिषु॥ १६॥ सराजापुरुषोदराडःसनेताशामिताचसः॥  
 चतुर्गामाश्रमाराणंचधर्मस्यप्रतिभुःस्मृतः॥ १७॥ दराडःशा-  
 स्तिप्रजाःसर्वादराडरावाभिरसति॥ दराडःसुप्तेषुजागर्त्तिद-  
 राडंधर्मविदुबुधः॥ १८॥

۱۳- اس سبب سے دھشت انشت میں دید کے موافق جس دھرم کو راجہ قائم کرے  
 اس سے انحراف نہ کرنا چاہئے۔

۱۴- ایشور نے اس راجہ کے واسطے سب جانداروں کے حفاظت کے لئے اپنے بیٹے  
 برہم پنج روپ دند کو پہلے ہی پیدا کیا۔

۱۵- اس دند کے خوف سے جانداران ساکن و متحرک بھوک کرنے کے لئے سمرقہ ہوتے  
 ہیں اور اپنے دھرم سے منحرف نہیں ہو سکتے۔

۱۶- ملک دقت و علم و طاقت کو دیکھ کر مجرموں کو درجہ بدرجہ سزا سے مناسب  
 دیوے۔

۱۷- دہی دند اپنی مزام جکا اوپر بیان کیا گیا ہے راجہ ہے اور دہی مرد ہے اور سب  
 ہنر زعورت ہیں کا ہونکا انجام دینے والا چار دھرموں کے دھرم کا حکم دینے والا اور ان میں سے

۱۸- سب رعایا کی حفاظت کرنے والا اور حکم دینے والا اور سوتے ہوئے لوگوں کا جگانیا والا  
 دہی دند ہے اسی دند کو پنڈت لوگ دھرم کہتے ہیں۔

सोऽग्निर्भवति वायुश्च सोऽर्कः सोमः सधर्मराट् ॥ सकुबेरः  
 सवरुगाः समहेन्द्रः प्रभावतः ॥ ७ ॥ बालोऽपि नावसन्नव्यो  
 मनुष्य इति भूमिपः ॥ महती देवता ह्येषानरस्येरातिष्ठति ॥  
 ८ ॥ एकमेव दहत्यग्निर्नरान् पुरुषसर्पिरास ॥ कुलन्त हति  
 राजाग्निः स यश्च दहत्यसंचयम् ॥ ९ ॥ कार्य्यसोऽवेक्ष्य शक्ति-  
 च देशकालौ च तत्त्वतः ॥ कुरुते धर्मसिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः  
 पुनः ॥ १० ॥ यस्य प्रसादे पद्माग्नीविजयश्च पराक्रमे ॥ मृत्यु-  
 श्च न सति क्रोधे सर्व्वतेजो मयो हि सः ॥ ११ ॥ तं यस्तु द्वेष्टि सं मो-  
 हात्सविनश्यत्यसंशयम् ॥ तस्य ह्याशुचिनाशा य राजा प्रकु-  
 रते मनः ॥ १२ ॥

۷۔ وہی راجہ اپنے پر بھادو کے موافق۔ اگر نہ ہو اسوج چند زمان دھرم راج اندر  
 کبیر بن ہے۔

۸۔ راجہ بالک بھی ہو تو بھی لقیل انسانی اسکی تحقیر نہ کرنا چاہیے کیونکہ راجہ بصورت اپنا  
 بڑا دیوتا زمین پر قائم ہے۔

۹۔ اگر گن کے سامنے جو کوئی جانتا ہے صرف اسی کو گن جلاتی ہے مگر راج روپی گن  
 تمام خاندان کو مع اسباب و چار پائیہ کے جلا دیتی ہے۔

۱۰۔ وہ راجہ اپنے کام و شگست و دلش و کال کو تنو پور وک دیکھ کر دھرم سے کھینچ کر  
 انیک روپ بارم بار دھارن کرتا ہے۔

۱۱۔ جس راجہ کی خوشی میں لکشی رہتی ہے اور پر اکرم میں فتح اور غنیمتیں موت وہ راجہ  
 تمام شیون کا دھارن کر لیا کرتا ہے۔

۱۲۔ جو آدمی مٹوہ سے ایسے راجہ کے ساتھ دشمنی کرتا ہے وہ ضرور ناش ہو جاتا ہے  
 ایسے آدمی کے ناش کے لئے راجہ بہت جلد دل لگاتا ہے۔



राजधर्मान्प्रवक्ष्यामियथावृत्तोभवेन्नुपः॥ सत्त्ववच्चयथा  
तस्यसिद्धिश्चयस्मायथा॥ १॥ ब्राह्मंप्राप्तेनसंस्कारंसन्नि  
येरायथाविधि॥ सर्वस्यास्वयथान्यायंकर्त्तव्यंपरिरक्ष-  
राम्॥ २॥ अराजकेहिलोकेऽस्मिन्सर्वतोविद्रुतेभयात्॥  
रक्षार्थमस्यसर्वस्यराजानसहजत्वमुः॥ ३॥ इन्द्रानिलयमा-  
कारागामनेश्वकरास्यच॥ चन्द्रचितेशयोश्चैवमात्राभि-  
निर्मितोऽनुपः॥ ४॥ यस्मादेवांसुरेन्द्राराणांमात्राभ्योनिर्मि-  
तोऽनुपः॥ तस्मादभिभवत्येवसर्वभूतानितेजसा॥ ५॥ तपत्या-  
दित्यवद्यैषचक्षुषिचमनांसिच॥ नचैनंभुविशक्नोतिकश्चि-  
दप्यभिधीसितुम्॥ ६॥

۱- جس پر کاسے راجون کی پیدائش اور پریم سترہ اور آجرن ہے اس سب کو کہیں گے۔

۲- کشتی پر سترہ جینوں کے کراپی راج کی پر جا کا پالن ارزد سے انصاف کے کرے۔

۳- جو ملک سب طرف سے خوفناک ہے اور دشمن راجہ نہیں ہے اس ملک کی حفاظت کیونکہ اسے سری پرہما جی نے راجہ کو پیدا کیا۔

۴- اندر- بالویم- راج- سورج- آگن- برہن- چند زمان- کبیر- ان آنکھوں کے اس سے شری پرہما جی نے راجہ کو پیدا کیا۔

۵- جو کہ دیوتوں کے اس سے راجہ پیدا ہوا، اس سب سے اپنے تیج سے جانداروں کو مخلوب کرتا ہے۔

۶- دیکھنے والے کی آنکھوں کو اور دل کو سورج کی طرح تپاتا ہے کوئی آدمی نہیں پر راجون کے ردیر و ہو کر انکو دیکھ نہیں سکتا کیونکہ انکا تیج سورج کے مانند ہے۔

دशलکراکंधर्ममनुतिष्ठन्समाहितः ॥ वेदान्तं विधिवच्छ्रु-  
त्वासंन्यसेदन्तराष्ट्रिजः ॥ ६४ ॥ संन्यस्य सर्वकर्माणि कर्महो-  
षानपातु रत्न ॥ नियतो वेदमभ्यस्य पुत्रैश्चर्यैः सुखं वसेत् ॥ ६५ ॥  
॥ सवसंन्यस्य कर्माणि स्वकार्यपरमोऽसृहः ॥ संन्यासेना-  
यह त्यैनः प्राप्नोति यस्मां गतिम् ॥ ६६ ॥ सववोऽभिहितो ध-  
र्मो ब्राह्मणस्य चतुर्विधः ॥ युगयोऽक्षयफलः प्रेत्य राज्ञां ध-  
र्मनिबोधत ॥ ६७ ॥

### इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां षष्ठोऽध्यायः ६

۹۴ - بے فکر ہو کر اس دھرم کو کرتا ہوا بدھ پور دک دیدانت شاستر کو شکر تینوں بن  
یعنے قرعن کو ادا کر کے سنیاں دھارن کرے۔  
۹۵ - سب کرموں کو چھوڑ کر اور کرم دیوش کا ناش کر کے نیم سے دید کا بھیاں کر کے  
پتر کے ایشوچ میں سکھ سے رہے۔  
۹۶ - اس طرح سب کرموں کو چھوڑ کر آتم گیان کو مقدم کر سورگ وغیرہ کی خواہش چھوڑ کر  
سنیاں کے وسیلے سے پاؤں کو دھو کر کے پریم کت کو پاتا ہے۔  
۹۷ - بھگ جی کہتے ہیں گناہ رش لوگو آپ سے برا مہتوں کا چارہ پکار کا دھرم کہا دھرم  
پاک ہے اور پر لوک میں اس کا پھل بے زوال ہے اسکے بعد اچوں کا دھرم کہتے ہیں۔  
من جی کا دھرم شاستر بگ جی کی سنگھٹا کا چھٹھواں اوقیاسے  
سمایت ہوا۔

सर्वेषामेव चैतेषां वेदस्मृतिविधानतः ॥ गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः स  
 त्रीनेतान् विभर्ति हि ॥ ८६ ॥ यद्यानदी नदाः सर्वे सागरे यांति सं-  
 स्थितिम् ॥ तथैवाश्रमिणाः सर्वे गृहस्थे यांति संस्थितिम् ॥ ८७ ॥  
 चतुर्भि रपि चैवैते र्नि त्यमाश्रमिभि र्हि जैः ॥ दशलक्षराको ध-  
 र्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः ॥ ८८ ॥ धृतिः समादमोऽस्ते यं शौचमि-  
 द्रियनिग्रहः ॥ धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशकंधर्मलक्षणम् ॥  
 ८९ ॥ दशलक्षरा निधर्मस्य ये विप्राः समधीयते ॥ अधीत्य-  
 चा नु वर्तन्ते ते यान्ति परमां गतिम् ॥ ९० ॥

۸۹- عید اور اسمرت کے برہمان سے چارو آشرمنوں سے گزرتھہ آشرم ہوا  
 ہے کیونکہ تینوں آشرم میں رہنے والے آدمیوں کو کھانے اور کپڑے سے گزرتھہ  
 ہی پالن کرتا ہے۔

۹۰- جس طرح ندی اور نالے سمندر میں جا کر قائم ہوتے ہیں اسی طرح سب آشرم والے  
 گزرتھہ ہی میں قیام پاتے ہیں۔

۹۱- چارو آشرم والے ہمیشہ دس لکشن والے دھرم کو تدبیر سے اختیار کریں

۹۲- دھرم کے دس لکشن میں رستہ نش (یعنی قناعت) کشا دینے کسی سے نقصان پا کر

نقصان نہ کرنا، دم دینے بکار نہ لینا، بے گناہی کرنا، بکار نہ لینا، چوری کا تیاگ

پوترا (یعنی طہارت) بیٹوں سے اندر بون کو روکنا۔ شاستر وغیرہ کا تو گنہ

آتم گنہ (یعنی خود شناسی) سنیہ۔ غصہ کرنے والی بات میں بھی غصہ

نہ کرنا

۹۳- جو آدمی ان دھرموں کو جان کر جنیت کرتا ہے وہ پرگت کو

پاتا ہے۔

अधियज्ञं ब्रह्मज्ञपेदाधिदैविकमेव च ॥ अध्यात्मिकं च सततं  
वेदान्ताभिहितं च यत् ॥ ८३ ॥ इदं शरणाभ्यासानामिदमेव वि-  
जानताम् ॥ इदमन्विच्छतां स्वर्गमिदमानन्त्यमिच्छताम् ॥  
८४ ॥ अनेन क्रमयोगेन परिव्रजतियो द्विजः ॥ स विधूयेह पा-  
पानं परब्रह्माधिगच्छति ॥ ८५ ॥ एष धर्मोऽनुशिष्टो बो-  
धीनां नियतात्मनाम् ॥ वेदसंन्यासिकानां तु कर्मयोगं निबो-  
धत ॥ ८६ ॥ ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा ॥ संते  
गृहस्थप्रभवाश्चत्वारः पृथगाश्चमाः ॥ ८७ ॥ सर्वेऽपि क्रमश-  
स्वेते यथाशास्त्रं निवेदिताः ॥ यथोक्तकारिणां विप्रं नयन्ति  
परमां गतिम् ॥ ८८ ॥

۸۴ - یگیتہ اور دیوتا اور حیوان سمجھون کے ادھکار کر کے جو برہم کا مرد پدید اور ویدانت میں  
کہا ہے ان سمجھون کا برہت یاد نہ کرنے والا جو دیکھا اسکا جپ کرے۔

۸۵ - گیانی اور اگیانی اور موکش و سورگ کی اچھا کر نیوالوں کو تدبیر بتائیوالا ایک پیر  
ہی ہے

۸۵ - جو برہمن کستری ویشیہ اس طریق سے سنیاسی ہوتا ہے وہ اس لوک میں پاپ کو  
چھوڑ کر برہمن پر برہم کو پاتا ہے۔

۸۶ - بھگت جی کہتے ہیں کہ اسے رشتہ چار طرکے جو تپ میں کیے پھر پھوڑکے ہیں۔ برہمن  
ان سمجھون کا سادھارن دھرم کہا ہے تپن میں جو ہیں پھر برہمن انکا سادھارن دھرم کہتے ہیں  
۸۶ - برہم چاری گروہن بان پستھتہ تپن نہیں سنیاسی یہ چار دھرم علیحدہ علیحدہ

ہی سے پیدا ہیں۔

۸۸ - جو برہمن شاستر کی بدھ سے ان چار دھرم کا بیون کرتا ہے وہ پرہم گت کو پاتا

ہے۔

जराशोकसमाविष्टरोगायतनमातुरम् ॥ रजस्वलमनित्यंचभूता  
वासमिमंत्यजेत् ॥ ७७ ॥ नदीकूलंयथावसौवसंवाशकुनिर्यथा  
॥ तथात्यजनिमन्देहंवाच्छाद्वाहादिमुच्यते ॥ ७८ ॥ प्रियेषुष्ये  
युसुक्ततमप्रियेषुचदुष्कृतम् ॥ विसृज्यध्यानयोगेनब्रह्माभ्ये-  
तिसनातनम् ॥ ७९ ॥ यथाभावेनभवतिसर्वभावेबुनिःस्पृहः ॥  
तदासुखमवाप्नोतिप्रेत्यचेहचशाश्वतम् ॥ ८० ॥ अनेनविधि-  
नासर्वास्यत्कासंगान्शनेःशनेः ॥ सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्म-  
रायेवावतिष्ठते ॥ ८१ ॥ ध्यानिकंसर्वमेवेतद्यदेतदमिश्रितम्  
॥ नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमुपाप्नुते ॥ ८२ ॥

۷۷- ضیفی اور رنج کی وجہ سے بیماری کا گھر ہو کھ پیاس سردی گرمی سے بے چین رہو گن کے  
ساتھ ناش ہونے والا بیچ عناصر کا گھر ایسے بدن میں جو آتما رہتا ہے سو ایسے بدن کو ترک  
کر کے بیٹھ کر کرم کرنے سے ایسا شریر ہے وہ کرم نہ کرے۔

۷۸- طرح ندی کے کنارے کو درخت چھوڑ دیتا ہے اور درخت کے پرند درخت کو اسطرح  
شریر کو تیاگ کرتا ہوا برہم کی اپنا شنا کرنا لا کشت روٹی گراہ سے چھوٹ جاتا ہے۔  
۷۹- برہم کو جاننے والا آتما تہت کالج میں ویکرت کو تیاگ کر کے دھیان لوگ کے وسیلہ  
برہم میں لین ہو جاتا ہے۔

۸۰- جب پرمارتھ کی وجہ سے بٹیوں میں دوش جانکر سب چیزیں بچو ہشت ہو جاتا ہرت  
اس لوک میں اور پوک میں مکھ پاتا ہے۔

۸۱- اس طرح آہستہ آہستہ سب کو تیاگ کر کے کام کرو دھ و سردی و گرمی وغیرہ جفت چیزیں  
ہیں ان سے علیحدہ ہو کر برہم میں لین ہوتا ہے۔

۸۲- پتر وغیرہ کی ممتا کا تیاگ اور مان و اچان کا سنا پیب بائیں حیو آتما کو پراتما کے دھیل  
کے وسیلے سے ملتی ہیں آتما کا نجانے والا آدمی کر یا پھل یعنی مومہ کا تیاگ اور صفت چیز کا سنا اور کوشش تیا



सहस्रात्तान्वावेसेतयोगेनपरमात्मनः ॥ देहेषु च समुत्पत्ति  
मुत्तमेष्वधमेषु च ॥ ६५ ॥ दूषितोऽपि चोद्धर्मा यत्र तत्राश्रमे-  
तः ॥ समः सर्वेषु भूतेषु न लिङ्गधर्माकारणम् ॥ ६६ ॥ फलं क-  
तकहसस्य यद्यप्यम्बुप्रसारकम् ॥ न नामग्रहणादेव तस्य वा-  
रिप्रसीदति ॥ ६७ ॥ संरक्षणार्थं जन्तूनां रात्रा वहनिवासदा ॥  
शरीरस्यात्यये चैव समीक्ष्य वसुधां चरेत् ॥ ६८ ॥ अक्षरात्र्या  
च यान्जन्तून् हिनस्त्यजानतो यतिः ॥ तेषां स्नात्वा विशुद्ध्यर्थं  
प्राणायामान्बडाचरेत् ॥ ६९ ॥ प्राणायामान्बडास्य त्रयो  
ऽपि विधिवत्कृताः ॥ व्याहृतिप्रणवैर्युक्ता विज्ञेयं परमं तपः  
॥ ७० ॥

۶۵- یوگ کے وسیلے سے پرمانہائی گت کو اعمال نہایت بد کا نتیجہ پانے کی واسطے اتم مدیم  
ادھم یون مین جانداروں کی پالیٹ کو بھی غور کرے۔

۶۶- کسی آشرم میں رہا اور اس آشرم کے دھرم پر چلتا ہو لیکن برہم بدھ سے سب کو  
برابر دیکھے یہی دھرم ہے گیرداکٹر اور غیرہ پینٹا کچھ دھرم میں داخل نہیں ہے۔

۶۷- نرملی پھل اگر چہ پانی کو صاف کرتا ہے لیکن اسکے نام لینے سے پانی صاف نہیں ہوتا  
جب اسکو کھسکے پانی میں دالینگے تب صاف ہوگا اس طرح چھ دھارن کرنا کچھ دھرم نہیں ہے۔  
بلکہ اس دھرم پر جاننا دھرم کہلاتا ہے۔

۶۸- جانداروں کی حفاظت کی واسطے دن رات ہر وقت زمین کو دیکھ کر چلے تاکہ کوئی حیو  
نہ مرے اور اسکے بدن کو بھی تکلیف نہ ہو۔

۶۹- ہوسنیاسی بغیر جانے جانداروں کو مارتا ہے اس پاپ کے دور کرنے کے واسطے  
اتھن کر کے چھ پرایا نام کرنے سے سہم ہوتا ہے۔

۷۰- بیاسہرت اور اولکار کر کے بدھ سے تین پرایا نام بھی کرے تو اس پر اس کا پرہم تپ ہے۔

अत्यान्नाभ्यवहारेणः स्यान्नासनेन च ॥ द्वियमाराणि-  
विषयेरिन्द्रियारानिवर्त्तयेत् ॥ ५६ ॥ इन्द्रियारानिरोधेन राग  
द्वेषस्येराच ॥ अङ्गिसयाचभूतानाममृतत्वाय कल्पते ॥ ६० ॥  
अवसेत गतीन्हराणं कर्मसोयसमुद्भवाः ॥ निरये चैव यतनं यात  
नाचयमस्ये ॥ ६१ ॥ विप्रयोगं प्रिये श्रेयसंयोगं च तथा प्रिये ॥  
जरया चाभिभवनं व्याधिभिश्चोपपीडनम् ॥ ६२ ॥ देहादुत्कमरां  
चास्मात्पुनर्गर्भं च संभवम् ॥ योनिकोदिसहस्रेषु सृती आस्या  
न्तरात्मनः ॥ ६३ ॥ अधर्मप्रभवं चैव दुःस्वयोगं शरीरिणाम् ॥ ध-  
र्मार्थप्रभवं चैव सुखसंयोगमक्षयम् ॥ ६४ ॥

۵۹ - تھو اچھو جن کرسے اور ایکانت میں رہے اس سے نیشیون کی تابو کی ہوئی اندریون  
کو تیرت کرسے لینے نفس نامارہ کو ہوا وہوس سے خالی کرسے -

۶۰ - اندریون کو رکھتا راگت اور دوش سے الگ رہنا کسی جاندار کو نہ مارنا ان باتوں سے  
شکستہ ہو کرش کے لائق ہوتا ہے -

۶۱ - کرومن کے دوش سے آدمیوں کی حالت اور ترک میں پڑنا اور ہم تاج کے ملک میں  
پڑا دکھ پانا ان سب باتوں کو دیکھ لینے بچار کرسے -

۶۲ - پیاری چیزوں کا چھوٹنا اور غریب چیزوں کا ملنا بجاالت پیروی بے قدری گناہ  
عذاب درج ان باتوں پر بھی غور کرسے -

۶۳ - بدن سے جان کا نکلنا پھر حمل میں قیام کرنا کرودن قالب میں پیدا ہونا  
ان باتوں پر بھی غور کرسے -

۶۴ - دیہہ دھاری آدمیوں کے آدھرم سے دکھ کا ہونا اور دھرم دار تھو سے  
لاذوال سکھ کا ہونا بھی غور کرسے -



अतैजसानिपात्राशितस्यस्युर्निर्ब्रतानिच॥ तेवामहिःस्म-  
 तंशौचंचमसानाभिवाधरे॥ ५३॥ अलाभुंरासपात्रंचमनायं  
 वैदलंतथा॥ एतानियतिपात्राशिमनुःस्वायंभुवोऽब्रवीत् ५४  
 एककालंचरेद्वैसनप्रसज्जेतविस्तरे॥ मैसेप्रसक्तोहियतिर्वि-  
 ययेष्वपिसज्जति॥ ५५॥ विधूमेसज्जमुसलेव्यंगारेभुक्तवज्जने  
 ॥ वृत्तेशरावसप्यातेभिस्त्रांनित्यंयतिश्चरेत्॥ ५६॥ अलाभेनवि-  
 षारीस्यालाभेचैव न हर्षयेत्॥ प्रासायात्रिकाभात्रःस्थान्नात्रा-  
 संगदिनिर्गतः॥ ५७॥ अभिपूजितलाभांस्तुजुगुप्सेतैवसर्व-  
 शः॥ अभिपूजितलाभेचयतिर्मुक्तोऽपिवध्यते॥ ५८॥

۵۳۔ جو برتن کا لٹے دپٹیل وغیرہ کے پین انکو چھوڑ کر توبہ وغیرہ کر کے مہین چھوڑ دو  
 انکو پانی دٹی سے پاک کر کے جیسے گیکہ میں مچھن نام برتن کو پاک کرتے ہیں۔

۵۴۔ لوکی ادا کا ٹھکڑا دہشی اور بالٹ کا برتن اپنے پاس رکھے صرف اتنی ہی برتن بنیاد  
 کے پین ایسا من جی نے کہا ہے۔

۵۵۔ صرف ایک وقت پھیکھانے کے زیادہ پھیکھ لینے کی خواہش نہ کرے کیونکہ زیادہ پھیکھ  
 لینے سے سنیاسی لذت دنیا میں گرفتار ہو جاتا ہے۔

۵۶۔ جو وقت گھر سے گھر میں دھوان دوسل کی آواز نہوا اور آگ بھی روشن نہوا اور سب  
 آدمی بھوجن کر چکے ہوں اور جو ٹٹی قیتل وغیرہ گھر سے باہر ڈال دیں ہو سو وقت سنیاسی پھیکھ  
 کیوں سٹے ہمیشہ جاسے۔

۵۷۔ پھیکھنے سے توبہ بخیدہ نہوا دے تو خوش نہو زمین پران کی کشت ہو دی کرے اور  
 وغیرہ ساگری میں اچھے برے کا خیال نہ کرے جیسا بلواسے اسی سے کارروائی کرے۔

۵۸۔ جو چیز لو جاسے بے اٹکی نہوا کرے لینے انکو نہ لیوے اور پوچا میں خوش ہونے سے  
 کٹت رہ پ سنیاسی بندھن میں بھنس جاتا ہے۔

کُچھ تَن پرتیکُچھو شاکُش: کُشالَں وِہرے ॥ سَم دَہا رَکھ کِی رَاقِی  
 چنوا چن وِہتا چہرے ॥ ۸۶ ॥ اُچھا تَم رَاقِی سِوِی نِی رَہے سِوِی  
 نِی رَاقِی: ॥ اُچھا تَم نِی رَاقِی سِوِی نِی رَہے سِوِی ॥ ۸۷ ॥  
 نِوِی تَہا تَن نِی رَاقِی سِوِی نِی رَہے سِوِی ॥ نِوِی تَہا تَن نِی رَاقِی  
 رَاقِی سِوِی نِی رَہے سِوِی ॥ ۸۸ ॥ نِوِی تَہا تَن نِی رَاقِی سِوِی  
 نِی رَہے سِوِی ॥ ۸۹ ॥ نِوِی تَہا تَن نِی رَاقِی سِوِی  
 نِی رَہے سِوِی ॥ ۹۰ ॥ نِوِی تَہا تَن نِی رَاقِی سِوِی  
 نِی رَہے سِوِی ॥ ۹۱ ॥ نِوِی تَہا تَن نِی رَاقِی سِوِی  
 نِی رَہے سِوِی ॥ ۹۲ ॥

۸۸ - اپنے اوپر کوئی غصہ کرے تو آپ اس پر غصہ کرے اور اگر اپنی بُرائی کرے تو مجھے اپنا  
 اچھی باتوں سے اس کو خوش کرے پانچ گیارہ اندری اورن اور بدھ ان ساتوں سے جو چیز  
 گرتن کی گئی ایمین بانی کی پر برت ہے پس ان ساتوں وسیلوں جو مطلب حاصل کیا  
 گیا اس مطلب سے نسبت رکھنے والی بانی کو نہ بوسے بلکہ جو بانی برہم سے نسبت رکھتی ہوگی  
 بوسے لینے چاہیے ۱۰۸ -

۸۹ - آتما میں پریت کرتا ہے کسی چیز کی خواہش کرے اس کو کھانا چھوڑ دے صرف اپنی  
 آتما ہی کو مددگار جانے لگے اسے اس کوک میں رہے

۹۰ - زلزل زمین آنکھ کا پھڑکنا و عینہ و کشتر اور ہاتھ کی رکھیا انھوں کا  
 چل کر سیریت شاستر کا آپدیش کر کے کبھی عینہ لینے کی خواہش نہ  
 کرے

۹۱ - بھٹیوی برہمن و پرند و گتہ و جب کھاری یہ سب جس گھر میں مرن اس گھر کو  
 چھوڑ دے

۹۲ - بال و ناخن و موچھ کو چھوٹا رکھ دے و کمندل و پاتر کو پاس رکھے کسی جائز اور غیر  
 ذلکیت نہ دیوے یہ بلکہ جو کچھ ہمیشہ رہے

अननिरनिकेतः स्याद्भामभनार्थमाश्रयेत् ॥ उपेसकोऽशं-  
कुसुकोमुनिभावसमाहितः ॥ ४३ ॥ कयालं हसमूलानिकु-  
चेलमसहायता ॥ समताचैनसर्वस्थितेतन्मुक्तस्यलसगा-  
म् ॥ ४४ ॥ नाभिनन्देतमरणां नाभिनन्देतजीवितम् ॥ कालमे-  
वप्रतीक्षेतनिर्देशंभूतकोयथा ॥ ४५ ॥ हृदिपूतंन्यासेत्यादं व-  
स्त्रपूतंजलं पिबेत् ॥ सत्यपूतं चरेद्वाचं मनपूतं समाचरेत् ॥ ४६ ॥  
॥ अतिवारांस्तितिक्षेत नाचमन्येत कंचन ॥ नचेमन्देहमाश्रि-  
त्य वैरं कुर्वीत केनचित् ॥ ४७ ॥

۴۳- م۔ گن اور گھر سے علیحدہ ہو کر سب چیزوں کو ترک کر کے ستیقیم قتل ہو کر جسم میں  
چت لگا لئے ہوئے اُن کی پو اسطے گاؤن کا آسرا کرے۔  
۴۴- م۔ مکت کا لکشن یہ ہے کہ بھیکو کے واسطے سنی کا برتن رکھے درخت کی جڑ میں جو  
اور ایسے کپڑے رکھے کہ جو کسی کام کے لائق نہوں اور کسی سے مدد نہ چاہے اور نہ بٹا نڈاؤ  
کو پرہیز ہے۔

۴۵- م۔ موت یا زندگی ان دونوں میں سے کسی کی خواہش نہ کرے صرف وقت ہی کا خیال رکھے  
جیسے نوکر اپنے مالک کے حکم کا خیال رکھتا ہے۔  
۴۶- م۔ بال اور ہڈی سے علیحدہ رہنے کے لئے دیکھ کر زمین پر پائون رکھے اور چھوٹے  
چھوٹے جانداروں کی حفاظت کے لئے پانی چھان کر پیوے اور جو باتیں سچ  
کر کے پاک ہیں انکو بولے اور میں کو شنگھاپ سے خالی کر کے ہر وقت پوتر  
آتما رہے۔

۴۷- م۔ لوگوں کی ہیودہ باتوں کی برداشت کرے اور کسی کا آجمان (توہین) نہ کرے اور  
نہ کسی سے دشمنی کرے۔

अनधीत्यद्विजोवेदाननुत्याद्यतयासुतान् ॥ अनिष्टाचैवय-  
ज्ञैश्चमोसमिच्छन्प्रजत्यधः ॥ ३७ ॥ प्राजापत्यानिरूप्येष्टिमर्ब-  
वेस्मदसिरागाम् ॥ आत्मन्यग्नीन्समारोप्यब्राह्मणाः प्रव्रजे-  
न्नुहात् ॥ ३८ ॥ योदत्वासर्वभूतेभ्यः प्रव्रजत्यभयं गृहात् ॥ त-  
स्यतेजोमयालोकाभवन्निब्रह्मवादिनः ॥ ३९ ॥ यस्मादस्य-  
विभूतानां द्विजानोत्पद्यतेमयम् ॥ तस्य देहाद्विमुक्तस्यभयं-  
नास्ति कुतश्चन ॥ ४० ॥ आगारादभिनिष्कान्तः पवित्रोपचि-  
तोमुनिः ॥ समुपोदेषुकामेषु निरपेक्षः परिव्रजेत् ॥ ४१ ॥ ए-  
कस्यवचरेन्नित्यंसिद्ध्यर्थमसहायवान् ॥ सिद्धिमेकस्यसम्य-  
ग्र्यञ्जहातिनहीयते ॥ ४२ ॥

۳۷۔ جو براہمن کشمکش ویشیہ دید کو دھڑمک اور دھرم سے ہنر پیدا کر کے اور گیہ کا اٹھان  
کر کے موکش کی اچھا کرتا ہے وہ نرک میں جاتا ہے۔

۳۸۔ ہر جاہل دیوتا کی گیہ کر کے سب کو دشمن دے کر سب گن کو اپنی آتما میں رکھ کر  
گھر سے نکلے لیکن سنیاں دھارن کرے

۳۹۔ جو آدمی دید کا پڑھنے والا نام جانداروں کو بخونی دے کر گھر سے باہر نکلتا ہو لیکن  
سنیاں دھارن کرتا ہے اسکو بیچ روپ لوگ ملتا ہے۔

۴۰۔ جس براہمن سے سب جانداروں کو تھوڑا بھی ڈر نہیں ہے اسکو پوہن میں کسی سے بڑ  
ہنن ہوتا۔

۴۱۔ گھر سے نکلا ہوا اور طہارت سے ترقی پایا ہوا اور بچا کر تاہو اور دوسرے کی دی ہوئی  
وغیرہ چیزوں میں اچھا نہ کھنے والا سنیاں دھارن کرے۔

۴۲۔ کسی کی مدد کی خواہش نہ کرے ہمیشہ اکیلا رہے سرہ کے لئے ایک ہی کو سدھرتی بڑ  
اسات کو دیکھ کر کیونکر تیاگ نہیں کرتا اور اسکو بھی کوئی تیاگ نہیں کرتا۔

अपराजितांवास्यायवजेहिशमजिह्मगः॥ आनिपाताच्छ-  
रीरस्ययुक्तोचार्यनिलाशनः॥ ३१॥ आसांमहर्षिचर्याणांत्य-  
क्तान्यतमयातनुम्॥ वीतशोकमयोविप्रोब्रह्मलोकेमहीय-  
ते॥ ३२॥ वनेषुचविहृत्यैवंतृतीयभागमायुषः॥ चतुर्थमायु-  
षोभागंत्यक्तान्यरिचजे॥ ३३॥ आश्रमाराश्रमंगत्याह-  
तहोमोजितेन्द्रियः॥ भिक्षावलिपरिश्रान्तःप्रयजनप्रेतवर्द्धते  
॥ ३४॥ अरागानित्रीरघपाकृत्यमनोमोक्षेनिवेशयेत्॥ अ-  
नयाकृत्यमोक्षस्तुसेवमानोब्रजत्यधः॥ ३५॥ अधीत्यविधि-  
वद्देवान्युवांचोत्पाद्यधर्मतः॥ दृष्ट्वाचशक्तितोयज्ञैर्मनोमो-  
क्षेनिवेशयेत्॥ ३६॥

۱- خواہ پانی دہو کو کھانا ہوا ایساں کو نہ لینے پورب وائر گوشت کی طرف سیدھا چلا جا  
جیتک بشریہ نہ چھوٹے۔

۲- یہ سب آپرن بڑے بڑے رشتوں کے گاہے ہمیں کسی آپرن شریر کا تیاگ کر کے شو  
اور دور کو چھوڑ کر برہمن لوک میں پوجت ہوتا ہے۔

۳- اس طرح سے عمر کا بیشتر حصہ فیکل میں آخر کر کے سنگھ کو چھوڑ کر غر کے حصہ چارم میں  
سنیاس کو دھارن کرے۔

۴- اندریوں کو جیت کر مومن کو تمام کر ایک شرم سے دوسرا شرم میں جا کر بھیکہ اور بدل  
کرم سے بھگا جو سنیاس لیکر برہمن لوک میں برہمن پد کو پاتا ہے۔

۵- تینوں رتن یعنی قرض جسکو دیورن پترن رتن کہتے ہیں ادا کر کے دلو کو کر  
میں لگا دے بد رتن ادا کرنے ان تینوں قرضوں کے جو موکش کا سیون کرتا ہے وہ کر کے رتن

۶- برہمن سے دید کو پتر مکر و مہرم سے پتر پیکر کے اپنے مقدور کے موافق گیشہ کو کرتا ہوا  
موکش میں دل لگا دے۔

अनीनात्मनिर्लेतानां समारोप्य यथाविधि ॥ अननिरनि-  
 केतास्यान्मुनिर्मूलफलाशनः ॥ २५ ॥ अथ यत्नः सुखार्थेषु  
 ब्रह्मचारीधराशयः ॥ शरीरोद्यममश्चैव ब्रह्ममूलनिर्लेतनः ॥  
 २६ ॥ तापसेव्येव विप्रेषु यात्रिकं भैशमाहरेत् ॥ ग्रहमेधियु-  
 चान्येषु विज्ञेयुचनवासिषु ॥ २७ ॥ ग्रामाराहृत्य वा श्रीयारथ्ये  
 ग्रामान्चनेव सन् ॥ प्रतिगृह्य युटेनैव पाशिनाशकलेन वा ॥  
 २८ ॥ यताश्चान्याश्च सेवेतरीसाचिप्रोचनेव सन् ॥ विविधा-  
 न्नोपनिषद्वीरात्मसंसिद्धये श्रुतीः ॥ २९ ॥ ऋषिभिर्ब्राह्मणै-  
 र्यैव गृहस्थैरेव सेविताः ॥ विद्यातपोविबुद्धयर्थं शरीरस्य च शु-  
 द्ध्ये ॥ ३० ॥

۲۵۔ برہم سے اگن ہونے کی آگ کو اپنی آتما میں قائم کرے بعد اسکے اگن اور ستھان سے علیحدہ ہو کر نکل پھیل کھاتا ہوا شاستر کو بچا کرے۔

۲۶۔ سکھ کے واسطے کوشش و تدبیر کرے برہم چاری ہو کر زمین پر سو درخت کی زمین قیام کرے اور قیام گاہ سے محبت نہ کرے۔

۲۷۔ تپسوی برہمن سے بھیکہ مانگے اور جو گریہ منہ باسی و رنج میں اُسے بھی بھیکہ مانگے۔

۲۸۔ خواہ گاؤں سے بھیکہ مانگ کر آٹھ لقمہ کھائے جنگلیں پر بکرو دنا یا ہاتھ یا ٹی کے بڑن کے ٹکڑے میں بھیکہ لےوے۔

۲۹۔ جنگل میں رہ کر اس دیکش کا اور دوسری دیکش کا بھی سیون کرے اور طرح طرح کے اسپند و ن میں جو وید کے منتر ہیں ان کو اُست کی سہلی پر کار سوجھ ہونے کے لئے پڑھے اور سمجھے۔

۳۰۔ بدن کے شرعہ پہا اور تپ بڑھنے کے واسطے اس دویا کا سیون کرے جس دویا کا سیون ریش اور گرہستھ برہمنوں نے کیا ہے۔

नक्तंचानंसमश्रीयादिवावाहृत्यशक्तिः ॥ चतुर्थकालिको  
 वास्यात्याद्याद्यमकालिकः ॥ १९ ॥ चान्नायराविधानैर्वा  
 शुक्लकृष्योचवर्तयेत् ॥ पशान्तयोर्वायश्रीयाद्यवागृहकृषि  
 तांसकृत् ॥ २० ॥ पुष्यमूलफलीर्वायिकेवलैवर्तयेत्सरा ॥ का-  
 लपक्षैः स्वयंशीर्षोर्वैखानसमन्तेस्थितः ॥ २१ ॥ भूमौवियरिव-  
 र्त्तततिष्ठेद्वाप्रपदैर्दिनम् ॥ स्थानासनाभ्यांविहरेत्सवनैश्चूपय-  
 न्नपः ॥ २२ ॥ प्रीत्योपंचतयस्तुस्याद्दर्वास्वप्नावकाशिकः ॥ अ-  
 र्द्वासास्तुहेमन्तेकमशौर्वर्ज्यस्तपः ॥ २३ ॥ उपस्थशंस्त्रिषव-  
 रांपितृत्वेवाश्चतर्षयेत् ॥ तपश्चरंश्चोयतरंशोषयेद्देहमात्मनः  
 ॥ २४ ॥

۱۹- اپنی طافت کے موافق دن بین لاکرات کو بھوجن کرے یا ایک دن آپاس کرے  
 دوسرے دن ایک دفعہ بھوجن کرے یا تین دن آپاس کرے چوتھے دن ایک دفعہ بھوجن کرے  
 ۲۰- چاندرا بین برت کو کرے خواہ اما دوسیا خواہ پورناتشی کے دن ایک دفعہ جوئی پس  
 کھائے۔

۲۱- جو پھول چل دھول سبب گزرنے آیام کے نچتہ ہو کر جو بخود کرے ہون اگو کھا کر زندگی  
 بسر کرے۔

۲۲- بان پرستہ کے مت میں رہ کر حرف زمین ہی پر لٹا کرے یا یاتون کے گلے ہٹ کے زور  
 سے تمام دن کھڑا رہے اور استھان اور آسن میں سہا کرے تیون کال یعنی صبح دوپہر کم کو  
 نشان کرے۔

۲۳- آسمان پر آسمان تپ کو بڑھانا ہو گرمی میں پنج اگن تپے برسات میں مکان کے پردہ میں  
 رہنے کھلے سیدان میں رہے جاڑے میں گیلہا کپڑا پہنے رہے۔

۲۴- تیون کال نشان کر کے دیوتا اور تہروں کا ترپن کرے بھجاری تپ کو کرتا ہوا بدن کو سکھائے

स्थलजोदकशाकानिपुष्पमूलफलानिच॥ मेध्यवृक्षोद्वा  
न्यद्यात्नेहांश्चफलसंभवान्॥ १३॥ वर्जयेन्मधुमांसंचभौमा  
निकचकानिच॥ भुस्त्रशांशिपुकंचैवक्षेष्मातकफलानिच॥  
१४॥ त्यजेदाश्वयुजेमासिमुन्यन्नपूर्वसंचितम्॥ जीर्णानिचै  
ववासांशिशाकमूलफलानिच॥ १५॥ नफालकसमश्नीया  
दुस्तश्चमयिकेनचित्॥ नयामजातान्यार्तोऽपिमूलानिचफ  
लानिच॥ १६॥ अमियकाशनोवास्यात्कालयक्त्रभुगेववा।  
अश्मकुट्टोभवेद्यपिदन्तोत्सखलिकोऽपिवा॥ १७॥ सद्यःप्र  
क्षालकोवास्यान्माससंचयिकोऽपिवा॥ वरामासनिचयो  
वास्यात्समानिचयश्चवा॥ १८॥

۱۳- زمین و پانی و پاک و درخت سے جو ساگے مول پھول و پھل پیدا ہوتے ہیں۔ انکو  
بھوجن کرے اور پھل سے پیدا ہونے سے تیل کو بھی بھوجن کرے۔

۱۴- شراب و بالن و زمین سے پیدا ہوا چھتر اکا رو بھو شترن جو مالوہ ویش میں مشہور ہے  
سگر ساگ جو باہلیک ویش میں مشہور ہے، و بھو ان ساگ کھانا ترک کرے۔

۱۵- مینوں کا آن جو بھو ہے دپار چہ کہتہ و بوسیدہ دشا کن مول پھول ان سب کو ترک کرے  
کنوار کے مینے میں۔

۱۶- جو چیز بل کے ذریعہ سے پیدا ہوتی اور جو چیز کھیت کے متصل ہے اگر چہ اسکو مالک ہے  
ترک بھی کر دیا ہو تو بھی اسکو بھوجن کرے اور دھنی ہو تو بھی جو پھل برون تل چلانی کے  
گائون کے اندر پیدا ہوتے ہوں انکو نہ کھائے۔

۱۷- جو چیز آگ کے ذریعہ سے یا زمانہ پاکر پختہ ہوتی ہو اسکو بھوجن کرے چھتر سے کوٹ کر  
دانٹون کی اوکھلی بنا کر بھوجن کرے۔

۱۸- ایک کھجور کے کئی چتر کو چھ یا ایک مینہ یا چھ مینہ یا ایک انک کو بھوجن کے لائق چتر کرے۔



यद्दस्यं स्यात्ततोश्चाहलिंभिसांचशक्तितः॥ अमूलफल-  
भिसाभिरर्चयेदाश्रमागतान्॥ ७॥ स्वाध्यायेनित्यशुक्तः स्या-  
दान्नोभैत्रः समाहितः॥ दातानित्यमनादाता सर्वभूतानुकम्प-  
कः॥ ८॥ वैतानिकं च जुहुयादग्निहोत्रं यथाविधि॥ रशीमस्त-  
न्यन्मर्त्ययोगीमासचयोगतः॥ ९॥ ऋषेष्ट्या प्रायशांचैव  
चातुर्मास्यानि चाहरेत्॥ उत्तरायणां चक्रमशो दासस्यायन-  
मेव च॥ १०॥ वासन्तशारैर्मैथ्यैर्मन्यन्तेः स्वयमाहतेः॥ पुरो-  
डाशांश्च ह्यैव विधिवन्निर्वपेत्सद्यक्॥ ११॥ देवताभ्यस्तुत-  
वुत्वा वन्यं मेध्यतरं हविः॥ शेषमात्मनि युंजीत लवणां च स्वयं  
कृतम्॥ १२॥

۷۔ جس چیز کو کھائے اسی چیز سے بل کرم کرے اور اسی چیز کو حب مقدور اپنے بھیکہ دے  
اور اسکے قیام گاہ پر جو کوئی آوے تو بول جل بھل سے اسکا پوجن کرے۔  
۸۔ سہ روز دیر بیٹھے جنت کو تائم رکھے سب کا دوست ہو کر رہے مہر دی و گمری و کام و مزد و  
وغیرہ کی برداشت کرے کسی سے کچھ نہ لے لے سب بیٹون پر دیار رکھے۔  
۹۔ ہر بقی تسانتہ سے کن ہو کر رہے اور درشن پوز تاش لگیہ کرے۔  
۱۰۔ لکنتہ لگیہ اگرین چانز تاش اتر اسن و کشان کرین کو کرے۔  
۱۱۔ سنت اور چارے مین جو پاک غلط قابل فروش منشیہ ران پیدا ہوتا ہے اسکو خود  
لا کر اس سے بطریق تسانتہ علیحدہ علیحدہ پر دو اس چرو دیو تادن کو لگیہ بندھ  
کے لئے دیوے۔  
۱۲۔ نہایت پاک ہنسیہ دیو تادن کو دے کر جو بچے اسکو آپ بھوجن کرے اپنے بنائے ہوئے  
ناتک کو بھوجن کرے۔

سर्वग्रहाश्रमे स्थित्या विधिवत् स्नातको द्विजः ॥ वने वसे तु नियतो  
यथा वह्निजितेन्द्रियः ॥ १ ॥ गृहस्थस्तु यदा पश्येद्वलीपलित  
मात्मनः ॥ अयत्नस्यैव चापत्यंतरा रायं समाश्रयेत् ॥ २ ॥ स  
त्यं त्यग्याम्यमाहारं सर्वं चैव परिच्छदम् ॥ युत्रेव भार्या निशि  
ष्य वनं गच्छेत्सहैव वा ॥ ३ ॥ अग्निहोत्रं समादाय गृह्यं चाग्नि  
परिच्छदम् ॥ ग्रामादरायं निःस्त्य निवसेन्नियतेन्द्रियः ॥ ४  
॥ सुन्यनैविधिर्धैर्मध्येः शाकमूलफलैश्च वा ॥ सतानेव महा  
यज्ञान्निर्वपेद्विधिपूर्वकम् ॥ ५ ॥ वसीत चर्मचीरम्यासायं-  
स्नायात्प्रगोतया ॥ जटाश्च विश्वयान्नित्यं श्मश्रुलोमनखानि-  
च ॥ ६ ॥

- ۱۔ اس طریق سے گرسختہ شتر میں رہ کر اس کتابت حج بیفکر دوس پر غالب رہ کر فکلیں اسطے کر کے عبادت کے مقیم ہو دے۔
- ۲۔ جب گرسختہ آدمی آپ کو حالت پیری میں دیکھے اور بیٹی کے بیٹے کو دیکھے تب جنگلیں متیم کرے۔
- ۳۔ گھاتوں کے اہار کو اور گھر کی ساگر کی کو ترک کر کے اور عورت کو بیٹے کے سپرد کر کے جنگل میں جائے خواہ مع عورت کے جنگل میں جائے۔
- ۴۔ آگن ہوئے کو اور مع ساگر کی گھر کی آگن کو بیکرا اور اندریون کو روک کر گانون سے نکال کر جنگلیں رہے۔
- ۵۔ افودع و اقوام کے مٹیوں کے ان اور پوتر شک مول چل انھوں سے شاستر کے موافق بیج مٹا گیتو کو کرے۔
- ۶۔ چمرا یا کپڑے کا گڑا سپر صبح و شام نشان کرے خا و موچھ و بال و دافن کو بڑھادے یعنی بحاست نہ بنوادے۔

अनेन नारीवत्तेन मनोवाग्देहसंयता ॥ इहाश्र्यां कीर्त्तिमाप्नोति  
 पतिलोकं परत्र च ॥ १६६ ॥ एवं च त्तां सवर्गां स्त्रीं हि जातिः पूर्व  
 मारिणीम् ॥ दाहयेदग्निहोत्रे रायज्ञया त्रे च धर्मवित ॥ १६७  
 भार्याये पूर्वमारिणीयेदत्त्वा मनीनन्त्य कर्मणि ॥ पुनर्नारक्रियां कु-  
 र्यात्पुनराधानमेव च ॥ १६८ ॥ अनेन विविधानित्यं पंचयज्ञान्न  
 हापयेत् ॥ द्वितीयमायुषोभागं कृतदशोयुहेव सेत ॥ १६९ ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे धृगुप्रोक्तायां संहितायां  
 पंचमोऽध्यायः ५

۱۶۶ - اس طرح دل زبان و جسم کو قابو میں کر کے اس لوگ میں بڑی نیکیاں اور لوگ  
 میں بہت لوگ کو پاتی ہے -  
 ۱۶۷ - دھرم کے جاننے والے برہمن کو شتری و دیشیہ ایسی اپنی ذات کی استری کہے  
 مرنے میں اسکا دواہا گن موت کی آگ اور بگیہ پاتر سے کریں -  
 ۱۶۸ - اس کے بعد عمل آخری کر کے دوسرا دواہا کریں اور آگن کو استھپان کریں -  
 ۱۶۹ - اس طرح سے ہمیشہ پنج بگیہ کو کریں انکو بھی ترک نہ کریں اور عمر کے دوسرا حصہ تک  
 دواہا کر کے بھرمیں رہیں -

من جی کا دھرم شترجی کی سنگت کا

پانچوان ادھیاے سمپت ہوا

۱۸۸- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۸۹- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۰- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۱- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۲- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۳- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۴- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۵- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۶- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۷- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۸- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۱۹۹- ۱۔ اویسہ ۵۔  
 ۲۰۰- ۱۔ اویسہ ۵۔

नास्तिस्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नायुयोधितम् ॥ पतिं शुभ्रं  
ते येन तेन स्वर्गे महीयते ॥ १५५ ॥ पारिगाहस्य सा ध्वी स्त्री  
जीवतो वा मृतस्य वा ॥ पतिलोकमभीप्सन्तीनां चरेत्किंचिद  
प्रियम् ॥ १५६ ॥ कामन्तु सपयेद्देहं पुण्यमूलफलैः शुभैः ॥ नत-  
नामायि शुक्लीयात्यंत्यो प्रेते परस्य तु ॥ १५७ ॥ आसीतामरणा  
त्सात्तानियता ब्रह्मचारिणी ॥ यो धर्मस्य कपत्नीनां कांक्षन्ती  
तमनुत्तमम् ॥ १५८ ॥ अनेकानि सहस्राणि कुमारब्रह्मचारि-  
णाम् ॥ दिवं गता निविशारामं कृत्वा कलसन्ततिम् ॥ १५९ ॥

۱۵۵۔ عورتوں کے واسطے یگیہ اور برت اور پاس علیہ و ہینین ہے مرن شوہر کی تنگی دوزی سے شوہر کوک میں ہو چکر درجہ اعلیٰ پاتی ہے۔

۱۶۔ بہت بڑا استری پت کے لوگ مین جانے کی خواہش رکھتے والی بکالت زندگی اور دنیا اپنے شوہر کے کوئی کام ایسا نہ کرے جو اسکے شوہر کے خلاف مرضی ہو۔

۱۵۔ بعد ازاں اپنے شوہر کے دو دیگر شوہر کا نام بھی لے لیا۔ چچے مول بھیج بھول ہے  
 حسب خواہش تھوڑا کھا کر منج البیدین لکھراوقات بسر کرے۔

۱۵۸۔ جس استری کا ایک ہی پتے وہ سب بزناء، عہم کی خواہش کرتی ہوئی اپنے مرتے دم  
نہم سے پریم جاری ہو کر لاغر بدنی سے زندگی بسر کرے۔

۱۶۔ اگر کوئی برون اولاد کے شوگر مبینہ ملتا ہو تو اسے اولاد کے واسطے دوسرا شوگر کرنا چاہیے۔  
اس کا جواب یہ ہے کہ کسی خزانہ کنڈا پر ہم جاری برہمن برون پنڈت اولاد کے شوگر کو چلے جائیے اس  
ت کو سمجھ کر برون اولاد کے غم سے رہے۔

پتہ برتا استری اس عورت کو کہتے ہیں جو کوئی کام خلاف مرضی شوہر کے دیکھے اور شوہر کو پیش پریشوں کے بھگھڑاؤ کی  
پیدا اور بگبگ کرتی رہے۔



उच्छिद्येन तु संस्पृष्टोऽव्यहस्तः कथंचन ॥ अनिधायैव तद्व्य-  
 माचान्नः शुचितामियात् ॥ १४३ ॥ वान्तो विरक्तः स्नात्वा तु घृ-  
 तप्राशनमाचरेत् ॥ आचामेदेव मुक्तान्नं स्नानं मे शुनिनः स्मृ-  
 तम् ॥ १४४ ॥ सुत्वा सुत्वा च मुक्ता च निष्टीव्यो त्कान्नं तानि च  
 ॥ पीत्वा पोऽध्येव्यमाराश्च आचामेत्ययतोऽपि सन् ॥ १४५ ॥  
 यद्यशौचविधिः कृत्त्वोद्व्यशुद्धिस्तथैव च ॥ उक्तो वः सर्वव-  
 र्गानां स्त्रीराणामर्त्तान्निबोधतः ॥ १४६ ॥ बालयावायुवत्या वा  
 बृद्धयावापियोषितो ॥ न स्यात्तं श्रेया कर्त्तव्यं किंचित्कार्यं  
 गृहेष्वपि ॥ १४७ ॥ वात्स्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राह्यस्य यौव-  
 ने ॥ पुत्राराणामर्त्तरि प्रेतेन भजेत्स्त्रीस्वतंत्रताम् ॥ १४८ ॥

۱۴۳- چیز کو ہاتھ میں لیے ہوئے آدمی جو ٹٹے آدمی سے چھو جائے تو اس چیز کو لے ہوئے  
 ہی آجین کرنے سے پاک ہو جاتا ہے۔  
 ۱۴۴- بچے کو خوالا اور دستوں کی بیماری والا انسان کر کے گلی کھائے اور ان دھیر بھون  
 کر کے آجین کرے اور جماع کر کے غسل کرے۔  
 ۱۴۵- سوئے کر اور چھینک کر اور بھون کر کے اور کھار کر اور جو ٹٹو بول کر اور پانی پی کر یا  
 ہوئے پر بھی آجین کرے۔  
 ۱۴۶- بھرگ جی کہتے ہیں کہ بے رش لوگو آپ سے سب درون کی پاک کی طریق کو یاد  
 چیزوں کی پاک کو بھی کہا اب اسکے بعد استروں کے دھوم کتے ہیں۔  
 ۱۴۷- عورت نابالغ ہو یا جوان بائید ہی جو گھر میں کوئی کام خود مختاری سے نہ کرے  
 ۱۴۸- عورت ترکین میں اپنے باپ کے اختیار میں رہے اور جو انی میں اپنے شوہر کے اختیار  
 میں اور بعد وفات شوہر کے اپنے بیٹوں کے اختیار میں رہے خود مختار ہو کر کبھی نہ رہے۔

सत स्त्रीष्वहस्यानां द्विपुरां वहा चारिणाम् ॥ त्रिपुरां स्यात्त-  
 नस्थानां यतीनां तु चतुर्पुरां ॥ १३८ ॥ कल्याणं पुरीषं चास्वा-  
 न्याचान्त उपसृशेत् ॥ वेदमध्ये ध्याया राश्च अन्नमन्नं च सर्वदा ॥ १३९ ॥  
 त्रिराचामिदं पूर्वदिः प्रत्युज्यान्ततो मुखम् ॥ प्राशिरं  
 शीघ्रमिच्छहि स्त्रीश्च स्तुतय कृतकत् ॥ १४० ॥ श्रद्धा रां मा-  
 मि कं कार्ये वपनं न्यायवर्तिनाम् ॥ वैश्यवस्त्री च कल्पश्च द्वि-  
 जोच्छिष्टं भोजनम् ॥ १४१ ॥ नोच्छिष्टं कुर्वते सुख्या विप्रयोऽ-  
 गेयतन्त्रियाः ॥ नश्यन् शूरा गता न्यास्य नश्चान्तराधिष्ठितम् ॥  
 १४२ ॥ स्थान्ति निन्द्यः पारीयचा चामयतः परान् ॥ भौमिके  
 सौमना ज्ञेयान्तेरा प्रयतो भवेत् ॥ १४३ ॥

۱۳۸ - بیشع لینے طہارت گہنٹھہ لوگوں کے واسطے ہی اور برہم چار یون کو دو چند اور یان پرستو  
 لینے جنگل میں عبادت کرنیوالوں کو سرچند اور شنبہا سنیوں کو چہار چند کرنا چاہئے۔  
 ۱۳۹ - نشا و نوتر کر کے ہاتھ پاؤں دھو کر آچن کر کے اندر یون کو چھوئے اور وقت تناول طعام  
 و دینہ خوانی کے بھی آچن کر کے اندر یون کو چھوئے۔  
 ۱۴۰ - بدن کی طہارت کیواسطے بیشع دفعہ پہلے آچن کر کے تپ دو دفعہ شفعہ دھو کر اور ستری  
 اور شور صرف ایک ہی دفعہ شفعہ دھو دین اور آچن کرین۔  
 ۱۴۱ - نیائے سے رہنے والے شور کو مہینہ کے اندر ایک بار حجامت کرنا چاہئے اور اسکی طہارت  
 ویشیہ کے مانند ہے اور برہمن کا پس خوردہ اسکی غذا ہے۔  
 ۱۴۲ - شھوک کے بونڈ بدن کے کسی عضو پر گر جائیں اور جوچھ کا بال شفعہ میں جاتا ہے اور دانت  
 میں جو چیز لگی ہو یہ سب پاک ہیں۔  
 ۱۴۳ - کوئی شخص کسی کو آچن کرانا ہو اور آچن کر نیوالے کے شفعہ سے پانی کا بونڈ زمین پر گر  
 آچن کر نیوالے کے پاؤں پر پڑے تو وہ بونڈ آک برہمن کے برابر ہے اس سے ناپاکی نہیں ہوتی۔







श्वभिर्हतस्य यन्मांसं शुचितन्मनुरब्रवीत् ॥ कव्याद्विच्युत  
 स्यान्नेश्चासडालाद्यैश्च दस्युभिः ॥ १३१ ॥ ऊर्ध्वनाभेयानि स्वा-  
 नितानि मे ध्यानिसर्वशः ॥ यान्यधस्तान्य मे ध्यानिरदेहाच्चैव  
 मलाश्च्युताः ॥ १३२ ॥ महिकाविभुवश्छायागौरश्वः सव्यं र-  
 स्मयः ॥ रजोभूर्वायुश्च स्य र्शो मे ध्यानिरिदं शोत ॥ १३३ ॥  
 विरामुन्नोत्तर्गश्च द्युर्धर्मद्वार्यादेयमर्थवत् ॥ देहिकानां मला-  
 नांच शुद्धिमुदादशत्वपि ॥ १३४ ॥ वसाश्चक्रमसृष्टः मज्जाभूश्च  
 विदध्याणां काराविदः ॥ श्लेष्माश्च दूषिकास्वेदोद्भादशैते दरा-  
 मलाः ॥ १३५ ॥ शकालिं गोशुदेति स्रस्तथैकत्र कोरदश ॥ उभयो-  
 समरातव्यासृष्टः शुद्धिमभीषता ॥ १३६ ॥

۱۔ کتہ و شیر باز و سیاہ و غیرہ دہرین کے مارنے سے اوقات بسر کر نیوے ان سب سے  
 جو جانور کھانے کے قابل مارا گیا اور کھا گوشت سرادھ وغیرہ آتھ جو جن میں پاک ہونے کی کہا  
 ۲۔ نان سے اوپر کے تمام اعضا پاک ہیں اور ناف سے نیچے کے تمام اعضا ناپاک ہیں اور  
 جو فضلہ برتن کا ملحدہ ہو وہ بھی ناپاک ہے۔  
 ۳۔ کئی قطرہ آب و سایہ و گھوڑا و شتر کی کرن و ڈھول و زمین و ہوا و آگ یہ چھ چیزیں

میں پاک ہیں  
 ۴۔ غلط پیشاب و دیگر بارہ فضولوں کو جبکہ وہ جسم سے علیحدہ ہو کر گئے ہوں چھو کر پانی اور مٹی  
 بقدر قدرت لگا کر دھوئے سے پاک ہوتا ہے۔

۵۔ آدمی کے جسم میں یہ بارہ چیزیں فضلہ ہیں۔ چربی، بیج، خون، مچھاپیشاب، غلیظ  
 ناک، گھٹ، کھٹار، کتہ، کپڑا، پستیا۔

۶۔ مٹی کے وسیلے سے پانی کی خواہش کر نیو الا آدمی ایک بار مٹی مقام پیشاب پر پڑے بغیر وہ  
 مقام پاخانہ پر اور دین و دفعہ بائین ہاتھ میں اور سات دفعہ دہستے ہاتھ میں لگا دے۔



چیلچشمہ رانیاں شریہ رلاناں تریہ ॥ شاکمूल فلاناں چ  
 دھانچ چھوڑی ریت ॥ ۱۲۱ ॥ کویاویک یو رتے: کتوپا  
 نام ریت کے: ॥ شری لے ر شری راناں شری راناں شری ریت: ॥ ۱۲۲ ॥  
 شری مچ ر شری راناں شری راناں شری راناں شری ریت: ॥ شری ریت ریت ریت  
 کاریاں شری ریت ریت ریت ریت ॥ ۱۲۳ ॥ شری راناں شری راناں شری راناں  
 لے ریت شری ریت ॥ شری ریت ریت ریت ریت ریت: ۱۲۴ ॥ شری ریت ریت ریت  
 ۱۲۵ ॥ شری ریت ریت ریت ریت ریت: ۱۲۶ ॥ شری ریت ریت ریت ریت ریت  
 شری ریت ریت ریت ریت ریت ॥ ۱۲۷ ॥ شری ریت ریت ریت ریت ریت  
 ریت ریت ریت ریت ریت ॥ ۱۲۸ ॥ شری ریت ریت ریت ریت ریت  
 ۱۲۹ ॥

۱۱۹ - جو پن چھوٹے کے لائن پن آنکے چڑے کا برتن اور بالسن کا برتن ان دونوں کی  
 پاکی کپڑے کی پاکی کے مانند جانا اور ساگ مول بھل انھوں کی پاکی غلہ کی پاکی کے مانند جانا  
 ۱۲۰ - ریشی اور ادنی کپڑا کھاری ٹی سے اور نیپالی کل ریشی سے اور پٹ ریشی سے اور  
 ریشی کا کپڑا سفید ریشی سے پاک ہوتا ہے۔  
 ۱۲۱ - شکر کا برتن اور جو جانور شل ہاتھی وغیرہ چھوٹے کے قابل ہو اسکے دہن اور سینگ  
 چڑی کا برتن انھوں کی پاکی شل پاکی پار چڑی کے جانا یا گلو کے موتر یا پانی سے سمجھنا۔  
 ۱۲۲ - پانی چھڑکے سے ترن اور کاٹھ دپلا اور جھارو دینے سے نکلن اور لیپنے سے گھراؤ  
 دوسری بار لپکانے سے مٹی کا برتن پاک ہوتا ہے۔  
 ۱۲۳ - شراب - پیتاب - غلطہ - لکھنا - پیپ - دھن - این سے کوئی ایک اگ گیا ہو تو  
 وہ برتن دوسرے بار لپکانے سے پاک نہیں ہوتا۔  
 ۱۲۴ - جھارو - لگانا - پیتاب - چھڑکاؤ کرنا - اور مٹی چھیلنا گلو کا ماس مٹی قیام ان پاکی  
 سے زمین پاک ہوتی ہے۔



مختیوہ: शुद्धतेशोधनदीवेगेन शुद्धति ॥ रजसास्त्रिमनोद-  
 दामन्यासेन द्विजोत्तमः ॥ १०८ ॥ अद्भिगाचारिण शुद्धान्तिम-  
 नः सत्येन शुद्धति ॥ विद्यातपोभ्यां धूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध-  
 ति ॥ १०९ ॥ सद्यशी चस्थवः प्रोक्तः प्राणी रस्य विनिर्गमः ॥ ना-  
 नाविधानां इव्याराणां शुद्धेः शराणुत्तिर्गमः ॥ ११० ॥ तैजसा-  
 नां मर्यानां च सर्वस्याश्ममयस्य च ॥ भस्मना द्विहृदा चैव शु-  
 द्धिरक्तामनीषिभिः ॥ १११ ॥ निर्लेपकांचनं भाग्यमद्विरेव वि-  
 शुद्धति ॥ अजस्रमश्रममयं चैव राजतं चानुपमकृतम् ॥ ११२ ॥ अ-  
 यामन्ते च संयोगाद्वैश्वदेव्यं च निर्बभौ ॥ तस्मात्तयोः स्वयोन्येव  
 निर्मोको गुणावतरः ॥ ११३ ॥

۱۰۸۔ جو چیزیں پاک کرنے کے قابل ہیں وہ مٹی اور پانی سے اور دیا روانی سے اور  
 غورت کا دل غیر مرد سے لگا ہے وہ حیض سے اور برہمن سنیا اس اختیار کر شیے پاک بن جاتا ہے۔  
 ۱۰۹۔ پانی سے تمام اعضا بدن کے پاک ہوتے ہیں اور راستی سے دل پاک ہوتا ہے اور برہم دویا  
 اور تپ سے جھوٹ آتما لینے لنگ شریر سے جھوٹا آتما کے پاک ہوتا ہے اور گیان سے بدھ شوق  
 ہوتی ہے۔

۱۱۰۔ بھرگ جی کہتے ہیں کہ ہر شیو جسم کی پاک کرنے طریق کو کہا یا انواع ہتھام کی چیزوں کی پاک ہونے کا طریق  
 ۱۱۱۔ اشو وغیرہ کے برتن جو اہرات کے برتن پتھر کے برتن ریشہ راکھ دھٹی و پانی سے پاک ہوتے ہیں  
 اسی بات کو من وغیرہ رشیوں نے کہا ہے۔

۱۱۲۔ جس ہونے یا سنگھ یا موتی یا پتھر کے برتن میں جو ٹھن وغیرہ مین لگی اور جس پے کے برتن  
 میں رکھا جائے خطوط مین میں ریشہ صرف پانی ہی سے پاک ہوتے ہیں۔

۱۱۳۔ آگ اور پانی کے لینے سے سونا اور چاندی پیدا ہوتا ہے اسلئے اپنی اصل کر کے دونوں  
 کی پاکی سب اچھی ہے۔

अनुगम्येच्छयाप्रेतं ज्ञातिमज्ञातिमेव च ॥ स्नात्वा स चैतः स्यष्टा  
 ग्निं घृतं प्राशय विशुद्ध्यति ॥ १०३ ॥ न विप्रं स्वेष्टु तिष्ठत्सु मृतं -  
 श्वहेरानाययेत् ॥ अस्वम्या ह्याहतिः सा स्याच्छूद्रसंस्पर्श-  
 वृषिता ॥ १०४ ॥ ज्ञातं तयोऽग्निराहारो मन्मनो वार्युपांज-  
 नम् ॥ वायुः कर्माणि कालौ च युजेः कर्तृशिदिहिनाम् ॥ १०५ ॥  
 सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं यमं स्थितम् ॥ योऽर्थेऽयुचिर्हि  
 स युचिर्न मद्धारि युचिः युचिः ॥ १०६ ॥ सा स्याद्युद्धानि वि-  
 द्यां सोरानेनाकार्यकारिराः ॥ प्रच्छन्नापायाज्येन तपसा वे-  
 दचित्तमाः ॥ १०७ ॥

۱۰۳- مراہو آدمی اپنی ذات ہو یا دوسری ذات ہو اسکے پیچھے اپنی قوم ہریش سے جا کر  
 مع کپڑوں کے انسان کر کے اور گھی کھائے اور آگ کو چھوے تب شہدہم ہوتا ہے۔

۱۰۴- جو براہمن کا ہم ذات ہو تو اس مردہ براہمن کو شور نہ لیجاے کیونکہ شور کے چھوٹنے  
 سے اسکے شہریر کی آگن میں آہٹ دینا سورگ کے واسطے مہین ہوتا۔

۱۰۵- گیان یث۔ آگن۔ آہار۔ مٹی۔ تپن۔ جل۔ تپ۔ ہوا۔ سورج۔ زمانہ۔ یسب۔ دیون کو  
 پاک کرینوالے ہیں۔

۱۰۶- سب شہوج یعنی پاک میں اتھ شہوج (یعنی دولت کو راستی سے حاصل کرنا) براہے جس  
 آدمی کی دولت پاک ہو وہی پاک ہے اور جو آدمی مٹی و پانی کے سبب پاک ہو اگر دولت میں  
 پاک نہیں ہے وہ آدمی پاک نہیں ہے۔

۱۰۷- جو پٹھت ہو وہ کشادہ یعنی عفو و تقصیر کر کے پاک ہو جاتا ہے اور جو آدمی کام واجب  
 التکر کو کرتا ہے وہ دان کرتے سے پاک ہوتا ہے اور جو پاپ کرنے میں مہتر  
 ہے وہ جب کر کے پاک ہوتا ہے اور دیر پڑھنے والا تپ کر کے پاک ہوتا



लोकेशादिष्टितो राजानां शौचविधीयते ॥ शौचाशौचं हि  
मर्त्यानां लोकेशप्रभवाप्ययम् ॥ ६७ ॥ उद्यते राहवे शस्त्रैः सत्रध  
र्महतस्य च ॥ सद्यः सन्निष्ठते यस्तथा शौचमिति स्थितिः ॥ ६८  
॥ विप्रः शुद्धात्ययः स्पृष्ट्वा क्षत्रियो वाहनायुधम् ॥ वैश्यः प्रतोदं  
रश्मौ न्वायष्टिं शूद्रः कृतक्रियः ॥ ६९ ॥ रातद्वोऽभिहितं शौचं स-  
पिराड्युद्विजोत्तमाः ॥ असपिराड्युसर्ज्येयुः प्रेतशुद्धिं निबो-  
धतः ॥ १०० ॥ असपिराडं द्विजं प्रेतं विप्रो निहंत्य बन्धुवतः ॥ वि-  
शुद्धातित्रिरात्रे रात्रा तुरात्रां श्वान्धवान् ॥ १०१ ॥ यद्यन्मम-  
त्तितेयास्तु दशाहेनैव शुद्ध्यति ॥ अनदन्ममहैवनचेत्तस्मि-  
न्गृहे च सैव ॥ १०२

۹۶۔ راجہ سب کو کیا نون کا اس نے حصہ ہے اس سے اسکو موت تک نہیں لگتا اور راجا کو کا مالک ہے، اس سے سب دیویوں کی یا کی اور نایاگی کو دُور کر سکتا ہے۔

۹۸۔ لڑائی میں کشتری دھم کر کے جو آدمی ہتھیار لگنے سے مرنے لگا اسی وقت پاکی اور گلیہ قائم ہوتی ہے۔

۹۹۔ تمام کریا کے ستوت کے اخیر پر ایسے جن اور کثرت سے اور ایسی ہی دنیا اور ستودار لائق کو چھو کر پاک و جاہل  
۱۰۰۔ ہر گز کہتے نہ کہ تیرے لئے کوئی شے نہ ہو۔ ان کا نہ کہتے تھے کوئی شے نہ ہو۔ ان کو نہ کہتے تھے کوئی شے نہ ہو۔

۱۰۰۔ پھر جی جیسے میں نے سہرس کو لو اپنا پسندون کا سونڈک، لہا اب ان کو کون کی سہرس  
شیرہ کو کہتے ہیں چہ پسند من بہن من۔

۱۰۱۔ جو براہمن سنیٹین ہیں ہے اسکو کھائی کے مانند مر گھٹ تک لیا کرتین رات میں پاک ہوتا ہے اور ماما اور موسیٰ وغیرہ کو کچھ مر گھٹ تک لیا کرتین رات میں پاک ہوتا ہے۔

۱۰۔ جب میرے ہونے کے سبب سے اُن کو بھوجن کرے تو اس دن میں شرم ہوتا ہے اور اگر اُن بھوجن نہ کرے اور نہ اس کے گھر میں قیام کرے تو ایک دن میں شرم ہوتا ہے۔

۱۰ استخوانی بار من -

दक्षिणोनमृतं मृदं पुरद्वारेणानिर्हरेत् ॥ यच्चिमोनरपूर्वस्तु-  
 यायोगं हि जन्मनः ॥ ६३ ॥ नराज्ञामघदीयोऽस्तिवृत्तिनां न च  
 सन्निराम ॥ हेतुस्थानमुपासीनावह्यभुताहिते सदा ॥ ६३ ॥  
 राज्ञो महात्मिके स्थाने सद्यः शौचं विधीयते ॥ प्रजानां यरि-  
 सार्यमासनं चान्नकारणम् ॥ डिवाहवहतानां च विद्युतापा-  
 र्थिवेन च ॥ गोत्राक्षरास्य चैवार्थेयस्य चैव तियाथिवः ॥  
 ६५ ॥ सोमाग्न्यर्कानिलेन्द्राणां वित्ताप्यत्योर्यमस्य च ॥ अ-  
 दानां लोकपालानां वयुर्धारयते नृपः ॥ ६६ ॥

۹۲- شکر بنو - اتر پورب - کوئن - دروازہ سے حسب سلسلہ اول دوم و سوم و چہارم  
 دروازہ سے بڑا کھن کھنری دیشہ ستور کا مڑوہ لیجانا چاہئے۔

۹۳- راجا و برہم چاری چاندرا بن وغیرہ برت کا کر نیوالا دیگیہ کر نیوالا ان تینوں کو تنوک  
 بنین لگنا کیونکہ راجا لورا جانور کی جگہ پر بیٹھا ہے اور برہم چاری برت کر نیوالا اور دیگیہ کر نیوالا  
 یہ سب ہر وقت برہم سروپ ہیں۔

۹۴- راجا اوصاف کر تین پاک رہتا ہے دوسرے کام میں بنین کیونکہ رعایا کی حفاظت بغیر  
 شگھاس پر بیٹھے بنین ہوتی۔

۹۵- بدون راجا کے جو لڑائی ہوئی اور زمین جو آدمی مر گئے اور بجلی ٹڑک رہی مر گئے اور راجا  
 کے حکم کے جو آدمی مارنے کے لائق مائے گئے اور برہم اور گنوکے واسطے جو آدمی مر گئے  
 ایسے مرن میں تنوک بنین ہوتا اور اپنے کام کے لئے جبکورا جاتونک لگنا بنین چاہتا  
 اسکو بھی تنوک بنین لگنا۔

۹۶- چند زمان - آگن - سوچ با یو اور کثیر بر بن نیم ان سب کے دنوں کو راجا دھارن  
 کرتا ہے۔

आचम्यप्रयतो नित्यं जपेदशुचिदर्शने ॥ सौरात्मं ब्रान्यथोक्ता हं  
 पावमानीश्च शक्तिः ॥ ८६ ॥ नारं स्पृष्ट्वा स्थिसन्नेहं स्नात्वा वि-  
 प्रो विमुच्यति ॥ आचम्यैव तु निःस्नेहं गामालभ्या र्कमीक्ष्य-  
 वा ॥ ८७ ॥ आदिद्यो नोत्कंकुर्यादाव्रतस्य समापनात् ॥ समा-  
 प्रेतत्कंकत्वा त्रिरात्रे सो वमुच्यति ॥ ८८ ॥ जया संकल्पात्ता-  
 नां प्रव्रज्या सुचतिष्ठताम् ॥ आत्मना स्त्यागिनां चैव निवर्त्तेतो-  
 र्ह क्रिया ॥ ८९ ॥ पावरादभाषितानां च चरन्तीनां च काम-  
 तः ॥ गर्भमर्तदुहं चैव सुरापीनां च योषिताम् ॥ ९० ॥ आचा-  
 र्यस्वसृपाभ्यां पितरं मातरं च युरसः ॥ निर्हृत्य तु व्रती प्रेतान-  
 व्रतेन विमुच्यते ॥ ९१ ॥

۸۶- ناپاکی کے دیکھنے میں آجین کر کے بدھ سے اپنی طاعت کے موافق عہدہ جیسے چھاہلو  
 ہو ویسے ہی سورج ناراین کے منتر یا کسی دوسرے پاک کریموں کے منتر کا جب کرے۔

۸۷- برہمن آدمی کی استخوان ترکو چھو کر اٹھان کرنے سے پاک ہوتا ہے اور استخوان  
 خشک کو چھو کر آجین کر کے گنوجھونے یا سورج بھگوان کے درشن سے پاک ہوتا ہے۔

۸۸- برہم چاری کسی کے مرنے میں جل نہ دیوے جب تک کہ کابریت پورا نہ ہو جاوے کابریت پورا ہو  
 پر جل و کر تین رات میں پاک ہوتا ہے۔

۸۹- جئے اپنے دھرم کو چھوڑ دیا اور جو اتم درن کی استری میں رخ ورن کے بیچ سے پیدا ہوا  
 اور جو چھوٹا شیدیاں و صھارن کے بیچ ہو اور جو خلاف شاستر آتما کا نیناں کوئے والا ہوان کے  
 مرنے میں جل نہ دینا چاہئے۔

۹۰- پاکھنڈ دھرم یعنی ویکہ خلاف دھرم کریموالی اور اپنی خوشی سے جہان بچا وہاں طانیلی  
 جمل اور اپنے شوہر سے کسی کریموالی شراستینے والی ایسی عورتوں کے مرنے میں جل نہ دینا چاہئے۔

۹۱- آچارچ اُپا دھیا ماما پتا کووان سمجھون کا دوا کر نیسے برہم چاری اپنے چھوٹے شوہر سے نہیں ہوتا



विगतक्षुविदेशस्यंशुगायाद्योह्यनिर्देशम् ॥ यच्चैशंशरात्र-  
स्यतावदेवाशुचिर्भवेत् ॥ ७५ ॥ अतिक्रान्तेदशाहेचत्रिरात्रम-  
शुचिर्भवेत् ॥ सम्यत्तरव्यतीतेतुसृष्ट्वैवापोविशुद्धाति ॥ ७६ ॥ नि-  
र्देशंज्ञातिमस्यांशुत्वापुत्रस्यजन्मच ॥ सवासजलमाशुत्यशुद्धो  
भवतिमानवः ॥ ७७ ॥ बालैरेशान्तरस्येचष्टयकृपिंडेचसंस्थिते  
॥ सवासजलमाशुत्यसद्यसचविशुद्धाति ॥ ७८ ॥ अन्तर्देशा-  
हेस्याताञ्चेत्युन्मर्शजन्मनी ॥ तावत्स्यादशुचिर्विश्रोयाव-  
त्तत्पारनिर्देशम् ॥ ७९ ॥ त्रिरात्रमाह्वराशौचमाचार्येसंस्थि-  
तेसति ॥ तस्यपुत्रेचपत्न्यांचदिवारात्रमितिस्थितिः ॥ ८० ॥

۷۵۔ دو ستر ملک میں وفات پائے ہوئے کی خبر وصال دن کے اندر سننے میں آوے تو وصال  
میں ختنے دن باقی رہیں ان باقی ماندہ دنوں تک سو تک ماننا چاہئے  
۷۶۔ اگر مرنے سے دس دن بعد سننے میں آوے تو تین دن رات تک سو تک ماننا چاہئے  
اور اگر ایک سال کے بعد سننے میں آوے تو سننے والا انسان کر کے شرع ہو تا ہے۔  
۷۷۔ وصال دن کے بعد اگر برادری میں کسی کا مرنے اور بیٹے کا جنم سننے میں آوے تو  
کپڑوں کے غسل کرنے سے پاک ہو جاتا ہے۔  
۷۸۔ دو ستر ملک میں سناؤ ذکر بالک کارن سننے میں آوے تو کپڑوں کے غسل  
سے استیوقت پاک ہو جاتا ہے۔  
۷۹۔ ایک کا جنم ہو کر دوسرے کا جنم وصال دن کے اندر ہو یا ایک کے مرنے سے وصال دن کے اندر  
دوسرے کا مرنے ہو تو پہلے سو تک کے ختم ہونے سے دوسرے سو تک بھی ختم ہو جاتا ہے۔  
۸۰۔ آچانج کے مرنے میں جبلا کو تین رات تک سو تک ہونا ہو اور آچانج کی استری  
اور اس کے بیٹے کے مرنے میں ایک رات دن تک سو تک ہو تا ہے تا ستر میں لکھا ہے









वर्षे वर्षेऽश्वमेधेन योजयेत् शतं समाः ॥ मां सानिचन स्वाहेद्य  
 स्तयोः सुराय फलं समम् ॥ ५३ ॥ फलमूला शनैर्मध्ये सुच्यन्ता-  
 नांच भोजनैः ॥ न तत्फलमवाप्नोति यन्मांसपरिचर्जनात् ॥ ५४ ॥  
 मांसमक्षयिता सुत्रयस्य मांसमिहाक्षयहम् ॥ इतान्मांसस्य-  
 मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणाः ॥ ५५ ॥ न मांसमक्षरो रोषो न य-  
 येन चर्मैषुने ॥ प्रवदन्तिरेवाभूतानां निवृत्तिस्तु महाफला ॥ ५६ ॥  
 प्रेतमुज्झिप्रवक्ष्यामि द्रव्यमुद्धितं यैव च ॥ चतुर्गामपि वरा-  
 नां यथा वदन्तु पूर्वशः ॥ ५७ ॥

۵۳۔ جو شخص تلو بریں تک ہر ایک بریں میں ایک ایک سٹو مہدہ گیئہ کرتا ہے اور دوسرا  
 شخص مانس کو نہیں کھاتا ہے ان دونوں کے پیٹہ کا پھل برابر ہے۔  
 ۵۴۔ مانس کے ترک کرنے سے جو پھل ہوتا ہے وہ پھل پوثراناج تھی وغیرہ جو من جی کا  
 ان ہے اور مول پھل انھوں کے کھانے سے نہیں ہوتا۔  
 ۵۵۔ جبل مانس کو میں اس لوگ میں کھاتا ہوں اور پر لوک میں بھلو کھاتا مانس لفظ  
 کے ہی سنی ہیں یہ بات پتھرت لوگ کہتے ہیں۔  
 ۵۶۔ مانس اور شراب ان دونوں کے کھانے میں کھپہ دوش نہیں ہے اور جاع میں  
 بھی دوش نہیں ہے کیونکہ یہ تو حیو و نکا سبھا ہے ہر لیکن دھنوں کا ترک کرنا بڑا  
 پھل ہے۔  
 ۵۷۔ اب چاروں لون کی پرست شدہ اور درہرہ شدہ کہتے ہیں۔

۵۸۔ اس شو کا عمل طلب ہو کر گیئہ کے مانس کھانے میں اور شادی میں جاع کرنے میں اور شردتاری نام  
 میں شراب پینے میں دوش نہیں ہے لیکن تاہم اس کا ترک کرنا بہت اچھا ہے۔

نیشوکتستو یثا نیا ی یو ماں سنا تیا مانو : ॥ سہ پتھ پ ۳ یلے ن یو  
 تیا سہ مانو ک ویشا تیا ॥ ۳۵ ॥ ا سہ سہ تان پ ۳ یلے ن یو  
 پ : کرا چن ॥ سہ سہ تان پ ۳ یلے ن یو  
 ۳۶ ॥ کوریا دھت پ ۳ یلے ن یو  
 یا ہن پ ۳ یلے ن یو  
 ۳۷ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۳۸ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۳۹ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۰ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۱ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۲ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۳ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۴ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۵ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۶ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۷ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۸ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۴۹ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو  
 ۵۰ ॥ یا بلی پ ۳ یلے ن یو

۴۶۔ جو شخص کسی ستر کی بدھ جو مانس شرمہ ہر او سکو جو آدمی ہینن کھاتا وہ پر لوک میں کٹس خیم تک

۴۸۔ بدھ کو بدھون ممت کا سنا کا ہینن ہوا اسکو برہن کبھی نہ کھائے اور پیشہ تسانتر کے موافق نہ

۴۹۔ مانس کی پیدائش اور جیو کا نہایت دل چاہتگی یا بیٹھی کا پیش بنا کر کھا کر پیش

۵۰۔ جو آدمی بدھ کو چھو کر شپا کی طرح مانس ہینن کھاتا وہ لوگ میں سب سے چھوٹا ہوتا ہے

۵۱۔ جو شخص دو سر کے مانس سے اپنے مانس کے بڑھانے کی اچھا کرتا ہے اس کی یادہ کوئی

۵۲۔ جو شخص دو سر کے مانس سے اپنے مانس کے بڑھانے کی اچھا کرتا ہے اس کی یادہ کوئی

۵۳۔ جو شخص دو سر کے مانس سے اپنے مانس کے بڑھانے کی اچھا کرتا ہے اس کی یادہ کوئی

۵۴۔ جو شخص دو سر کے مانس سے اپنے مانس کے بڑھانے کی اچھا کرتا ہے اس کی یادہ کوئی

۵۵۔ جو شخص دو سر کے مانس سے اپنے مانس کے بڑھانے کی اچھا کرتا ہے اس کی یادہ کوئی

मधुपर्धेऽथ

न्यवेत्यः शोचयजेचपितृदेवतकर्मणि ॥ अत्रैवपशवोहिं  
जः ॥ अमोत्रवीन्मनुः ॥ ४१ ॥ एवर्थेषुपशुंहिंसवेदतत्त्वार्थवि  
वरण्येसमभमानंचपशुचैवगमगत्युत्तमांगतिम् ॥ ४२ ॥ ग्रहेगु  
द्यपिसंचप्रवतेवसन्नात्मवान्हिजः ॥ नावेदविहिताहिसामाय  
चरे ॥ अमैयुःरेत ॥ ४३ ॥ यावेदविहिताहिसानियतास्मिंश्चरा  
सकानि ॥ सामेवतांविद्याहेदाहर्मोहिनिर्वभो ॥ ४४ ॥ योऽहिं  
कचित्सुधतानिहिनस्यात्मसुखेच्छया ॥ सजीवंश्चमृतश्चैव न  
कीर्यति ॥ स्वमेधते ॥ ४५ ॥ योचन्धनवधक्लेशान्प्राशानानंचि  
॥ ससर्वस्यहितप्रेषुः सुखमत्यन्तमश्नुते ॥ ४६ ॥

۱-م - مگر پیگ یگیدو کریم پتر کریم ان سب میں پیش کو مارنا چاہیے اور

اس بات کو شری من جی نے کہا ہے۔

۲-م - ایسے کرہوں میں پیش کو مار کر ویکر کے اصل مطلب کو حاصل کرنا چاہیے۔

۳-م - کو تم گت کو پہونچانا ہے۔

۴-م - میں رہ کر برہمن ویکر کے خلاف جان کشی کر دو

۵-م - جو ہنس اس دنیا میں ویکر کے موافق ہے اس کو ہنس یعنی جان کسی نیکانہ چاہیے کیونکہ ویکر

ہی سے دھرم نکلتا ہے۔

۶-م - جو جو مارنے کے لائق ہینے انکو جو کوئی اپنے سکھ کے واسطے مارتا ہے وہ جیتا ہمارا ہے

۷-م - کہیں سکھ ہینے پاتا ہے۔

۸-م - جو شخص کسی جاندار کو پکڑنے اور مارنے اور ایذا دینے کی خواہش ہینے رکھتا وہ سبکا بھلا

چاہنے والا ہے اسلئے بڑا سکھ پاتا ہے۔



चराणामन्नमचरादंष्ट्रिणामप्यदंष्ट्रिणः॥अहस्ताश्चसहस्ता  
नांश्चराणांचैवभीरवः॥२६॥नात्तादुष्यत्यदन्नाद्यान्प्राणि-  
नोऽहन्यहन्यपि॥धात्रैवसृष्टाह्याद्याश्चप्राणिनोऽत्तारणवच  
॥३०॥यज्ञायजग्धिर्मांसस्येत्येवैवोविधिःस्मृतः॥अतोऽ  
न्यथाप्रवृत्तिस्तुराससोविधिरुच्यते॥३१॥क्रीत्वास्वयंवायु-  
त्याद्यपरोपकृतमेववा॥देवान्यित्थश्चार्ययित्वास्वदन्मांसं-  
नदुष्यति॥३२॥नादाद्यविधिनामांसंविधित्तोऽनापदिद्विजः  
॥जग्ध्वाह्यविधिनामांसंप्रेत्यतैरद्यतेऽवशः॥३३॥नतादृशंभ-  
वत्येनोन्मृगहन्तुर्धनार्थिनः॥यादृशंभवतिप्रेत्यह्यमांसा-  
निषादतः॥३४॥

۲۹- جانداران متحرک کی غذا جانداران ساکن میں ڈال دے والوں کی غذا بدوون ڈال دے والے ہیں  
والوں کی غذا بدوون ہاتھ والے ہیں شور میروں کی غذا ڈالنے والے ہیں  
۳۰- کھانے کے لائق جانوروں کو کھانے سے کھانے والے کو دوش میں ہوتا کیونکہ کھانے کے لائق  
جانور کو اور کھانے والے جاندار کو برعاجی ہی نے پیدا کیا ہے۔  
۳۱- گیہ کے منت مانس کو بھوجن کرنا شاستر کی بدھ ہے سو اس کے اور مانس بھوجن کرنا کشتی  
بدھ ہے۔

۳۲- مول لئے ہوئے یا دوسرے کے لئے ہوئے مانس کو دینا اور پتروں کو بھوک لگا کر کھانے  
سے پاپ نہیں ہوتا۔

۳۳- جو برہمن شاستر کی بدھ جانتے والا، وہ بغیر وقت تعینت کے اور حالت میں بدھ  
خلاف اگر مانس کو کھائے تو اس کے مانس کو پرلوک میں وہ کھاتا ہے جبکہ مانس کو اس نے کھایا ہے  
۳۴- دولت کے لئے ہر گے ماریو والے کو دیا پاپ نہیں ہوتا جیسا پاپ پتھر مانس کھانے  
کو پرلوک میں ہوتا ہے۔

यत्किंचित्त्वेह संयुक्तं भक्ष्यं भोज्यमगर्हितम् ॥ तत्पर्युषितम-  
प्याद्यं हविः शेषं च यद्भवेत् ॥ २४ ॥ चिरस्थितमपित्वाद्यमस्तेहा-  
क्तं द्विजातिभिः ॥ यवगोधूमजंसर्वपयशश्चैव विक्रिया ॥ २५ ॥  
एतदुक्तं द्विजातीनां भक्ष्याभक्ष्यमशेषतः ॥ मांसं स्यातः प्रवक्ष्या-  
मिविधिं भक्ष्यावर्जने ॥ २६ ॥ प्रोक्षितं भक्ष्येन्मांसं ब्राह्मणा-  
नां च कास्यया ॥ यथाविधि नियुक्तास्तु प्राणानामेव चात्यये  
॥ २७ ॥ प्राणस्यान्मिरं सर्वं प्रजापतिरकल्पयत् ॥ स्थावरं  
जंगमं चैव सर्वं प्राणस्य भोजनम् ॥ २८ ॥

۲۴۔ جو چیز گھی یا تیل سے پکی ہو اور کھانے کے لائق ہو وہ باسی بھی ہو تو اسکو بھون کر کرسے اور  
پکا ہوا اسپتہ بھی اگر یہ باسی ہو کھانا چاہیے۔

۲۵۔ جو چیز جو یا گھوٹوں سے بنی ہے مگر گھی یا تیل سے نہیں پکی اور باسی اور جو چیز دوسرے  
بنی ہے وہ یا باسی، اسکو بھون کر کرسے۔

۲۶۔ جو چیز برہمن کثرتی ویشیکہ کھانے کے لائق ہیں اور جو نہیں لائق ہیں اذکو کھانا  
ماں کھانے کی ممانعت کو کہتے ہیں

۲۷۔ نیز دلش نام سنسکار سے جو ماں بنی ہے اور یکہ میں مہن کرنے سے جو ماں بچاؤ  
دونوں طرح کے ماں کو بھون کرنا چاہیے اور جب برہمنوں کو ماں کی اچھا ہوتی شستر  
کی بدھ سے ماں کو بھون کرین اور جبکہ بھوکھ سے جان جاتی ہو وقت بھی ماں کو بھون کرین

۲۸۔ اشتھا و حکم جتنی چیزیں دنیا میں ہیں وہ سب جان کی غذا ہیں اسات کو کثرتی برہمنی  
نے کہا ہے۔

۲۹۔ یو تو ان کا حصہ۔

+ ساکن۔

# متحرک۔

शवाविधंशल्यकंगोधांस्वङ्गकूर्मशशास्तथा॥ भक्ष्याप्यंचनखे  
 व्याहरनुद्वांश्चैकतोदतः॥ १८॥ छत्राकंविड्वराहंचलशुनंश्रा-  
 मकुक्कुटम्॥ पलाराडुगुंजनंचैवमत्याजग्ध्वापतेद्विजः॥ १९॥  
 ॥ अमत्यैतानिषदजग्ध्वाक्छंसांतपनंचरेत्॥ यतिचान्द्रा-  
 यरांवापिशेषेषूपवसेदहः॥ २०॥ संवत्सरस्यैकमपिचरेत्क-  
 च्छंद्विजोत्तमः॥ अज्ञातमुक्तशुद्धार्थज्ञातस्यतुविशेषतः२१  
 यज्ञार्थंवाह्यारोर्वध्वाःप्रशस्ताश्चापसिराः॥ भृत्यानांचैव-  
 वत्यर्थमगस्त्योह्यचरत्पुरा॥ २२॥ वभ्रुवुर्हिपुरोडाशाभक्ष्या-  
 रांश्चापसिरासु॥ पुरारोषपियत्तेष्वुत्रासवसवेयुच॥  
 ॥ २३॥

- ۱۸- پانچ ناحن والون مین سالی گوہ ساہی گہیڈا کچھرا کھر ہا کھانے کے لائق مین  
 اور اونٹ کو چھوڑ کر ایک طرف دانت رکھنے والے علاوہ انکے نبکی مافیت ہو کھانی  
 کے لائق مین مین
- ۱۹- لکڑیا کا ٹون کا رہنے والا سولیس گاؤن کا مڑ غا پیاز گاجر ان سب کو چاکر بھون  
 کرے تو تیت ہو جاتا ہے مینے اپنے دمدم درن آئترم کے درجہ سے کر جاتا ہے۔
- ۲۰- اگر ان چھو کو بغیر جائے بھون کرے تو سانب پن نام کو چھو برت کو کرے یا سنب  
 برت کو کرے باقی درخت کا لاسا وغیرہ کھانے مین ایک دن فافہ کرے۔
- ۲۱- جو چیز کھانیکے لائق نہیں ہے اسکو بغیر جانے کھانے مین جو دوش ہے اسکو ناش کر نیکے لئے  
 سال بھر مین ایک کو چھو برت کو کرے اور اگر چاکر کھایا ہو تو اسکے لئے خاص کو چھو برت کرے۔
- ۲۲- یگیہ کیواسے اور نوکروں کے کھانے کیواسے اچھے ہرن اور کپڑی (پرند) مارنا چاہئے  
 اگست رت لے اگلے زمانہ مین ایسا کیا ہے۔
- ۲۳- اگلے زمانہ مین رتھون نے یگیہ کے لئے کھانے کے لائق ہرن اور کپڑیوں کو مارا ہے





د्वयाकसरसंयावंपायसाधूपमेवच ॥ अनुपाकतमांसानिदे-  
 बान्नानिहवींषिच ॥ ७ ॥ अनिर्दिशायागोः क्षीरमौश्मेकशफ  
 तथा ॥ आविकंसंधिनीक्षीरविवक्षायाश्चगोः पयः ॥ ८ ॥ आर-  
 शयानांचसर्वेषांशुगाराणामाहियंचिना ॥ स्त्रीक्षीरदैववर्ज्यानि  
 सर्वशुक्तानिचैवहि ॥ ९ ॥ रधिभक्ष्यंचशुक्तेषुसर्वचरधिभंसंभव  
 ॥ यानिचैवाभियुयत्तेषुष्यमूलफलैः शुभैः ॥ १० ॥ क्रव्यादाञ्छ  
 कुनीत्सर्वास्तथाग्रामनिवासिनः ॥ अनिर्दिष्टांश्चैकशफांश्चि  
 द्विभंचविवर्जयेत् ॥ ११ ॥

۷۔ دیتا اور پتہ دن کو چھوڑ کر اپنے واسطے تل ملا ہوا بھات دو دھ کر گیون کے آٹا سے بنا ہوا  
 پکوان کبیر مال ہوا اور جو جانور منہ سے سہ دھ نہیں کیا گیا اور سکا مانس اور جو آن دیتا اور  
 واسطے بنایا گیا ہو اور انکو بھوک نہ لگایا گیا ہو اور جو پتہ نہ ہون کیواسطے بنا اور نہ ہون نہیں ہوا  
 ان سب کو دیتا اور پتہ دن کے بھوک لگائے بغیر کھائے۔

۸۔ بیانے سے دن دن تک گنوا دو دھ اور اثنی عشر ایک کھڑ والی دینی گھوڑی وغیرہ اور غنیمت  
 اور گاجن گنوا اور وہ گنوج کا پیر مر گیا ہو ان سب کا دو دھ پینا منع ہے۔

۹۔ سوکے بھینس کے اور جتنے جاندار بھگل سکے رستے والے مین اور لکا دو دھ اور عورت کا دو دھ  
 اور جو پسیر بدون ملانے کسی دوسری چیز کے کھن بسبب گزرنے ایام کے کھتی ہو جائے  
 ان سب کا کھانا منع ہے۔

۱۰۔ لیکن کھٹی چیز دن مین دی اور دہی سے بنی ہوئی چیز مین اور پانی سے بنا ہوا پھول پھول  
 وغیرہ کو کھانا منع نہیں ہے۔

۱۱۔ کچے گوشت کے کھانے والے گدھ وغیرہ پرندگان مین رستے والے کبوتر  
 وغیرہ پرندہ ایک کھڑ والے جانور باستثناء انکے جو شستر مین کھانے کے لائق  
 کئے گئے مین اور ٹھری ان سب کو نہ کھائے۔



महर्षिपितृदेवानांगत्वान्तरायं यथाविधि ॥ पुत्रे सर्वसमाप्त्य  
वसेन्माध्यस्थमाश्रितः ॥ २५७ ॥ एकाकी चिन्तयेन्नित्यं विवि-  
क्तेहितमात्मनः ॥ एकाकी चिन्तयानो हियं श्रेयोऽधिगच्छति-  
॥ २५८ ॥ एवोदिता गृहस्थस्य हन्ति विप्रस्य शाश्वती ॥ स्नात-  
कव्रतकल्पश्च सत्ववृद्धिकारः शुभः ॥ २५९ ॥ अनेन विप्रो वृत्ते-  
न वर्त्तयन् चरशास्त्रवित् ॥ व्यपेतकल्मषो नित्यं ब्रह्मलोके म-  
हीयते ॥ २६० ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां  
चतुर्थोऽध्यायः ४

۲۵۷- دیوریش پتران تیزون کر سہ پتھاب ہر چھوٹ کر سب چیز بیٹے کو سپرد کر کے  
نمارک اللہ بنیا ہو کر سب کو بچشم وحدت برابر دیکھے اور گھری میں رہے۔  
۲۵۸- ایک انت میں اکیلا اپنی آتما کے ہت کرنتیہ ہی دھیان کرے اس میں برہم کلیا  
ہوگا۔  
۲۵۹- برہمن گرہستھ کا یہ نتیجہ برت کما اور بدھ کا برہمانیوالا مناکت برت بھی کما۔  
۲۶۰- دید اور شاستر کا جانتے والا برہمن اور پرکھی ہوئی دت سے رہا کرے تو سب پون  
سے چھوٹ کر ہمیشہ برہم لوگ میں پوچھنے کے لائق ہو۔

من جی کا دھرم شاستر بھگ جی کی سنگھتا  
کا چوتھا ادھیائ سماپت ہوا



हृत्कारोद्गर्जतः क्रूरचारेः संवसन् ॥ अहिंसोदमदानाभ्याज-  
 सेत्सर्गां तथा व्रतः ॥ २४६ ॥ राधोदकं सुलफलमन्मभ्युदितं  
 च यतः ॥ सर्वतः प्रतिगृह्णीयान्मध्याभयदक्षिणाम् ॥ २४७ ॥  
 आहताभ्युद्यतां भिक्षां पुस्तादप्रचोदिताम् ॥ मेने प्रजायति शा-  
 ह्यामपि दुष्कृतकर्मणाः ॥ २४८ ॥ नाश्निपितस्तस्य दशव-  
 र्याणि पंचव ॥ न च हव्यं वह्न्यग्निर्यस्तामभ्यवमन्यते ॥ २४९ ॥  
 शय्यां गृह्णां कुशान्धानयः पुष्पां मरीचान् ॥ धानां मत्स्यान्  
 योमांसं शाकं चैव न निर्जुदेत् ॥ २५० ॥

۲۴۶- کسی کام کو شرع کر کے اسکو ختم تک پہنچانے والا نرم مزاج والا  
 گرمی دینے والا دھندلے کا سینہ والا۔ انوریون کو دیشیوں سے روکنے والا  
 ہر آدمیوں پر شتہ مندی ترک کرنی والا۔ جان کشی نہ کرنی والا۔ دان دینے والا سورگ  
 میں جاتا ہے۔

۲۴۷- گرمی۔ جل۔ مزل۔ بھل۔ ان۔ مذہب۔ اچھے (دیخونی) یہ نئے مانگے ملین تو انکو سے  
 لینا چاہئے مگر آکا تبت نامہ دودھن سے نہ لیوے۔

۲۴۸- جیکہ کسی چیز کو دینے والے نے پہلے سے دینے کو نہ کہا ہو اور لینے والے کے پاس ٹھیک  
 بے مانگے دے تو اس چیز کو سوکے تبت کے لکڑی کر کے والے سے بھی لینا چاہئے بہا جی نے  
 کہا ہے۔

۲۴۹- جو شخص ایسی چیز کو نہیں لیتا ہے اس کے لئے ہوئے ہیٹھ اور کہیہ کو دیتا اور پتہ  
 پندر و برس تک نہیں لیتے ہیں

۲۵۰- چار پانی۔ رنگان۔ گیش۔ خوشبو۔ پانی۔ پھول۔ جو آہر۔ دہی۔ لاق۔ مچھلی  
 دودھ۔ گوشت۔ ساگ۔ ان سب کو ترک کرے۔

एकः प्रजायते जल्लोक एव प्रलीयते ॥ शकौऽनुभुंते सुकृतमेक  
 एव च दुष्कृतम् ॥ २४० ॥ मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ  
 ॥ विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥ २४१ ॥ तस्माद्द-  
 र्मसहायार्थं नित्यं संचिनुयाच्छर्मैः ॥ धर्मैराहिसहायेन तमस्तर-  
 त्ति दुस्तरम् ॥ २४२ ॥ धर्मप्रधानं पुरुषं तपसा हतकिल्बिषम् ॥  
 परलोकं नयत्याशु भास्वं तं वपारीरिषाम् ॥ २४३ ॥ उत्तमैरुत्तमै-  
 र्नित्यं संबधाना चरेत्सह ॥ निनीषुः कुलमुत्कर्षमनमानधमा-  
 स्त्यजेत् ॥ २४४ ॥ उत्तमानुत्तमानाच्छेन्हीनाहीनांश्च वर्जयेत्  
 ॥ बाह्यराः श्रेयतामेति प्रत्यवायेन शूद्रताम् ॥ २४५ ॥

۲۴۰- ایک ہی پیدا ہوتا ہے ایک ہی مرتا ہے ایک ہی پنیہ بھوک کرتا ہے ایک ہی پو-  
 بھوک کرتا ہے۔

۲۴۱- مردہ کو لکڑی ڈھیللا کی طرح زمین میں چھوڑ کر بھائی بندہ الگ جاتی ہیں مہرم  
 ہی ساتھ جاتا ہے۔

۲۴۲- سلتے اپنی مرد کو بوا سلتے دھرم کو ہمیشہ کرتا ہے کیونکہ دھرم کی مدد سے  
 بھوسا گر پار اتر جاتا ہے۔

۲۴۳- جس آدمی دھرم مددگار ہے اور تپ سے اوسکا پاپ دور ہو گیا ہے وہی مہرم  
 اسکو سوگ لوک میں لے جاتا ہے۔

۲۴۴- خاندان کو اتنی بزرگی دینے کے لئے اچھے اچھے لوگوں کے ساتھ رشتہ مندی  
 کرے نالائقوں سے ترک تعلق کرے۔

۲۴۵- اچھون اچھون سے رشتہ مندی کر کے اور بڑن بڑن سے ترک لوک کے  
 برہمن بزرگی حاصل کرتا ہے اور دوش لگنے سے سو درگے برابر ہوتا ہے۔

येनयेनतुभावेनयद्यदानं प्रयच्छति ॥ तत्तत्तेनैवभावेनप्राप्नो-  
तिप्रतिपूजितः ॥ २३४ ॥ योऽर्चितं प्रतिशृङ्खलतिददात्यर्चितमे-  
वच ॥ तावुभोगच्छतः स्वर्गानरकह्यविपर्यये ॥ २३५ ॥ नचि-  
स्मयेततपसावदेदिष्टाचनानृतम् ॥ नार्तोऽप्यपवदेद्विप्रान्द-  
त्वापरिकीर्तयेत् ॥ २३६ ॥ यज्ञोऽनृतेनस्मरतितपः स्मरतिवि-  
स्मयात् ॥ आयुर्विप्रायवादेनदानं चपरिकीर्तनात् ॥ २३७ ॥  
धर्मशनैः संचिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः ॥ परलोकसहाय-  
र्थं सर्वभूतान्यपीडयन् ॥ २३८ ॥ नासुब्रह्मसहायार्थं पितामा-  
ता च तिस्रस्तः ॥ नपुत्रद्वारा न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः ॥  
२३९ ॥

۲۳۴ - جو دین صطوح دیا جاتا ہے وہ اسی طرح دو ستر جنم میں ملتا ہے۔  
۲۳۵ - جو شخص اچھی چیز دیتا ہے اور جو اسکو لیتا ہے وہ دونوں سوگ میں  
جاتے ہیں۔

۲۳۶ - تپ کر کے غزور کرے یکسر کر کے جھوٹو نہ پوئے زنجیدہ ہو کر برہمن کو جا  
بجائے کہے فلان ہو کر نہ کہے۔

۲۳۷ - جھوٹو پونہ بنو کر بنا۔ برہمن کی توہین یا بقدری کرنا۔ دان دیکر کہنا ان  
سچوں سے حرب سدا یکجہ تپ عمر دان کا ناش ہو جاتا ہے۔

۲۳۸ - اس طریق سے کہ جس سے کسی جبار کو تکلیف ہونے  
پاؤں پر لوک کی امداد کے واسطے دھرم کو جمع کرنے جیسے چنٹی غلہ کو  
جمع کرتی ہے۔

۲۳۹ - مان باب - عورت مہقوم - بیٹا - یہ پ پر لوک میں ادا وین کر سکتے  
صرف دھرم ہی کام آتا ہے۔

यत्किंचिदपि दत्तव्यं याचितेनानसूयया ॥ उत्पत्स्यते हित-  
 त्यात्रं यत्तारयति सर्वतः ॥ २२८ ॥ वारिदस्तृप्तिमाप्नोति सुखम-  
 स्यमन्नरः ॥ तिलप्रदः प्रजामिष्टां दीपदश्च सुसुत्तमम् ॥ २२९ ॥  
 भूमिरो भूमिमाप्नोति दीर्घमायुर्हिरण्यदः ॥ गृहरोऽग्राशि-  
 वेशमानिरूप्यरो रूपमुत्तमम् ॥ २३० ॥ वासोदश्च नृसालोक्त-  
 मश्विसालोक्तमश्वरः ॥ अन्नदुदः श्रियं पुष्टांगो दोषधस्य-  
 विद्वपम् ॥ २३१ ॥ यानशय्याप्रदो भार्यामैश्वर्यमभयप्रदः ॥  
 धान्यदः शाश्वतसौख्यं ब्रह्मदो ब्रह्मासादृशताम् ॥ २३२ ॥ स-  
 र्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते ॥ वार्यन्नगो भहीवास-  
 स्तिलकांचनसर्पिवाम् ॥ २३३ ॥

۲۲۸- گن مین دوش زرگا کرانگنے والوں کو اپنی شکست کے موافق اُن دیا کرے  
 کیونکہ ہر روز جب اُن دیا کرے گا تو ایکٹ ایکٹ کسی طرف سوا یا شخص آجائیکا جو سب  
 طے سے نال کر دینگا۔

۲۲۹- جل- اٹل- تل- دیپ- انھون کا دینے والا حسب سلاستو دی عیش لازوال  
 اچھی- اولاد- اچھی- انھون کو پاتا ہے۔

۲۳۰- زمین- سوتا- گھر و یا انھون کا دینے والا حسب سلاستو زمین بڑی عمارت گھر بھری  
 صورت کو پاتا ہے۔

۲۳۱- کپڑا- گھوڑا- بیل- گٹو- دینے والا حسب سلاستو کپڑا، گھوڑا، بیل، گٹو، کپڑا  
 لازوال شہرت کو پاتا ہے۔

۲۳۲- سواری- چارپائی- چوٹی- دیپ- انھون کا دینے والا حسب سلاستو سواری، چوٹی،  
 عیش لازوال- برہم لوک کے برابر درجہ پاتا ہے۔

۲۳۳- اُن- جل- گن- زمین- کپڑا- تل- سوتا- گھی- اُن سب والوں میں دینے کا وہ اُن ہے۔



भुक्तातोऽन्यतमस्यान्नसमस्यास्यपराग्रहम् ॥ मत्वाभुक्ता  
 चरेत्काच्छरेतोविरामूत्रमेवच ॥ २२२ ॥ नाद्याच्छूद्रस्यपक्वान्नं  
 विद्वानश्राद्धिनोद्धिजः ॥ आददीताममेवास्मादक्षतावेकराशि  
 कम् ॥ २२३ ॥ श्रोत्रियस्यकर्तव्यस्यवरान्यस्यचवार्द्धयेः ॥ मी  
 मांसितोभयंदेवाः सममन्नमकल्पयन् ॥ २२४ ॥ तान्यजाय-  
 तिराहेत्यामाकध्वंविधमंसमन् ॥ अज्रापूतंवदान्यस्यहममश्र-  
 ज्येतरत् ॥ २२५ ॥ अज्येष्टं च पूतं च नित्यं कुर्यादतन्त्रितः ॥ अ-  
 ज्राकतेह्यस्येतेभवतः स्यातां तैर्घ्नेः ॥ २२६ ॥ दानधर्मनिधेवे-  
 तनित्यमेष्टिकयोर्त्तिकम् ॥ परितुष्टेनभावेनपात्रमासाद्यश-  
 क्तितः ॥ २२७ ॥

۲۲۲- میمون میں سے کسی کے اُن کو اگر بغیر جانے ہوئے بھوجن کرے تو تین دن آپ  
 کرے اور اگر جان کر بھوجن کرے تو کرچہ برت جو آگے کہیں گے اسکو کرے اور ثبات اور وتر  
 کے بھوجن میں بھی عید و عید و عید وہی بھوجن کرے۔

۲۲۳- پندرہت جو برہمن ہو وہ شورو کا پکوان برت کرے اگر گھر میں اُن نہ تو ایکایت  
 کے بھوجن کے موافق کیا اُن لے لینا کچھ مضائقہ نہیں۔

۲۲۴- بھل وید پر پھنے والا فیاض بیاج سے اوقات لمبر کر نیوالا ان دونوں کے  
 اُن کو دیوتاؤں کے برابر کہا ہے۔

۲۲۵- اُن دیوتاؤں کے پاس برہما جی نے آکر کہا کہ اُن کو برابر کرو شخص فیاض  
 کا ان بوجہ علوہتی کے پاک ہے اور بھل کا اُن بوجہ پسینہ ہتی ناپاک ہے۔

۲۲۶- باہلی چھوڑ کر ہمت کے ساتھ ہمیشہ یکیشہ۔ اوتھیر چاہ و تالاب و باولی کو کر  
 نیک کمائی کا رشتہ لگا کر ہمت کے ساتھ یہ دونوں کام کرے تو لازماً ان سے  
 ۲۲۷- اچھے برائے دونوں کو پا کر حسب مقتدرہ حیرتگی کے ساتھ ہمیشہ یکیشہ اور کنواں وغیرہ کا حوالہ



अभिशास्तस्य वंद्यं च त्वाराभिकस्य च ॥ सुक्तं यथुचितं चैव  
 नृदस्योच्छिष्टमेव च ॥ २११ ॥ चिकित्सकस्य नृगयोः क्रूरस्यो-  
 च्छिष्टमोजितः ॥ उपान्नं सूतिकानं च पर्याचान्नमनिर्देशम् ॥  
 अनचितं वृथानां समवीरायाश्च योषितः ॥ द्विघटनं नगर्यन्नं  
 यतितान्नमवसुतम् ॥ २१३ ॥ पिशुनान्नतिनोश्चान्नं क्रतुवि-  
 क्रथिरास्तथा ॥ शैल्युत्तुन्नवाथान्नं कतघ्नस्यान्नमेव च ॥ २१४  
 ॥ कर्मरस्य निघादस्य रंगवतारकस्य च ॥ सुवर्गाकर्तुर्वैरास्य  
 रास्य चिकथिरास्तथा ॥ २१५ ॥

۳۱۱- عیب دار- نامرد- زنا کار- پاکندی ان لوگون کا ان شکست باسی شود کا جو تھا۔  
 ۳۱۲- علاج کرنیوالا- آفت والا- کھوتا- جو کھا بھوجن کرنے والا- بد کام کرنے والا ان  
 بھون کا ان اور وہ ان جوڑے خلع کے واسطے بنایا گیا ہو اور ایک حصہ میں کچھ دبی  
 کھانا کھاتے ہوں اور کوئی آدمی تو میں کی غرض سے سب سے پہلے بھوجن کی سماعت کی آجین  
 کرے اسوقت کا ان اور جو کھا لے گا ان۔  
 ۳۱۳- اور وہ ان جو شخص واجب التحقیم کو بیفہمی کے ساتھ دیا گیا ہو اور ادھان سج و پوتا  
 وغیرہ کے لئے ہمین بنایا گیا ہو اور پتہ اور منتر نہ رکھے والی استری اور دشمن اور شہر سے  
 نکالا ہو ان لوگون کا ان اور وہ ان حیر چھینک پڑی ہو۔  
 ۳۱۴- چنل جو رنگی کر کے پھر اسکو پیچنے والا نٹ۔ درزی۔ حسان نہ ماننے والا۔  
 ۳۱۵- کوہار نہ کھاؤ نٹ۔ سوائے گائیو اسلے کے ان دونوں کے پیشہ سے اوقات  
 بسر کرنیوالا۔ سنسار۔ بسکھور۔ سنبھار نہینے والا۔

۲۰- یعنی وہ ان جو پیرلانے کی چیز کے محض بسبب گزرنے ایام کے کھتا ہو گیا ہو۔

۲۰- جیسا ذکر دسویں ادھیائے میں ہے۔

नाशोऽप्रियततेयशेषामयाजिकतेतथा ॥ स्त्रियास्त्रीवेनच-  
 तेभुंजीतब्राह्मराजचित् ॥ २०५ ॥ अस्त्रीकमेतस्माधूनंयत्र-  
 जुह्वत्यमीहविः ॥ प्रतीयमेतद्देवानांतस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥  
 २०६ ॥ मसक्रुज्रातुराराचनभुंजीतकहाचन ॥ केशकीटावप-  
 नंचपदास्पृष्टंचकामतः ॥ २०७ ॥ भूराघावेक्षितंचैवसंस्पृष्टं  
 चाप्युदकया ॥ यतत्रिरावलीढंचशुनांसंस्पृष्टमेवच ॥ २०८  
 ॥ गवाचानमुपघातंघुषानंचविशेषतः ॥ गराचनंगशिका-  
 नंचविदुषांचशुश्रूषितम् ॥ २०९ ॥ स्तेनगायनयोश्चानंतस्-  
 रावाडुषिकस्यच ॥ दीक्षितस्यकर्हस्यवदस्यनिगडस्यच  
 ॥ २१० ॥

۲۰۵- سو کہ گرام کی گئیہ کرانے والا استری نہیں کیے ان سب کی گئیہ میں برہمن کہی  
 محبوبن کرے۔

۲۰۶- ان سب کی گئیہ کرنا بھلے لوگوں کو لکشی رہت ہو اور دیوتاؤں کو اچھا نہیں  
 ایسے اس کرم کو نہ کرے۔

۲۰۷- بدست غصہ و آتر انھوں کے ان کو اور جس ان میں بال یا کیرا ہو اور  
 قصور پانوں سے چھو گیا ہو ان سب کو محبوبن نہ کرے۔

۲۰۸- حمل گرانے والے کا و بکھا ہوا حیض والی عورت کا چھو ہوا چڑیوں کی چونچ کا  
 کا چھو ہوا کہنے کا چھو ہوا۔

۲۰۹- گنو کا سونگھا ہوا یا گئیہ وغیرہ میں وہ ان جو تیار بلندیہ کہہ کر کون محبوبن کر گیا ہو  
 گیا ہو اور حماقت کا ان اور بیشیوں کا ان ان سب اما جن کی نہایت لوگ زندا کرتے ہیں۔

۲۱۰- چور خانیوالا بڑھئی۔ بیاب سے جینے والا جسکی گئیہ ابھی سماعت نہیں ہوئی بھیل نہیں  
 پا جو لان۔

अलिङ्गीलिङ्गिवेरायोवत्तिमुपजीवति॥ सलिङ्गिनांहरत्ये-  
नस्तिर्यग्योनौचजायते॥ २००॥ परकीयनियानेषुनस्त्रायाञ्च  
कराचन॥ नियानकर्तुःस्त्रात्वातुदुष्कतांशेनलिप्यते॥ २०१॥  
यानशब्दासनान्यस्यकूपोद्यानगृहाणिच॥ अस्तान्युपशुं-  
जानगनसःस्यात्तुरीयभावा॥ २०२॥ नदीषुदेवरवातेषुतडागो  
षुसरःसुच॥ स्नानंसमाचरेन्नित्यंगर्तप्रस्रवरोषुच॥ २०३॥  
यमान्मेवेतसततंननित्यंनियमाम्बुधः॥ यमान्यतत्यकुर्वी-  
राोनियमान्केवलान्नजन॥ २०४॥

۲۰۰- بریم چاری بہین ہے اور بریم چاری کے بھینس سے رہتا ہے سو بریم چاری کے پاپ کو پاتا ہے اور کپڑے مکوڑے کا جنم پاتا ہے اسی طرح سب آئندہ والوں کو چاہئے۔

۲۰۱- دوسرے کا کھدایا ہوا کنواں یا تالاب وغیرہ جبکہ آئندہ انسان نہ کرے اس میں انسان کرنے سے کھدانے والے کے پاپ کو پاتا ہے

۲۰۲- سواری۔ چار پائی۔ کنواں۔ باغ۔ مکان۔ یہ سب جگہ ہوں اسکی اجازت بغیر و تحقیق استعمال کرتا ہے وہ جبکہ یہ سب ہوں اس کے پاپ کے چوتھائی حصہ کو پاتا ہے۔

۲۰۳- بڑی۔ دیوتاؤں کا کھدایا ہوا تالاب اور سرد اور تھوڑا اور گڑھا ان سب میں انسان کرے۔

۲۰۴- ایم اور نیم۔ جبکہ بیان آگے آدیکہ استینیم کو ہر روز اختیار کرے اور نیم کو بہینیم کو چھوڑ کر صرف نیم کو اختیار کرنے سے بچت ہو جاتا ہے۔

۲۰۵- نہ اسکو کہتے ہیں و ۲۰۶- ہاتھ لہا چڑا ہو۔

۲۰۷- اس میں یہ شک ہو سکتا ہے کہ دوسرے کا کھدایا ہوا کنواں یا تالاب وغیرہ میں انسان کرنا منع ہے تو جواب یہ ہے کہ اپنا کھدایا ہوا اور سرد اور تھوڑا اور گڑھا اور تھوڑا دیکھا ہو تو کچھ مصلحت نہیں۔

धर्मध्वजीमहालुब्धश्चमिकोत्तोकरम्भकः॥ वैडालव्रतिको  
 ज्ञेयोहिंस्रःसर्वाभिसन्धकः॥ १६५॥ अधोदधिर्नैच्छतिकः  
 र्थसाधनतत्परः॥ शठोमिथ्याविनीतश्चवक्रतचरोद्विजः॥ १६६॥  
 येवक्रतिनोविप्रायेचमार्जारलिङ्गिनः॥ तेयतन्त्यन्धतामि-  
 स्वेतेनयायेनकर्मणा॥ १६७॥ नधर्मस्यापदेशेनयापंकत्वा  
 व्रतंचरेत्॥ व्रतेनयापंप्रच्छाद्यकुर्वन्सीमूहदम्भनम्॥ १६८॥  
 ॥ प्रेत्येहचेदशाविप्रागर्ह्यन्तेब्रह्मवादिभिः॥ छन्ननाचरितंय-  
 चव्रतंरसांसिगच्छति॥ १६९॥

۱۹۵۔ دھرم دھوجی لو بھی بہانہ سے چلنے والا ٹھکے والا۔ ماریوالا سب کی نیند اڑا دیا۔  
 ایسا آدمی بیڈال بڑنک کہلاتا ہے۔

۱۹۶۔ پیٹھی دیکھنے والا ٹھکر نروٹی اپنے مطلب میں مستعد ٹیڑھی سے رستے والا  
 جھوٹی ملامت کر نیوالا ایسا آدمی بک بڑنک کہلاتا ہے۔

۱۹۷۔ بک بڑنک اور بیڈال بڑنک یہ دونوں اپنے اپنے اندھنا ستر نام نرک میں  
 جاتے ہیں۔

۱۹۸۔ پاپ کر کے دھرم کے بہانہ سے برت کو ٹکڑے یعنی پاپ تو کرتا ہے اور ہنرمی  
 اور شوہر کو دیکھنے دیکھاتا ہے کہ میں دھرم کرتا ہوں۔

۱۹۹۔ وہ بیڑھنے والے پیش لوک اور پو لوک میں ایسے براہمن کو برا کہتے ہیں کہ  
 کابرت رکشوں کے پاس جاتا ہے۔

۲۰۰۔ دھرم دھوجی اسکو کہتے ہیں جو بت آدمیوں کو دکھلا کر دھرم کرتا ہے۔

۲۰۱۔ جلی کی طرح ہے برت جلی۔

۲۰۲۔ بھلا کی طرح ہے برت جلی۔

हिरण्यमायुरत्नं च भूर्गोश्चाप्योयतस्तनुम् ॥ अश्वश्च सुत्त्वचं  
वासो द्रुतं तेजस्तिलाः प्रजाः ॥ १८६ ॥ अतपास्त्वनधीयानः प्र-  
तिग्रहरुचिर्द्विजः ॥ अंभ्यस्मश्मज्ञवेनैवमज्ञेनैवमज्ञति ॥  
१८७ ॥ तस्माद्विद्वान्विमियाद्यस्मात्तस्मात्प्रतिग्रहात् ॥ स्व-  
ल्पकेनाप्यविद्वान्विप्यंके गौरिवसीदति ॥ १८८ ॥ न वार्यपि  
प्रयच्छेत्तु वेडालव्रतिके द्विजे ॥ न बकव्रतिके विप्रेनाचेरवि-  
दिधर्मवित् ॥ १८९ ॥ विद्वद्येते युदत्तं हि विधिनाप्यर्जितं धनं  
॥ दातुर्भवत्यनार्थोऽप्यपरत्रादातुश्च न ॥ १९० ॥ यथाज्ञवेनोप-  
लेन निमज्जत्युदकोत्तरत् ॥ तथानिमज्जतोऽधस्तादज्ञो दातुः प्र-  
तीच्छकी ॥ १९१ ॥

۱۸۹- ننونا اور ان کا دان لینے سے سورکھ برہمن کی عمر کم ہو جاتی ہے اس طرح گناہ اور زمین  
جسم کو گھوڑا لکھن کو کپڑا چھڑے کو کھی تیج کو تل پتروں کو نقصان پہنچاتا ہے۔

۱۹۰- جو برہمن تپ اور وید ابھیاس نہیں کرتا ہے اور دان لیا کرتا ہے وہ مع اس ان  
دینے والے کے ڈوب جاتا ہے جیسے پانی کی لکڑی بھر کی ناؤ۔

۱۹۱- اس لیے سورکھ برہمن تقوٰی اور دان لینے سے بھی ڈرتا ہے وہ تہطج کی ٹوٹیں گنو بھیس کر  
تکلیف اٹھاتی ہے اس طرح وہ بھی تکلیف اٹھاتا ہے۔

۱۹۲- بیتال بڑنک بکے بڑنک سورکھ ان تینوں برہمنوں کو دھرم جانشہ والا آدمی  
پانی تک دیوتا ہے۔

۱۹۳- برہمن پوزوک پیدا کئے ہوئے دھن کو ان تینوں کو دینے سے پروک میں کچھ نہیں دیتے

۱۹۴- جطج بھڑکی ناؤ پر چڑھ کر آدمی پانی میں ڈوب جاتا ہے اس طرح سورکھ برہمن کو دان  
دینے والا اور لینے والا دونوں ترک میں ڈوبتے ہیں۔

۸ اسکی تہذیب ۱۹۵ تا ۱۹۶ میں لکھی ہے۔

یام یو: ۵۴۔ سا لالو کے بے زور کے سبب نالو: ۵۵۔ سبب نالو: ۵۶۔  
 لالو کے بے زور کے سبب نالو: ۵۷۔ ۱۴۶۔ ۱۴۷۔ ۱۴۸۔ ۱۴۹۔ ۱۵۰۔  
 ۱۵۱۔ ۱۵۲۔ ۱۵۳۔ ۱۵۴۔ ۱۵۵۔ ۱۵۶۔ ۱۵۷۔ ۱۵۸۔ ۱۵۹۔ ۱۶۰۔  
 ۱۶۱۔ ۱۶۲۔ ۱۶۳۔ ۱۶۴۔ ۱۶۵۔ ۱۶۶۔ ۱۶۷۔ ۱۶۸۔ ۱۶۹۔ ۱۷۰۔  
 ۱۷۱۔ ۱۷۲۔ ۱۷۳۔ ۱۷۴۔ ۱۷۵۔ ۱۷۶۔ ۱۷۷۔ ۱۷۸۔ ۱۷۹۔ ۱۸۰۔  
 ۱۸۱۔ ۱۸۲۔ ۱۸۳۔ ۱۸۴۔ ۱۸۵۔ ۱۸۶۔ ۱۸۷۔ ۱۸۸۔ ۱۸۹۔ ۱۹۰۔  
 ۱۹۱۔ ۱۹۲۔ ۱۹۳۔ ۱۹۴۔ ۱۹۵۔ ۱۹۶۔ ۱۹۷۔ ۱۹۸۔ ۱۹۹۔ ۲۰۰۔

۱۸۴۔ بہن اور بیوہ وغیرہ ہوتو۔ سبب نالو: ۱۸۵۔ ۱۸۶۔ ۱۸۷۔ ۱۸۸۔ ۱۸۹۔ ۱۹۰۔ ۱۹۱۔ ۱۹۲۔ ۱۹۳۔ ۱۹۴۔ ۱۹۵۔ ۱۹۶۔ ۱۹۷۔ ۱۹۸۔ ۱۹۹۔ ۲۰۰۔

۱۸۴۔ بہن اور بیوہ وغیرہ ہوتو۔ سبب نالو: ۱۸۵۔ ۱۸۶۔ ۱۸۷۔ ۱۸۸۔ ۱۸۹۔ ۱۹۰۔ ۱۹۱۔ ۱۹۲۔ ۱۹۳۔ ۱۹۴۔ ۱۹۵۔ ۱۹۶۔ ۱۹۷۔ ۱۹۸۔ ۱۹۹۔ ۲۰۰۔

۱۸۴۔ بہن اور بیوہ وغیرہ ہوتو۔ سبب نالو: ۱۸۵۔ ۱۸۶۔ ۱۸۷۔ ۱۸۸۔ ۱۸۹۔ ۱۹۰۔ ۱۹۱۔ ۱۹۲۔ ۱۹۳۔ ۱۹۴۔ ۱۹۵۔ ۱۹۶۔ ۱۹۷۔ ۱۹۸۔ ۱۹۹۔ ۲۰۰۔

۱۸۴۔ بہن اور بیوہ وغیرہ ہوتو۔ سبب نالو: ۱۸۵۔ ۱۸۶۔ ۱۸۷۔ ۱۸۸۔ ۱۸۹۔ ۱۹۰۔ ۱۹۱۔ ۱۹۲۔ ۱۹۳۔ ۱۹۴۔ ۱۹۵۔ ۱۹۶۔ ۱۹۷۔ ۱۹۸۔ ۱۹۹۔ ۲۰۰۔

۱۸۴۔ بہن اور بیوہ وغیرہ ہوتو۔ سبب نالو: ۱۸۵۔ ۱۸۶۔ ۱۸۷۔ ۱۸۸۔ ۱۸۹۔ ۱۹۰۔ ۱۹۱۔ ۱۹۲۔ ۱۹۳۔ ۱۹۴۔ ۱۹۵۔ ۱۹۶۔ ۱۹۷۔ ۱۹۸۔ ۱۹۹۔ ۲۰۰۔

۱۸۴۔ بہن اور بیوہ وغیرہ ہوتو۔ سبب نالو: ۱۸۵۔ ۱۸۶۔ ۱۸۷۔ ۱۸۸۔ ۱۸۹۔ ۱۹۰۔ ۱۹۱۔ ۱۹۲۔ ۱۹۳۔ ۱۹۴۔ ۱۹۵۔ ۱۹۶۔ ۱۹۷۔ ۱۹۸۔ ۱۹۹۔ ۲۰۰۔



نया शिपादचपलोननेचचपलोऽनृजुः॥ नस्याद्वाक्कपल-  
 श्वेवनपरहोहकर्मधीः॥ १७७॥ येनास्यपितरोयातायेनयाता-  
 पितामहाः॥ तेनयायात्सतांमार्गंतेनगच्छन्नरिष्यते॥ १७८॥  
 ऋत्विक्पुरोहिताचार्येमातुतातिथिसंश्रितेः॥ बालवद्बाल-  
 र्वैर्धैर्जातिसम्बन्धिवान्धवैः॥ १७९॥ मातापितृभ्यांयामीभि-  
 र्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया॥ दुहित्रादासवर्गेणविवादन्नसमाचरे-  
 त॥ १८०॥ सेतैर्विवादान्संत्यज्यसर्वयांपैःप्रमुच्यते॥ रुभिर्जि-  
 तैश्चजयतिसर्वौलोकानिमानुही॥ १८१॥ आचार्योब्रह्म-  
 लोकेशःप्राजायत्येपिताप्रभुः॥ अतिथिस्त्विन्द्रलोकेशोदे-  
 वलोकस्यचत्विजः॥ १८२॥

۱۷۷۔ ہاتھ پا کون آنکھ زبان سے شوخی نکرے ٹیڑھا نہ کسی کی بُرائی میں نہ رہے۔  
 ۱۷۸۔ بہت پرکار کا شناسترا تھہ پہنچو سننے پتہ تیار آد کر کے شکریت جو شاستر تھہ ہے  
 اسی کا اٹھان کرے اس کر کے ادھرم سے مارا مین جاتا۔  
 ۱۷۹۔ رتوک۔ پردہ مت۔ اچارج۔ بابا تھہ۔ آشرت۔ بال۔ بردھ۔ انر۔ پیدھا۔ سندھی۔ یاد  
 ۱۸۰۔ جام۔ مانا۔ پتا۔ بھائی۔ پتر۔ استری۔ پٹی۔ داس۔ لوگ۔ بھون کے ساتھ لڑائی نہ کرے۔  
 ۱۸۱۔ بھون سے لڑائی نہ کرے سے سب پا پون چھوٹ جاتا ہے ان بھون ہارنے سے گرتھہ  
 آدمی سب لوگ جیتنا ہے۔  
 ۱۸۲۔ اچارج برہم لوگ سوامی اور پتا پر چا پت لوگ کا تھہ اندر لوگ اور رتوک دیو لوگ سوامی ہے۔

× پاپکیش دے

× سارے سترے۔

× استری کیش دے۔

× مہن اور تونہ وغیرہ۔

नाधर्मश्चरितो लोके सत्यः फलति गौरिव ॥ शर्मे रावर्त नानस्तु  
कर्तुं मूलानि कृत्नति ॥ १७२ ॥ यद्दिनात्मनि पुत्रे युनचेत्युत्रे युन  
च्यु ॥ न त्वेव वृकतोऽधर्मः कर्तुं भवति निष्कलः ॥ १७३ ॥ अर्ध-  
मे रौधते तावत्ततो भद्राणि यश्यति ॥ ततः सत्यत्वाज्जयति स-  
मूलं स्तुविनश्यति ॥ १७४ ॥ सत्यधर्मो र्यद्वत्तेषु शोचे चैवा रमे ल-  
ता ॥ शिष्यांश्च शिष्या इमे रावाग्वाहूरसंयतः ॥ १७५ ॥ यरि-  
त्यजे र्यकामो यो स्यातां धर्मवर्जितौ ॥ धर्मचाप्यसुरजो र्द्वे-  
लोकनिबुद्धमेव च ॥ १७६ ॥

۱۶۲- ادرم جلدی نہیں پھل دیتا جیسے زمین بیج بونے سے جلدی پھل مین دیتی کچھ دنوں پور پھل دیتی ہے۔

۱۶۔ ادھرم کا پھل ادھرم کرنے والے کو نہیں ملتا تو اس کے پیسے کو ملتا ہے۔ اگر پیسے کو نہ ہوا تو اس کے پوتے کو ملتا ہے اگر پوتے کو بھی نہ ملا تو نانی کو ملتا ہے حاصل یہ کہ ادھرم بے پھلے نہیں رہتا۔

۱۷۔ ادھر م کرید لا پہلے ادھر م کرنے سے بڑھتا ہے پھر کلیان پاتا ہے پھر شمشیر کو جتنا ہے آخر کو بڑھتا دے مٹ جاتا ہے۔

۱۶۵۔ جیلے لوگوں کا چارشت دھرم پوترنا ہے ان سب میں ہمتہ مہروں سے  
استہری۔ پوتر۔ داس۔ چیلہ۔ ان سب کو راہ راستی بتا دے ہانی ماہنہ اور کا سبھ

۱۷۶- ادرم سے برکت جو ارتقا کام ہے اور سکا تیاگ کر نادرم ہے مگر لوگ ریت کے خلاف ہے اور جو زمانہ آئندہ میں آئے گا وہ نیچے والا نہیں ہے اسکو بھی تیاگ کرنا چاہیے۔

x نامی کا نسخہ ہے کہ سچ پہ باطل کا نسخہ ہے۔ یہ کہ راہِ راستہ کے بدلے کسی کو گلیش دینا جو چاہے اور کارخانہ میں ہرگز تصور نہایت جو کچھ کیل اسی کو لکھا گیا ہے۔

अशुद्धमानसोत्पाद्यब्राह्मणास्यासृगंगतः॥ दुःखं सुमहदा  
 मोतिप्रेत्याप्राप्ततयानरः॥ १६७॥ शोशितं यावत् पांसुसंयु-  
 क्तातिमहीनत्वात्॥ तावतोऽब्दानमुवाचैः शोशितोत्पादको  
 ऽद्यते॥ १६८॥ न कदाचिद्धिजेतस्माद्धिज्ञानवयुरेदयि॥ न ताडये-  
 त्तरोगो नापि न गात्रात्वावयेदस्तृक्॥ १६९॥ अधार्मिको न रोधो  
 हियस्य चाप्यनृतं धनम्॥ हिंसा रतश्च यो नित्यं नेहासौ सुखमे-  
 धते॥ १७०॥ न सीदन्नपि धर्मैरामनोधर्मैर्निवेशयेत्॥ अधार्-  
 मिकाणां पापानां माशुपश्यन्वियर्थयम्॥ १७१॥

۱۶۷- جو براہمن لڑائی نہیں کرتا ہے۔ اس کے بدن سے خون نکلنے والا اپنی بے عقلی  
 سے بڑے لوگوں میں بڑا دکھ پاتا ہے۔

۱۶۸- جو براہمن لڑائی نہیں کرتا اس کے بدن سے ہتھیار سے خون نکلنے والا بڑے لوگوں میں  
 نہاد دکھ پاتا ہے ہتھیار وغیرہ سے براہمن کے بدن سے جو خون نکل کر زمین پر گرتا ہے اس  
 خون میں جلتے زلے زمین کے آلودہ ہو جاتے ہیں اس لئے برہمن کے لیے لوگ  
 میں وہ خون نکلنے والا کرشمہ وسیارہ وغیرہ سے بھجوا کر کیا جاتا ہے۔

۱۶۹- اس لیے عقلمند آدمی کبھی براہمن کو مارنے کے واسطے ہتھیار نہ اٹھاوے  
 بلکہ اس کے سے بھی نہ مارے۔ اور نہ جسم سے خون نکلے۔

۱۷۰- جو ادھرمی یا نا پاک دولت والے یا ہر روز جان مارنے والے ہیں وہ اس  
 لوگ میں شکستہ نہیں پاتے۔

۱۷۱- ادھرمی اور پاپیوں کے دھن وغیرہ کو جلد ناش ہو جاتا  
 ہوتا ہے دیکھ کر اور ادھرم میں تکلیف پانے پر بھی ادھرم میں مصروف  
 ہوتا ہے۔

यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मानः ॥ तत्प्रयत्नेन  
कुर्वीत विपरीतं तु वर्जयेत् ॥ १६१ ॥ आचार्यं च प्रवक्तारं पित-  
रं मातं गुरुम् ॥ न हिंस्याद्वाह्यरागा नृणां सर्वान् श्वैव तपस्विनः ॥ १६२ ॥ नास्ति क्वाचैरनिहं च देवतानां च कुत्सनम् ॥ द्वेष्टं दस्ते  
बभानं च क्रोधं तैश्चाप्यं च वर्जयेत् ॥ १६३ ॥ परस्य दण्डं नो ह्ये-  
त्कुर्वीत नैव नियातयेत् ॥ अन्यत्र पुत्राच्छिव्याद्वा शिष्ट्यर्थं ता-  
डयेत्तु तौ ॥ १६४ ॥ ब्राह्मराष्ट्रावयुर्यैव द्विजातिर्वतका मय्या-  
॥ शतं वर्षाणि तामिमेन स्केयं रिचर्तते ॥ १६५ ॥ ताडयित्वा-  
त्पशोनापि संस्मान्मति पूर्वकम् ॥ एकविंशतिमाजातीः या-  
पयो निबुजायते ॥ १६६ ॥

۱۶۱۔ جس کرم کے کرنے سے اپنے دل کو اطمینان ہو سکو کرے اور اگر بالعکس جو قویہ کیے  
۱۶۲۔ آج دیدارِ حق پڑھائیو الہا باپ مان کر وہ بہن گویہ تیسوی نہیں ہے کسی  
کو نہ مارے۔

۱۶۴ - ناسیک پن - دیدار دیوتا کی برائی کرنا دشمنی - پاکھند - غرور - غصہ - تند مزاجی

۱۶ غصہ سے کیے مارنے کو ڈرتا نہ پھیکے اور کسی کو ضرب جہانی پہنچا دے مگر میٹھا دھچیلے کو قیام کہو اسے جسم پر ضرب دینا ناموزن نہیں ہے۔

۱۶۵۔ برہنہ کشتری ویشیہ اگر برہنہ کو مار ڈالنے کی نیت سے ہتھیار اٹھا دیں اور ماریں بھیں تو بھی تاسیہ نام نرک میں توہین تک پہنچے ہیں۔

۶۶۔ اگر عضو کے قصہ ایک تنکے سے بھی مارے تو ہمیں خیم تک پاپو یون مین  
دیکھئے کہ نہ دگر تھا وغیرہ کے جسم میں پیدا ہوتا ہے۔

श्रुतिस्मृत्युदितं सम्यं निवृत्तं स्वयुक्तं कर्म ॥ धर्ममूलं निवेद्य तस्य  
 हाचारमतद्वितः ॥ १५५ ॥ आचारात्मनो ह्याचाराचारसीमि-  
 ताः प्रजाः ॥ आचाराज्जनमक्षय्यमाचारो ह्यन्यतः सारास ॥ १५६ ॥  
 ॥ दुराचारो हि युक्तो लोके भवति निन्दितः ॥ दुःखभागी च स  
 ततः चाधितोऽल्पायुरेव च ॥ १५७ ॥ सर्वलक्षणाहीनोऽपि  
 यः सदाचारवान्नरः ॥ अद्धानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जी-  
 वती ॥ १५८ ॥ यद्यत्परवशं कर्मात्तत्तद्यत्नेन वर्जयेत् ॥ यद्यत्  
 त्ववशं तु स्यात्तत्तत्त्वेन वेतयन्ततः ॥ सर्वपरवशं दुःखं सर्वमा-  
 त्मवशं सुखम् ॥ एतद्विद्यात्मभासेन लक्षणां सुखदुःखयोः  
 ॥ १६० ॥

۱۵۵- دیدار شستر کے موافق جو اچھے لوگوں کا چار ہے وہ عین دھرم ہو گا ہلی چوڑا  
 اسی چار پر ہمیشہ چلے۔

۱۵۶- اگر داغی اولاد دلا زوال دولت یہ سب آچار سے ملے تین اور جو عیب و تہمت پر  
 دینے والے جسم میں ہوں ان کو آچار دور کرتا ہے۔

۱۵۷- دراجاری آدمی دنیا میں بدنام ہوتا ہے اور ہمیشہ رنج و مصیبت میں رہتا ہے  
 دن جیتا ہے۔

۱۵۸- جبین کوئی لکشن نہیں ہے اگر کسی کی برائی نہیں کرتا اور شہد صا اور اچھے لوگوں  
 کی طرح آچار رکھتا ہے وہ تو بریں تک جیتا ہے۔

۱۵۹- جو کرم دوسرے کے اختیار میں آسکو ترک کر کے اور اپنے اختیار میں ہے  
 اس کا سین کرے۔

۱۶۰- جو کرم برائے بس ہیں ہے وہ دکھ ہے اور جو کرم اپنے بس ہیں ہے وہ سکھ ہے  
 سکھ دکھ کا یہ نقش ہے۔



स्यष्टैतान्युचिर्नित्यमग्निः प्राणाद्युपस्थरोत् ॥ गात्राणि चैव  
सर्वानि नाभिं पारितलेन ह ॥ १४३ ॥ अनातुरः स्वागिष्वानि  
नस्थरोदनिमित्ततः ॥ रोमाणि चरहस्यानि सर्वाण्येव विचर्त-  
येत् ॥ १४४ ॥ मंगलाचारयुक्तः स्यात्प्रयतात्मा जितेन्द्रियः ॥ ज-  
येच्च जुहुयाच्चैव नित्यमग्निमतद्धितः ॥ १४५ ॥ मंगलाचारयु-  
क्तानां नित्यं च प्रयतात्मनाम् ॥ जयतां जुह्वतां चैव विनिषातो  
न विद्यते ॥ १४६ ॥ वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथाकालमतद्धितः  
॥ तं ह्यस्याहः परं धर्ममुपधर्मोऽन्यउच्यते ॥ १४७ ॥ वेदाभ्या-  
सेन सततं शौचेन तपसे वचः ॥ अशोहेराचभूतानां जातिस्म-  
रतिर्यौर्विकीम् ॥ १४८ ॥

۱۳۴- چلو چھوٹا سنیں کیا ہے اگر انکو چھوٹے تو آجمن کر کے ہاتھ میں پانی رکھ کر  
اس پانی سے ناک کان وغیرہ سب اندریوں کو اور سب بدن کو چھوئے اور پھر ہتھیلی سے چھوئے  
۱۳۵- آتر و نیس ہے وہ بغیر ضرورت اپنی اندرون کو نہ چھوئے اور پوشیدہ مقامات کے  
بال دینی نبل و مقام پاخانہ و پیشاب وغیرہ کے بال ابھی نہ چھوئے۔  
۱۳۶- خوش و خرم داندرو باہر سے پاک صاف رکھ کر نفس پر قادر ہو کر چلچل کر کے  
کابی نکرے۔

۱۳۷- جو شخص ان سب کرموں کو کرتا ہے اور شستر کی ریت پر چلتا ہوا دکان کا دیوتا اور  
آدمی کے نقصان میں کر سکتے۔  
۱۳۸- آس چھوڑ کر اپنے دقت پر ہر روز وید کا استعمال کرے یہ پریم دھرم ہے اور  
سب آپ دھرم ہے۔

۱۳۹- ہر روز وید کا ابھیا س پوتر ماتپ جو کون پر دیا کرنا یہ سب کرنے سے اگلی جنم کی  
ذات یاد آتی ہے۔





मध्यदिनेऽर्द्धरात्रे च आज्ञमुक्त्वा च सामिषम् ॥ सन्ध्ययोरुभयो  
 र्येव न सेवेत चतुष्षथम् ॥ १३१ ॥ उद्धर्तनमप्यस्नानं विरासुत्रेरक्त-  
 मेव च ॥ स्नानं निष्कृतवान्ना निनाधितिष्ठेत्तु कामतः ॥ १३२ ॥ वै-  
 रिसानोपसेवेत महायं चैव वैरिणः ॥ अधार्मिकं तस्करं च पर-  
 स्येव च योषितम् ॥ १३३ ॥ न हीदृशमना युष्यं लोके किंचन वि-  
 द्यते ॥ यादृशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम् ॥ १३४ ॥ सान्निध्यं चै-  
 व सार्धं ब्राह्मणं च बह्वश्रुतम् ॥ नावमन्येत वैभूषणैः कृशानपि  
 कराचन ॥ १३५ ॥ यतस्त्रयं हि पुरुषं निर्देहेद्वमानितम् ॥ तस्मा-  
 देतस्त्रयं नित्यं नावमन्येत बुद्धिमान् ॥ १३६ ॥

۱۳۱ دن کو وقت دوپہر اور آدھی رات کو اور صبح و شام کی وقت اور شراد کا گناہ  
 بھجن کر کے پورا ہے مین بجا ہے۔

۱۳۲۔ اوہن کی لہجہ پر استنان کرنے سے جو پانی زمین پر گرے اس پر غلیظ اور شیب  
 و فلفلہ دھکھار و تھوک دے تے ان سب پر قصد ادم ٹھہرے۔

۱۳۳۔ دشمن اور دشمن کا دوست اور ادھری اور چور اور پرانی عورت ان سب کی  
 صحبت مین نہ ہے۔

۱۳۴۔ پرانی عورت کی صحبت کے برابر دوسری کوئی چیز عمر کی گھٹانے والی مرد کو کم  
 نہیں ہے۔

۱۳۵۔ جو شخص سب چیزوں مین ترقی پالے کی آرزو رکھتا ہو وہ کشتی اور سانپ اور  
 بہت پرے ہوئے برہمن اگرچہ ضعیف دلا غصہ بھی ہوں تو بھی اونھوں کی بے قیدی  
 نہ کرے۔

۱۳۶۔ یہ تینوں توہین پانے سے ناش کرتے ہیں اس لیے عقلمند آدمی ان تینوں کی  
 بے قیدی نہ کرے۔



उपाकर्मणि जीतोत्सर्गे विराजते यथांस्तुतम् ॥ अथ का सुत्वहोरा-  
त्र सुत्वत्ता सुचरा त्रिवु ॥ ११६ ॥ नाधीयीता प्रवमारुहो न ह-  
न च हस्तिनम् ॥ न नावत्तारं नो दंने गिरा स्थो न यानरा ॥ १२०  
॥ न विवादेन कलहेन सेनायां न संगरे ॥ न भुक्तमात्रे नाजीरो न व-  
मित्वान् सहजे ॥ १२१ ॥ अतिथिं चाननुजाय्यमाकृतवातिवा-  
भ्याम् ॥ रुधिरे च सुते गात्राच्छस्त्रे राचयरीसते ॥ १२२ ॥ सा-  
मध्वनाद्ययजुधीनाधीयीत कचावना ॥ बेदस्याधीत्यवाद्यंत-  
माररायकमधीत्यच ॥ १२३ ॥ अग्नये हो देव देवत्यो यजुर्वेद-  
स्तुमानुषः ॥ सामवेदः स्मृतः यिज्यत्तस्मात्तस्या शुचिर्ध्वनि-  
॥ १२४ ॥

۱۱۹۔ آپا کرن میں اور اُتسرگ میں اور تیرا تراشکا میں ایک دن رات اور رت کے  
انت میں ایک دن رات اندھیا کرنا چاہئے۔  
۱۲۰۔ گھوڑا۔ ہاتھی۔ درخت۔ ناؤ۔ گدھا۔ اُڑت۔ اوسرزمین۔ سواری۔ انھون  
بٹیکر دید کو نہ پڑھے۔  
۱۲۱۔ لڑائی۔ جھگڑا۔ رنج۔ فوج کی لڑائی۔ بدھنی۔ تھے۔ ان سب میں بھی اندھیا  
جانتا اور مجھو جن کر کے بھی نہ پڑھنا۔  
۱۲۲۔ بہت ہوا چلنے میں بدن سے خون نکلنے میں ہتھار سے گھاؤ لگنے میں تھپکی  
بلا مہنی میں بھی اندھیا ہے جانتا۔  
۱۲۳۔ سام دید کو سنکر گ دید اور پھر دید کو نہ پڑھے ویرکانت اور نیک پر کرن  
ان دونوں میں سے کسی کو پھر اندھیا کرے۔  
۱۲۴۔ ارگ دید کے دیوتا دیو میں بھو دید کے دیوتا منیشہ میں شام دید کے دیوتا پتر  
میں اس سام دید کا شبد پوتر نہیں ہے

نیہارے بارا شبدے سبب یورے وچوہ بھو: ॥ ارماء صفا چتورہ  
 پریو: پورما سبب کا سوچ ॥ ۱۱۳ ॥ ارماء صفا چتورہ ہننیش  
 بھننیش چتورہ شی ॥ بھننیش کا پورما سبب تسماتتا: پریو  
 یو ॥ ۱۱۴ ॥ پاچوہ دی شاہہ گوما یوہیت تے تہا ॥ پریو  
 چتورہ تیت یوہیت یوہیت ॥ ۱۱۵ ॥ ناہی یوہیت سمانا تہا  
 مانہ گوما بھننیش: پریو ॥ بھننیش یوہیت یوہیت: ارماء  
 پریو ۱۱۶ ॥ ارماء یوہیت: ارماء یوہیت: ارماء یوہیت ॥ ت  
 ہال بھننیش یوہیت: ارماء یوہیت: ارماء یوہیت: ۱۱۷ ॥ چوہ  
 یوہیت یوہیت: ارماء یوہیت: ارماء یوہیت: ۱۱۸ ॥

۱۱۳۔ گہرا پتے وقت بان کا شبد دوون سہیا۔ ااوس۔ چتروشی۔ پورنامشی۔  
 اسی۔ ان سب میں دیکھو نہ پڑھے۔  
 ۱۱۴۔ ااوس گرو کو چتروشی چلیو کو اسی۔ پورنامشی وید کو نامش کرتی ہے ایسے ان  
 سب کو براے دے۔  
 ۱۱۵۔ جو وقت خاک لڑتی ہو یا کسی طرف آگ لگی ہو یا سیارنی وکٹا وگدہ اڈوٹ قناہ  
 اور نیگت ان سب میں دیکھو نہ پڑھے۔  
 ۱۱۶۔ مگھٹ اور گوٹلہ اور گاؤن کے پاس اور جماع کے وقت دالے کپڑے پہن  
 اور شرادھ کے ان کو لیکر وید کو نہ پڑھے۔  
 ۱۱۷۔ شرادھ کی چیز خواہ جائز اور ہویا بے جان اسکو لیکر وید کو نہ پڑھے کیونکہ ہمیں  
 اسکا شہد ہاتھ ہے۔  
 ۱۱۸۔ جس گاؤن میں چوری بہت ہوتی ہو اسی میں اگر کچھ دھمیں اور دھت کرم  
 کے دیکھنے میں اور وقت سے دوسرے دن کے اسوقت تک اندھیا سے جانتا۔

نیتیان آध्या یسب صیانتا مہشون گریہو ب ॥ ۱۰۷ ॥ اہم نہن پورای کا-  
 ماناں پرتیگاندھ سبہ ۱۰۸ ॥ اہم نہن تہ شہ پرا مہشون لاس  
 ب سانیو ۱۰۹ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب ۱۱۰ ॥  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۱۱ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۱۲ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۱۳ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۱۴ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۱۵ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۱۶ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۱۷ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۱۸ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۱۹ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب  
 اہم نہن مہا راتھ ب س مہا یے جن سب ۱۲۰ ॥ اہم نہن یو روتھ مانہ س مہا یے جن سب

۱۰۷۔ گانوں اور شہر میں تو ہر روز اندھیا ہے اور درگندہ میں بھی اندھیا کرنا چاہئے  
 پورا دھرم کرنے کی کامنہا دے کو۔

۱۰۸۔ جیتک گانوں میں مردہ پڑا رہے تب تک اہم نہن کے پاس اور روئے میں  
 اور دوسرے کام کے لئے بہت آدمیوں کے بلا میں اندھیا ہے جاتا۔

۱۰۹۔ پانی میں اور آدھی رات کو پاخانہ و پیشاب کرتے وقت دل میں بھی دید کا  
 خیال نہ لادے اور جو کچھ سنا اور شراہ میں بھون کر کے بھی نہ پڑھے۔

۱۱۰۔ ایکو دشت، شرادھ کا نیوتا لیکر نیوتا کے دن سے تین دن تک یکو نہ پڑھے  
 اور راجا کے سوتک میں اور چند سوج کے گرجن میں بھی۔

۱۱۱۔ جیتک ایکو دشت شرادھ کی بوباس بدن میں سے تب تک دید کو نہ پڑھے۔

۱۱۲۔ مانس اور سوتک کا ان دونوں میں سے کسی ایک کو بھون کر کے اور سوتے  
 ہوئے اور اس پر پانوں رکھے ہوئے اور دونوں شہنوں کو پیچھے کیے ہوئے دید  
 کو نہ پڑھے۔

इमान्नित्यमनध्यायानधीयानोविचर्जयेत्॥ अध्यायनं च कु-  
र्वाणाः शिष्याणां विधिपूर्वकम्॥ १०१॥ कर्माश्रयेऽनिलैरात्रौ  
दिवायांसुसमूहने॥ एतौ वर््यास्वनध्यायावध्यायज्ञाः प्रचस-  
ते॥ १०२॥ विद्युत्तनितवर्षेयुमहोत्कानां च संज्ञये॥ आका-  
लिकमनध्यायमेतेषु मनुस्मयीत॥ १०३॥ एतां स्वभ्युदितं वि-  
द्याद्यशप्रादुष्कताग्निषु॥ तदा विद्यादनध्यायमन्तौ चाभ्र-  
र्शने॥ १०४॥ निर्घातेभूमिचलनेज्योतिषां चोपसर्जने॥ एता-  
नाकालिकाविद्यादनध्यायन्तावपि॥ १०५॥ प्रादुष्कतेष्व-  
ग्निषु विद्युत्तनितनिःस्वने॥ सज्योतिः स्यादनध्यायः शि-  
वेरात्रौ यथादिवा॥ १०६॥

۱۰۱- آگے جو اندھیلا (یعنی رزق طلب) کینگے آسین گردا در چلیه ووزن دید کوئے بر زمین  
۱۰۲- رات کے وقت کان میں ہوا سنائی عوار و نہیں محول آتی ہو تو برسات میں آسنا  
اندھیلا جاتا یہ بات اندھیلا جاننے والے نے کہا ہے۔

۱۰۳- بجلی کا چمکنا اگر خبر شام ہوتے میں بجلی کا ٹوٹنا ایسے وقت میں اگر دن اسوقت  
کے اندھیلا سے یہ بات من جی نے کہا ہے۔

۱۰۴- بجلی کا چمکنا اگر چنا پانی برسات میں شام کیوقت ہوں تو فصل برسات میں اندھیلا جاتا  
ہمیشہ نہیں کیونکہ برسات میں تو یہ سب سچ ہی ہیں اور اگر فصل ابر دکھائی دے تو بھی اندھیلا  
۱۰۵- آکاش میں اوتھات کا شدید ہوا اور بھی چال اور چند عورت تارا ان سب کا پیر و ہو  
تو جوقت یہ ہوں اس سے دوسرے دن کیوقت تک اندھیلا ہر فصل میں جاتا۔

۱۰۶- وقت صبح و شام ہوں گے آگ لگ رہی کے گھسنے سے ظاہر ہوں اور اسوقت عجا کا چمکنا  
اگر جاتا ہو اگر برسات نہ ہو تو دن بھر اندھیلا ہے اور اگر وقت صبح و شام اور کبھی ہوں نہیں  
باتیں ہوں تو صرف رات بھر اندھیلا جاتا دوسرے دن کے اسوقت تک۔

आचारायां प्रौढपद्यां वाच्युपाकृत्य यथाविधि ॥ युक्तप्रवृत्त्या-  
 स्य धीयीतमासान्विप्रोऽर्ज्यं च मान् ॥ ६५ ॥ पुष्ये तु चन्द्रसां कु-  
 र्याद्बहिरुत्सर्जनं द्विजः ॥ माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वाह्ने प्रथ-  
 मेऽहनि ॥ ६६ ॥ यथाशास्त्रान्तु कर्त्तव्यं सुत्सर्यं चन्द्रसां वहिः ॥  
 विरमेत्यस्मिन् गोरात्रितदेवैकमहर्निशम् ॥ ६७ ॥ अत ऊर्ध्वं तु  
 चन्द्रां सिंशुक्लेषु नियतः पठेत् ॥ वेदांगानि च सर्वाणि कृत्वा-  
 पक्षेषु संपठेत् ॥ ६८ ॥ नाविस्पृष्टमधीयीत न शूद्रजनसन्निधौ  
 ॥ न निशान्ते परिशान्तौ ब्रह्माधीत्यपुनः स्वयेत् ॥ ६९ ॥ यद्यो-  
 दितेन विधिनानित्यं चन्द्रं स्थातम्यठेत् ॥ ब्रह्मचन्द्रं स्थातं वैवर्दि-  
 जोऽप्युक्तो न्यनायदि ॥ १०० ॥

۹۵۔ آدن یا مھاوون مین برھے آپا کرم کر کے ساڑھے چار مہینے تک خوش کر کے وید کو پڑھے۔

۹۶ سارے چار مہینے ہو چکے تھے کہ شتر میں گائون سے باہر جا کر حصہ کا تیاگ کر کے اور  
ساون یا بھاوون میں جو اپا کر ن کیا ہوا سکو ماگھ شکل پر پویشین پور باہن کال میں

۹۷۔ بطرح گانون کے باہر جا کر تھانہ شکت اسرگر گھر پہنچی رات یکت یا اسرگر کا ون رات یکت و بد نہ تر ہے۔

۹۸۔ اسکے بعد ہم سے کل پیش میں وید کو اور کہیں پیش میں شاستر کو پڑھے۔

۹۹۔ پڑھنے میں لکھتے حرف و صامت زبان سے نکلے اور سونڈ کے پاس نہ پڑے اور اگر بات کے جو تختے پہر میں وید کے پڑھنے سے تھک جائے تو سونڈ سے تینین ۱۰۰۔ جو بدھ کھی گئی اُسی بدھ سے ہر روز روپہ کے دونوں بھاگ دینی منتر اور برہمن (کچھ

یعنی اشترک گاہ اور آئینہ الہیہ دونوں یکساں طرح بین این دونوں کی طرح کی رات۔

سंजीवनं महावीचितं पनं संश्रयापनम् ॥ संहातं च सकाको-  
लं कुडमलं प्रतिभूर्तिकम् ॥ ८६ ॥ लोहशंकु महीधंचयन्या  
नं शास्त्रलीनरीम् ॥ असिपत्रचनंचैव लोहदारकमेव च ॥ ८७ ॥  
यत द्विदन्तो विद्वांसो ब्राह्मणा ब्रह्मवादिनः ॥ न स ज्ञः प्रतिपृ-  
क्तन्ति प्रेत्य श्रेयोऽभिकांक्षिराः ॥ ८८ ॥ ब्राह्मो मुहूर्ते बुध्येत ध-  
र्माथौ चानुचितयेत् ॥ कायलेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्त्वार्थमे-  
व च ॥ ८९ ॥ उत्थायावश्यं कृत्वा कृतशौचः समाहितः ॥ पू-  
र्वान्मन्त्रांजपं स्तिष्ठेत्सकाले चापरां चिरम् ॥ ९० ॥ ऋषयो  
दीर्घसन्ध्यत्वा दीर्घमायुरवाप्नुयुः ॥ प्रजायशश्च कीर्त्तिं च ब्रह्म-  
वर्चसमेव च ॥ ९१ ॥

۸۹- سنیزون - ہایچ - پتن - پرتاپن - سنگھات - کاکول - کڈمل - پوت  
مرتک

۹۰- لوہ شنگ - رجیش - شال ملی ندی - آس تہ پرن - لوہ دارک -

۹۱- سبات کے جاننے والے اور پرلوک میں کلیان چاہنے والے اور دیکے  
پڑھنے والے جو براہمن میں وہ راجہ سے دان نہیں لیتے۔

۹۲- دو گھڑی رات رہے اٹھ کر دھرم اور ارتھ کا دھیان کرے دھرم  
دارتھ کی خبر جو کایا کلیس ہے اسکو اور وید کے متواتر تھ لینے برہم گیان کو بھی  
دھیان کرے

۹۳- اٹھ کر ضروری کاموں سے فرصت کر کے طہنیاں کے ساتھ صہارت کرے  
اور صبح و شام بندھنیا میں دیر تک جب کرتا رہے۔

۹۴- دیر تک سڑھیا کرنے سے ریش لوگوں کی بڑی عمر کو پایا ہے اور بدھ اوریش  
اور کیرت اور برہم تیج کو بھی پایا ہے



केशमहान्महारांश्चशिरस्येतान्विवर्जयेत् ॥ शिरस्तातश्चतैले  
ननांगं किंचिदपि स्थितात् ॥ ८३ ॥ नराजः प्रतिपुल्लीयादराजं  
प्रसूतितः ॥ सूनाचक्रध्वजवतांवेवेशीवचजीवताम् ॥ ८४ ॥ द-  
शसूनासमंचक्रंदशचक्रसमो ध्वजः ॥ दशध्वजसमोवेशोदश-  
वेशसमो नृपः ॥ ८५ ॥ दशसूनासहस्रारिणोचाह्वयति सीनि-  
कः ॥ तेन हृत्यः स्मृतो राजा घोरस्तस्य प्रतिग्रहः ॥ ८६ ॥ यो राज-  
प्रतिपुल्लोतिलुब्धस्योच्छास्त्रवर्जितः ॥ स पर्याधेरायातीमा-  
नरकानेकविंशतिम् ॥ ८७ ॥ तामिहमन्यतामिहमहोभय-  
रौच्यौ ॥ नरकं कालसूत्रं च महानरकमेव च ॥ ८८ ॥

۸۴۔ غصہ سے اپنے یا دوسرے کے سر میں نہ مارے اور بالوں کو نہ کھینچے  
اگر سر میں تل لگا کر کھینچ کرے تو پھر اور کسی عضو میں تل نہ لگا دے۔  
۸۵۔ جو را جا کستری نہیں ہے اس سے اور کسائی اور تیلی اور کلارا اور جو مرد یا عورت بیبا  
کی جو کاسے جینے والے ہیں ان سے دان نہ لیوے۔  
۸۶۔ دهن کسائی کے برابر تیلی ہے دهن تیلی کے برابر کلار ہے دهن کلا کے برابر بیبا  
دهن بیبا کے برابر را جا ہے۔  
۸۷۔ جو کسائی اپنے لئے دهن نہ را جان مارتا ہے اس کے برابر را جا ہو جوت را جا  
کا دان نہ کھینچے۔

۸۸۔ جو را جا بالچی اور فلان شستر کے کام کرنے والا ہے اس سے  
جو کوئی دهن لیتا ہے وہ سلسلہ سے اگلیں شستر کے ترک جو آگے گھین گے  
ادھین جاتا ہے۔  
۸۹۔ تاشتر۔ انزضا شتر۔ مہارو۔ رورو۔ ترک۔ کال۔ سوتر۔ مہا  
ترک۔

अचमुर्विययं दुर्गानप्रमाद्येत कर्हिचित् ॥ न विरासूत्रं निरीक्षेत  
 न बाह्वभ्यां न दीनं तरेत् ॥ ७७ ॥ अधितिष्ठेन्न के शांस्तु न मस्मास्थिक  
 यालिकाः ॥ न कार्यासास्थिन तु वान्दीर्घमायुर्जिजीविषुः ॥ ७८ ॥  
 न संवसेद्यतिर्तेन चाराडालैर्न युत्कसैः ॥ न मूर्खैर्ना वलिशैश्च नां  
 तैर्ना क्वावसायिभिः ॥ ७९ ॥ न शूद्राय मतिरद्यान्नोच्छिष्टं न ह  
 विष्कतम् ॥ न चास्योपदिशेद्धर्मं न चास्य व्रतमादिशेत् ॥ ८० ॥  
 योऽस्य धर्ममाचक्षेयश्चैवादिशति व्रतम् ॥ सोऽसंहतं नाम तमः  
 सह तेनैव गच्छति ॥ ८१ ॥ न संहताभ्यां पाशाभ्यां करादुपेयात्म  
 नः शिरः ॥ न स्थशेच्चैतदुच्छिद्यो न च स्नायादिना ततः ॥ ८२ ॥

۷۷- جو ملک آنکھوں سے دیکھا نہیں ہے، اور جس مقام پر ہم جائیگا اندیشہ ہے اس ملک مقام  
 میں کبھی نہ جائے اور اپنے غلیظ و پیشاب کو کھنکھون سے نہ دیکھے اور نہ ہی کو ہاتھ نہ تیرے  
 ۷۸- زیادہ عمر کا چاہئے والا آدمی بال باراکھ یا بھڑی یا شی کے ٹوٹے ہوئے بڑھون کے  
 ٹکڑے یا بھولا یا بھوسا پر کھڑا نہ ہے۔

۷۹- دو ٹکڑے گاؤں کے رہنے والے آدمی جو تپت چاٹال کپڑے مندر اور دولت  
 مور کھد دھوبی وغیرہ دانتیا و سانی ہوں انھوں کے ساتھ ایک خشت کے سایہ میں نہ رہے۔  
 ۸۰- شود کو صلاح نہ دے سوا اس کے اور شودرن کو جو ٹھانڈے جو ہیدہ ہوں کرنے سے  
 بچ رہا، وہ شودر کو مذکے اور دھرم اور برت کا آپدیش بھی شودر کو نہ دے۔

۸۱- جو شخص شودر کو دھرم اور برت کا آپدیش دیتا، وہ مع اس شودر کے سہرت نام نہ رکھیں جائے،  
 ۸۲- ملے ہوئے دونوں ہاتھوں کے اپنے سر کو نہ کھلاؤ اور ہاتھ جو کچھ ہوں نو سر کو نہ چھو  
 اور شر کو چھو کر گلے سے اسٹان نہ کرے یعنی سر سے پائون تک اسٹان نہ کرے۔

۸۳- بیٹے نکھا دے شودر ستری بن سپا۔ بیٹے چاٹال سے نکھا ستری بن سپا۔ اگر مار کر نہ لے پران بن لکھا  
 کہ غیر ضرورت کے سر سے اسٹان نہ کرے۔

लोष्ठमर्दीदशाच्छेरीनस्वरवादीचयोनरः॥सविनाशं व्रजत्या-  
शुसूचकोऽशुचिरिवच॥७१॥नविगर्ह्यकथांकुर्याद्वहिर्मा-  
त्यंनधारयेत्॥गवांचयानंश्वेनसर्वथैवविगर्हितम्॥७२॥  
अहोरेणाचनातीयाद्ग्रामंवावेप्रसवावृतम्॥रात्रौचवृत्तसू-  
लानिदूरतःपरिवर्जयेत्॥७३॥नासैःक्रीडेत्कदाचित्सुख-  
न्योपानहौहरेत्॥शयनस्थोऽपिभुञ्जीतनपाशस्थंनचा-  
सने॥७४॥सर्वंचतिलसंबद्धंनद्यादस्तमितेरथौ॥नचनमः  
शयीतेहनचोच्छिद्यःकचिद्व्रजेत्॥७५॥आर्द्रपादस्तुभुञ्जी-  
तनार्द्रपादस्तुसंविशेत्॥आर्द्रपादस्तुभुञ्जानोदीर्घमायुर-  
वाप्नुयात्॥७६॥

۱-۷۔ ٹھیلالہ مردون کر نیوالا تنکا ٹوٹنے والا۔ دوتون سے ناخن اکھاڑنیوالا چغلی کر نیوالا ناپاک رہنے والا جلد ناش ہو جاتا ہے۔

۲-۷۔ لوک ریت یا دیدریت میں دل لگا کر نقد گوئی نہ کرے بلون میں ملازمنے میل کی پیٹھ پر چڑھ کر نہ چلے یہ سب باتیں ہمیشہ منع ہیں۔

۳-۷۔ گاؤں یا گھریہ دونوں طرف سے گھرے ہوئے ہوں تو روزہ چھوڑ کر اور طرف سے بھاؤ کر اسکے اندر بچاے اور رات کے وقت درخت کی جڑ میں نہ رہے۔

۴-۷۔ پالنا نہ کبھی کھیلے اپنا جوتا اپنے ہاتھ سے اٹھا کر ایک حکیم سے دوسری جگہ لٹوایا ملکہ پاؤں سے لہجے چار پانی پر بیٹھ کر اور بہت آن کو ہاتھ میں رکھ کر اس سے تھوڑا تھوڑا نکال کر اور آسن کے اوپر بھونج کے پاؤں کو رکھ کر بھونج نہ کرے۔

۵-۷۔ تن ملی ہوئی چیز کو رات کے وقت نہ کھائے تنکا ہو کر سونے جو ٹھٹھے منہ میں بجا

۶-۷۔ گیلیے پاؤں ہو کر بھونج کر نا اچھا لگے گیلیے پاؤں ہو کر سونا منع ہے جو شخص پاؤں جو کر بھونج کر تپے وہ بڑی عمر کو پاتا ہے۔



नवाख्येगांधयन्तीनवाचसीतकस्यचित्॥ नदिवीत्राशुधं-  
 द्याकस्यचिद्वर्शयेदुधः॥ ५६॥ नाधार्मिकेवसेद्वग्रामेनव्याधि-  
 बद्धलेभ्यशम्॥ नैकःप्रयद्येताध्वानंनचिरंपर्वतेवसेत्॥ ६०॥  
 नश्चइराज्येनिवसेन्नाधार्मिकजनाहते॥ नपाषण्डीगरा-  
 ज्ञानेनोपसृष्टेऽन्यजैर्नभिः॥ ६१॥ नभुंजीतोद्वतन्नेहंन-  
 तिसौहित्यमाचरेत्॥ नातिप्रगेनातिसायंनसायंप्रातराशि-  
 तः॥ ६२॥ नकुर्वीतवृथाचेष्टानवार्यञ्जलिनापिवेत्॥ नो-  
 त्संगेभक्षयेद्भक्ष्यान्नजातस्यात्कुतहल्ली॥ ६३॥ नचत्येव-  
 वागायेन्नवासित्राशिवाहयेत्॥ नास्फोटयेन्नचस्वेडेन्नच-  
 रत्तोविशवयेत्॥ ६४॥

۵۹- دو دھریا پانی پی پی ہوئی گئی کو نہ ہٹا دے اور نہ کسی سے کہے اور اندر دھنک کو پھینک  
 کسی کو نہ دکھاوے۔

۶۰- جس گائون میں دھرم منیر ہے۔ اور آفتون سے بھر آسوا، اوشمین نہ رہے اکیلے  
 راہ نہ چلے بہت دوتون تک پہاڑ پر نہ رہے۔

۶۱- جس گائون میں شور کاراج ہے اور حسین اور ہری پاکھنڈی چاندل آدی نہاد  
 کرے ہون اس گائون میں نہ رہے۔

۶۲- جس چیز سے تیل نکال لیا گیا ہو اسکو دکھاے اور عین صبح اور عین شام کیوقت چھوٹ  
 ٹوکے اور بہت تھوچن ٹکڑے اور اگر صبح کو زیادہ کھا گیا ہو تو شام کو نہ کھاے۔

۶۳- جس تجارت سے اس لوک اور پرلوک میں کھفائیدہ ہوا اسکو ٹکڑے اور چوڑے پانی نہ پیے  
 جانگھ پر لوڈ وغیرہ رکھ کر نہ کھاے اور بے مطلب کسی کے بھیجے جانے کی خواہش نہ کرے۔

۶۴- تا چنا۔ گانا۔ بجانا۔ تالی ٹھوکانا۔ کٹا کٹانا۔ بھٹکانا۔ وغیرہ کی بولی تو بس  
 سب باتون سے پرہیز کرے۔

ناریننمورخو نو پدھمے نرنا ننے سیت چ ستر یو ॥ نامہ دھن پر سیر پی  
سنو نون چ پا دہی پتا پ یو ॥ ۱۳ ॥ اذ ستا نون پ دھما سون چے ن م  
میلن د یو ॥ ن چے ن پا دت: کوریا ن پر سنا اذ م ا چرے ۥ ۱۴ ۥ  
نا سنی یا تھن و لایا ن ن گ چھ ننا یس ستر یو ॥ ن چے ن پر  
لیرے دھم ننا تھن یو دھرے تھن ۥ ۱۵ ۥ نا یس سون پوری ب سنا  
سوی ن چا س م تھرے ۥ ۱۶ ۥ اذ م لیرے م تھرے لوی دھن چا ویرا  
سنا ۥ ۱۷ ۥ نیک: سترے دھن یو دھرے شایا ن ن پر بوی دھ ۥ ۱۸ ۥ  
دھن یو م ا یس تھن گ چھ ن چا دت: ۥ ۱۹ ۥ اذ م یو دھرے  
چا گوی دھن سنا ن چا س ن دھو ۥ سنا دھن یو م ا یس تھن یو دھرے  
سنا یو دھرے ۥ ۲۰ ۥ

۵۳۔ اگن کو نھو سے نہ چھو کنا اور اگن میں ناپاک چیز نہ ڈالنا اور پانوں کو نہ تپانا اور  
تنگی استری کو نہ دکھینا چاہئے۔

۵۴۔ چار پانی کے شے اگن کو نہ کھنا اور نہ اس کو نالکھنا اور نہ پانوں سے چھونا اور نہ  
پران باد بھا کرنا چاہئے۔

۵۵۔ وقت صبح و شام کھانا اور سونا اور چلنا چاہئے اور زمین پر لکیریں نہ کھینچے اور  
جو پھول کی مالا اپنے بدن میں پہنے اس کو آپ نہ اڑتارے دوسرے سے اڑتارے۔

۵۶۔ پانی میں پیشاب اور غلیظ اور کھلے اور ناپاک چیز اور خون اور نہ ہران سب کو نہ  
ڈالنا چاہئے۔

۵۷۔ گھر میں اکیلا نہ سو اور جو شخص آپ سے علم وغیرہ میں زیادہ ہو اور سوتا ہو اس کو  
نہ جگا دے اور مہین والی عورت سے بات نہ کرے اور بغیر ملائے یکے میں نہ جاے۔

۵۸۔ اگن کا گھر گھو کا استھان۔ برامین کے پاس وید کا پڑھنا۔ بھوجن کا کرنا ان سب  
میں دلنا بائتم نکالنا چاہئے۔

नससत्त्वेषु गर्तेषु नगच्छन्नापि च स्थितः ॥ न नदीतीरमासाद्य  
न च पर्वतमस्तके ॥ ४७ ॥ वाय्वग्निविप्रमादित्यमपः पश्यं  
स्तथैव गाः ॥ न कदाचन कुर्वीत चिरामूर्त्रस्य विसर्जनम् ॥ ४८  
॥ तिस्रस्त्योच्चैरेत्काष्ठलोष्ठपत्रहरादिना ॥ नियम्य प्रयतो  
वाचं संवीतांगोऽवगुण्ठितः ॥ ४९ ॥ मूर्त्रोच्चास्स मुत्सर्गं हि वा  
कुर्याद्दुर्दुःसुखः ॥ हस्तिगाभिमुखो रात्रौ सन्ध्योश्च यथा दि-  
वा ॥ ५० ॥ छायायामन्धकारे वारात्रावहनिवाहिनः ॥ यथा  
सुखसुखं कुर्यात्प्राणावाधासंयुतम् ॥ ५१ ॥ प्रत्यग्निं प्रतिस-  
र्य्यं च प्रतिसोमोदकद्विजान् ॥ प्रतिगां प्रतिवातं च प्रज्ञानश-  
क्तिमेहतः ॥ ५२ ॥

۴۷- کھڑے ہو کر اور اوس گرھے میں جہین جاندار رہتے ہوں اور چلتے ہوئے اور نرمی  
کے کنارہ اور پہاڑ کے چوٹی پر بھی پاخانہ و پیشاب نہ کرے۔

۴۸- اگن- سوچ- جل- برہمن- گنو- ہوا- ان سب کو دیکھتے ہوئے بھی پاخانہ و پیشاب  
نہ کرے۔

۴۹- سوکھانپہ گھاس پھوس- کا ٹھڈھیلاد وغیرہ سے زمین کو چھپا کر اور سڑک  
باندھ کر سب اعضا کو کپڑے سے پوشیدہ کر کے خاموش ہو کر پاخانہ و پیشاب نہ کرے۔

۵۰- دن کو وقت صبح و شام اتنے طرف منہ کر کے اور رات کو دوش طرف منہ کر کے پاخانہ  
و پیشاب نہ کرے۔

۵۱- چھایا- اندھکار- پران باوہا- جھے- ان سب میں رات یا دن کو جب طرف منہ  
کرنے سے منہ نہ ہو اسی طرف منہ کر کے پاخانہ و پیشاب نہ کرے۔

۵۲- اگن- سوچ- سوچ- جل- برہمن- گنو- ہوا- ان سب کو دیکھتے ہوئے پاخانہ  
و پیشاب نہ کرے نہ بڑھ کا ناش ہوتا ہے۔

رजسامیش्रुतां نारी नस्य ह्युपगच्छतः ॥ प्रज्ञाते जो बलं च सु-  
 रायुश्चैव प्रहीयते ॥ ४१ ॥ तां विवर्जयतस्तस्य रजसा समभि-  
 क्षुताम् ॥ प्रज्ञाते जो बलं च सुरायुश्चैव प्रवर्द्धते ॥ ४२ ॥ नाश्रीया  
 ह्यर्थया सार्धं नैनाभी सेतवा श्रतीम् ॥ सुवर्ती जम्भामाशां वा  
 नचासीनां यथासुखम् ॥ ४३ ॥ नांजयन्तां स्वकेनेत्रे नचास्य-  
 क्तामनादताम् ॥ नपश्येत्यसवची च तेजस्वामो द्विजोत्तमः  
 ॥ ४४ ॥ नान्नमद्यादेकवासाननग्नः स्नानमाचरेत् ॥ नमूत्र-  
 मथिकुर्वीत नभस्मनि न गोव्रजे ॥ ४५ ॥ नयालकं दृष्टे न-  
 लेन चित्यां न च पर्वते ॥ नजीरां देवाय तनेन वल्मीके कदा  
 चन ॥ ४६ ॥

۴۱۔ جو شخص عین والی عورت سے محبت کرتا ہے اسکی عقل و جلال و قوت و نظر و عمر بیکم  
 ہو جاتی ہے۔

۴۲۔ جو شخص عین والی عورت سے محبت نہیں کرتا ہے اسکی عقل و جلال و قوت و نظر و عمر  
 یہ سب بڑھتی ہے۔

۴۳۔ عورت کے ساتھ بھوجن کرنا اور وقت عورت کھاتی ہو یا پیچھکتی ہو یا جمباتی یعنی  
 یا سکھ سے بیٹھی ہو تو ادا سکھ نہ بیکھنا چاہئے۔

۴۴۔ اور جو وقت عورت کو کھینچن یا بن یا بدن میں اٹھن لگاتی ہو یا رنگی ہو یا لڑکا جنتی ہو  
 تو ادا سکھ نہ کیچے جس پر اس کی کوئی کی احتساب ہو۔

۴۵۔ ایک کپڑا اپنے ہونٹے بھونچن نہ کرے نہ گھر کے سامنے نہ راستہ اور گھر  
 اور گھر کے استھان میں پیشاب نہ کرے۔

۴۶۔ جو ناہوا کہیت پاتی۔ آگ۔ پڑا۔ پہاڑ۔ دیوتاؤں کا پرانا مندر۔ چھوٹے چھوٹے  
 کپڑوں سے ڈھبھی ہوئی تھی۔ ان سب چیزوں پر پیشاب نہ کرے۔



कृतकेशनखश्मश्रुर्दानः शुक्लाम्बरः सुचिः॥ स्वाध्याये चैव  
युक्तः स्यान्नित्यमात्महितेषु च॥ ३५॥ वैरावीधारयेद्यधिं  
सौस्कंचकमराडलुम्॥ यज्ञोपवीतं वेदं च शुभेरीकौचकुण्डले  
॥ ३६॥ नेसे तो द्यन्तमादित्यं नास्तं यान्तं कदाचन॥ नोपसृष्टं  
नवारिस्थं न मध्यममसौगतम्॥ ३७॥ नलं घयेद्यत्सतं त्रीं न प्रधा  
वेच्च वर्धति॥ नचोरके निरीसे तस्वरूपमिति धारणा॥ ३८॥  
सृदंगादैवतं विप्रं घृतं मधुचतुष्टयम्॥ परस्मिन्नानिकुर्वीत प्र-  
ज्ञातांश्च वनस्पतीम्॥ ३९॥ नोपगच्छेत्समस्तोऽपि स्त्रियमा-  
र्त्तवर्शने॥ समानशयने चैव न शयीत तया सह॥ ४०॥

۳۵- دیگر خوانی اور مال نیک بین ہمیشہ مصروف رہے اور بال اور ناخن اور ڈاڑھی  
کو چھوٹا کیے رہے سفید کپڑے پہنے پاک دھات رکھر جو اس پر ضابطہ  
رہے۔

۳۶- بانس کی لاٹھی۔ کنڈل مع پانی۔ جینیو۔ سونے کے دو کنڈل۔ وید  
انکو استعمال کرے۔

۳۷- وقت طلوع وقت غروب وقت دوپہر آفتاب کو نہ دیکھے اور اگر سن پڑتا  
ہو تب بھی نہ دیکھے اور نہ پانی کے اندر آفتاب کو دیکھے۔

۳۸- بچھرا بانڈھنے کی رسی کو نہ مانگے پانی بہتے ہوئے نہ دوڑے۔ پانی میں اپنی  
صورت نہ دیکھے پرستارترین لکھا ہے۔

۳۹- کمین جانا ہوا درساٹے۔ اکھاری۔ ٹی۔ گنو۔ دیونا۔ برہمن۔ گھی۔ شہد۔ چوڑا  
جانا ہوا درخت یہ سب ملین تو دہی طرن اوٹو کر کے جائے۔

۴۰- اگر شہوت بدرجہ غایت ہو تو بھی جین والی عورت سے صحبت کرے اور برابر چار پائی  
پر عورت کے ساتھ نہ سووے۔

آسا سناशनशय्याभिरद्भिर्मूलफलेनवा ॥ नास्यकश्चिद्वसेजे-  
 हेशक्तितोऽनर्चितोऽतिथिः ॥ २६ ॥ पारश्वशिडनोविकर्मस्थ  
 त्वैडालव्रतिकाञ्छटान् ॥ हेतुकाञ्चकवृत्तीश्चवाङ्मात्रे-  
 रापि नार्चयेत् ॥ २७ ॥ वेदविद्याव्रतस्नातांश्चोत्रियान्गृहमे-  
 धिनः ॥ पूजयेज्यव्यकच्येन विपरीतांश्चवर्जयेत् ॥ २८ ॥ शक्ति-  
 तोऽप्यचमानेभ्योरातव्यं गृहमेधिना ॥ संविभागश्चभूतेभ्यः  
 कर्त्तव्योऽनुयरोधतः ॥ २९ ॥ राजतोषधनमन्विच्छेत्संसीदन्ना-  
 तकः सुधा ॥ याज्यान्नेवासिनोर्वापिनत्वन्यत इति स्थितिः  
 ॥ ३० ॥ नसीदेत्स्नातको विप्रः सुधाशक्तः कथंचन ॥ नजी-  
 शीमलवद्वासाभवेच्च विभवे सती ॥ ३१ ॥

۲۶- اسن محبوبن شيئا جل نول پھل ان سچون میں سے کسی ایک چیز سے تھیا شکت نیر پوجا  
 پائے اتھھ گرسھھ کے گھر میں نہ رہے پاوے۔

۲۷- اگر پاکھنڈی و ناقص سانش سے اوقات بسر کرنوالے و بیدال ترنگ ۲۶ بدحوالی  
 نکر نیوے و خلاف دلیل ٹھانیو اے یہ سب اتھھ کال میں آدین تو گفتگو سمجھی اگلی پوجا کر گھر میں  
 ۲۸- جو گرسھھ دیدین یا برت میں یا دونوں میں لگا ہے اسکا پوجن بہیہ اور کہنیہ سے کرے  
 خلاف عمل نکرے۔

۲۹- جو برہم چاری یا سنیاسی وغیرہ اپنے ہاتھ سے کھانا نہیں بناتے میں انکو حسب فہم میں  
 گرسھھ آدی کھانا پانی دے پھر دیکھا لوں گے کھانے سے جو کھانا پانی پوچھیں اور جانداروں کو دے۔  
 ۳۰- اگر سناشک گرسھھ سمجھو کہ سے چکین ہو تو را جا و بھان دو یا رتھی ان سے و بھن لیوے  
 اور کسی نہ لیوے یہ سناشک کی مر جاوے۔  
 ۳۱- جو گرسھھ سنشکات اور صاحب قدرت ہو وہ جو کھانے سے کسی طرح رنجیدہ دل نہوا اور غمزدہ  
 ہوتے ہوئے پرانے اور میلے کپڑے نہ پہنے۔

वाच्येकेचुहतिप्राणांप्राणीवाचं च सर्वदा ॥ वाचिप्राणोचयश्य-  
न्तोयज्ञनिर्घत्तिमसयाम् ॥ २३ ॥ ज्ञानेनैवापरेविप्रायजंत्येतैर्म-  
खैः सदा ॥ ज्ञानमूलांक्रियामेषांपश्यन्तो ज्ञानचक्षुया ॥ २४ ॥ अ-  
ग्निहोत्रं च जुह्यादाद्यंत्युनिशोः सदा ॥ दर्शनचार्द्धमासान्ते यौ-  
र्गमासेन चैव हि ॥ २५ ॥ सस्यान्तेन वसस्येच्छातथलन्ते द्विजोऽ-  
ध्वरैः ॥ पशुनालयनस्थादीसमान्ते सौमिकैर्मखैः ॥ २६ ॥ नानि-  
ष्टानवसस्येच्छायशुनाचाग्निमान्दिजः ॥ नवान्नमद्यान्मांसं-  
वादीर्घमायुर्जिजीविषुः ॥ २७ ॥ जवेनानर्चिता ह्यस्य यशुह्वयेन-  
वा ॥ ज्ञानेवाचुमिच्छन्ति नवान्नामिषशर्दिनः ॥ २८ ॥

۳۳- جو آدمی بانی اور پیران میں لایا جیسا دن کرتے ہیں (جیسے ہیں وہ پران کو بانی میں اڑاتی ہیں آدمی میں ہیں کرتے ہیں)۔

۳۵- طلوع آفتاب و عدم طلوع آفتاب میں ہون کرنا جائز ہے اور امانت اور پور نمائش کے دن بھی ہون کرنا چاہیے۔

۳۶- جب نیا غلہ پیدا ہوا سو وقت نوک پیمائش میں ہون کرنا افضل کی اخیر میں چتراس لگی ہے اور دونوں آگ میں پیش کسی ہون کرنا چاہیے اور سال کے اخیر پر انشورم بخیرہ لگیہ کرے۔

۳۷- جو برہمن اگن سوتری زیادہ عمر پرانے کی خوش رکھتا ہو وہ نیا غلہ جتنا کہ اس غلہ سے لگیہ کرے اور اس کا مانس جتنا کہ اس سے لگیہ کرے دو نوں کو بھوجن نہ کرے۔

۳۸- جو آگ نیا غلہ اور اس کے مانس سے اسودہ ہین ہوئی وہ اس آدمی کے پران کو بھوجن کرینا اچھا کرتی ہے جسے نئے غلہ اور پیش کے مانس سے لگیہ نہیں کیا اور کھانے لگا۔

सर्वान्परित्यजेदर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिनः॥ यथा तथा ध्यापयं  
 त्वसाध्यस्य कृतकृत्यता॥ १७॥ वयसः कर्मणोऽर्थस्य श्रुतस्या-  
 भिजनस्य च॥ वेदवाग्बुद्धिमाहूय माचरन् विचरेदिह॥ १८॥ बु-  
 द्धिवद्भिक्षसरायाश्च धान्यानि च हितानि च॥ नित्यं शास्त्राग-  
 वेसेत निगमांश्चैव वैदिकान्॥ १९॥ यथायथा हि पुरुषः शास्त्रं  
 समधिगच्छति॥ तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते॥ २०॥  
 ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा॥ न्यज्ञं पितृयज्ञं च यथाश-  
 क्तिं न ह्रापयेत्॥ २१॥ स तानेके महायज्ञान्यज्ञशास्त्रविरोज-  
 नाः॥ अनीहमानाः सततमिन्द्रियेष्वेव जुह्वति॥ २२॥

۱۷- جس دولت سے دیر پڑتے ہیں ہرچ ہو اسکو ترک کرے اور جس طریق سے دیر پڑتے  
 ہیں ہرچ ہو اس طریق سے مطلب حاصل کرے۔

۱۸- عمر و دولت و عمل و سنی سنائی بات و ملک و پوشاک و تقریر و عقل ان سب کی  
 صورت کو آچرن کرتا ہو اور دنیا میں رہے۔

۱۹- عقل و دولت کو ترقی دینے والے جو مفید و بیک (وہراکت وغیرہ) و کرم علم و صنعت  
 و طب و کھوانی و دھرم شاستر وغیرہ علوم میں انکو روز مطالعہ کیا کرے۔

۲۰- آدمی جیسی جیسی مہارت شاستر میں کرتا ہے ویسا ویسا اور کما مطلب سمجھتا ہے اور  
 گیان بھی اور اسکو اچھا لگتا ہے۔

۲۱- ریش گیانہ۔ دیو گیانہ۔ بھوت گیانہ۔ منشیہ گیانہ۔ پتر گیانہ۔ ان سب گیانوں کو خفیہ (اسکان) ہے  
 ترک نہ کرے۔

۲۲- جو آدمی گیانہ شاستر کو جانتے ہیں مگر ان گیانوں کے کرنے کی خواہش نہیں کرتے  
 دے ہمیشہ اندریوں میں ہوں کرتے ہیں۔

نلोकवर्तवर्त्ततत्तिहेतोः कथंचन॥ अजिह्मामशठांशुदां  
जीवेद्वाह्यराजीविकाम॥ ११॥ संतोषं परमास्यायमुत्तमार्थो  
मंयतो भवेत्॥ सन्तोषशूलं हि सुखं दुःखशूलं विपर्ययः॥ १२॥  
अतोऽन्यतमया च त्याजीवंस्तु ज्ञातको द्विजः॥ स्वर्गायुष्य-  
शस्या निवृत्ता निमानि धारयेत्॥ १३॥ नेरोदितं स्वकं कर्म  
नित्यं कुर्व्यादतन्निवृत्तः॥ तद्विकुर्वन्मया शक्तिप्राप्नोति पर-  
मांगतिम्॥ १४॥ नेहेतार्थान्म संगेन न विरुद्धेन कर्मणा॥ न  
विद्यमाने अर्थे बुनात्त्यामपि यतस्ततः॥ १५॥ इन्द्रियार्थेषु  
सर्वेषु न प्रसज्येत कामतः॥ अतिप्रसक्तिं चैतेषां मनसा स-  
न्निवर्त्तयेत्॥ १६॥

۱۱- واسطے حصول معاش کے دروغگوئی و شیرین زبانی و مفکرت اختیار کرے دروغ  
و فریب الی معاش کو ترک کر کے براہمنوں کی نیک معاش سے اوقات گزاری کرے۔  
۱۲- قناعت کر کے جو اس کو قابو میں لائے کہ جو نہ خوشی کی بنیاد قناعت ہے اور رنج کی  
جڑ بے صبری ہے۔

۱۳- ہنجا معاش مفصلہ یا اس کے کسی معاش سے اوقات گزاری کرے اور دیکھنے سے  
قانع ہو کر سہارتن کی واسطے اندریوں کو قابو میں لائے اور شورگ اور عمر اور نیکامی  
کی واسطے مضہیرت جو اس کے کہیں کے اسکو کرے۔  
۱۴- کمالی چھوڑ کر اپنے اعمال مندرجہ دید کو کرے حتی المقدور ان اعمال کو کرے  
مکت پردی کو پا دیگا۔

۱۵- گناہ جانا اور آدمی کی گناہ لائق نہیں ہے، اسکو کیجیہ کرانا ان سب باتوں سے  
اوقات گزاری کرے اور آدمی تپت یعنی اپنے درجہ بھڑک ہو گیا اس سے دھن وغیرہ بھی نہ ہوگا۔  
۱۶- اندریوں کو قابو میں لاکر ادنی زیادتی خواہش کو دل سے دور کرے۔

सत्याहृतंतुवाशिज्यंतेनचैवापिजीव्यते॥सेवाश्चवृत्तिराख्या  
तातस्मात्तांयसिर्वर्जयेत्॥६॥कुशलधान्यकोवास्यात्कुंभी-  
धान्यकसववा॥अहेहिकोवापिभवेत्स्वस्तनिकसववा॥७॥  
चतुर्गामपिचैतेवाहिजानागृहमेधिनाम्॥ज्यायान्यरःपरो-  
जेयोधर्मतोलोकजित्तमः॥८॥यस्कर्मैकोभवेत्येषांत्रिभिस्-  
त्यःप्रवर्तते॥ब्राम्हणेकश्चतुर्थस्तुब्रह्मसमेराजीवति॥६॥  
वर्तयंश्चशिलोब्धाम्भ्यामग्निहोत्रयरायराः॥३॥यीःयार्वाय  
नांतीयाःकेवलानिर्वपेत्सरा॥१०॥

۴- بنیائے کرم کو جو ٹھیکہ صح کہتے ہیں سیوا کو کتا کی برت کہتے ہیں اسلئے  
سیوانہ کرے۔

۷- نیشہ نیشک و صوم وغیرہ کرنوالے کو تنہا غلہ فراہم کرنا چاہئے جو تین سال  
تک کافی ہو یا ایک سال تک یا ایک دن تک کفایت کرے۔

۸- چار طرح کے برہمن کے مین امین پہلے سے دو مرد اور دوسرے تیس تیر  
سے چوتھا بڑا ہے۔ اور وہ صوم سے لوگ کو جیت گئے ہیں۔

۹- ان چارو مین پہلا چھ کرم سہرا دینا لبر کرے اور دوسرا تین کرم سے اور تیسرا  
دو کرم سے اور چوتھا ایک کرم سے اوقات لبر کرے۔

۱۰- شل اور انچھ سے اوقات گذاری کرے اگر نہ ہو تو کرے اما دس اور پورے  
اور سو وقت جبکہ نیا غلہ پیدا ہوتا ہے ان تینوں وقت مین بکیر کرے۔

۱۱- یعنی بکیر کرنا پڑھانا دان لیا رت وغیرہ جو اوپر لکھے ہیں۔

۱۲- یعنی بکیر کرنا پڑھانا دان لینا۔

۱۳- یعنی بکیر کرنا پڑھانا۔

۱۴- یعنی پڑھانا۔

चतुर्थमायुषोभागमुत्थित्वाद्युगेद्विजः॥ द्वितीयमायुषो-  
भागं कृतदारो गृहे वसेत्॥ १॥ अद्रो हे शोचभूतानामल्पद्रोहे  
शावायुनः॥ यावत्तिष्ठांसमास्थाय विप्रोजीवेदनापदि॥ २॥  
यात्रामात्रप्रसिद्धार्थस्यैः कर्मभिरगर्हितैः॥ अक्षौशेन शरीर  
स्य कुर्वीत धनसंचयम्॥ ३॥ ब्रह्मताम्रताम्र्यां जीवेत्तु स्रुतेन प्र-  
स्रुतेन वा॥ सत्यान्त्याभ्यामपि वानश्वहत्या कदाचन॥ ४॥  
ब्रह्मसुखशिलं ज्ञेयमस्रुतं स्यादयाचितम्॥ स्रुतं नृयाचितं भे-  
दं प्रस्रुतं कथं शास्त्रतम्॥ ५॥

- ۱- تمام عمر کے چار حصہ فرم کر کے اول حصہ تک کر دکل میں باس کرے دوسرے  
حصہ تک کشادی کر کے گھر میں رہے۔
- ۲- جو وجہ سناش ایسی ہے کہ حاصل ہونا اور سکا بحالت عدم ایذا رسانی جائز اراں کم  
ایجاد ہی جائز اراں ممکن ہے اس سے بر آہن اپنی پسند اوقات کرے بشرطیکہ وقت  
بصیبت نہ ہو۔
- ۳- اعمال نیک سے اور ایسے طریقہ سے کہ جس سے بدن کو تکلیف نہ صرف اپنے  
کھانے پھل کو دولت جمع کرے۔
- ۴- رت اوت مرت پر مرت جھوٹے معرچ ان رب طریقہ سے زندگی بسر کرے۔
- ۵- انجھ شل کورت تھے تین بغیر مانگے اسکو اوت کہتے تین مانگے سے ملے  
مرت کہتے تین۔ کیفیت کو پر مرت تین۔

۶ اس مقام پر یہ شک ہو سکتا ہے کہ یقیناً عمر کی تعداد صحیح معلوم نہیں ہو سکتی جبکہ چار حصہ مقرر کرے  
لیکن آدمی کی عمر کھلم میں نہ تو برس کی ہوتی ہے تو کمپیس برس جو تھا حصہ ہوا۔

वसूच्यदन्तितुपित्दुनूद्रांश्चैवपितामहान्॥ प्रपितामहां-  
स्तथादित्याञ्छुतिरेषासनातनो॥ २८४॥ विघसाशीभवेन्नि-  
त्यनित्यंवायुतभोजनः॥ विघसोभुक्तशेषंतुयज्ञशेषंतथा-  
मृतम्॥ २८५॥ सतद्धोऽभिहितं सर्वविधानं पांचयाज्ञिकम्  
द्विजातिमुख्यं हत्तीनां विधानं श्रूयतामिति॥ २८६॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां  
तृतीयोऽध्यायः ३

۲۸۴- پتا کو کُبو کہتے ہیں پتا نہ کو ڈر کہتے ہیں پر پتا نہ کو اوتیس کہتے ہیں یہ نیت  
شرت ہے۔

۲۸۵- براہمنوں کے بھوجن سے یا گیہ کرنے سے جو کھانا پھر ہے اسکو آپ  
بھوجن کرے۔

۲۸۶- بھوک جی کہتے ہیں کہ ہے رش لوگوں پخت گیہ کی بدھ لھی اب براہمنوں کے  
جیو کا کی بدھ کہتے ہیں سنو۔

مَن جی کا وغنرم نشاشر بھگ جی کی شگھتا

کا تیسرا اوتیس ستماپت ہو۔



प्राचीनावीतिनासम्यगपसव्यमतद्विराणा ॥ पित्र्यमानिधना  
 कार्यविधिवर्हपाशिना ॥ २७६ ॥ रात्रौ आर्जनकुर्वीतरास-  
 सीकीर्तिताहिमा ॥ संध्योरुभयोश्चैवसूर्येचैवाचिरोदिते ॥  
 २७७ ॥ अनेनविधिनाआर्जनिरक्ष्येहनिर्वपेत् ॥ हेमन्तग्री-  
 ष्ववर्षासुपांचयज्ञिकमन्त्रहम् ॥ २७८ ॥ तपैत्यज्ञियोहोमो  
 लोकिकेऽनौविधीयते ॥ नदर्शेनविनाआर्जमाहिताग्नेर्हि-  
 जन्मानः ॥ २७९ ॥ यदेवतर्पयत्यद्भिः पितृन्नात्वाद्भिजोत्तमः  
 ॥ तेनैवकृत्स्नमाप्नोतिपितृयज्ञक्रियाफलम् ॥ २८० ॥

۲۷۹- دانے کندھے پر چھوڑ رکھے ہوئے آگ کو چھوڑ دے ہوئے کُش ہاتھ  
 میں لے ہوئے پتھر تیرہت کر کے شستر کی ریت سے پتھر دن کے کرم  
 کرے۔

۲۸۰- رات کے وقت شرادھ نہ کرنا چاہیے کیونکہ دھڑکشی سے سے اور  
 دونوں سبز چھیا کے وقت اور براتہ کال میں بھڑکی تک آئین بھی شرادھ  
 نہ کرنا چاہیے۔

۲۸۱- اس طرح ہر سال سمیت کرشمہ پرشائنے جا اگر بی برات تینوں فصلوں میں  
 تین بار شرادھ کرے اور پنج ہایگیہ تو ہر روز کرے۔

۲۸۲- اگر ہوتری کو پتھر کیگیہ سمندر ہی ہوں دنیا کی آگ میں نہین ہوتا  
 اور غیر اموں شیا کے شرادھ نہین ہوتی۔

۲۸۳- پنج کیگیہ سمندر ہی شرادھ نہو کے تو انسان کر کے  
 براہمن جبل سے ترپن کرے اسی سے سب پتھر کیگیہ کے پھس کو  
 پائے پیل۔

अपिनः सकुले जायाद्यो नो दद्यात् त्रयो रशीम् ॥ पायसं मधु सर्पि  
भ्यां प्राक् दद्यात् कुंजरस्य च ॥ २७४ ॥ यद्यद्दाति विधिवत् सम्यक् अ-  
जासमन्वितः ॥ तत्तत्पितृणां भवति परत्रानन्तमस्यम् ॥ २७५  
॥ कथायसो दशम्या रौवर्जि यित्वा चतुर्दशीम् ॥ आद्रे प्रशस्ता  
स्तिथयो यथैतान तथेतराः ॥ २७६ ॥ युसुकुर्वन्दिनैर्सेयु सर्वा-  
न् कामान् तमश्नुते ॥ अयुसु तपित्त्वा सर्वान् प्राप्नोति पुष्क-  
लाम् ॥ २७७ ॥ यथा वै वायः पसः पूर्वयसा हि शिष्यते ॥ त-  
था आद्रेऽस्य पूर्वाक्तादपराक्नो विशिष्यते ॥ २७८ ॥

۳۶۴ - پتر لوگ سناتے ہیں کہ ہمارے کل مین ایشٹھ سیدیا ہو کر جو بھادون کرشن ترپوشی  
تتھے یا اسی مہینہ کی کسی اور تتھے مین اپراہن کال مین (یعنی بعد دوپہر) دھوا اور کھی  
لی سوئی کھیر دیوے۔

۳۶۵ - جو چیز بدھ پورک تتھے پرکار سے شر دھاسنت پتر دنگو دیجاتی ہے اسکا  
پھل پرلوک تین بے انتہا ہے۔

۳۶۶ - کرشن یکش مین دہنی سے لیکر ترپوشی کے سوا امانیا تتھے جیسی شرادھ مین  
اچھی ہے ویسی اور مہین۔

۳۶۷ - ہم تتھے اور ہم گشت مین شرادھ کرنے سے سپتون کا سامتی ہے اور مکھ تتھے اور مکھ  
گشت مین شرادھ کرنے سے علم و دولت والی اولاد ملتی ہے۔

۳۶۸ - جو طرح شگل یکش سے کرشن یکش اتم ہے اس طرح پوریا مین کال سے اپراہن کال  
شرادھ مین اتم ہے۔

\* جیسے دوج و چتھ دہرنی درہنی دہرہ۔

\* جیسے پورا دوج واسونی دکر لکا دہرہ۔

द्वौ मासौ मत्स्यमांसेन त्रीं मासां हारिणो न तु ॥ औरभ्रे रायचतु  
रः शाकुने नाथपंचवै ॥ २६८ ॥ षण्मासां शङ्खागमांसेन पार्थतेन  
च सप्तवै ॥ अष्टावे रास्यमांसेन गोरवे राणचैव तु ॥ २६९ ॥ दश  
मासांस्तु तृष्यन्निवराहमहिषा मिथैः ॥ शशकूर्मोस्तु मांसेन मां  
सानेकादशीव तु ॥ २७० ॥ संवत्सरस्तु गव्येन पयसा याम्यसेन च ॥  
वार्ज्ये रास्यमांसेन तु मिर्द्वादशवार्षिकी ॥ २७१ ॥ कालशाकं  
महाशल्काः खड्गलोहामिषमशु ॥ आनन्त्यौ यवकल्प-  
त्ते मुन्यन्नानि च सर्वशः ॥ २७२ ॥ यत्किञ्चिन्माधुना मिश्रं प्र-  
दद्यात्तु त्रयोदशीम् ॥ तदप्यस्य मेव स्याद्द्वर्षा मुचमघा मुच  
॥ २७३ ॥

۲۶۸۔ مچھلی کے گوشت سے دو مہینہ تک اور ہرن کے گوشت سے تین مہینہ تک اور بھینٹ کے گوشت سے چار مہینہ تک اور پرند جانور کے گوشت سے پانچ مہینہ تک پتر آسودہ میں  
۲۶۹۔ بکرا کے گوشت سے چھ مہینہ تک چر مرگے گوشت سے سات مہینہ تک این نام ہرن کے گوشت سے آٹھ مہینہ تک اور ورنام ہرن کے گوشت سے نو مہینہ پتر آسودہ رہتے ہیں۔  
۲۷۰۔ غمکلی سور یا بھینا کے گوشت سے دس مہینہ تک احمد خر گوشت اور بھڑا گوشت کیا مہینہ  
۲۷۱۔ کیوئے دو دوہ سے یا اسی دو دوہ کی کھیر سے ایک برس تک اور آب بکرا کے دھون  
کان پانی پیتے وقت پانی کو چھوین اور سفید رنگ ہو اور اندری جی جھین ہونے کے گوشت باؤن  
۲۷۲۔ کال شاگ اور مالک دایک تم کی ٹھیلی اور گنیڈا اور لال بکرا این سب سے  
کسی کے گوشت دینے سے اور دھ اور تہنی سے بے امتنا برس تک۔  
۲۷۳۔ موسم برسات میں جس تر بو دشی تھک کو کھنا کمتر ہو اسلن میٹھی چیز دینے سے  
کشتے بھنے لازوال بھل ہوتا ہے۔

पतिव्रताधर्मपत्नीपितृपूजनतत्परा ॥ मध्यमस्तुततः पिराडम  
द्यात्तस्यस्तुतायिनो ॥ २६३ ॥ आयुष्यन्तं सुतं स्तूते यशो मेधास-  
मन्वितम् ॥ धनवन्तं प्रजावन्तं सात्विकं धार्मिकं तथा ॥ २६३ ॥ प्र-  
सात्य हस्तावाचम्य ज्ञातिप्रायं प्रकल्पयेत् ॥ ज्ञातिभ्यः सत्क-  
तं दत्त्वा बान्धवानपि भोजयेत् ॥ २६४ ॥ उच्छेयशान्तुतत्तिष्ठेद्या-  
वद्विप्रचिसर्जिताः ॥ ततोऽहवलिंकुर्यादिति धर्मो व्यवस्थि-  
तः ॥ २६५ ॥ इविर्यच्चिरायाय चानन्यायकल्पयेत् ॥ पितृभ्यो  
विधिवदन्तं त्वयस्यास्य रोषतः ॥ २६६ ॥ तिलैर्ब्रीहियवेर्माषै-  
रद्भिर्मुलफलेन वा ॥ दत्तेन प्राप्तव्यं निविधिवत्पितरो नृणा-  
म् ॥ २६७ ॥

۲۶۲۔ پت بڑا استری تیردن کی پوجا کرنے والی لڑکا پیدا ہونے کی مراثی کے نیپڑ کو جس طرح سے بھون کرے۔

۲۶۴۔ خواجہ استری کے بڑے والد انیکام و غفلت و صاحب اولاد دستوگن و صرم والا کا پیرا ہو۔

۲۴- ہاتھ دھو کر آجین کر کے بچا ہوا کھانا اپنی ذات دالوں کو کھلا دے اسکے بعد رشتہ مندوں کو۔

۲۶۵۔ براہمنوں کا پس خوردہ تپ تپا ہے جب تک براہمن خست ہوں لبر خست ہونے براہمنوں کے جو کئے استھان کو دھو دے اسکے بعد گرہل کیسے یہ دھرم ہے

۲۶۶۔ جو شبیہ تیزنگو بدھ پُردک دینے سے بہت دل ناک آسودہ کھتی ہے اور بے انتہا پھل دیتی ہے وہ سب کئے مین و

۴۶۔ تل۔ دھان۔ جو۔ ارد۔ جل۔ مول۔ پھل۔ انہیں سے کوئی ایک چیز بھی شستر کے وافق دینے سے ایک مہینہ مک شتر آسودہ رہے۔

२३०: पवित्रं पूर्वाह्नो हविष्याशि च सर्वशः ॥ पवित्रं यज्ञपूर्वो-  
क्तं चित्ते या हव्यसम्पदः ॥ २५६ ॥ सुन्यन्ता निययः सोमो मांसं-  
यज्ञानुयस्कृतम् ॥ अस्मात्तलवरां चैव प्रकृत्या हविरुच्यते ॥  
२५७ ॥ विश्वज्यवाह्यरांस्तान्स्तु नियतो वाग्यतः शुचिः ॥ दक्षि-  
रां दिशमाकां सन्याचेते मान्वरान्यित्नु ॥ २५८ ॥ शतारो नोऽ-  
भिवर्द्धन्ता वेदाः सन्ततिरेव च ॥ अज्ञा च नो माव्यगमहृदये च  
नोऽस्त्विति ॥ २५९ ॥ एवं निर्वपरां कृत्वा पिराडांस्तान्स्तदनन्त-  
रम् ॥ गां विप्रमजमग्निं वा प्राशयेदप्सु वा क्षियेत ॥ २६० ॥ पिराड-  
निर्वपरां केचित्पुरस्तादेव कुर्वते ॥ वयोभिः स्वादयन्त्यन्ये प्रक्षि-  
पन्त्यनलेऽप्सु वा ॥ २६१ ॥

۲۵۶ - سنتے پورا باسن کال ہیشیہ بھوم کا شودھنا جو اُد پر کر کے آگے ہیں یہ سب یوکر میں  
سپت (دولت) ہیں -

۲۵۷ - غیون کے اُن دو وہ - سوم ناکارس بنایا ہوا اناش کے بنا ہوا سینہ ہانگ  
وغیرہ یہ سب تو بھوس سے ہیشیہ کہاتے ہیں -

۲۵۸ - گوشتی شرا و جو میں سترنگ کہنا چاہئے ان براہمنوں کو برا کر کے شرا و کرنا  
والا پوتر ہو کر کجیت و کشت و شکی طرف ہو کر پتر دن سے یہ بردان مانگے کہ

۲۵۹ - ہمارے کل میں دانا - دید - اولاد کی ترقی ہو شرا و دھانی رہے بہت دولت غرض  
دینے کی چیزیں ہوں -

۲۶۰ - سطح پنڈ و نکودے کے قعرہ اُن پنڈون کو گنو یا پرہمن یا بکرا یا آگن کو کھلا دے  
یا جل میں ڈال دے -

۲۶۱ - کوئی آچاری کہتے ہیں کہ براہمن بھوجن کے بعد پنڈون ان کرنا چاہیے اور کوئی  
آچاری اُن پنڈون کو پرندوں کو کھلانا اور کوئی جل یا آگن میں ڈال دینا کہتے ہیں -



सार्धवर्णिकमन्नाद्यंसन्नीयासाव्यवारिणा॥ समुत्तरेद्रुक्तव-  
तामयतोविकिरन्नुवि॥ २४२॥ असंस्कृतप्रमीतानांत्यागि-  
नांकुलयोयिताम्॥ उच्छिष्टंमागधेयंस्यादर्भेषुविकिरश्चयः  
॥ २४५॥ उच्छेयरांभूमिगतमजिह्मस्याशठस्यच॥ दासवर्ग-  
स्यतत्पित्र्येमागधेयंप्रचक्षते॥ २४६॥ आसपिराडक्रिया-  
कर्मद्विजातेःसंस्थितस्यतु॥ अद्वैतभोजयेच्छाद्वपिराडमेकंतु  
निर्वपेत्॥ २४७॥ सहपिराडक्रियायास्तु कृतायामस्यधर्मतः  
॥ अनयेवावृताकार्यपिराडनिर्वयरांसुतेः॥ २४८॥ आहंसु-  
त्तायउच्छिष्टंघृतायप्रयच्छति॥ समुदोनरकंयातिका-  
लसूत्रमवाकशिराः॥ २४९॥

۲۴۲- سب طح کے آن بہنیں وغیرہ سے ملا کر پانی ڈال کر اس اُن کو بھوجن کیے ہوئے  
پر بہنوں کے آگے بہن میں گنش پر ڈال دے۔

۲۴۵- جو مالک اگن دواہ کرنے کے لائق بہنیں تھے اور مر گئے ہیں جو نرودشت کل  
استر یون کو تیار کر کے مر گئے ہیں اُن سب کو یہ اُن جو کش پر دال لایا ہے ملتا ہے۔

۲۴۶- زمین پر جو چوٹھا اُن ہے وہ داس لوگوں کا ہے مگر وہ داس کٹل اور نٹ کھٹ  
نہوں

۲۴۷- براہمن کشتری ویشیہ کے مرنے کے دن سپٹری کر یا مٹ دے تو وہ دیو کے  
منت براہمن بھوجن نکرا دے بلکہ پڑپٹ کے منت ایک براہمن بھوجن کرے اور ایک پڑپٹ

۲۴۸- ہندوی کرنے کے بعد ماویشیا کی سترادھ کی بدھان سے کشیاہ (چھپاہ) میں بھی  
پتہ کو بیٹا دیو ہے۔

۲۴۹- جو کوئی سترادھ کے اُن کو بھوجن کر کے جو کھا اُن خود کو دیتا ہے وہ ٹوڑھ نیچے  
سر کے ہوتے کال سو تر نام نرک میں جاتا ہے۔

यदेक्षितशिरभुंक्तेयद्भुक्तैरक्षिराणामृतः ॥ सोपानत्कश्चय-  
 द्भुक्तैर्तद्देहांमिभुंजते ॥ २३८ ॥ चाराडालश्चवराहश्चकुङ्कु-  
 रः श्वातथैवच ॥ रजस्वलाचयराहश्चनेक्षेरन्ममतोहिजान् ।  
 २३९ ॥ ह्योमेप्रदानेभोज्येचयदेभिरभिवीक्ष्यते ॥ दैवेकर्मणि  
 यिन्येवातज्जच्छत्ययथातथम् ॥ २४० ॥ घ्राणोनसूकरोहन्ति-  
 पक्षवातेनकुङ्कुरः ॥ श्वातुहृदिनिपातेनस्पृशेनाचरवर्जान्  
 २४१ ॥ रज्जोवायदिवाकाराहातुः प्रेथ्योऽपिवाभवेत् ॥ हीन-  
 तिरिक्तागात्रोवातमप्यपनयेत्पुनः ॥ २४२ ॥ ब्राह्मणांभिसुक्तं  
 वापिभोजनार्थमुपस्थितम् ॥ ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञातःशक्तितः  
 प्रतिपूजयेत् ॥ २४३ ॥

۲۳۸- شتر کو با ندھے ہوئے اور کوشن منہ پیٹھے ہوئے اور جو تاپنے ہوئے جو بھون  
 کرتے ہیں وہ بھون رکشس کو پھونچتا ہے۔  
 ۲۳۹- چار ڈال - سور - مرقا - کتا - جیفن والی عورت نامریے سب لوگ پرہیز کو  
 بھون کرتے ہوئے نہ دیکھیں۔  
 ۲۴۰- دیو کرم یا پتر کرم میں ان سب کے دیکھنے سے سب کرم نشٹ ہو جاتی  
 ہیں۔  
 ۲۴۱- سور سونگھے سے مرقا پکے ہوا دینے سے کتا دیکھنے سے شتور پھون  
 سے ناش کرتا ہے۔  
 ۲۴۲- جیفن کا نا اگر چہ شترادھ کر نیو لے کا خورنگا بھی ہو کوئی ایک عضو زکھنے والا  
 کوئی عضو زیادہ رکھنے والا ان سب کو شترادھ کو مکان تو نکال دے۔  
 ۲۴۳- اگر برہمن یا بھکھا رہی بھون کو واسطے آگے ہون تو نیو تلے ہوئے برہمن  
 کی آگیا ایک بیٹھا شکست ہر ایک کا پوجن کرے۔



स्वाध्यायं श्रावयेत्येधर्मशास्त्राणि चैव हि ॥ आख्याना नी-  
तिहासांश्च पुराणानि खिलानि च ॥ २३२ ॥ हर्षयेद्वाह्यं रागांस्तु-  
द्योभोजयेच्च शनैः शनैः ॥ अन्नाद्येनामकश्चैतात्परोऽप्यपरिचो-  
दयेत् ॥ २३३ ॥ व्रतस्थमपि दौहित्रं श्राद्धे यत्नेन भोजयेत् ॥ कुत-  
पंचासने दद्यात्तिलैश्च विकरे महीम् ॥ २३४ ॥ व्रीणां श्राद्धे पवि-  
त्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः ॥ व्रीणां चात्र प्रशंसन्निशौचम-  
क्रोधमत्वराम् ॥ २३५ ॥ अत्युषां सर्वमन्त्रं स्याद्भुञ्जीरं स्तेच वाम्य-  
ताः ॥ न च द्विजातयो ब्रूयुर्वाचाश्चाह विर्युगात् ॥ २३६ ॥ यावद्दु-  
ष्टां भवत्यन्त्यावदश्रुतिवाम्यताः ॥ पितरस्तावदश्रुतियाव-  
न्नोक्ताह विर्युगाः ॥ २३७ ॥

۲۳۲- وہ دھرم شاستر کتنا اتھاس پھران شری سوکت ان سب کو براہمنوں کو  
شناوے۔

۲۳۳- آپ بھگین ہو کر شیریں بیانی وغیرہ سے براہمنوں کو خوش کرے جلدی  
نہ کرے یہاں چھالو دے یہاں چھی کھیر ہے اس طرح سب چیزوں کا گن کہ کیکر بھوجن کرادے۔  
۲۳۴- لڑکی کا لڑکا اگر برت میں بھی ہو تو وہ سکوتی تہ پیر سے شراوہ میں بھوجن کرادے  
نیپالی مکمل کا آسن دے شراوہ کی زمین میں تل چھپکا دے۔

۲۳۵- شراوہ میں تین چیزیں پاک ہیں۔ نالی۔ نیپالی مکمل تل۔ اونٹن چروان  
کی ترفیف ہے وہ یہ ہیں پوتہ تہ۔ تھانت و پھرتہ۔

۲۳۶- براہمن لوگ جو نہ ہو کر نہایت گرم کھانے کو بھوجن کریں اگر کھلائیں تو لالچیزوں کا  
گن پوچھے تو بھی کچھ نہ بولیں۔

۲۳۷- جب تک کھانا گرم رہتا ہے اور کھائیو الے بولنے نہیں ہیں تب تک پورے گن کرتے  
ہیں۔

گوراماں سسٹھ سا کا دیا نپو دی دھت مٹھ ॥ ویتھ سسٹھ یات: پور  
 بھما بے و س ما دھت: ॥ ۲۲۶ ॥ مہسٹھ بھو جی چ ویتھ مٹھ لانی  
 چ کلا نی چ ॥ ہڈا نی بے و ماں سا نی پا نا نی سٹھ رماں سا چ ॥  
 ۲۲۷ ॥ ڈپ نی ی ت ت س رے ش ن کے سٹھ رماں سا دھت: ॥ پ ریتھ ی ت پ ی  
 تو گوراماں سٹھ رماں سٹھ رماں ॥ ۲۲۸ ॥ نا سٹھ رماں ی ت ی ت نا تون کور  
 نا تون بے دھت ॥ ن پا دین سٹھ رماں سٹھ رماں بے ت دھت ی ت ॥ ۲۲۹ ॥ سٹھ  
 م م ی ت ی ت نا تون ی ت سٹھ رماں سٹھ رماں ॥ پا د سٹھ رماں سٹھ رماں سٹھ  
 نا تون بھو جی ॥ ۲۳۰ ॥ ی ت سٹھ رماں سٹھ رماں سٹھ رماں سٹھ رماں ॥  
 جٹھ رماں سٹھ رماں: کورماں ی ت سٹھ رماں سٹھ رماں ॥ ۲۳۱ ॥

۲۲۶۔ اسی طرح سے کہ جس سے زمین میں گرنے نہ پاوے ایک پت ہو کہ جن دال شاگ  
 دو دھ دی گھی مدھ کور میں پر رکھے۔

۲۲۷۔ لٹو وغیرہ دکھیر وغیرہ و طرح طرح کے پھل مول ادھر کا مانس ادھینے والی  
 خوشبودار چیز ان سب کو بھی رکھے۔

۲۲۸۔ ایک چیز ہو کہ سب چیزوں کو برہمنوں کے پاس لا کر یہ کہہ کر کہ یہ مینھا ہو کھتا ہو

۲۲۹۔ رونا ٹھنہ کرنا جھوٹھ بولنا ان سب کو چھوڑ دے پافون سے ان کو نہ چھوے  
 اور نہ اچھا چھا کر ان کو برتن میں رکھے۔

۲۳۰۔ رونے سے پریت کو اور غصہ کرنے سے دشمن کو اور جھوٹھ بولنے سے  
 گتے کو اور پافون سے چھوٹے سے رکش کو اور اچھا لےنے سے پاں کو وہ مان  
 ملتا ہے۔

۲۳۱۔ دکھ کو چھوڑ کر جو چیز برہمنوں کو اچھی معلوم ہو وہ وہ چیز دیوے اور پرانا مال  
 کھٹیا کے کپڑے یا تین تیر دن کو پیاری ہیں۔

धियमारोतुयितरिपूर्ववामेवनिर्वपेत् ॥ विप्रवद्वापितं आदे-  
 स्वकंपितरमाशयेत् ॥ २२० ॥ यितायस्यनिवृत्तः स्याज्जीवेद्या-  
 पिपितामहः ॥ पितुःसनामसंकीर्त्यकीर्त्तयेत्पितामहम् ॥  
 २२१ ॥ यितामहोवातच्छाडंभुंजीतेत्यब्रवीन्मनुः ॥ कामस्वा-  
 समनुजातः स्वयमेवसमाचरेत् ॥ २२२ ॥ तेषांदत्वातुहस्तेषु-  
 सपवित्रंतिलोदकम् ॥ तत्पिराडाग्रं प्रयच्छेत्स्वधैयामस्त्विति  
 ब्रुवन् ॥ २२३ ॥ याशिभ्यान्पुंसं शृणुस्वयमन्नस्यवर्द्धितम् ॥  
 विप्रान्निकेपित्त्वन्यायन्शनकैरुपनिक्षिपेत् ॥ २२४ ॥ उभ-  
 योर्हस्तयोमुक्तंयदनमुपनीयते ॥ तद्विप्रमुन्यन्यसुप्तः सह-  
 सादुचचेतसः ॥ २२५ ॥

۲۲۰ - تپا کے جیسے تپڑے ہو گئے جو پتیارہ ذخیرہ تین پریش میں انکی تیرا دھ کر یا تپا کے  
 برہمن کی جگہ تپا ہی کو بھوجن کراوے اور تپیارہ پر تپیارہ کو پیڑ دیو سے اور دونوں کی منت ہم پر جن ہم کراوے  
 ۲۲۱ - جب کا تپیارہ گیا ہو اور تپیارہ جینا ہو وہ تپا کا نام لیکر پر تپیارہ کا نام دیو سے -  
 ۲۲۲ - یا جسطح جیسے ہوئے تپا کو بھوجن کراؤ گا کہ اسے اسطرح جیسے ہوئے پر تپیارہ کو بھوجن  
 کراوے تپا پر تپیارہ کو پیڑ دیو سے اس بات کو سن جی کے کہ اسے یا تپیارہ کی اکھا یا کر تپا پر تپیارہ دیو  
 پر تپیارہ کو پیڑ دیو سے تپیارہ کو بھوجن کراوے -  
 ۲۲۳ - ان برہمنوں کے ہاتھ میں نل جگہش کو برہمن دیو سے لگا لایا ہوا جو تھوڑا تھوڑا کھا  
 ہے اسکو تپا ذخیرہ تینوں کے برہمنوں کو سیکھ دیو سے -  
 ۲۲۴ - آپ دونوں ہاتھوں سے کھانے کی سب چیز کو ستر میں باہر لکر تپڑوں کا چھینا  
 کرتا ہوا برہمنوں کے پاس آہستہ سے پڑوے -  
 ۲۲۵ - ایک ہاتھ سے لائے ہوئے ان کو آسمان لوگ چھین لیتے ہیں اسلئے دونوں ہاتھ  
 سے لانا چاہئے -

अथसम्यग्मयीकृत्वासर्वसाहचर्यविक्रमम्॥अथसम्यग्महस्ते  
ननिर्वयेदुदकंभुवि॥२१४॥स्त्रीस्तुतस्माद्विशेषात्पिराडा  
नृत्वासमाहितः॥श्रीरक्तेनैवविधिनानिर्वयेदक्षिणामुख  
॥२१५॥न्युपपिराडांसतस्तांस्तुययतोविधिपूर्वकम्॥तेषुद  
र्भेषुतंहस्तंनिमज्ज्याहोपभागिनाम्॥२१६॥आचम्योदकप  
रावत्यत्रिरागम्यशनैरसृन्॥षड्व्रह्मत्त्वंअनमस्कुर्वात्पितृहेव  
चमंत्रवित्॥२१७॥उदकंनिनयेच्छेषशनैःपिराडान्तिकेषुन  
॥अवजिघ्रेच्चतान्पिराडान्यथान्युपाचमाहितः॥२१८॥  
पिराडेभ्यस्त्वल्पिकांमात्रांसमादायानुपूर्वशः॥तेनैवविश  
नासीनान्विधिवत्पूर्वमाशयेत्॥२१९॥

۲۱۴- اگر ہون کو دشمن کر کے آپ سنبھہ ہو کر داسنبھہ ہاتھ سے پندر کھنے کی  
زمین پر جل دیوے۔

۲۱۵- ہون سے جو سنبھہ بجا ہو اس سے تین ہڈ بنا کر دشمن کی طرف منہ کر کے  
داسنبھہ ہاتھ سے کشوں کے اوپر ان ہڈوں کو ایک جیت ہو کر دیوے

۲۱۶- جو برہم کرم کا شے کے سوتر میں لکھی ہے اس کے مطابق کشوں پر ان ہڈوں کو دیگر  
ہڈ کے نیچے کا جو کش ہے اس کی جڑ میں ہاتھ کو پونچھے برہم پر تپا نہ وغیرہ تین ہڈوں  
کی تربیت کیواسطے۔

۲۱۷- متہرجانے والا اتر سنبھہ ہو کر آچن اور تین پرانا ایم تھیا شکت کر کے لبت وغیرہ  
چھڑا توں کو اور تیر دن کو کش کار کرے۔

۲۱۸- ہڈوں کے پہلے پندر کھنے کی زمین پر جو جل دیوے اس پاتر میں بجا ہو اجل کو  
اس کو ہڈوں کے پس سلسلہ سے دیو پیچھے ان ہڈوں کو ایک جیت ہو کر سلسلہ سے لکھے۔

۲۱۹- ہڈوں کے فقور اور فقور ان سلسلہ لیکن نیچے سے ہونے چھٹی برہم ہون کو برہم ہون کو

आसनेन वृषपक्षप्रेषु बर्हिषा त्सु प्रथक प्रथक ॥ उपस्थं चोरकान्  
सम्यग्विप्रांस्तानुपवेशयेत् ॥ २०८ ॥ उपवेश्य तु तानि प्राणा-  
सनेन जुशुषितान् ॥ गन्धैर्माल्यैः सुरभिभिरर्चयेद्देवपूर्वकम्  
॥ २०९ ॥ तेषामुत्कृष्टमानीय स पवित्रांस्तिलानि ॥ अग्नौ कु-  
र्यादनुज्ञातो ब्राह्मणो ब्राह्मणो महः ॥ २१० ॥ अग्नेः सोमयमा-  
स्यां च कृत्वा घ्रायनमारितः ॥ हविर्दानेन विधिवत्पश्चात्सं-  
तर्पयेत्येत् ॥ २११ ॥ अग्निभावे तु विप्रस्य पाशावेवोपपाद-  
येत् ॥ यो ह्यग्निः स हि ज्योतिष्यैः संप्रदर्शितः ॥ २१२ ॥ अ-  
ज्ञो धनान्मुप्रसादान् वदन्त्येतां पुरातनान् ॥ लोकस्था घ्रायने-  
युक्ता ज्वाहरे वा न्निजोत्तमान् ॥ २१३ ॥

۲۰۸- انگ انگ کش کے آسنون پر نیو تے ہوئے براہمنوں کو آستانہ  
آہن کر کے بھلا دے۔

۲۰۹- پہلے دیو کارج میں نیو تے ہوئے براہمنوں کی پھول والا وغیرہ سے  
پوجن کر کے بعد اسکے پتر کارج میں نیو تے ہوئے براہمنوں کی بھی پوجن کر  
۲۱۰- کش تل۔ سمت جل کو براہمنوں کو دے کر ان کی اکیا لیکر ان براہمنوں  
سمت آگن میں ہون کرے۔

۲۱۱- پہلے۔ آگن سوگم یم ان سب کو ہدیہ دے کر پیچھے پترن کو ان وغیرہ دیو  
۲۱۲- آگن ہو تو براہمن کے ہاتھوں میں ہون کرے جو آگن سو براہمن ہے اس بات  
کو منتر جاننے والے براہمنوں نے کہا ہے۔

۲۱۳- تاک غصہ خوش رو و قدیم و ترقی عالم میں کوشش کرنے والے شراہ  
کے پاتر براہمن ہی میں اس بات کو من و غیرہ رشتیوں نے کہا ہے اس لئے دیکھنا  
شراہ کو براہمن کے ہاتھ میں دینا سہل ہے۔

राजते माजने रेवामथो वाराजता न्विते ॥ वार्यपि अजया दत्तम  
 स्याथोय कल्पते ॥ २०२ ॥ देवकार्या द्विजातीनां पितृकार्यं वि  
 शिष्यते ॥ देवं हि पितृकार्यस्य पूर्वमाव्यायनं स्मृतम् ॥ २०३ ॥  
 ते वा मारक्षभूतन्तु पूर्वदैवं नियोजयेत् ॥ रक्षांसि हि विलुंयन्ति  
 आह मारक्षवर्जितम् ॥ २०४ ॥ देवाद्यन्तं तदी हेतुपि नाद्यन्तं  
 तद्भवेत् ॥ पित्राद्यन्तं लीहमानः क्षिप्रं नश्यति सान्वयः ॥ २०५ ॥  
 द्युचिदेशं विविकं च गोमयेनोपलेपयेत् ॥ रक्षिणा प्रसावं चैव  
 मयत्नेनोपपादयेत् ॥ २०६ ॥ अथ काशेषु बुचोसेषु नदीतीरेषु चै  
 व हि ॥ विविकेषु च तु व्यन्ति रत्नेन पितरः सदा ॥ २०७ ॥

۲۰۲ - ان سب پتر دن کور دپے کے برتن مین یا جس برتن مین رو پا ملا ہوا  
 ہوا سمین اگر صرف پانی بھی دیوے تو لازوال خوشی حاصل ہوا۔

۲۰۳ - برہمن کی شتری - دیشیوں کے دیو کا رج سے پتر کا رج بڑا ہے اسوج  
 دیو کا رج چلے ہوئے سے پتر کا رج پورا۔

۲۰۴ - پتر کا رج کی رکش کر نیوالے دیو کا رج کو پہلے کرنا چاہئے رکشانت کا رج  
 کو رکش لے لیتے مین۔

۲۰۵ - پتر کا رج کے آد اور انت مین دیو کا رج کرنا چاہئے اور دیو کا رج کے  
 آد اور انت مین پتر کا رج کرنے والا اپنے دلش سمت جلد ناسن ہو جاتا  
 ہے۔

۲۰۶ - ایکانت پوتر دشن کی طرف دھرت دیش کو گورتے لیے۔

۲۰۷ - یو مہاؤ سے شتر ۴ بن وغیرہ جو دیش نوی کے کنارے آریوں سے  
 من لی ہو ایسی جگہ شتر اودھ کرنے سے پتر لوگ ہمیشہ مسودہ  
 رہتے مین۔

देत्यदानवयक्षाणां गन्धर्वो गारक्षसाम् ॥ सुपर्णाकिन्नराणां  
चरुतावर्हिषदोऽत्रिजाः ॥ १६६ ॥ सोमयानामपि प्राणां स-  
त्रियाराणां हविर्भुजः ॥ वैश्यानामाज्ययानामश्वद्वाराणां तु मुका-  
लिनः ॥ १६७ ॥ सोमयास्तुकवेः पुत्रा हविस्मान्तोऽङ्गिरः सुताः  
पुलस्त्यस्याज्ययाः पुत्रा च सिधुस्य मुकालिनः ॥ १६८ ॥ अग्न-  
निदग्धानग्निदग्धान्काव्यान्वर्हिषदस्तथा ॥ अग्निव्यातां  
श्च सौम्यांश्च विशारामेव निर्हिषीत ॥ १६९ ॥ यस्ते तु पुत्रा  
मुख्याः पितृणां परिकीर्त्तिताः ॥ तेषामपीह विज्ञेयं पुत्रयौ  
ब्रह्मणस्तकम् ॥ २०० ॥ ऋषिभ्यः पितरौ जाताः पितृभ्यो देवमा-  
नवाः ॥ देवभ्यस्तु जगत्सर्वं च रंस्था राव नु पूर्वशः ॥ २०१ ॥

۱۹۶- دیتیہ - دانو - یکیش گندھرب - ارگ - ارکشن - سپرن - کتر ان سبا  
پتر اثر کا پتر برہندے -

۱۹۷- برہمن کشری - دیشید - شورو - ان سپ کے پتر برہنہ سلسلہ سوم پر  
ہو - بمع - اہم - کالی -

۱۹۸- کو - انکرا - پلپہ - کشر کے پتر برہنہ سلسلہ سوم پر - ہو - پتر - جیت  
سکالی -

۱۹۹- اگن - دگدھ - اگن - دگدھ کا دیتیہ برہندہ اگن شوات سوم پر - پتر - ہا -

۲۰۰- یہ سب پتر مقدم ہیں انھوں کے بیٹے اور پوتے بہت ہیں -

۲۰۱- رشیوں کے پتر پہلے ہیں اور پتر دن سے دینا اور آدمی پیدا ہونے  
میں - دیوتوں سے ساکن و متحرک جاندار لینے تمام عالم پیدا ہوا  
ہے -

آرامंत्रیتस्तु ی: آڑے دھرتیا سہ موہتے ॥ داتوریہ دھرتتہ  
 بیتتسار्वप्रतिपद्यते ॥ १६१ ॥ अक्रोधनाः प्रौचपराः सततं  
 ब्रह्मचारिणाः ॥ न्यस्तशस्त्रा महाभागाः पितरः सूर्यदेवताः १६२  
 यस्मादुत्पत्तिरेतेषां सर्वेषां मध्यशेषतः ॥ ये च धैर्यवचर्याः स्युः  
 नियमैस्तान्निबोधत ॥ १६३ ॥ मनोर्हेरगयगर्भस्य ये मरीच्या-  
 दयः सुताः ॥ तेषां वीराणां सर्वेषां पुत्राः पितृगणाः स्मृताः ॥  
 १६४ ॥ विशदसुताः सोमसदः साध्यानां पितरः स्मृताः ॥ अग्नि-  
 व्याताश्च देवानां मरीचा लौकविश्रुताः ॥ १६५ ॥

۱۹۱- شراوہ کرم میں نہو تیا کر جو برہمن شود کی ستری سے بھوک کرتا ہے وہ شراوہ  
 کر نیوالے کے سپورن پاپ کو پاتا ہے۔

۱۹۲- پتر لوگ کرودھ سے رہنہ باہرا اور بھینس سے پونزراگ اور ڈویش سے رہت  
 اس کے بھوک سے رہت لڑائی سے وودیا وغیرہ آٹھ گن سے بھوک ہوئے ہما بھاگی  
 انا و دیوتا روپ ہیں اسوجہ سے شراوہ کرنے والا اور شراوہ میں بھوج کر نیوالا دونوں  
 کرودھ سے رحمت ہوں۔

۱۹۳- جسے ان سب کی پالیش اور جن نمون سے جکاسیوں، ان سب کو نیچے  
 بیچے۔

۱۹۴- برہما کے پتر بیچنے جن جی کے مریح وغیرہ جو پتر میں تنھوں کے جو پتر زمین سو پتر  
 گن ہیں۔

۱۹۵- ساوہ گن کے پتر برہما کے پتر رسوم سدھین دیوتوں کے پتر کائنات میں  
 سب مریح کے پتر ہیں اور لوگ میں پر شراوہ ہیں۔

یعنی حصول براد کی تمنا۔

- یعنی مراد حاصل ہونے میں ریخ۔



त्रिगाचिकेतः पंचाभिस्त्रिमुपरीः षडंगवित् ॥ ब्रह्मदेयात्म-  
सन्नानोज्येष्ठसामगयवच ॥ १८५ ॥ वेदार्थवित्प्रवत्ताचब्रह्म-  
चारीसहस्रदः ॥ शतायुश्चैवविज्ञेयाब्राह्मणाः पंक्तिपावनः  
॥ १८६ ॥ पूर्व्येद्युः परेद्युर्वा आह्मकर्मरायुपस्थिते ॥ निमंत्रये-  
तत्प्रवरात्मस्यविप्रान्यथोदितान् ॥ १८७ ॥ निमंत्रितोद्दिजः  
पिञ्चेनियतात्माभवेत्सदा ॥ नचछन्दास्यधीयीतयस्य आह्म-  
चतइवेत् ॥ १८८ ॥ निमंत्रिताह्मपितरउपतिष्ठन्तिताह्मिजा-  
न् ॥ वायुवच्चानुगच्छन्ति तथासीनानुपासते ॥ १८९ ॥ केति-  
तस्तुयथान्यायंहव्यकथ्येद्विजोत्तमः ॥ कथंचिरप्यतिक्राम-  
न्यायः सहकरतां व्रजेत् ॥ १९० ॥

۱۸۵۔ تریا چیکیت۔ اگر ہوتی۔ ترسیرن بیکرن وغیرہ چھہ کنون کا پرھنے والا برہم  
دواہ سے پیدا ہوا ستم وید کے آرنیک بھاگ کو پھرنے والا چھہ نکیت پوتر گنوں میں  
۱۸۶۔ جیدار حق کا جاننے والا اور کھنے والا برہم جاری اور نہرا گنوں میں سے والا شوبہ میں  
ہو سو نکیت کو پوتر گنوں والا ہے۔

۱۸۷۔ سترادھو کرنے سے ایک دن پہلے یا اسی دن میں سے زیادہ اچھے برہمن سکین  
توانگو نیوتا وینا مل سکین تو ایک یا دو یا تین کو بھی نیوتا وینا چاہئے۔  
۱۸۸۔ نیوتا پاکر براہمن اس رات دن میں استری سے بھوگ کرے اور وید کو بھی پڑھ  
اور شروادھو کر نیوتا بھی یہ دونوں کرم کرے۔

۱۸۹۔ نیوتا پاتے ہوئے براہمن کے پاس پتر لوگ کھڑے رہتے ہیں اور بھوت ہوا  
ہو کر براہمن کے پیچھے پیچھے چلتے ہیں۔

۱۹۰۔ یو کرم اور پتر کرم میں نیوتا پاکر براہمن اگر کیطرح بھو جن کرے تو اس پاپ  
دو مرتبہ جنم میں شور ہوتا ہے۔

سومیکشیشوویہاभवजेयशोशितम्॥ नन्देवलकेदत्त  
मप्रतिष्ठन्नुवाहुर्वी॥ १८०॥ यत्तुवाशिनकेदत्तनेहनामुव्रतद्व  
वेत्॥ भस्मनीवहृतं हव्यं तथा पो न भवेद्विजे॥ १८१॥ इतरेषु  
त्वपां त्वेषु यथो हि हव्यं साधुषु॥ मेहोऽहं मां समजास्थि-  
बहन्त्यन्ममनी विराः॥ १८२॥ अयां तथो यदतापंक्तिः पाव्य  
तेयेर्द्विजोत्तमे॥ तान्निबोधत कास्त्वेन हि नाग्रान्यंक्तिपा-  
वनान्॥ १८३॥ अथाः सर्वेषु वेदेषु सर्वप्रवचनेषु च॥ त्रि-  
यान्वयजाश्चैव विजेयाः पंक्तिपावनाः॥ १८४॥

۱۸۰- سووم کتا کے جینے والے براہمن کو دان دینے سے دانا دوسر جنم میں غلیظ کھائیا  
جانور ہوتا ہے اور اس طرح جو کالے کیے علاج کرنے والے براہمن کو دان دینے سے دانا دوسر  
جنم میں خون اور پیس پیسے والا جانور ہوتا ہے اور ضروری لیکن برتن تک جو مورتن کی  
پو جا کر نیوالا براہمن اور بیاج لینے والے براہمن کو دان دینے سے دان کا پھل نہیں ہوتا۔  
۱۸۱- بنیا کے کرم سے جینے والے براہمن کو دان دینے سے اس لوک اور پرلوک میں دان کا  
پھل نہیں ہوتا اور پہلے پت کو چھوڑ کر دوسریت کر نیوالی جو استری، اسہن دوسریت کر  
جو کر کا پیدا ہوا اسکو دان دینا کیسا ہے جیسے راکھ میں ہون کرنا۔

۱۸۲- جو براہمن نیگت میں بھلانے کے لائق نہیں ہیں اونکو دان دینے سے دوسر جنم  
میں دانا سینہ کا گوشت و خون و ہڈی وغیرہ کھائیوا جانور ہوتا ہے۔

۱۸۳- جو نیگت چور وغیرہ براہمنوں سے دوست ہو اسکو پوتر کر نیوالے جو براہمن ہیں  
انکو سو۔

۱۸۴- جس کل میں دتن برتن تک دید اور نشتہ کا پڑھنا اور پڑھنا چلا آیا ہے اس  
کل میں پیدا ہوا چار دھیک کے چھٹے انگ دیا کرن وغیرہ کو پڑھنا سکنا ہو وہ براہمن  
نیگت کا پوتر کر نیوالا ہے۔



अपांक्तदानेयोदात्तर्भवत्सुर्व्वकलोदयः॥ देवेहविषिपिष्येवा  
तम्यवस्थाम्यशेषतः॥ १६६॥ अब्रतेर्यद्विजेभुक्तंयपिविवादि-  
भिस्तया॥ अयांक्तैर्येयदन्येअतद्वैरदांसिभुजते॥ १७०॥ दारा  
ग्निहोत्रसंयोगं कुरुतेयोऽयजेस्थिते॥ परिवेत्तासविज्ञेयः प-  
रिवित्तिस्तुर्व्वजः॥ १७१॥ परिवित्तिः परिवेत्तायचात्रपरि-  
विद्यते॥ सर्व्वेतेनरकांयान्निहात्वाचकयंचमाः॥ १७२॥ आ-  
वृत्ततम्यभार्यायांयोऽनुस्येतकामतः॥ धर्मेराणापिनियु-  
क्तायांसजेयोदिधियुपतिः॥ १७३॥ परहारेखुजायेतेद्वौसुतो  
कुराडगोलको॥ यत्योजीवतिकुराडः स्यान्मृतमतोरगोल-  
कः॥ १७४॥

۱۶۹- دیو کرم یا پتر کرم میں نیزنگ براہمنون کو بھوجن کرانے سے جو پھل پرلک میں ملتا  
اسکو ہم دیکھنے بھوکہ جی کہتے ہیں کہ  
۱۷۰- اوپر کے ہوئے نذرت براہمن جو بھوجن کرتے ہیں وہ کیش بھوجن کرتے ہیں  
یعنی کچھ پھل ہمین ہوتا۔  
۱۷۱- بے دوا ہے کے بڑے بھائی کے پوتے پوتہ پوتہ چھوٹا بھائی دوا کرے اور اگن  
ہو تر کرے تو بڑا بھائی پریت کھاتا ہے اور چھوٹا بھائی پر بیتیا کھاتا ہے۔  
۱۷۲- پریت - پریتیا - دیہی جس کنیا سے دوا ہو اسکو اور اس کنیا کو دیو  
اور دوا کرانے والا - براہمن یہ پانچ نرک میں جاتے ہیں۔  
۱۷۳- فرے ہو بھائی کی استری کے ساتھ بھوکہ کرنے کی بدھ جو گے کینکے  
بدھ سے بھی اپنی اچھیا سے بھوکہ کرنا والا دھو شوٹ کھاتا ہے۔  
۱۷۴- پر استری میں دو پتر ہوتے ہیں ایک کنڈ دوسرا گولک کستین جیوت پت  
دالی کا بیٹا کنڈ کھاتا ہے اور فرے پت دالی کا بیٹا گولک کھاتا ہے۔

स्रोत्रसांभेदकोयश्चतेवांचायसारतः ॥ ग्रहसंवेशकोदूतोवक्षारो  
 पकणवच ॥ १६३ ॥ अक्षीडीश्वेनजीवीचकन्याहूयकणवच ॥  
 हिंस्रोहयलहचिश्चगरानांचैवयाजकः ॥ १६४ ॥ आचारही-  
 नः क्लीवश्चनित्ययाचनकस्तथा ॥ कृषिजीवीश्रीपरीचस-  
 द्विर्निन्दनणवच ॥ १६५ ॥ औरभिकोमाहिसिकः परपृथ्वीप-  
 तिरस्तथा ॥ श्वेतनिर्म्यातकश्चैववर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ १६६ ॥  
 एतान्विगहिताचारानपांक्त्यान्विजाधमान् ॥ हिजातिप्रव-  
 रोचिहानुभयत्रविवर्जयेत् ॥ १६७ ॥ ब्राह्मणस्ववधीयानस्त-  
 राग्निरिवसाम्यति ॥ तस्मिहव्यनदातव्यनाहमस्मनिहूयते  
 ॥ १६८ ॥

۱۶۳۔ ہندے ہوئے پانی کو دوسرے مقام پر لیجائے والا۔ بچتے ہوئے پانی کو روکنے والا  
 پیشہ ہماری سے اوقات بسر کرنے والا۔ دوت۔ مزدوری لیکر دھت لگانا والا۔  
 ۱۶۴۔ کتوں سے کھیل کر نیوالا۔ بازو غیر ہر نہ سے اوقات بسر کرنے والا۔ گواہی کی ناسی  
 بھوک کر نیوالا۔ جو مارنے والا۔ سوزور دن سے اوقات بسر کرنے والا۔ بہت آرمیوں کو لیکر کر نیوالا  
 ۱۶۵۔ آچار نہ رکھنے والا۔ نامرد۔ ہر روز مانگنے والا۔ بھیتی سے اوقات بسر کرنے والا۔ موٹا  
 پاتوں والا اچھے لوگوں سے ننڈا پانی والا۔  
 ۱۶۶۔ بھینٹر بھینٹیں سے زندگی بسر کرنے والا۔ اپنے شوہر کو چھوڑ کر دوسرے شخص سے شادی  
 کر نیوالی جو عورت اسکا دوسرا شوہر مزدوری لیکر مردہ کو بھوکے والا۔  
 ۱۶۷۔ بے سب زندک آچار والے میں براہمنوں میں ادمم ہیں۔ نیکن میں بھجانیکے  
 لائق نہیں ہیں۔ ان سب کو دوتا یا تیر کر م میں بھوجن نہ کرادے۔  
 ۱۶۸۔ جیسے چھوس کی آگ جھٹ پٹ بھج جاتی ہے اسطیل طور پر اس کی سیلے تہیہ اور  
 کٹیہ اسکو نہ دنیا چاہیے کیونکہ رکھ میں ہوں نہیں ہو سکتا۔

آشکارا پاریتھکاماتا پیو یوروستھا ॥ جالہیروئےنہش-  
 مبنہ: संयोगं पतितैर्गतः ॥ १५७ ॥ आगराहीगरः कुगडा-  
 शीसोमविक्रयी ॥ समुद्रयायीवन्दीचतैलिकः कूटकारकः ॥  
 १५८ ॥ पित्राचिवदमानश्चकितवोमद्यस्तथा ॥ पापरोम्यमि-  
 रास्तश्चराभिर्कोरसविक्रयी ॥ १५९ ॥ धनुःशराणां कर्त्ता च-  
 यश्चाग्नेदिधिधूपतिः ॥ मित्रघ्नुकथूतवन्तिश्चपुत्राचार्यस्तथैव-  
 च ॥ १६० ॥ आमरीगराडमालीचश्चिश्चथोपिमुनस्तथा ॥ उम-  
 त्तोऽन्यश्चवर्थाः स्युर्वैरनिन्दकसवच ॥ १६१ ॥ हस्तिगोश्चो-  
 दमकोनसत्रैयश्चजीवति ॥ यस्मिणां यो वकोयश्चश्चाचार्य-  
 स्तथैवच ॥ १६२ ॥

۱۵۷۔ ایہ وجہ بتا یا کہ ترک کرنیوالا پتیت پڑھنے والا پتیت کو پڑھانیوالا پتیت دوا وغیرہ نہ کرے گا۔  
 ۱۵۸۔ گھر میں لگا نیوالا نہرو دینے والا گند کا آن کھانیوالا سووم نہ کاہنے والا سمدر میں  
 جانیوالا بندی تیل کے واسطے تل وغیرہ پینے والا سمیو وہ کہنے والا۔  
 ۱۵۹۔ باپ سے لڑائی کرنیوالا آپ پالنے کھیلنا نہیں جانتا اور اپنے واسطے دوسرے کو پالت  
 رکھنا نیوالا۔ شراب پینے والا۔ کوڑھی افسانہ سے دھرم کرنے والا رتن بچنے والا۔  
 ۱۶۰۔ تیر کمان رکھنے والا بڑی سگی بہن کی شادی جو بیکر چوٹی بہن سے شادی کرنیوالا دوست  
 دشمنی کرنیوالا۔ قمار بازی سے اوقات بسر کرنیوالا بیٹے سے پرہنے والا۔  
 ۱۶۱۔ مری گند مالا۔ سفید۔ کوڑھان روگون میں سے کوئی ایک لکھنے والا کھوٹا آدمی  
 دیوانہ۔ اندھا۔ دیکر نہ دیکر نیوالا۔  
 ۱۶۲۔ ہاتھی سیل۔ اونٹ۔ گھوڑا ان سب کو بدھیا کرنیوالا۔ جوش دیا اوقات بسر کرنیوالا  
 پرند پالنے والا۔ لڑائی کے واسطے علم سکھانیوالا۔  
 جو اپنی باپ کے نہ لے بنا پالی کا آن کھانیوالا۔

चिकित्सकान्नेवलकान्मांसविक्रयिरास्तथा॥ वियरोनच  
जीवन्तोवर्ज्याः स्युर्हव्यकव्ययोः॥ १५२॥ प्रेष्ठो ग्रामस्थराज  
श्रकुनस्वीश्यावहलकः॥ प्रतिरोद्धागुरोश्चैवत्यक्ताग्निर्धा  
र्दुषिस्तथा॥ १५३॥ यक्ष्मीचयशुपालश्चपरिवेत्तानिराकृतिः  
॥ ब्रह्मद्विपरिवित्तिश्चगराभ्यन्तरस्रवच॥ १५४॥ कुशील  
वोऽवकीर्णीचहयलीयतिरेवच॥ यौनर्भवश्चकाराश्चयस्य  
चोपपतिशुहे॥ १५५॥ भृतकाध्यापकोयश्चभृतकाध्यापित  
स्तथा॥ शूद्रशिष्योगुरुश्चैववाग्बुधः कुराडगोलको॥ १५६॥

۱۵۲- پیدا یعنی طبیب) مرزوری لیکر تین برش تک دیو تو نکی مورت کا پوچھ کر نیا والا پہنچنے والا بیٹوں کے کرم سے جینے والا۔

۱۵۲۱- فردوسی لیکر رعیت یاراجا کی فرمانبرداری کر نیوالا۔ خرابیاں بن کھینے والا۔  
سید بستی سیاحہ دانت والا گرد کے خلاف کام کرنے والا۔ اختیار ہوتے ہوئے کن ٹوہتر  
نیکر نیوالا سود بیاج سے اوقات لیکر کر نیوالا۔

۱۵۴ جھڑی روگ دلائیش کے پالنے سے ادقات بسر کر نیوالا۔ پر تیا پنج مایک گونہ کر نیوالا۔

۵۵۔ پناہ سے اوقات بسر کرنا اور عورت کے جماع ناپاک پر ہم چاری شودر تہی  
کا شودر و سکر شودر سے عورت کا بیٹا کا نا اور جسکی عورت نے دو دھرا شودر کیا ہو۔

۱۵۶ - مزدوری لیکر مہانیو الا مزدوری دیگر پڑھنے والا شودر کا چلیہ شودر کا گردن  
نفسا ریت کو پڑ مہانیو الا کنڈ - گوکاب -

۶ دیکھو اشلوک ۶۱۱ + دیکھو اشلوک ۱۰۱ - ۶۱۱ یعنی سب جانداروں کے رہنے کے لئے بڑے آدمیوں کے جو منہ دے سنبھ  
 عمارت بنائی ہو یا دولت دی ہو اس سے اوقات بسر کرنا والا۔ (یعنی بحالت زندگی ایک شوہر کے دوسرے سے پیدا  
 اشلوک)۔ لائے بعد وفات ایک شوہر کے دوسرے سے پیدا۔ دیکھو اشلوک ۱۶۲ + ۱۶۱۔





यः संगतानि कुरुते मोहाच्छादितमानवः ॥ सखर्गाद्यवते लो  
काच्छादमित्रो हि जायमः ॥ १४० ॥ संभोजनी साभिहितापेशा  
चीरसिरागिजैः ॥ इहेवास्ते लुसालोके गौरन्धे वै कवेषमनिः ॥  
॥ १४१ ॥ यथा रिशो बीजमुपानवा मालभते फलम् ॥ तथाऽन्त-  
चेह विदित्वानदा तालभते फलम् ॥ १४२ ॥ दाहन्त्यति प्रहीत्-  
श्च कुरुते फलमाग्निः ॥ विदुषेदसिरागं रत्नाविधिवत्तेत्यवे-  
हच ॥ १४३ ॥ कामं श्राद्धेऽर्चयेन्मित्रं नाभिरूपमपित्वरिम् ॥  
द्विषता हि हविर्भुक्तं भवति प्रेत्य निष्फलम् ॥ १४४ ॥ यत्नेन भो-  
जयेच्छादिवह्वचं वेदपारगम् ॥ शास्वान्तगमयाध्वयुं कन्दो ग-  
न्तुमभासिकम् ॥ १४५ ॥

۱۴۰-۱- برہمن شتر او دھرمین بھوجن ہی کیوں سٹے متر ناکرتا ہے وہ سورگ لوک سے  
بھر شٹ ہوتا ہے اور وہ برہمنوں میں ادھرم ہے۔

۱۴۱-۱- ایسا بھوجن پشچون کا ہے اسی لوک میں بھلدا ایک ہے جسطرح اندھی گنوا ایک ہی گھڑیں  
رہ سکتی ہے اسی طرح وہ بھوجن اسی لوک میں رہتا ہے پر لوک میں کام نہیں آتا۔

۱۴۲-۱- جسطرح اوسر زمین میں بیج بونے والا پھل نہیں پاتا اسی طرح مڑکھہ برہمن کو دپوتا  
کی چیز بھوجن کرانے سے داتا پھل نہیں پاتا۔

۱۴۳-۱- پندت برہمن کو بڑھ پور یک دکنٹا دینے سے دینے والا اور لینے والا دونوں  
پھل کو پائے ہیں اس لوک میں بھی اور پر لوک میں بھی

۱۴۴-۱- شتر او دھرمین شتر کو بھوجن کرنا کچھ مضائقہ نہیں مگر شتر اگر شپٹ بھی ہو تو بھی اسکو  
بھوجن نہ کرنا کیونکہ اسکو بھوجن کرنے سے پر لوک میں داتا پھل نہیں پاتا ہے

۱۴۵-۱- دیکھ دو بھاگ میں ایک متر بھاگ دوسرا برہمن بھاگ رگ دیکھ دو دنوں بھاگ یا  
چر دیکھ دو دنوں بھاگ یا سمپور ایک کھاکو پر چر دو تو ایسے برہمن کو تین پور دے اور دھرمین بھوجن کرادے

ज्ञाननिष्ठाद्विजाः किंचित्तपोनिष्ठास्तथापरे ॥ तपःस्वाध्या  
यनिष्ठाश्चकर्मनिष्ठास्तथापरे ॥ १३४ ॥ ज्ञाननिष्ठेषु कव्यानि  
प्रतिष्ठाप्या नियततः ॥ ह्यनितुयथान्यायं सर्वेष्वेव चतुर्वि  
पि ॥ १३५ ॥ अथोत्तमः पितायस्य पुत्रः स्याद्देवपारगः ॥ अथो  
त्तमोवापुत्रः स्यात्पितास्य देवपारगः ॥ १३६ ॥ ज्यायां समन-  
योर्विद्यायस्य स्याच्छ्रोत्रियः पिता ॥ मंत्रसंपूजनार्थं तु सत्का-  
रमितरोऽहेति ॥ १३७ ॥ न आदेभोजयेन्मित्रं धनेः कार्योऽस्य सं-  
ग्रहः ॥ नारिन्मित्रं यं विद्यात्तं आदेभोजयेद्विजम् ॥ १३८ ॥ य-  
स्य मित्रप्रधानानि आदानि च हवींषि च ॥ तस्य प्रेत्य फलं ना-  
स्ति आदेषु च हविः पुत्रः ॥ १३९ ॥

۱۳۴- چار طرح کے براہمن ہیں۔ گیانی۔ تپیوٹی۔ دید پاشی۔ کرم  
کانڈی۔

۱۳۵- پتروں کے دینے لائق چیز کو گیانی براہمن کو دینا چاہیے اور دیوتوں  
کو دینے لائق چیز کو چاروہن ہے جو ملے اسکو دینا چاہیے۔

۱۳۶- جبکا باپ دید پاشی ہو اور آپ مور کھے ہو یا آپ دید پاشی ہو اور باپ مور  
ہو تو۔

۱۳۷- ان دونوں میں جبکا باپ دید پاشی ہو وہ بڑا ہے اور دوسرا بھی بڑھتے ہی  
ستکار کے لائق ہے

۱۳۸- مشراوہ میں تتر براہمن کو بھوجن نہ کر اے کچھ نقدی وغیرہ ذکر خاطر داری کرو  
بلکہ جو براہمن نہ دوست ہو نہ دشمن اسکو بھوجن نہ کرے۔

۱۳۹- جس کسی کو دیویا پتر کرم میں تتری بھوجن کرتا ہے اسکو بھوجن کرانے کا پھل  
پر لوگ میں نہیں ہوتا۔

श्रोत्रियायैव देयानि ह्यव्यक्तानि रात्रिभिः ॥ अर्हत्तमाय वि-  
 प्रायतस्मै दत्तं महाफलम् ॥ १२८ ॥ सकलैकमपि विद्वांसं देवे पि-  
 त्रे च भोजयेत् ॥ युष्कलं फलमाप्नोति नमंत्रज्ञानं हूनयि ॥ १२९ ॥  
 दूरादेव यरीक्षत ब्राह्मणां वेदपारगम् ॥ तीर्थतद्व्यक्तव्या-  
 नां ग्रहाने सोऽतिथिः स्मृतः ॥ १३० ॥ सहस्रं हि सहस्राराम-  
 न्नचायत्र भुञ्जते ॥ एकस्तानां चित्मीतः सर्वो न हति धर्मतः ॥  
 १३१ ॥ ज्ञानोक्तं प्राय देयानि कव्यानि च हवींश्चि ॥ न हि-  
 हस्तावस्तु दिग्धोरुधिरेवौ वशुञ्जतः ॥ १३२ ॥ यावतो ग्रसते  
 प्रासान् व्यक्तव्ये च मंत्रवित् ॥ तावतो ग्रसते प्रेत्यरीषश्च लब्ध-  
 यो युवान् ॥ १३३ ॥

۱۲۸- دیوتا یا پتر دن کے نام پر چیز دینا بروہ وید پامشی ہے پوجیہ براہمن کو دے کیونکہ

ایسیہ براہمن کو دینے سے مہا پھل ہوتا ہے۔

۱۲۹- دیوتا یا پتر کرم میں ایک بھی نہ دت براہمن کو بھوجن کرانے سے بڑا پھل ہوتا ہے

اور بہت سے مورکھ براہمن کے بھوجن کرانے سے دیا پھل نہیں ہوتا۔

۱۳۰- دوسرے دیر پڑھنے والے براہمن کی پرکشا کرنا چاہیے کیونکہ دیوتا اور پتر دن

کی چیز کا لینے والا دی ہے۔

۱۳۱- دس لاکھ مورکھ براہمن کے بھوجن کرانے سے جو پھل ہوتا ہے وہی پھل ستر

کے جاننے والے ایک براہمن کے بھوجن کرانے سے ہوتا ہے۔

۱۳۲- دیوتا یا پتر دن کے دینے کی چیز کیانی براہمن کو دینا چاہیے کیونکہ خون سے

بھرا ہاتھ خون ہی سے دھونے سے صاف نہیں ہوتا۔

۱۳۳- دیوتا یا پتر دن کے آن کے عتے کر اس مورکھ براہمن کو بھوجن کرتا ہے اسنے

شرا دھ کر نیوالا آگ سے گرم کیے ہوئے لوسے کے پتر اور دو دھارا ششتر کو بھوجن کرتا

پیتھجزللونیویرتھپپریہندوہو: ۱۔ ۱۲۱ ۱۱۔ پیراڈانواہا-  
 ریکانڈاڈکوریاناسانوساسیکما ۱۱۔ ۱۲۲ ۱۱۔ پیتھجاسااسیک-  
 پراڈمناہارپپیردوہا: ۱۱۔ ۱۲۳ ۱۱۔ تچامیہراکرتھپشستنسما-  
 ننت: ۱۱۔ ۱۲۴ ۱۱۔ تچامیہراکرتھپشستنسما: ۱۱۔ ۱۲۵ ۱۱۔  
 پیتھجزللونیویرتھپپریہندوہو: ۱۱۔ ۱۲۶ ۱۱۔ پیتھجزللونیویر-  
 تھپپریہندوہو: ۱۱۔ ۱۲۷ ۱۱۔ پیتھجزللونیویرتھپپریہندوہو: ۱۱۔ ۱۲۸ ۱۱۔  
 پیتھجزللونیویرتھپپریہندوہو: ۱۱۔ ۱۲۹ ۱۱۔ پیتھجزللونیویرتھپپریہندوہو: ۱۱۔ ۱۳۰ ۱۱۔

۲۲۲- ہر مینہ کی اماوس میں پتر پکیر سے اگن ہو تری براہمن شرا دھ کرے۔  
 ۱۲۳- ہر مینہ میں پتر دھ کی شرا دھ کو اناہاری کہتے ہیں اس شرا دھ کو ستر  
 ماش میں اتم مانس سے کرنا چاہئے۔

۱۲۴- اس شرا دھ میں جو بھوجن کرانے کے لائق ہے اور جو لائق نہیں ہے اور جتنے  
 چاہئے اور جو ان بھوجن کرنا چاہئے وہ سب ہم کہیں گے۔  
 ۱۲۵- شرا دھ میں دو کرم ہیں ایک پتر کرم دوسرا دیو کرم کہیں کیا ہی دھنی ہو مگر  
 دیو کرم میں ایک اور پتر کرم ہیں دو ہی براہمن کو بھوجن کرادے یا دونوں کرموں  
 میں ایک ایک براہمن کو بھوجن کرادے زیادہ بشارت کرے۔

۱۲۶- سنگار ویش کال پوتنسا سریشٹھ براہمن ان سب باتوں کا ناش بشار کرنے  
 سے ہوتا ہے اسلئے بشارت کرنا چاہئے۔

۱۲۷- اماوس میں شرا دھ کرنے سے پتر دنگا اباکار ہوتا ہے پتر دھ لوگ شرا دھ  
 کرنے والے کو گن۔ پتیا۔ پوتا۔ دولت وغیرہ سب کچھ دیتے ہیں اسلئے شرا دھ ضرور کرنا چاہئے

उपासते ये ग्रहस्थाः परपाकमबुद्धयः ॥ तेन ते प्रेत्य पशुतां जन-  
 न्यन्नादिदायिनाम् ॥ १०४ ॥ अप्रगोद्योऽतिथिः सायं सूर्यो हो-  
 ग्रहमेधिना ॥ काले प्राप्सुत्व कालेवानास्यानश्नानृहेवसेत् ॥  
 १०५ ॥ न वै स्वयं तदस्त्रीयारतिथिं यन्नभोजयेत् ॥ धन्यं यशस्य  
 मायुष्यं स्वर्ग्यं वातिथिपूजनम् ॥ १०६ ॥ आसनावसथौ शय्या  
 मनुब्रज्यामुपासनाम् ॥ उत्तमे घृतं भृङ्गुर्घ्याद्दीनेद्दीनं समे समम्  
 ॥ १०७ ॥ वैश्वदेवे तु निर्घत्तेयस्योऽतिथिराब्रजेत् ॥ तस्याप्य-  
 न्नं यथाशक्ति प्रद्यान्नबलिं हरेत् ॥ १०८ ॥ न भोजनार्थं स्वेचि-  
 प्रः कुलगोत्रे निवेदयेत् ॥ भोजनार्थं हिते शंसन्वान्ताशीत्युच्य-  
 ते बुधैः ॥ १०९ ॥

۱۰۴- جو کرستہ پرائے بھوجن کی اپنا اکیا تہا سے کرتے ہیں اسکے کرنے سے  
 پرلوک میں ان دینے والے کے پیش ہوتے ہیں۔  
 ۱۰۵- سورج ڈوبے اتھہ آیا ہو تو اسکا  
 یا بے وقت مگر تیر کھانا کھائے گھوٹ ان کو کھانا پانی ضرور دینا چاہیے وقت پر آدے  
 ۱۰۶- جو چیز اتھہ بھوجن کرے میں تر بنے پاوے  
 کنا، جو آدمی دے دے کھلاوے اسکو آپ بھی نہ کھائے اتھہ کو کھانا کھانا دولت  
 ۱۰۷- جو آدمی دے دے کھلاوے اسکو آپ بھی نہ کھائے اتھہ کو کھانا کھانا دولت  
 ۱۰۸- آسن گره تیار پیچھے چلنا۔ سیوا ان سب کو اتم مدھم میں پیش میں  
 اتم بھیم میں کرنا چاہیے۔  
 ۱۰۹- بیشو دیو کر کے کرنے کے پیچھے دوسرا اتھہ آوے تو اسکو تھیا شکست ان دیو  
 بل کر کے دے۔  
 ۱۰۹- بھوجن کے لئے براہمن اپنا محل اور گوترو کے اگر کے تو اگلی ہوئی خیر کا کھانا  
 ہے اسبات کو سیدھ تو نونے کھا ہے

سंप्राप्ताय त्वतिथये प्रदद्यादासनोत्तरे ॥ अन्नं चैव यथाशक्तिस-  
त्कृत्य विधिपूर्वकम् ॥ १०० ॥ शिलान्धुं च तो नित्यं पंचाग्नीन-  
पि जुह्वतः ॥ सर्वसुकृतमादत्ते वा ह्यारोऽनर्चितो वसन् ॥ १०० ॥  
हृद्यानि भूमि रश्क वा द्यतु र्धी च सूक्ष्मता ॥ स तान्यपि सतां गेहे  
नोच्छिद्यन्ने कदाचन ॥ १०१ ॥ एक रात्रं तु निवसन्न तिथिर्ब्राह्म-  
णः स्मृतः ॥ अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथि रूच्यते १०२  
॥ नैक्यामी रामतिथिं विप्रसांगतिकं तथा ॥ उपस्थितं ग्रहे वि-  
द्याज्ञार्यायिनामयोऽपि वा ॥ १०३ ॥

۹۹۔ جو آتھمہ آپسے آیا ہوا اسکو اپنی شکست کے موافق بدرہہ پور دے کہ  
ان جل اور سے دیوے۔

۱۰۰۔ جو پیرا ہمن آتھمہ بغیر بوجن پائے گھر میں رہے تو گھر والا اگر چہ براتیجی  
ہو اور شل آتھمہ سے اوقات بسر کرتا ہو اور بیچ اگن کو سیون کرتا ہو تو بھی اسکا  
سکرت جانا رہتا ہے۔

۱۰۱۔ گھاس زمین پانی شیرین زبانی ان چیزوں سے اچھے لوگوں کا گھر کبھی  
خالی نہیں رہتا۔

۱۰۲۔ ایک رات کے رہنے والے کو آتھمہ کہتے ہیں اسلئے آتھمہ کو سواے  
ایک رات کے ہر روز نہنا چاہیے۔

۱۰۳۔ جس گھر آتھمہ کے گھر استری اور اگن موجود ہو اسکے گھر دشوے دیوے کے  
سے آتھمہ آیا ہو تو آتھمہ ہے مگر ایک قانون کا رہنے والا اور بچتر ہنسی کھا کھنے  
والا آتھمہ نہیں کہا جاتا ہے۔

۱۰۴۔ کہتی کریو اے جب نلہ کیفیت سے لاٹ کر گیا ہن اس سے جو نلہ میں گیا پڑا جاتا ہے اور اسکو شکتے ہیں  
۱۰۵۔ دنیا لوگ ہانا زنی غلام حیدر لگاتے ہیں اور تمام کو جو غلام ٹھہرا لیتے ہیں اس سے غلام پڑا جاتا ہے اور اسکو لگاتے ہیں۔

श्रवणः सर्वभूतानि ब्राह्मणो नित्यमर्चति ॥ सगच्छति परं स्थानं तेजो मूर्त्तिपथं न ॥ ६३ ॥ कत्वे तद्वलिकर्मैव मतिं शिष्यं प्राशयेत् ॥ भिक्षां च भिक्षवे दद्याद्विधिवद्ब्रह्मचारिणो ॥ ६४ ॥ यत्पुण्यफलमाप्नोति गां रत्नाविधिवद्गुरोः ॥ तत्पुण्यफलमाप्नोति भिक्षां रत्नादिजोगृही ॥ ६५ ॥ भिक्षामप्युदयात्रं वा सक्त्यविधिपूर्वकम् ॥ वेदतत्त्वार्थविदुषे ब्राह्मणाद्यो यया दयेत् ॥ ६६ ॥ नश्यन्ति हव्यकव्यानि नारायणमविजानताम् ॥ भस्मीभूतेषु चित्रेषु मोहादज्ञानि दातुभिः ॥ ६७ ॥ विद्यातपःसद्गुणैश्च तं विप्रमुखाग्निषु ॥ निस्तपस्यति दुर्गाच्च महतश्चैव किल्बिषात् ॥ ६८ ॥

- ۹۳- اسطرح جو برہمن ہر روز سب جیون کی پوجا کرتا ہے وہ تیج روپ ہو کر مکمل مارگ سے بڑے آسمان کو جاتا ہے۔
- ۹۴- اسطرح مل کرم کر کے گروہ جن کے بھوجن کے پہلے ایتھہ کو بھوجن کرا دے اور برہمن چاری بھیکھاری کو بھیکھ دے۔
- ۹۵- برہمن پور دک گرو کو گنو دینے سے جو پھل ہوتا ہے وہی پھل بھیکھاری کو بھیکھ دینے سے گرو بھیکھ آشرم والا پاتا ہے۔
- ۹۶- وید کا سدھانت اور ارتھہ جاننے والے براہمن کو آدر سے برہمن پور دک بھگت یا جل دیوے۔
- ۹۷- دانا لوگ جو بہت مودہ سے دیوتا یا پتر کے ہیئت مودہ براہمن کو دیتے ہیں سو سب سچیل ہو جاتی ہے۔
- ۹۸- ویداوان اور نپ دان براہمن کے مکھہ روپی اگن میں جو ہون کیا جاتا ہے وہ بڑے پاپ سے ہون کرنے والے کو چھڑا ہے۔

एवं सम्यग्धर्वित्वा सर्वदिक्षु प्रदक्षिराम ॥ इदं नान्ताप्यतीनुभ्यः  
 सानुगेभ्यो बलिं हरेत् ॥ ८७ ॥ मरुद्वा इति तु वारि सिपे दध्व इत्य-  
 पि ॥ वनस्पतिभ्य इत्येवं शुशलोत्सुखले हरेत् ॥ ८८ ॥ उच्छीर्य के श्रि-  
 ये कुर्याद्भद्रकाल्ये च पादतः ॥ ब्रह्मवास्तोष्पतिभ्यां तु वास्तुमध्ये  
 बलिं हरेत् ॥ ८९ ॥ विश्वेभ्यश्चैव देवेभ्यो बलिमाकाश उत्सियेत्  
 ॥ दिवा चैरभ्यो भूतेभ्यो नक्तं चारिभ्यश्च ॥ ९० ॥ पृथवास्तु नि-  
 कुर्वीत बलिं सर्वात्मभूतये ॥ पितृभ्यो बलिशेषं तु सर्वं द-  
 क्षिरातो हरेत् ॥ ९१ ॥ शुनां च यति तानां च श्वपचां यापरो नि-  
 गाम ॥ वायसानां कमीराणां च शनकैर्निर्वपेद्भुवि ॥ ९२ ॥

- ۸۷- اچھی پرکار سے ہون کر کے سب دشا میں پرودکش کرم سے اندر  
 برن یم چندر ان سب کو اور انھوں کے سیدھ کو بل دیوے۔  
 ۸۸- دوار ویش میں مرث کو بل استھان میں جل کو موسل او کھلی کے  
 استھان میں نشین ت کو۔  
 ۸۹- واستو پریش کے شریا و مدھیمہ میں کرم سے شری بھدر کالی واستو  
 شیت ان سب کو دیوے۔  
 ۹۰- ویشوے دیو دن میں پھرنے والے بھوت رات میں پھرنے والے بھوت  
 ان سب کو آکاش میں دیوے۔  
 ۹۱- واستو پریش کی مدھیمہ میں سربا تم بھوت کو بل دیوے بل مینے سے  
 جو ان کے وہ دشن دشا میں تیر دن کو دیوے۔  
 ۹۲- کتا شیت دو م پاپ روگی کو اچھوٹا کیڑا ان سب کو تہہ سے زمین  
 دیوے۔



स्वाध्यायेनार्चयेद्दधीन्होर्मेर्देवान्यथाविधि ॥ पितृन्प्राज्ञश्च न  
नन्नेर्भूतानिवलिकर्मरागा ॥ ८१ ॥ कुर्याद्वहरहः प्राज्ञमन्त्राद्ये-  
नोदकेनवा ॥ ययौमूलफलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमावहन् ८२  
॥ एकमप्याशयेद्विप्रपित्रर्थे पांचयज्ञिके ॥ नर्चैवात्राशये-  
क्लिञ्चिद्देवदेवं प्रति हि जम् ॥ ८३ ॥ वैश्वदेवस्य सिद्धस्य गृह्यो-  
ऽनौ विधिपूर्वकम् ॥ आभ्यः कुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणो हो-  
समन्वहम् ॥ ८४ ॥ अग्नेः सोमस्य च वा दौ तयोश्चैव समस्तयोः  
॥ विश्वेभ्यश्चैव देवेभ्यो धन्वन्तरयस्य च ॥ ८५ ॥ कर्ह्यै चैवानुम-  
त्यै च प्रजापतयस्य च ॥ सह्यावाष्टयिभ्योश्च तथा रिवहकते-  
ऽन्ततः ॥ ८६ ॥

وَرَدَدِمْ هَرَامَ الطَّيْلِ بِلَا

۸۱- وید پڑھنے سے ریش کی پوجا اور ہون کرنے سے دیوتا کی پوجا شراودھ کرنے  
سے سپر کی پوجا ان دن سے منگیہ کی پوجا بلدان سے بھوت کی پوجا یا بعد سنت  
کرنا چاہیے۔

۸۲- پتروں سے پریت کرنا ہوا ان جل دوھ مول پھل سے دن دن مین پارون  
شراودھ کرے۔

۸۳- بیخ ہا یکسہ مین پتروں کے منت جو بل کرم کہا ہے وہ اگر نہو کے تو ایک ہیبت  
براہمنوں کو بھوجن کرادے مگر شوشے دیو کے منت براہمن بھوجن نہ کرادے۔

۸۴- سہ کار سنت اور سہ نام کن مین جو آگے دیوتا کہین گے ادھو دن دن مین

بدھ سنت آہت دیوے دیوتا

۸۵- اکن سوئم۔ اکن شوئم و شوٹ دیو و بھنو نتر۔

۸۶- کوہ۔ امنت۔ پرچاپت۔ دیاوا۔ پر پھوی۔ پھوش۔ کرت ان سب کو آہت

دیوے۔

स्वाध्यायेनित्ययुक्तः स्यादेवैवेहकर्मणि ॥ देवकर्मणियुक्तो  
 हिविभर्त्ता चराचरम् ॥ ७५ ॥ अग्नौ यास्ता हतिः साम्यगादि  
 त्यमुपतिष्ठते ॥ आदित्याज्जायते दृष्टिर्देवर्त्ततः प्रजाः ॥  
 ७६ ॥ यथावायुं समाश्रित्य वर्त्तते सर्वजन्तवः ॥ तथा गृहस्थमा-  
 श्रित्य वर्त्तते सर्वआश्रमाः ॥ ७७ ॥ यस्मात्त्रयोऽध्याश्रमिणो  
 ज्ञानेनानेन चान्वहम् ॥ गृहस्थेनैव धार्यते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो  
 यज्ञी ॥ ७८ ॥ ससन्धार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता ॥ सुखं  
 चेहच्छतानित्यथोऽधार्यो दुर्वलेच्छियैः ॥ ७९ ॥ ब्रह्मयः पित-  
 रो देवा भूतान्यतिथयस्तथा ॥ आशासते कुरुन्मिभ्यस्तेभ्यः  
 कार्यं विजानतः ॥ ८० ॥

۶۵۔ جو آدمی ہر روز وید کو پڑھتا ہے اور اگن میں ہون کرتا ہے۔ وہ سپورن سنسار  
 کر لے سکتا ہے۔

۶۶۔ اگن میں جو آہست پڑتی ہے وہ سورج کے پاس جاتی ہے اور سورج سے پانی  
 برستا ہے پانی سے اناج پیدا ہوتا ہے ناچ سے پر جا پیدا ہوتی ہے۔

۶۷۔ جطرح ہوا کے سہارے سب جو جیتے ہیں اسطرح گرہستھ آشرم کے سہارے  
 سب آشرم والے رہتے ہیں۔

۶۸۔ وید کے پڑھنے اور اگن دان دینے سے تینوں آشرمون کو گرہستھ آشرم  
 ہر روز اختیار کرتا ہے اس سے گرہستھ آشرم ہی بڑا ہے۔

۶۹۔ پر لوگ ہیں انکشی شوگ اور اس لوگ میں سکھ کی اچھا کرنی والا اس گرہستھ آشرم  
 کو ہر روز دھارن کرتا ہے جو درمل اندی دالون سے دھارن نہیں ہو سکتا۔

۸۰۔ ریش پتھر۔ دیونا اتھہ یہ سب گرہستھوں سے بھوجن کا آسرا رکھتے ہیں اسلئے ان سب کو  
 اگن مل دینا چاہیے۔

तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्य र्यमहर्षिभिः ॥ यंच क्लृप्तामहाय-  
जाः प्रत्यहं ग्रहमेधिनाम् ॥ ६६ ॥ अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु  
तर्पणाय ॥ होमो देवो वलिर्भौतो न्ययज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ ७० ॥ य-  
चेता न्यो महायज्ञान्नहाययति शक्तितः ॥ स एहेऽपि वसन्तित्यं  
स्वनाशेषेर्न लिप्यते ॥ ७१ ॥ देवतातिथिभ्यस्त्यानां पितृणामात्म-  
नश्च यः ॥ न निर्वपति यंचाना मुच्छसन्नसजीवति ॥ ७२ ॥ अहृतं  
च हृतं चैव तथा प्रहृतमेव च ॥ ब्राह्म्यं हृतं प्राशितं च यंच यज्ञान्न-  
चसते ॥ ७३ ॥ जयोऽहृतो हृतो होमः प्रहृतो भौतिको वलिः ॥ ब्रा-  
ह्म्यं हृतं द्विजाचार्यप्राशितं पितृतर्पणाय ॥ ७४ ॥

۶۹- ان پانچوں کے پرستشیت کے لیے پانچ مہاگیئہ کو گرہتھ لوگ منتیہ ہی  
کرین۔

۷۰- پانچ مہاگیئہ یہ ہیں یعنی وید کا پڑھنا۔ پتر کا ترن۔ سون کرنا۔ بل دینا  
اتھتھ کا یوجن۔ ان سب کو بلحاظ سلسلہ برہم گیئہ۔ پتر گیئہ۔ دیو گیئہ۔ بھوت  
گیئہ۔ مٹی گیئہ کہتے ہیں۔

۷۱- جو کوئی سائر تھ کے موافق ان پانچوں مہاگیئوں کو کرتا ہے وہ روز مرہ کی مہنا  
(یعنی جان کشی) کے پاس سے چھوٹتا رہتا ہے۔

۷۲- جو آدمی دیوتا سافر اقارب بزرگون کو کھانا سنین دیتا ہے وہ بحال  
زندگی مردہ ہے۔

۷۳- آہت۔ بہت۔ پرست۔ برہم بہت۔ پراشت۔ یہ پانچ گیئہ  
ہیں۔

۷۴- ان پانچوں کو سلسلہ جپ۔ سون۔ بھوت بل۔ اتھ پوجا۔ پتر ترن  
کہتے ہیں۔



شोचन्निجامیو یत्र विनश्यत्यासुतकुलम् ॥ न शोचन्तितय-  
 त्रैवावर्जते तद्विसर्जरा ॥ ५७ ॥ जामयामानिरोहानिशपन्त्यप्र-  
 तिप्रजिताः ॥ तानि कृत्याहता नीव विनश्यन्तिसमन्ततः ॥ ५८ ॥  
 तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणा च्छादनाशनेः ॥ भूतिकामैर्न-  
 रेर्नित्यं सत्कारे बृत्तवेषु च ॥ ५९ ॥ सन्नुद्योभार्य्याभर्त्ताभर्त्ताभा-  
 र्य्यातयेव च ॥ यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणां तत्र वै ध्रुवम् ॥  
 ६० ॥ यद्विहिस्त्री नरो चेत्पुमांसं न प्रमोदयेत् ॥ यप्रमोदात्पुन-  
 पुंसः प्रजननं प्रवर्त्तते ॥ ६१ ॥ स्त्रियास्तुरोचमानायांसर्व्वीतत्रो-  
 चते कुलम् ॥ तस्यां त्वरोचमानायांसर्व्वमेव नरो चते ॥ ६२ ॥

۵۷ - جس کل میں استری لوگ کھی رہتی ہیں وہ کل جلد نش ہو جاتا ہے۔  
 اور جس کل میں استری لوگ کھی رہتی ہیں وہ کل ہمیشہ بڑھتا ہے۔  
 ۵۸ - پو جانہ پاکر استری لوگ جس کل کو سراپ دیتی ہیں وہ کل چاروں طرف سے  
 نش ہو جاتا ہے۔

۵۹ - اسیلے دولت کا چاہنے والا آدمی گنا گنا کھانا سے ہمیشہ استرلین کو لوچا  
 کرے۔

۶۰ - جس کل میں استری سے پت اور پت سے استری پرین رہتی ہیں اس کل میں  
 بیشک کلیان ہے۔

۶۱ - اگر استری پت کو پرین نہ رکھے گی تو اولاد کہاں سے ہوگی۔

۶۲ - استری کے پرین نہنے سے سب کل پرین رہتا اور استری کے پرین نہنے سے سب کل  
 پرین رہتا ہے۔

نکاحناتنا: پیتا ویہان نھلی یا چھ لکھ مراد پی ॥ ۵۱ ॥ ۵۲ ॥ ۵۳ ॥ ۵۴ ॥ ۵۵ ॥ ۵۶ ॥ ۵۷ ॥ ۵۸ ॥ ۵۹ ॥ ۶۰ ॥ ۶۱ ॥ ۶۲ ॥ ۶۳ ॥ ۶۴ ॥ ۶۵ ॥ ۶۶ ॥ ۶۷ ॥ ۶۸ ॥ ۶۹ ॥ ۷۰ ॥ ۷۱ ॥ ۷۲ ॥ ۷۳ ॥ ۷۴ ॥ ۷۵ ॥ ۷۶ ॥ ۷۷ ॥ ۷۸ ॥ ۷۹ ॥ ۸۰ ॥ ۸۱ ॥ ۸۲ ॥ ۸۳ ॥ ۸۴ ॥ ۸۵ ॥ ۸۶ ॥ ۸۷ ॥ ۸۸ ॥ ۸۹ ॥ ۹۰ ॥ ۹۱ ॥ ۹۲ ॥ ۹۳ ॥ ۹۴ ॥ ۹۵ ॥ ۹۶ ॥ ۹۷ ॥ ۹۸ ॥ ۹۹ ॥ ۱۰۰ ॥

- ۵۱۔ لڑکی کا باپ فقور اسما وند بھی نہ لیوے طع سے کچھ نہ واخذہ لینے سے لڑکی کا بیٹہ دل  
کھاتا ہے۔
- ۵۲۔ عورتوں کی سواری و دولت و کپڑے کے جو عزیز و اقارب اوقات لمبی کرتے ہیں  
وہ بڑے پانی میں نہک میں جاتے ہیں۔
- ۵۳۔ کسی ریش نے آرش و دامین دو گتو لینا جائز رکھا ہے لیکن فقور یا بہت کچھ  
بھی لینا لڑکی کا بیچنا ہی کھاتا ہے۔
- ۵۴۔ جس لڑکی کا سوا وندہ ذات کے لوگ نہیں لیتے وہ بیچنا نہیں کھاتا سوا وندہ نہ  
لینا لڑکی کا پوجن ہے اور ترحم ہے۔
- ۵۵۔ بہت کلیان کے چاہنے والے باپ بھائی پت دیور گنا اور کپڑے سے عورتوں کی  
پوچا کریں۔
- ۵۶۔ جس گل میں عورتوں کی پوچا ہوتی ہے ہنس گل میں دیوتا لوگ بہا کرتے ہیں اور  
جہان عورتوں کی پوچا نہیں ہوتی وہاں سب کر با پھل ہے۔

ब्रह्मः स्वभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडशस्थिताः ॥ चतुर्भि रितरेः  
 साद्विमहोभिः सदिगर्हितैः ॥ ४६ ॥ तासां माद्याश्च तस्मिन्निदि-  
 तैकादशी च या ॥ त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्ता दशरात्रयः ॥ ४७  
 युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासुरात्रियु ॥ तस्माद्युग्मासु  
 पुत्रार्थी संविशेदार्तवेस्त्रियम् ॥ ४८ ॥ युमान्युंसोऽधिके शुक्रो-  
 स्त्रीभवत्यधिके स्त्रियाः ॥ समेषु मान्युं स्त्रियो वाक्षीरोऽल्पे च-  
 विपर्ययः ॥ ४९ ॥ निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रियुवर्जय-  
 न् ॥ ब्रह्मचार्ये व भवति यत्र तत्राश्रमे व सन् ॥ ५० ॥

۴۴- رت کال کی سولہ رات میں با ستثنائے چار کے جو مکروہ میں۔  
 ۴۵- انہیں پہلی چار اور گیارھویں اور تیرھویں رات تہمت (ممنوع) میں باقی  
 دس رات چھٹی میں۔  
 ۴۸- غالباً ستر رات میں بھوک کرنے سے لڑکا پیدا ہوتا ہے اور یکم رات میں بھوک  
 کرنے سے لڑکی پیدا ہوتی ہے۔ اسلئے لڑکا پیدا ہونے کی خوش کھٹہ دلا تم لڑکیوں کو کرنا  
 ۴۹- مرد کے لطف زیادہ ہونے سے یکم رات میں بھی لڑکا پیدا ہوتا ہے اور عورت کے  
 لطف زیادہ ہونے سے ستر رات میں بھی لڑکی پیدا ہوتی ہے اگر مرد و عورت دونوں کا لطف  
 برابر ہو تو لڑکا نامرد پیدا ہوتا ہے یا لڑکا و لڑکی دونوں پیدا ہوتے ہیں اور اگر دونوں کا لطف  
 کم ہو تو حمل نہیں رہتا۔  
 ۵۰- اٹھ راتیں جو منع ہیں انہیں بھوک کرنے سے جس آشرم میں رہا سمین برہم چای  
 ہی کہلاتا ہے۔

\* جیسے چھٹویں آٹھویں دسویں بارھویں چودھویں سولہویں رات۔

† جیسے پانچویں ساتویں نوین گیارھویں تیرھویں پندرھویں رات۔

इतरेषु शुशिक्षेयुः शंसान् तवादिनः ॥ जायन्ते तुर्विवाहेषु ब्रह्मध-  
र्मद्वयः सुताः ॥ ४१ ॥ अनिन्दितैः स्त्रीविवाहे रनिन्द्या भवति प्रजा  
॥ निन्दितैर्निन्दितान्धातस्मान्निन्द्यान् विवर्जयेत् ॥ ४२ ॥ पाणि-  
ग्रहणसंस्कारः सवर्गास्य दृश्यते ॥ असवर्गास्वयं ज्ञेयो वि-  
धितबाह्वर्कमृगिणः ॥ ४३ ॥ शरः सत्रियया ग्राह्यः प्रतोरो वैश्य-  
कन्यया ॥ वसनस्य दशा ग्राह्याः शूद्रयोः त्वष्टवेदने ॥ ४४ ॥ ऋतु-  
कालाभिगामी स्यात्स्वरा रनिरतः सदा ॥ पर्ववर्जं ब्रजं ज्ञेयं नांत-  
तोरतिका म्यया ॥ ४५ ॥

۱م۔ اور باقی چار دواہوں سے جوڑ کا پیدا ہوتا ہے وہ گھنا تک ہوتا ہے اور جھوٹا ہوتا ہے اور ہریم و مصرم کا شتر (دشمن) ہوتا ہے۔

۲م۔ استنیت دواہ سے استنیت اولاد پیدا ہوتی ہے اور منندت دواہ سے منندت اولاد پیدا ہوتی ہے اس لیے منندت دواہ مانگنا چاہئے۔

۳م۔ اپنی ذات کی جو کنیا ہے اسی سے بہت گہن کا سنکار جانا دوسری ذات کی کنیا کے ساتھ دواہ گہن جو طریق آگے کہنے کے وہ کرنا۔

۴م۔ گہن کی کنیا پھر کو گہن کرے اور دیشید کی کنیا اکہ ستورانی کو اور شودر کی کنیاں کپڑے کے کونے کو پکڑے جبکہ دواہ بڑی ذات کے پُرش سے ہوتا ہو۔

۵م۔ رت کال میں استنری سے بھوگ کرے اور دوسرے کی استنری سے بھوگ نہ کرے مگر اپنی استنری سے رت کال میں بھی پُرب کے دن بھوگ کرے اور جو استنری کاں ہو تو بغیر رت کال کے بھی بھوگ کرے یہیم ہے اور رت کال میں پاس ہے اور

سامر تھر کہتا ہو تو ہر دم بھوگ کرے ہینن تو بڑا دوش ہے۔

چلنے پر فراغت یعنی سو دن تک۔

یہ یعنی کرشن کپشن کی اسی چہرہ دہشی اداؤں پر غاشی نکلاؤ۔



योयस्यैवाविवाहानांमनुनाकीर्तितोगुराः॥ सर्वेश्वराततंवि-  
 प्राःसर्वकीर्तयतोममः॥३६॥दशपूर्वाभ्यरात्र्यानात्मानंये-  
 कविंशकम्॥घ्रासीपुत्रःसुततद्वन्मोचयेदेजसःपितृन्॥३७  
 ॥देवोदाजःसुतश्चैवसप्तसप्तपरावरान्॥आर्योदाजःसुतस्त्री-  
 स्त्रीन्यद्वयकायोदजःसुतः॥३८॥ब्राह्मादिषुविवाहेषुच-  
 त्वर्ध्वानुपूर्वशः॥ब्रह्मवर्चस्विनःपुत्राजायन्तेशिष्यसम्भवाः॥  
 ३९॥रूपसत्वगुणोपेताधनवन्तोयशस्विनः॥पर्याप्तभोगाध-  
 र्मिवाजीवन्तिचशतंसमाः॥४०॥

۳۴۔ جس دواہ کا جو گن من جی نے کہا ہے وہ ہم اے بہن لوگو چھی طرح سے کہتے ہیں  
 آپ لوگ نیٹے کہ اگر۔

۳۵۔ براہم دواہ سے لڑکا پیدا ہوا اور اچھے کرموں کو کرے تو دشن برش اوپر کے اور  
 دشن برش نیچے کے اور اکیوان اپنے کو پاپ سے چھڑاتا ہے۔

۳۶۔ دیو دواہ سے لڑکا پیدا ہو کر اچھے کرم کرنے والا ہو تو سات برش  
 اوپر کے اور سات برش نیچے کے اور پندرھوا ان اپنے پاپ سے چھڑاتا  
 ہے اور آرش دواہ سے لڑکا پیدا ہو کر مین پرنش اوپر اور نیچے کے  
 اور پرا چا پیتہ دواہ سے لڑکا پیدا ہو کر چھ برش نیچے کے اور اوپر کے  
 ان سب کو پاپ سے چھڑاتا ہے بشرطیکہ اچھے کرموں کا کرنے  
 والا ہو۔

۳۷۔ براہم دواہ وغیرہ چار دواہوں سے جو لڑکا پیدا ہوتا ہے وہ بڑا تہیوی  
 اور اچھے لوگوں کے برابر ہوتا ہے۔

۳۸۔ اور روپ اور اچھے گن اور دین اور بھاگ اور دھرم اور دھن والا ہوتا ہے  
 اور سو برش تک جی سکتا ہے۔

सहनौ चरतांधर्ममिति वाचानुभाष्य च ॥ कन्याप्रदानमभ्यर्च्य-  
 प्राजापत्योविधिः स्मृतः ॥ ३० ॥ ज्ञातिभ्यो ब्रविरां दत्वा कन्याये  
 चैव शक्तितः ॥ कन्याप्रदानं स्याच्छन्यादासुरोधर्म उच्यते ॥  
 ३१ ॥ इच्छयान्योन्यसंयोगः कन्यायाश्च वरस्य च ॥ गान्धर्वः  
 स तु विज्ञेयो मे शुन्यः कामसम्भवः ॥ ३२ ॥ हत्वा छिन्वा च भित्ना  
 च कोशतीरुदतीं दृष्ट्वा ॥ प्रसह्य कन्याहरणं राक्षसो विधिरु-  
 च्यते ॥ ३३ ॥ सुप्तं मत्तां प्रमत्तां चारहो यत्रोपगच्छति ॥ स पा-  
 पिहो विवाहानां पैशाचश्चाथ मोऽधमः ॥ ३४ ॥ अग्निरेव हि-  
 जाभ्याराणां कन्यादानं विशिष्यते ॥ इतरेषां तु वर्णानां मितिरे-  
 तरकाम्यया ॥ ३५ ॥

۳۰- براور کنیا دواہی و لون ساتھ دھرم کو کرین یہ بات کہہ کر براور کنیا کی پوجا کر کے کنیا کو  
 دیو سے یہ پیرا چاہتے دواہ کہلاتا ہے۔

۳۱- کنیا اور کنیا کی ذات والون کو دولت دے اور کنیا لینا اسرو دواہ  
 کہلاتا ہے۔

۳۲- براور کنیا ان اسپین اچھیا کر کے جو جوگ کرین وہ گاندھرب پواہ کہلاتا ہے  
 یہ دواہ یعنی شادی صحبت داری کی واسطے ہے۔

۳۳- مار پیٹ ضد کر کے روتی لپکارتی ہوئی کنیا کو گھر سے لے آنا رکتش دواہ  
 کہلاتا ہے۔

۳۴- جو عورت سوتی ہو یا دولت یا شہوت مست ہو یا کسی بیماری میں مبتلا یا بخر  
 ہو اس سے تنہائی میں صحبت کرنا پیش دواہ ہے یہ سب ادھم ہے۔

۳۵- برہمن کو جل سے کنیا ان کرنا اچھا ہے اور کشتی و کیرہ کا بغیر حل کے  
 آپس کی اچھیا سے صرف زبان کے کہنے سے دواہ ہو سکتا ہے۔

चतुरोवाहारास्याद्यान्यशस्तान्कवयोविदुः ॥ राक्षसं सत्रि-  
यस्यैकमासुरं वैश्यश्चतुर्दश ॥ २४ ॥ पंचानां तु व्रयो धर्म्याद्वाव-  
धर्म्योऽस्मृताविह ॥ पेशाचश्चासुरश्चैव न कर्त्तव्यो कदाचन ॥  
२५ ॥ पृथक् पृथक् वा मिश्रो वा विवाहौ पूर्वचोदितौ ॥ गान्धर्वो  
राक्षसश्चैव धर्म्योऽसत्रस्य तौ स्मृतौ ॥ २६ ॥ आच्छाद्य चार्चयि-  
त्वा च शुतिशीलवते स्वयम् ॥ आहूय दानं कन्याया वा ह्यो ध-  
र्मः प्रकीर्तितः ॥ २७ ॥ यजेतु चितते सम्यग्दत्विजे कर्म कुर्वते ॥  
अलंकृत्य सुता दानं दैवधर्मं प्रचक्षते ॥ २८ ॥ सकं गोमिश्रु न द्वे-  
वाचरादाय धर्मतः ॥ कन्याप्रदानं विधिवद्वार्यो धर्मः स उच्य-  
ते ॥ २९ ॥

- ۲۳۔ پہلے کے چار دواہ براہمن کو اور کشتری کو اکشش دواہ اور دیشید کو اسر دواہ  
بعضوں نے مخصوص قرار دیا ہے۔
- ۲۴۔ بیلن سمجھا یا چ دواہ آخر الذکر کے تین جائز اور دونا جائز ہیں لہذا پشاج اور  
دواہ نکرنا چاہئے۔
- ۲۵۔ گاندھرب اور اکشش دواہ دونوں علیحدہ ہوں یا یکجا صرف کشتری کی واسطے  
کہا ہے۔
- ۲۶۔ (اب آٹھو دواہ ہوں کا لکشن کہتے ہیں) براہ کنب کو کپڑا اور زبور و دیگر برکو  
بلا کر کنیان کو دیوے وہ براہمن دواہ کہلاتا ہے۔
- ۲۷۔ یگیہ میں رتوج کو انکار سنت کنیا کو دیوے وہ دیو دواہ کہلاتا  
ہے۔
- ۲۸۔ ایک یا دو گتو اور بیل برے لیکر کنیا کو دیوے وہ آرش دواہ  
کہلاتا ہے۔



सर्वर्गाद्येद्विजातीनां प्रशस्तादारकर्मणि ॥ कामतस्तु प्रवृत्ता-  
नामिमाः स्युः क्रमशोचराः ॥ १२ ॥ अद्भ्येवभार्याशूद्रस्यमाच-  
र्याचविशः स्मृते ॥ तेचस्वाचेवराजश्चताश्चस्वाचाप्रजन्मनः ॥  
१३ ॥ नवाह्यराक्षत्रिययोरायद्यपिहितित्ततोः ॥ कस्मिंश्चिद-  
पिहृत्तान्तेशूद्राभार्योपदिश्यते ॥ १४ ॥ हीनजातिस्त्रियंमोहा  
दुहृत्ततोद्विजातयः ॥ कुलान्येवनयन्याशुससत्तानानिशूद्र-  
ताम् ॥ १५ ॥ शूद्रावेदीपतत्यत्रेरुतथ्यतनयस्यच ॥ शौनकस्य-  
सुतोत्यत्यातदयत्यतयाश्मगोः ॥ १६ ॥ शूद्रांशयनमारोध्यब्रा-  
ह्मणोयात्यधोगतिम् ॥ जनयित्वासुतंतस्यांब्राह्मरायादेवही-  
यते ॥ १७

۱۲- تینوں ورنوں کو اپنی ذات کی عورت کے ساتھ دواہ کرنا افضل ہے اور اگر سبب  
تقریب کا مرد غیر ذات کی لڑکی کے ساتھ دواہ کرے تو بطریق ذیل کرے مگر وہ افضل نہیں  
۱۳- سو صرف اپنی ذات کی لڑکی سے اور ویشیہ اپنی ذات اور شودر کی لڑکی سے اور کشتری  
اپنی ذات اور ویشیہ اور شودر کی لڑکی سے اور برہمن چار ورنوں کی لڑکی سے دواہ کر سکتا ہے  
۱۴- مگر کسی پُران میں وقت مصیبت کے بھی برہمن اور کشتری کو شودر ذات کی لڑکی کے  
ساتھ دواہ کرنا پایا نہیں گیا۔

۱۵- برہمن کشتری ویشیہ تینوں ورن اگر محبت کی وجہ سے ذات کی لڑکی کے ساتھ دواہ کریں  
تو اولاد اور اپنی کل کو حلد ناس کر دیتے ہیں۔  
۱۶- اتر اور اتھویشہ ریش کا یہ ہے کہ شودر کی کہنا سے دواہ کرنے سے تینوں ورن تپت  
ہو جاتے ہیں اور شودرات ریش کا یہ ہے کہ شودر کی لڑکی سے لڑکا پیدا ہونے سے تپت  
ہوتا ہے اور بھگ ریش کا یہ ہے کہ پوتا پیدا ہونے سے تپت ہوتا ہے۔  
۱۷- شودر کی لڑکی کو بڑی بیگ پر بٹھا کر برہمن جس میں جائیداد اس لڑکا پیدا ہونے سے کم کر دیا جاتا ہے

۷۔ جس گھ کی کریانٹ ہو گئی ہے اور حسین مردنوں اور جس گل میں بہت روم واسے مرد و عورت ہوں اور حسین وید کا پر جھانہ نہیں ہے اور بوسیر کی بیماری اوچھی روگ اور ضعیف ہاضمہ اور مرگی اور سفید داغ وغیرہ بہت طرح کے کورے جس گل میں ہوں اگر اوپر کے ہوئے دھن دولت سے بھر ہوں تو بھی اس گل میں دوا نہ کرے۔

۸۔ شکیل رنگ کی زیادہ اعضا کھتی والی میا۔ بغیر بال الی بہت بال والی بہت بولنیوالی نیگلارنگ کی۔

۹۔ اور کانام ستارہ و درخت و پرند و سانپ و لیکش و سپار و دوس کی طرح ہبست تاک ہے اس کے ساتھ دوا نہ کرنا چاہیے۔

۱۰۔ بلکہ جو اعضا کھتے والی ہو اور نام بھی اوسکا اچھا ہو اور چال سکی مثل ہانسی دگر ہو اور بال اور دانت بھی تھوٹے ہوں ایسی عورت کے ساتھ دوا نہ کرنا چاہیے۔

۱۱۔ جس لڑکی کے بھائی سزاور کے باپ کا نام معلوم نہو اُس سے دوا نہ کرنا چاہیے کیونکہ ستر کا دم صرم کا شجرہ ریگا۔ (باپ و دوا کے وقت ارادہ کرے کہ اس لڑکی کا رت کا سپرا ہو گا او کو ستر کا کرن گئے ہیں پس وہ لڑکا اپنے نانا کا ہو گا۔

यद्विंशतल्लिकंचर्यगुरोर्बैवेदिकं व्रतम् ॥ तद्विंशतवाग्रहारा  
ग्रहरात्तिकमेववा ॥ १ ॥ वेदानधीत्यवेदोवावेदंवापियथाक-  
मम् ॥ अविद्युतब्रह्मचर्योगृहस्थाश्रममावसेत् ॥ २ ॥ तंप्रतीतं स्व  
धर्मेरात्रह्यरायहरंपितुः ॥ सविशांतत्यश्वासीनमर्हयत्यथमं  
गवा ॥ ३ ॥ गुरुगानुमतः स्नात्वा समावृत्तौ यथाविधि ॥ उद्धेत  
द्विजो भार्या सवर्गा लक्षणां विताम् ॥ ४ ॥ असपिराडा च या  
मातुरसगोप्रचयापितुः ॥ साप्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि-  
मैशुने ॥ ५ ॥ महान्ययिसमृद्धानि गोजाविधनधान्यतः ॥ स्त्री-  
सम्बन्धे दशैतानि कुलानियमिर्वर्जयेत् ॥ ६ ॥

۱- چھتیس یا اٹھارہ یا نو پریش تا تکمیل علم وید کے تینوں دیدوں کے پڑھنے کا برت کرنا چاہئے۔

۲- تینوں دید یا دو دید یا ایک دید سلسلہ پڑھ کر اکھنڈ برت کر نبوالا آدمی گزرتھو  
اکشرم میں آویس۔

۳- دھرم کا ایشٹھان کرنے سے جو برہم چاری پڑھو ہو اور باپ سے دید پڑھا ہو  
مالا پہنے ہو شیا پر بیٹھا ہو اور گھو کے دو دھو آدھ سے مدھچرک بنا کر اچارج یا باب  
اوسکی پوجا کرے۔

۴- گرو کی آگیا سے انسان کر کے سماو تین کرم کر کے اپنی ذات کی اچھی ٹرکی سے  
(دواہ تادی) کرے۔

۵- جو ٹرکی مان کے سپنڈ میں نہ ہو اور نہ باپ کے گوتر میں ہو ایسی ٹرکی تینوں نون کو  
زوجہ بنانے کے لئے اچھی ہوتی ہے۔

۶- اگرچہ گھو لکری دولت وغیرہ کی کثرت ہو تو بھی جو دشمن لگی یعنی خاندان کے کھینگو  
ان میں دواہ نہ کرنا چاہئے۔

آचार्यتुसबलुप्रेतेगुरुपुत्रेगुरा॥निते॥गुरुदारेसपिरडेवागुरु  
वहन्तिमाचरेत्॥२४७॥एतेष्वविद्यमानेषुस्नानासनविहार-  
वान्॥प्रयुज्जानोऽग्निशुश्रूषांसाधयेदेहमात्मनः॥२४८॥ए-  
वंचरतियोविप्रोब्रह्मचर्यमविभ्रुतः॥सगच्छत्युत्तमंस्थानंन-  
वेहानायतेयुनः॥२४९॥

## इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां द्वितीयोऽध्यायः २

۲۴۷ - گرد کے منے کے بعد گرد کا لڑکا جو گنجان ہوا اور گرد کی استری اور گرد کے  
سپنڈ (یعنی بھائی بھند) ان سب کو بھی گرد کی طرح ماننا چاہئے۔  
۲۴۸ - جو برہم چاری نیشک ہے وہ بھالت نہ ہو جو دھونے گرد و غبار اور گرد کے  
انکے مکان اور آسن میں رکھا گن کی سیو کرتا ہوا اپنے کو برہم میں پہچانے کے لائق کرے  
۲۴۹ - اس طرح جو برہمن اگست برہم چپ کو کرتا ہے وہ اتم استھان میں جاتا  
ہے اور پھر سنار میں نہیں آتا۔

من جی کا دھرم ہستہرگ جی کی  
سنگھنا کا دھرم ہستہرگ جی کی

دھرم ہستہرگ جی کی  
سنگھنا کا دھرم ہستہرگ جی کی



ناواہارو یو شیشو واسما لپنی کھ سے ت ॥ تراہارو وا  
 نچوانے کا سنا تिमनुचमाम् ॥ २४२ ॥ यदि त्या लपनी कं  
 संरोचयेत योः कुले ॥ युक्तः परिचरेदेन मा शरीरविमोक्षणा  
 त ॥ २४३ ॥ आसमासेः शरीरस्य यस्तु शुभ्रयेत गुरुम् ॥ सगच्छ  
 त्यं च साविप्रो जहाः स च शाश्वतम् ॥ २४४ ॥ न पूर्वगुरुवे-  
 किं विदुषु कुर्वीत धर्मवित ॥ स्वास्यं स्तुतु रगाक्षमः शक्त्या गु-  
 र्वर्थमाहरेत् ॥ २४५ ॥ क्षेत्रं हिरण्यं गामयं च बोयानहमास-  
 नम् ॥ धान्यं शाकं च वासांसीयुर्वेपीति माचरेत् ॥ २४६ ॥

۲۴۲- تم گت کی چھا کرنے والا آدمی کشتری وغیرہ گورو اور رور کھ براہمن کے پاس  
 زیادہ قیام نہ کرے۔

۲۴۳- اگر گرو کے پاس زیادہ عرصہ تک قیام کرنا منظور ہو تو ہوشیاری سے  
 جب تک زندہ رہے خدمت کرتا رہا قیام کرے مگر براہمن گرو کے پاس یہ مشک  
 برہم جاری کھاتا ہے۔

۲۴۴- جو برہم جاری شریرتیاک کرنے تک گرو کی سیوا کرتا ہے وہ خدمت بیتک  
 برہم لوک کو پاتا ہے۔

۲۴۵- دھرم کا جانتے والا برہم جاری جب تک پرمنا ہے تب تک سو اسکا  
 دوسرا بکا ر گرو کا نہ کرے پرمنا ہونے کے بعد سادھن کے نیت اسکا کرے گرو کا  
 حکم لیکر گرو کو حسب توفیق دیکھائے۔

۲۴۶- بیجے۔ زمین۔ سونا۔ گہو۔ گھوڑا۔ چھتری۔ جوتا۔ آسن۔ شاک۔ کپڑا وغیرہ  
 گرو کو دیوے۔

یعنی پترک بن آنے کے لئے دعا کے واسطے۔



तस्य वहिः त्रयो लोकास्तस्य वयश्चाश्रमाः ॥ तस्य वहिः त्रयो वेदा  
स्तस्य वोक्तास्त्रयोऽनयः ॥ २३० ॥ यिता वै गार्हपत्योऽग्निर्मा-  
ताग्निर्दक्षिराः स्मृतः ॥ युरराहवनीयस्तु माग्निव्रता गरीय-  
सी ॥ २३१ ॥ त्रिष्वप्रमाद्यन्ते तेषु त्रीं लोकां निजयेद्ब्रह्मी ॥ ही-  
प्रमानः स्ववपुषा देववद्विभो रते ॥ २३२ ॥ इमं लोकं मातु-  
भक्त्या पितृभक्त्या तु मध्यमम् ॥ युरयुश्च वया त्वेवं ब्रह्म लोकं  
समश्नुते ॥ २३३ ॥ सर्वे तस्याहता धर्मा यस्यैते त्रयश्चाहताः ॥  
अनाहतास्तु यस्यैते सर्वानस्याः फलाः क्रियाः ॥ २३४ ॥ या-  
वत्त्रयस्ते जीवेयुस्तावन्नान्यं समाचरेत् ॥ तेष्वेव नित्यं शुभं  
कुर्वात्यियहितैस्तः ॥ २५ ॥

۳۴۰۔ تینوں لوگ تینوں آشرم تینوں وید تینوں اگن ہی تینوں شخص میں۔  
۳۴۱۔ گارہ پتیہ اگن پتا ہے اور دشن اگن ماتا ہے آہونی اگن کروہین ہی تینوں  
اگن بہت بڑی ہیں۔  
۳۴۲۔ ان تینوں کی خدمتگزاری میں مستعد رہنے سے آدمی تینوں لوگ کو جین کر اور  
برائیچ و ان ہو کر دولتوں کی طرح سونگہ بن آئند کرتا ہے۔  
۳۴۳۔ ماما کی بھکت کرتے سے بھو لوک اور پتا کی بھکت کرتے سے اترکش لوک  
گرو کی بھکت کرتے سے برہم لوک کو پاتا ہے۔  
۳۴۴۔ جس شخص نے ان تینوں کا آدر کیا وہ گویا سبھروں کا آدمی بچا اور جسے ان  
تینوں کا آدر نہیں کیا اسکی سب کر یاں پھیل ہے۔  
۳۴۵۔ جن تک یہ تینوں زندہ رہیں تب تک خود مختار ہو کر دوسرا دھرم نہ کرے  
انھیں کی خدمت اور بھلائی اور مرضی میں رہے۔  
× یہ ماما کرے۔

धर्मार्थाद्युच्यतेभेयः कामार्थो धर्मस्य च ॥ अर्थस्वेहवाशेय-  
स्त्रिवर्गा इति तु स्थितिः ॥ २२४ ॥ आचार्यो ब्रह्मसामुत्तिः पिता  
मूर्तिः प्रजापतेः ॥ माता दधिच्यामूर्तिस्तु भ्राता स्योमूर्तिरात्मनः  
॥ २२५ ॥ आचार्यश्च पिता चैव माता भ्राता च पूर्वजः ॥ नार्त्तना  
ध्यवसन्नव्यावृत्तशो न विशेषतः ॥ २२६ ॥ यं माता पितृभेदे  
शंसते ते संभवे नृणां ॥ न तस्य निस्सृतिः शक्या कर्तुं वर्षशते  
रपि ॥ २२७ ॥ तयोर्निर्व्यभिचयंकुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा ॥  
तेनैव त्रिषु वृद्धेषु तपःसर्वं समाप्यते ॥ २२८ ॥ तेषां जयारां-  
वश्रुवापरमंतप उच्यते ॥ न तैरग्न्यननुज्ञातो धर्ममन्यं समा-  
चरेत् ॥ २२९ ॥

۲۲۴- کسی کے مت میں دھرم اور ارتھ دونوں اور کسی کے مت میں ارتھ اور کام اور کسی کے مت میں صرف دھرم کلیان کرنا والا ہے اب اپنی مت کو کہتے ہیں کہ دھرم اور ارتھ اور کام تینوں باہم موافق ہیں۔ انھیں تینوں سے سب کچھ ملتا ہے۔

۲۲۵- آچارج پر اتما کی مورت ہے اور ماتا پر تھوی کی مورت ہے اور پتا پر بھائی کی مورت ہے اور مگا بھائی اپنی گرد کی مورت ہے۔

۲۲۶- آچارج اور پتا اور مگا پتا بھائی ان تینوں کی تو میں نچھید دل نہیں پر بھی نکرے اس بات کی تمہیل ہر بہن کو تو ضرور ہی واجب ہے۔

۲۲۷- آدمی کے پیدا ہونے میں جو تکلیف مان اور باپ سستے ہیں اس کا عوض سونپ کے ادیکار کرنے سے بھی نہیں ہو سکتا یہ سب دیوتا روپ ہیں الگا الگا جان کرنا چاہیے۔

۲۲۸- مان اور باپ اور آچارج ان تینوں کی خدمت ہمیشہ کرنا چاہیے انکے خوش کرنے سے سب عبادت پوری ہوتی ہے

۲۲۹- ان تینوں کی سبوا پر ہم بت یعنی عبادت عظم کر ان کو نیک کام نیکوئی دوسرا دھرم کرنا چاہیے

यथाखनन्वनिश्रेशानरीवार्यविगच्छति॥ तथायुगतांविद्यां  
 सुभ्रुवुरधिगच्छति॥ २१८ ॥ सुराडोवाजदिलोवास्यारधवास्या  
 च्छिस्वाजदः॥ निनंप्रामेऽभिनिम्लोचेत्सूर्योनाभुदियात्वाचित  
 ॥ २१९ ॥ तंचैरभुदियात्सूर्यःशमानंकामचारतः॥ निम्लो-  
 चेद्वाप्यविज्ञानाज्ञापयत्पवसेहिनम्॥ २२० ॥ सूर्योराह्यभि  
 निर्मुक्तःशयानोऽभुदितश्चयः॥ प्रायश्चित्तमकुर्वरातोयु-  
 क्तःस्यान्महतेनसा॥ २२१ ॥ आचम्यप्रयतो नित्यमुभेसन्धो  
 समाहितः॥ सुचौदेशेजयज्जप्यमुयासीतयथाविधिः॥ २२२  
 ॥ यदिस्रीयद्यवरजःश्रेयःकिंचित्समाचरेत्॥ तत्तत्तर्जमाचरेत्  
 त्तोयप्रवारयसेन्मनः॥ २२३ ॥

۲۱۸۔ جس طرح کڑا دی سے کھودتے کھودتے آدی بانی پاتا ہے اس طرح گڑی سوار  
 کرتے گڑی کی شہنورن دویا کو چیلے پاتا ہے۔

۲۱۹۔ اگرچہ برہم چاری مونڈ منڈائے یا چار کھائے یا چوٹی کو جٹا کے برابر بنائے  
 مگر وقت طلوع و غروب آفتاب کے گافون یا شہر میں نہ رہے یعنی یہ دونوں وقت  
 شہر سے باہر برہم چاری نہ گزریں۔

۲۲۰۔ اگرچہ برہم چاری وقت طلوع و غروب آفتاب کے گھر میں موجود ہو تو اس نے یہ کتا ہوا  
 آپاس کرے۔

۲۲۱۔ اگر آدھ کھا ہوا پریشیت نکرے تو بڑا پاپ ہوتا ہے۔  
 ۲۲۲۔ آجمن کر کے دونوں سندھیا میں ایک چت ہو کر پوتر استھان میں اچھی طرح  
 گاتیری کا جپ کرے۔

۲۲۳۔ عورت یا چھوٹا آدمی کوئی اچھی بات کرتا ہو تو اس کو آپ بھی کرے یا ناشتر  
 کے موافق جس عمل میں دل کو اطمینان ہو وہ کام کرے۔



विद्यायुगलमेतदेव नित्यावृत्तिः स्वयोनियु ॥ प्रतिषेधस्तु चा-  
धर्मान्धर्मचोयदिशक्त्यपि ॥ २०६ ॥ अथस्तुगुरुवद्वृत्तिनित्य-  
मेव समाचरेत् ॥ गुरुपुत्रेषु चार्येषु गुरोश्चैव स्वबन्धुषु ॥ २०७ ॥  
बालसमानजन्मावाशिष्यो वा यत्नकर्मणि ॥ अध्यापयन्तु-  
रमुतो गुरुवन्मानमर्हति ॥ २०८ ॥ उत्सादनं च गात्राणां स्नाप-  
नोच्छिदभोजने ॥ न कुर्याद्गुरुपुत्रस्य पादयोश्चावनेजनस्य ॥ २०९ ॥  
गुरुवत्प्रतिपूज्याः स्युः सवर्णा गुरुयोचितः ॥ असवर्णास्तु संपू-  
ज्याः प्रत्युत्थानाभिवादनैः ॥ २१० ॥ अभ्यंजनं स्नापनं च गा-  
त्रोत्सादनमेव च ॥ गुरुपत्न्या न कार्या शिकेशानां च प्रसाध-  
नम् ॥ २११ ॥

۲۰۴- اسی طرح سوا آچار کے آپادھیاد وغیرہ دل گرو میں اور چاد وغیرہ رشتہ دار  
اور ادھرم سے بچا بیوا کے اور اچھی بات سکھانے والے بھی مثل گرو کے ہیں۔  
۲۰۵- جو بڑے لوگ میں اور گرو کے بڑے بیٹے اور گرو کے بھائی بہن سب کو  
بھی مثل گرو کے جائے۔  
۲۰۸- گرو کا بیٹا اپنی عمر سے چھوٹا ہو یا بڑا ہو اور پڑھانے کی سامرتھ رکھنا ہو اور اپنی  
یگیثہ دیکھنے کو آوے تو اس کی تعظیم مثل گرو کے کرنا چاہئے۔  
۲۰۹- انسان کرنا۔ اسٹن لگانا۔ جو ٹھا بھوجن کرنا۔ پافون دھونا یہ سب کام گرو کے  
بیٹے کے نہ کرے۔  
۲۱۰- گرو کے ہمقوم زوجہ کی پوجا مثل گرو کے کرے اور جو عورت ہمقوم نہیں ہے تو شکی  
پوجا نہیں ہے کہ اٹھ کر من پر نام کرے۔  
۲۱۱- گرو کی استری کے بدن میں تیل یا اسٹن نہ لگاوے اور نہ اسٹن کرنا  
نہ بال سکھاوے۔

परिचारात्त्वरोभवति श्वावेभवति निन्दकः ॥ परिभोक्ता कृमि  
भवति कीरो भवति मत्सरी ॥ २०१ ॥ दूरस्थो नार्चयेदनेन कुड्डो ना-  
तिकेस्त्रियाः ॥ यानासनस्थश्चैवैनमवरुद्धाभिवादयेत् ॥ २०२ ॥  
प्रतिवातेऽनुवाते च नासीत गुरुणा सह ॥ अमंश्च वैचैव गुरोर्न किं-  
चिदपि कीर्तयेत् ॥ २०३ ॥ गोऽश्वोऽन्नयानप्रासादस्तरैर्युक्तं यु-  
च ॥ आसीत गुरुणा सार्द्धं शिलाफलकनौ युच ॥ २०४ ॥ यु-  
रो गुरोर्न निहिते गुरुवद्वत्तिमाचरेत् ॥ न चातिस्तुष्टो गुरुणा  
स्वाच्युत्तभिवादयेत् ॥ २०५ ॥

۲۰۱- گردو کا پتیا یا چھوٹا عیب کئے سے گردھا اور نیرا کرنے سے گتھا ہوتا ہے اور  
اور گردو انچت دھن بھون کرنے سے چھوٹا کپڑا اور گردو کی بڑائی نہ سمجھ سکنے سے بڑا  
کپڑا ہوتا ہے۔

۲۰۲- گردو کی پوجا دور سے (یعنی کسی کے ہاتھ پوجا کی ساگر ی پھیکر) نہ کرے اور غصہ  
سے بھی نہ کرے اور اگر اپنی عورت کے پاس بیٹھا ہو یا سواری یا آسن پر بیٹھا ہو تو سواری  
سے اتار کر اور آسن کو چھوڑ کر پر نام کرے۔

۲۰۳- جو آدمی گردو کے ملک سے چیلے کے ملک میں آیا ہو یا چیلے کے ملک سے  
گردو کے ملک میں آیا ہو ان دونوں کے اوپر دو چیلے گردو کے ساتھ نہ رہے جو بات  
گردو کی سنتے ہیں نہ آدے ایسی کوئی بات گردو کی یا اور کسی کی نہ کہے یعنی گردو سے چھپا  
کوئی بات نہ کہے۔

۲۰۴- سیل گھوڑا اونٹ والے رتھ یا گاڑی پر اور چٹائی اور تھپڑ اور لکڑی اور ناو پر  
گردو کے ساتھ بیٹھے۔

۲۰۵- گردو کے گردو کو بھی مثل اپنے گردو کے جانے اور بغیر علم گردو کے اپنے ملک سے  
آئے ہوئے چچا وغیرہ کو پر نام نہ کرے۔



प्रतिश्रवणसंभावेन सयानः समाचरेत् ॥ नासिनो न च भुञ्जानो  
न तिष्ठन् न परां मुखः ॥ १६५ ॥ आसीनस्य स्थितः कुर्यादभिग  
च्छस्तु तिष्ठतः ॥ प्रत्युज्जस्यत्वाव्रजतः पश्चाद्भावंस्तु धावतः १६६  
परां मुखस्याभिमुखो दूरस्थस्येत्यचान्तिकम् ॥ प्रणाम्यनुश-  
यानस्य निदेशो वैव तिष्ठतः ॥ १६७ ॥ नीचं शय्यासनं चास्य स-  
र्वदा गुरुमनिधौ ॥ गुरोस्तु च सुविषये न यथेष्टासनो भवेत् ॥  
१६८ ॥ नो दाहरो हस्यनामपरोक्षमपि केवलम् ॥ न चैवास्या  
चु कुर्वीत गतिमाधितवेष्टितम् ॥ १६९ ॥ गुरोर्ध्वं प्रशीवा रोनि-  
न्दावापि प्रवर्तते ॥ करोति तत्र पिधातव्यो गन्तव्यं वातनोऽन्य-  
तः ॥ १७० ॥

۱۹۵۔ سوتا ہوا اور آسن پڑھتا ہوا اور مجھ جن کرتا ہوا اور کھٹھ پھیرے ہو کر گڑے  
بات چیت نہ کرے اور نہ شے۔

۱۹۶۔ گرو بیٹھے ہوں تو آپ کھڑا ہو کر اور گرو کھڑے ہوں تو آپ چلا کر اور گرو چلتے ہوں  
تو آپ سانسے جا کر اور گرو دوڑتے ہوں تو آپ بھی پیچھے ہڈ کر گفٹ و شنیڈ کرے۔  
۱۹۷۔ گرو منہ پھیرے کھڑے ہوں تو سانسے جا کر اور دور ہوں تو پاس جا کر اور سوتے  
ہوں تو پرنام کر کے اونکی الیا کوٹنے۔

۱۹۸۔ گرو کے پاس خواہاں اور بستہ اپنا پیار کھے جیسا دل چاہے ویسا نہ  
رکھے۔

۱۹۹۔ گرو کے پیچھے بھی صرف انکے نام کو نہ لیوے اور گرو کی جیسی چاہاں ہال  
بولی چھیٹھا (یعنی وضع) ہو ویسی اپنی نہ رکھے۔

۲۰۰۔ جہان گورو کا سچا یا جھوٹھا عیب کہا جاتا ہو یا شہزا (ہر گوی) ہوتی ہو وہاں اپنے  
کان بند کر کے یاد ہاں سے اٹھ جائے۔

ब्राह्मणस्यैवकर्मेतदुपदिष्टमनीषिभिः ॥ राजन्यवेश्ययोस्त्वेवं-  
 नेतत्कर्माविधीयते ॥ १९० ॥ चोदितोगुरुणानित्यप्रप्रचोदितश-  
 ववा ॥ कुर्यादध्ययनेत्यन्माचार्यस्यहितेषु च ॥ १९१ ॥ शरी-  
 रं वैववाचं च बुद्धीं द्विषमनां सि च ॥ नियम्य प्रांजलिस्तिष्ठेद्दीप्त-  
 मारोग्यगुरोर्मुखम् ॥ १९२ ॥ नित्यमुदृतयाशिः स्यात्साध्वाचारः  
 सुसंयुतः ॥ आस्यतामिति चोक्तः सन्वासीतामिमुखं गुरोः ॥  
 १९३ ॥ हीनान्नचस्त्रवेद्यः स्यात्तर्ज्यदागुरुसन्निधौ ॥ उत्तिष्ठे-  
 त्प्रथमं चास्यचरमं चैव संविद्योत ॥ १९४ ॥

۱۹۰- شرادھ میں بھوجن کرنا براہمن ہی کا کام ہے کشتری دیشیہ برہم چاریوں کا کام

منشی

۱۹۔ گرد کی اجازت ہو یا نہ ہو مگر دید کے پُر حلقے اور گرد کی بھلائی کرنے میں کوئی شکی

۱۹۔ جسم و زبان و نقل و دھاس دل کو قلوب میں رکھ کر ہاتھ جوڑے ہوئے گرد و گرد کی گھبراہٹ سے بچنا۔

۱۹۔ دانتے ہاتھ کو چادرہ سے ہمیشہ باہر رکھے سادھم کی طرح آچار سے رہے  
چمچیل پینے کو چھوڑے رہے اور جب گرو سیٹھیہ کی اجازت دین تب سانس  
ادنے بندھے۔

۱۹۔ گرد کے سامنے ایسا طریقہ اختیار کرے کہ جیسا گرد بھون کرے اس سے اونے درجہ کا بھون آپ کرے اور جیسا کپڑا اگر وہ نہیں اس سے کم درجہ کا کپڑا آپ پہنے اور جیسی صورت سے گرد زمین اس سے کمتر صورت سے آپ رہے اور گرد کے جاگنے سے پہلے جاگے اور گرد کے سونے کے بعد آپ سووے۔

धुरोः कुलेन भिक्षेत न जाति कुल बन्धुषु ॥ अलाभे त्वन्यगेहानां प्र-  
 वे पूर्व विवर्जयेत् ॥ १८४ ॥ सर्व वापि चरेत् ग्रामं पूर्वोक्तानामसं-  
 भवे ॥ नियम्य प्रयतो वाचमभि शस्तास्तु वर्जयेत् ॥ १८५ ॥ दूरा-  
 राहत्य समिधः सन्निध्यादिहायसि ॥ सायं प्रातश्च जुह्यात्ता-  
 मिरनिमतक्षितः ॥ १८६ ॥ अवात्वा भैक्ष चरामसमिध च पा-  
 वकम् ॥ अनातुरः समरात्रमवकीर्तिव्रतं चरेत् ॥ १८७ ॥ भैक्षे रा-  
 वर्तयेन्नित्यं नैकान्नादीमवेद्वती ॥ भैक्षे रात्रतिनोदतिरुपवास-  
 मास्मृता ॥ १८८ ॥ व्रतवद्देवदेवत्ये पित्र्ये कर्मण्यथर्विवत् ॥ का-  
 ममभ्यर्थितोऽश्रीयाद् व्रतमस्य न लुप्यते ॥ १८९ ॥

۱۸۴ - گرد کے کل میں ذات کے کل میں بھائی کے کل میں بھیکہ نہ مانگے اور اگر کہیں  
 نہ ملے تو اوّل اول کو چھوڑ کر دوسرے دوسرے سے مانگے۔

۱۸۵ - جو ایسے گھر نہوں تو سب گاؤں میں ہوں ہو کر اندریوں کو قابو میں لا کر بھیکہ مانگے۔  
 لیکن پاپیوں کا گھر چھوڑ دیوے۔

۱۸۶ - دور سے لکڑی لا کر زمین سے اوپر آکاش میں (یعنی اونچے پر) رکھے اُسی لکڑی  
 سے صبح و شام ہوں کرے۔

۱۸۷ - اگر سامنے ہو تو سات دن تک بھیکہ نہ مانگے اور آگ میں ہوں کرے اور دیگر  
 نام بہت (جو آگے کہیں گے) کرے۔

۱۸۸ - ہر روز بھیکہ مانگ کر بھوجن کرے مگر ایک ہی گھر کا ان نہ کھائے بھیکہ مانگ کر  
 بھوجن کرنا بہت کے برابر ہے۔

۱۸۹ - اگر کسی شخص نے بڑا دیوتا پتر کرم کے منت نیوت دیا ہو تو خاطر خواہ شراہ میں  
 بھوجن کرے لیکن دو دنوں کے ہوں میں سسکے برقی اور رش کی طرح مدھم - ماس - دھیم  
 استیا - منو - عہ سے پرہیز کرے ایسا کرنے سے بہت ہینن جاتا۔

अभ्यंगमञ्जनं चाक्षرौ रूपानन्दप्रधासाय ॥ कामं को धंचलो भंच  
 नर्त्तनगीतवादनम् ॥ १७८ ॥ द्युतं च जनवादंच परिवादंतयान्त-  
 म् ॥ स्त्रीणांच प्रेसरालम्भमुपघातं परस्थच ॥ १७९ ॥ एकः  
 शयीत सर्वत्र नेतः स्कन्धे त्वचित् ॥ कामाद्विस्कन्दयने तो  
 हिनस्ति व्रतमात्मनः ॥ १८० ॥ स्वप्नोसित्वा ब्रह्मचारी दिनः शुक्ल  
 मकामतः ॥ स्नात्वा कर्मर्चयित्वा त्रिः पुनर्मा मित्युच्यते ॥ १८१  
 ॥ उरकुम्भं मुमनसो गोशङ्खचुत्तिकाकुशान् ॥ आहरेद्यावद-  
 र्थानि भैसां चाहरहश्चरेत् ॥ १८२ ॥ वेदमन्त्रैरहीनानां प्रशस्तानां  
 स्वकर्म्मसु ॥ ब्रह्मचार्याहरेद्भैसां गृहेभ्यः प्रयतोऽन्वहम् ॥  
 १८३ ॥

۱۶۸- اوبین - کاجل - جوتا - ہتھری - کام - کرودھ لوہب - نا چن - گانا  
 بکاتا -  
 ۱۶۹- جوا - جگر آ - کسی کا جھوٹا عیب بیان کرنا - عورتوں کو دیکھنا اور اوستے ملنا  
 کسی کی بدخواہی - ان سب باتوں سے پرہیز کرے -  
 ۱۸۰- اکیلا سو دیے بیچ کو دگر ادے اور جو کوئی عدا بیچ کو گرانے ہے وہ اپنا برت  
 کھوتا ہے -  
 ۱۸۱- اگر خواب میں بلا خواہش بیچ گر جائے تو غسل کر کے سوچ کی پوجا کر کے پتر نام  
 اس منتر کو تین بار پڑھ کرے -  
 ۱۸۲- پانی کا گھڑا پھول گوہر مٹی کش - ان سب کو ضرورت کے موافق لاوے اور ہر روز  
 بھیکہ مانگے  
 ۱۸۳- جو شخص وید اور گیتہ اور اپنے اپنے چھ کر مہن کے ساتھ ہوا سکے گھرت  
 بھیکہ لاوے -

नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मस्वधानिनयनादृते॥ शुद्धेराहिसमस्तावद्याव  
 हेदेनजायते॥ १७२॥ कृतोपनयनस्यास्यब्रतादेशनमिष्यते॥ ब्रह्म  
 रागोयहरांचैवक्रमेराविधिपूर्वकम्॥ १७३॥ यद्यस्यविहितं चर्म  
 यत्स्त्रवंयाचमेखला॥ योदराडोयच्चवसनंतत्तदस्यब्रतेष्वपि॥  
 १७४॥ सेवेतेमांस्तुनियमान्ब्रह्मचारीगुरौवसन्॥ सन्नियम्येंद्रि  
 यग्रामंतपोवृद्धयमात्मनः॥ १७५॥ नित्यंस्नात्वाशुचिःकुर्या-  
 देवर्षिपितृवर्षराम्॥ देवताभ्यर्चनंचैवसमिदाधानमेवच॥ १७६॥  
 वर्जयेन्मधुमांसंचगन्धमात्यंरसान्विषः॥ शुक्लानिधानिस-  
 र्वाणिप्राणिनांचैवहंसनम्॥ १७७॥

۱۶۲- بغیر جیتو ہونے کے ٹکے کا اور عکارتشاد فقہ کرنے میں ہوتا ہے لیکن شور  
 کے برابر ہوتا ہے۔

۱۶۳- جینتو کے بعد برت کرنا چاہیے اور بدھ کے سامعہ وید پڑھتے  
 چاہیے۔

۱۶۴- جبکا جو میکھلا جو حیرم جو سوت جو ڈنڈ جو کپڑا ہے وہی برت میں  
 بھی رہے۔

۱۶۵- برہم جاری گردل میں مقیم ہو کر اندریوں کو قابو میں لا کر اپنی عبادت کی ترقی کو  
 بطریق مندرجہ ذیل عمل کرے۔

۱۶۶- ہر روز غسل کر کے پاک ہو کر دیوریش پتروں کا ترپن کر کے دیوتاؤں کا پوجن  
 کرے اور آگ میں نون کرے۔

۱۶۷- مرقہ۔ مانس۔ گندھ۔ مالا۔ رس۔ استری۔ شکٹ۔ جیو نکا مارنا۔

۱۶۸- جو بٹھا ہے مگر بانی پاکر کچھ زمانہ گزرنے سے کھٹا ہو گیا ہے۔

वेदमेवसदाभ्यस्येत्तपस्तप्यन्विजोत्तमः॥वेदभ्यासोहि विप्रस्य  
 तपःपरमिहोच्यते॥१६६॥आहैवसनखाग्रेभ्यःपरमतप्यते  
 तपः॥यःस्मन्यपिद्विजोऽधीतेस्वाध्यायंशक्तितोऽन्वहम्॥  
 १६७॥योऽनधीत्यद्विजोवेदमन्यत्रकुरुतेश्रमम्॥सजीवन्नेव  
 ब्रह्मत्वमाशुगच्छतिसान्वयः॥१६८॥मातुरग्रेऽधिजननंदि-  
 तीयंमौज्जिवन्धने॥तृतीयंयज्ञरीक्षायांद्विजस्यश्रुतिचोदना-  
 त॥१६९॥तत्रब्रह्मजन्मास्यमौज्जीबन्धनचिह्नितम्॥तत्रा-  
 स्यमातासावित्रीपितात्वाचार्य्यउच्यते॥१७०॥वेदप्रदानादा-  
 चार्य्यपिनरंपरिचक्षते॥नह्यस्मिन्युज्यतेकस्माकिंचिदामौजि-  
 बन्धनात्॥१७१॥

- ۱۶۶- براہمن تپ کرتا ہوا وید ہی کو پڑھے ہی اوسکا بڑا تپ ہے۔
- ۱۶۷- شتر سے لیکر پاؤن تک پتھم تپ وہ کرتا ہے جو مالا اپنے ہونے سے بھی ٹلکٹ پورک  
 ہر روز وید کو پڑھتا ہے (یعنی پتھم چاری کو مالا اپنا منع ہے پس غل ممنوع کرنے پر بھی اگر  
 وید کو پڑھ کرے تو وہی تپ ہی ہے۔
- ۱۶۸- جو براہمن وید کا پڑھنا چھوڑ کر شاستر دن کے پڑھنے میں محنت کرتا ہے وہ بحالت  
 زندگی اپنے دلش سمیت شور و بھاؤ کو حاصل کرتا ہے۔
- ۱۶۹- دیدین براہمن کے تین جنم لکھے ہیں پہلا جنم ماما سے دوسرا جنم ہونے سے متیرا  
 یکیتہ کرنے سے۔
- ۱۷۰- تین جنم ہونے سے جو جنم ہوتا ہے اوسمین گاتھیری ماما ہے آچارج  
 پتہ ہے۔
- ۱۷۱- وید کے پڑھانے سے آچارج تپا کھاتا ہے جب تک جنم ہنن ہوتا تک  
 آدمی کا اودھکار کسی کام میں نہیں ہوتا۔

यस्य बाहु-मनसी शुद्धे सम्यग्गुणे च सर्वदा ॥ सर्वे सर्वमवाप्नोति-  
वेदान्तोपगतं फलम् ॥ १६० ॥ नारुक्षुदः स्यादार्तोऽपि न परद्रो-  
हकर्मधीः ॥ ययास्यो हि जिते वाचाना लोकांता मुदीरयेत् ॥ १६१ ॥  
समाना द्वाह्यरागो नित्यमुद्दिजेत विषादिव ॥ अमृतस्यै-  
वं चाकांक्षेद्वमानस्य सर्वदा ॥ १६२ ॥ सुखं ह्यवमतः शेते सुखं  
च प्रतिलुब्धते ॥ सुखं चरति लोकेऽस्मिन्नवमन्ता विनश्यति  
॥ १६३ ॥ अनेन क्रमयोगेन संस्कृतात्मा हि जः शनैः ॥ शुश्रूष सन्तं  
चिनुयाद्ब्रह्माधिगमिकं तयः ॥ १६४ ॥ तयो विशेयैर्विविधैर्ब्रते-  
श्च विधिचोदितैः ॥ वेदः कल्पोऽधिगम्यः सरहस्यो हि जन्मना  
॥ १६५ ॥

۱۶۰- جکی بانی اور سن شکر ہے اور پیش پایا سے بچا ہوا، وہ ویدانت کے پھل کو  
پاتا ہے۔

۱۶۱- کوکھی ہونے پر بھی ایسی بات نہ کہے کہ جس سے کسی کے دل پر گھاؤ لگے اور  
نہ کرے۔

۱۶۲- براہمن تعلیم و تکریم کو مثل زہر کے اور توہین اور تحقیر کو مثل آنجیات کے سمجھتا  
ہے۔

۱۶۳- توہین پائے والا کوئی تمام سوتا اور جاگتا اور بھرتا ہے اور توہین کرنا والا  
مر جاتا ہے۔

۱۶۴- سطح سنسکار کو پاکر آہستہ آہستہ گرد کل میں باس کرنا آہستہ کو پراپت کرنا  
تپ کو کرے۔

۱۶۵- سطح طرح کے تپ اور برت کو کر کے وید کو مع علم پوشیدہ کے  
پڑے۔





आचार्यस्त्वस्यां जातिं विधिवद्देव्यारगः ॥ उत्पादयति सा वि-  
 श्वासासत्वासाजरा मरा ॥ १४८ ॥ अत्यंबानहवायस्य शुतस्यो  
 पकरोति यः ॥ तमपीह गुरुं विद्याच्छुतो यः क्रियया तथा ॥ १४९ ॥  
 ॥ ब्राह्मस्य जन्मनः कर्तो स्वधर्मस्य च शासिता ॥ बालोऽपि वि-  
 प्रो ह्रस्वस्य पिता भवति धर्मतः ॥ १५० ॥ अध्यापया मासपितृ-  
 नः शिशुरां गिरिः कविः ॥ पुत्रका इति हो वाच ज्ञानेन परिग्रह्य-  
 तान् ॥ १५१ ॥ ते तमर्थमष्टच्छन्त देवानागतमन्यवः ॥ देवाश्च  
 तान् समेत्योचुन्यार्थं वः शिशुरुक्तवान् ॥ १५२ ॥ अजो भवति  
 वैवालः पितृ भवति मन्त्रतः ॥ अजं हि बालमित्याहः पितेत्येव  
 तु मन्त्रदम् ॥ १५३ ॥

- ۱۴۸۔ جو جنم گائیشری کر کے آجائنج کرتا ہے سو جنم سچا اور بے رُو آں ہے۔  
 ۱۴۹۔ تھوڑا یا بہت دیر کے پُر مہانے سے جو پکار کر تاتا ہے اسکو بھی گرد سمجھنا  
 چاہیے۔  
 ۱۵۰۔ جو اپنی عمر سے چھوٹا ہے اور وید کو پڑھنا اور دھرم کو سکھانا ہے وہ بھی  
 گرد کہلاتا ہے۔  
 ۱۵۱۔ اگر اے بیٹے نے اپنے چچا کو پڑھایا اور بیٹیا کما اسوجہ کہ گیان میں بڑا  
 ہوتا۔  
 ۱۵۲۔ تب وہ چچا خفا ہو کر دیوتاؤں سے پوچھنے گیا دیوتاؤں نے کہا کہ اس نے  
 نے اچھا کیا۔  
 ۱۵۳۔ کیونکہ جو کچھ بنین جانتا وہ بالک کہلاتا ہے اور جو منتر دیتا ہے وہ باب  
 کہلاتا ہے۔



वित्तमन्धुर्वयः कर्मविद्याभवतिपंचमी ॥ सतानिमान्यस्थाना  
निगरीयोयद्यदुत्तरम् ॥ १३६ ॥ पंचानां त्रिषु वरौ शुभूयांसि  
गुणवन्ति च ॥ यत्र स्युः सोऽचमानार्हः शूरोऽपि दशमीं गतः ॥  
१३७ ॥ चक्रिणो दशमीं स्थस्य रोगिणो भारिराः स्त्रियाः ॥ स्नात  
कस्य च राज्ञश्च पन्थादेशो वरस्य च ॥ १३८ ॥ तेषां तु समवेतानां  
मान्यो स्नातकपार्थिवौ ॥ राजस्नातकयोश्चैव स्नातको नृपमा  
नमाक ॥ १३९ ॥ उपनीयतयः शिष्यं वेदमध्यापयेद्भिजः ॥ सक  
ल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ १४० ॥ एकदेशं तु वेदस्य वे  
दांगान्यपि बापुनः ॥ योऽध्यापयति वित्यर्थं सुपाध्यायः स उ  
च्यते ॥ १४१ ॥

۱۳۶۔ دولت رشتہ دار عمر عمل علم یہ پانچو واجب تنظیم ہیں انہیں پہلے سے دوسرا  
دوسرے سے تیسرا وغیرہ افضل ہے۔

۱۳۷۔ سجدہ براہمن کشتی ویشیہ کے جسکے پاس پانچ چیزیں ہوں بالائیں سے کوئی چیز  
زیادہ ہووے قابل تنظیم ہے اور نوی برس سے زیادہ عمر کا مشہور یعنی قابل تنظیم ہے۔

۱۳۸۔ رتھ سوانو نوے برس سے زیادہ عمر والا پھل دو چھ والا دعوت و برہم جاری  
در آجا دوشہ انہوں میں سے کوئی ایک آتا ہو تو اسکو راستہ دے یعنی آپ  
کنارے ہو جائے۔

۱۳۹۔ اور اہم خاص تذکرہ صدر باہم راہ کو راستہ دیوین اور ارجا برہم جاری کو آتا  
ہو دیکھا راستہ ہے ہٹ جائے۔

۱۴۰۔ جنیو کر کے جو شخص دید کو مع علم پوشیدہ کے چڑھانا ہے وہ آچارچ کھاتا ہے۔  
۱۔ دید کا ایک دیش اور دید کے چھ انگ ان سب کو جو کاکے لیے جوڑ دھاتا ہے  
وہ اپادھیا کھاتا ہے۔

ما تھنسا ماما تھلانی شہ شری پیتھنسا ॥ سہ پوجا گورو پتھی  
 سما تھلانی گورو پتھی ॥ ۱۳۱ ॥ ماما تھلانی پتھی سہ پوجا گورو  
 پتھی ॥ وی پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی ॥ ۱۳۲ ॥  
 پتھی مہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی ॥ ماما تھلانی  
 ماما تھلانی ماما تھلانی ॥ ۱۳۳ ॥ دشا پوجا گورو پتھی  
 ماما تھلانی ماما تھلانی ॥ ماما تھلانی ماما تھلانی  
 ماما تھلانی ॥ ۱۳۴ ॥ ماما تھلانی ماما تھلانی  
 ماما تھلانی ॥ ۱۳۵ ॥

۱۳۱۔ سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی  
 سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی

۱۳۲۔ سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی  
 سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی

۱۳۳۔ سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی  
 سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی

۱۳۴۔ سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی  
 سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی

۱۳۵۔ سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی  
 سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی سہ پوجا گورو پتھی

आयुषान्मबसौम्येतिवाचोविप्रोऽभिवादने ॥ अकारश्चा-  
 स्यनाम्नोऽन्नेवाच्यः पूर्वाक्षरः सुतः ॥ १२५ ॥ योनवेत्यभिवाक्ष्य  
 विप्रः प्रत्यभिवादनम् ॥ नाभिवाचः सविदुषायथाशूद्रस्तथैवमः  
 ॥ १२६ ॥ ब्राह्मणकुशलंष्टब्धेत्सत्रबन्धुमनामयम् ॥ त्रैश्वंसेमं  
 समागम्यशूद्रमारोग्यमेवच ॥ १२७ ॥ अवाच्योदीक्षितोनाम्ना-  
 यवीयानपियोभवेत् ॥ भोभवत्यूर्ध्वकंत्वेनमभिभायेतधर्मवि-  
 त् ॥ १२८ ॥ परपत्नीतयास्त्रीस्यादसंबन्धाचयोनितः ॥ तान्ब्रूया  
 इवतीत्येवंसुभोभगिनीतिच ॥ १२९ ॥ मातुलांश्चपितृव्यांश्च-  
 श्वसुरान्वत्विजोयुक्त् ॥ असावहमितिब्रूयात्यत्युत्थाययवी-  
 यशः ॥ १३० ॥

- ۱۲۵- اشیر باد دینے میں آئیں ہاں بھو سو سہ ایسا کہنا چاہیے نام کے اخیرین اکر  
 وغیرہ مرکبیت سے ترمائز آئیں کہنا چاہیے۔
- ۱۲۶- جو شخص اشیر باد دینے کے کلام کو نہیں جانتا اس کو پرنام کرنا چاہیے وہ  
 ستور کے مانند ہے۔
- ۱۲۷- براہمن سے کٹل کٹری سے آئے دیشیہ سے کیشم ستور سے آرد گیٹ  
 پوچھنا چاہیے۔
- ۱۲۸- جو آدمی اپنے سے چھوٹا ہے اور یکہ کرتا ہے اس کو یکہ میں بھو بھوت لفظ  
 سے بولنا چاہئے نام لیسا مناسب میں ہے۔
- ۱۲۹- جس عورت سے کسی طرح کا رشتہ نہیں ہے اس کو بھگے بھوتی بھگتی ایہی بن  
 کہہ پکارنا چاہئے۔
- ۱۳۰- ماحون - چچا ستر یکہ کرانے والا گردیہ سب اپنی عمر سے چھوٹے بھی ہیں  
 تو بھی انکو یہ کہہ کر کہ میں ظانا ہوں اٹھکر پرنام کرے۔



विद्ययेवसमंवांसंमर्तव्यं ब्रह्मादिना ॥ आपद्यपि हि धोरायां  
 नत्वेनामि रितो वपेत ॥ ११३ ॥ विद्या ब्राह्मणामेत्याह शेषधित्तेऽ  
 स्तिरक्षमा ॥ असूयकायमांसादास्तथास्यांवीर्यवत्तमा ॥ ११४  
 ॥ यमेवतु शुचिं विद्यानियतं ब्रह्मचारिणाम् ॥ तस्मै मां ब्रूहि वि  
 प्रायनिधिपाथाप्रमादिने ॥ ११५ ॥ ब्रह्मयस्वननुज्ञात अधीया  
 नाद्वाप्नुयात् ॥ सब्रह्मस्तेयसंयुक्तो नरकं प्रतिपद्यते ॥ ११६ ॥ लो  
 किकं वैदिकं चापितथा ध्यात्मिकमेव च ॥ आस्तीत्यतो ज्ञानं तं  
 पूर्वमभिवास्येत ॥ ११७ ॥ सावित्रीमात्रसारोऽपि चरं विप्रः  
 सुयन्त्रितः ॥ नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशीसर्जविजयी ॥  
 ॥ ११८ ॥

۱۱۳ - دۇنياست وید پرستنے والا خواہش میں سرچا لگ گئی ہی مصیبت میں دُور نا کو  
 اوسر زمین میں نہ ہو دے۔  
 ۱۱۴ - دُور براہمن کے پاس اگر کتنی ہے کہ میں تمھاری دولت ہوں میری حفاظت کر  
 سزا کر نیو اے کو کئے نہ تو میں بقدرت تمام تمھارے پاس رہوں گی  
 ۱۱۵ - جس براہمن کو پوٹرا اور پرہسم چاری اور دولت کی حفاظت کر نیو الا اور پریشید  
 جاؤ اس براہمن کو سمجھے دو۔  
 ۱۱۶ - گرو کی بلا اجازت جو کوئی وید کو پڑھتے پڑھاتے شکر سیکھ لیتا ہے وہ وید کا جو  
 ہے ترک میں جاتا ہے  
 ۱۱۷ - جس سے لوگ گیان یا وید گیان یا برہم گیان سیکھے اسکو پہلے پرنام کرے۔  
 ۱۱۸ - جو شخص مرگ گائتری جانتا ہو لیکن شاستر کے موافق نیام سے رتھا ہو وہ قابل  
 تقسیم ہے۔ اور جو تیزن وید کو پڑھا ہو لیکن سب چیز کا بیچنے والا دنا پاک چیز کا کھانے  
 والا وطان شاستر عمل کر نیو الا ہر وہ قابل تعلیم نہیں ہے۔

यः स्वाध्यायमधीतेऽब्धविधिनानियतः शुचिः ॥ तस्य नित्यं सार-  
त्येव ययोदधिघृतमधु ॥ १०७ ॥ अग्नीन्धनं भैसा चर्यामधः श-  
य्यां गुरोर्हितम् ॥ आसमावर्तनात्कुर्यात्कृतोपनयनो द्विजः ॥  
१०८ ॥ आचार्यपुत्रः शुश्रूषुर्ज्ञानदो धार्मिकः शुचिः ॥ आस-  
शक्तो र्यदः साधुः स्योऽध्याप्यादशधर्मतः ॥ १०९ ॥ नाष्टः क-  
स्यचिद्गुणान्नचान्यायेन पृच्छतः ॥ जानन्नपि हि मेधावी जडव-  
ह्लोक आचरेत् ॥ ११० ॥ अधर्मे राचयः प्राहयश्चाधर्मे राष्टच्छ-  
ति ॥ तयो रन्यतरः प्रैति विद्देवं वाधिगच्छति ॥ १११ ॥ धर्माथो य-  
न्न स्यातां शुश्रूषावापित द्विधा ॥ तत्र विद्यानयत्तव्या शुभं वी-  
जमिवोषरे ॥ ११२ ॥

۱۰۷- جو آدمی ایک سال تک پوتر ہو کر بدھ سے ہر روز وید کو پڑھتا ہے اسکو وہی دیتا ہے۔

۱۰۸- جبکہ جینو ہو گیا ہو وہ وید پڑھنے سے جب تک فارغ ہو جائے تب تک ہوں کرتا ہے اور بھی کچھ مانگے زمین پر سووے گڑو کی بھلائی میں رہے۔

۱۰۹- آچارچ کا بیٹا خدمت کر نیوالا و معزم کر نیوالا گیان دینے والا پوتر رہنے والا سیکھتا ہے۔

۱۱۰- بغیر پوجے کسی سے کوئی بات نہ کہے فریب سے پوجے تو بھی دے کے عقلمند آدمی اور ہونے پر بھی دنیا میں شل شے غیر منحک کے رہے۔

۱۱۱- جو آدمی ادمم سے پوجتا ہے اور جو ادمم سے کہتا ہے دونوں میں سے ایک ہے یا دہشتی پیدا ہو جاتی ہے۔

۱۱۲- جہان و معزم ارتقہ سیوانشا ستر کے موافق نہیں، وہاں بدیاد سکھانا کیونکہ عمر و بیج اور سر زمین میں سین لویا جاتا ہے۔



पूर्वासंन्यांजयंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्॥ यश्चिमानुसमा  
सीनः सम्यगृक्षविभावेनात्॥ १०१॥ पूर्वसंन्यांजयंस्तिष्ठेत्तै-  
शमेनोव्यपोहति॥ यश्चिमानुसमासीनोमलं हन्ति विवाकत-  
म्॥ १०२॥ नतिष्ठतितुयः पूर्वानोयास्तेयश्च यश्चिमात्॥ सशू-  
द्रवद्वहिन्कार्यः सर्वस्माद्विजकर्मणाः॥ १०३॥ अपांसमीयेनि-  
यतो नैतकं विधिमास्थितः॥ सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाररायं  
समाहितः॥ १०४॥ वेशोपकरो चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके॥ ना-  
नुराधोऽस्त्यनध्याये होममंत्रेषु चैव हि॥ १०५॥ नैत्यकेनास्त्यन-  
ध्यायो ब्रह्मसंनितस्ततम्॥ ब्रह्माह तिष्ठतं पुराय मनध्याय  
वयस्कृतम्॥ १०६॥

- ۱۰۱- پراتہ کال گائتری کا چپ کرتا رہے جب تک سورج کا روشن منوار سپٹح سائیکال  
میں جب تک تارے نہ دکھلائی دین۔  
۱۰۲- پراتہ کال کی سندھیا کرنے سے رات کا پاپ چھوٹ جاتا ہے اور سائیکال کی  
سندھیا کرنے سے دن کا پاپ چھوٹ جاتا ہے۔  
۱۰۳- جو آدمی دو دن وقت کی سندھیا نہیں کرتا ہے وہ شودر کی طرح دوج کرم سے  
باہر ہو جاتا ہے۔  
۱۰۴- خبگل میں جا کر پانی کے پاس ایک ل سوکر بدھ سے گائتری کا چپ کرے۔  
۱۰۵- وید کے جو چھ اگت ہیں ان میں اور تینہ کرم اور ہون کے منتر ان میں ہیں اور  
نیچے تعطیل کا پکار نہیں ہے۔  
۱۰۶- تینہ کرم میں جو منتر پڑھے جائے ہن من وہ تعطیل کے دن بھی خالی از ثواب  
نہیں ہیں۔

۱۰۷- یعنی شش-کلب-دیا کرت-نرکت-جوش-چھند

यच्चैतान्याभ्यासवान्यच्चैतान्कोवलास्त्यजेत ॥ प्रापगात्सर्व  
 कामानांपरित्यागो विशिष्यते ॥ ६५ ॥ नतथैतानि शक्यन्ते सं-  
 निधत्तु मनेषया ॥ विषयेषु प्रजुष्टानियद्याज्ञानेन नित्यशः ॥  
 ६६ ॥ वेदात्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च ॥ न विप्रदुष्टभा-  
 वस्य सिद्धिगच्छन्ति कर्हिचित् ॥ ६७ ॥ शुक्लास्पद्वाचद्वद्वाचमु-  
 क्ताघ्रात्वाचयो नरः ॥ न ह्यथ तिग्मलायती वासविज्ञे योजिते चि-  
 यः ॥ ६८ ॥ इन्द्रियारांतु सर्व्वेषां यदेकं क्षरतीन्द्रियम् ॥ तेनास्य  
 क्षरति प्रज्ञा हतेः पादादिबोहकम् ॥ ६९ ॥ वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं  
 संयम्य च मनस्तथा ॥ सर्वान्सन्साधयेदर्थानक्षिरावन्योगत-  
 स्तनुम् ॥ १०० ॥

- ۹۵۔ جس شخص کو سب چیزیں خاطر خواہ میسر مین اور خوش فانی ہوئی سب چیزیں کو ترک  
 کر دیتا ہے ان دونوں میں ترک کرینوالا بڑا ہے۔  
 ۹۶۔ نعمتوں کا ترک بغیر انکے استعمال کے نہیں ہوتا کیونکہ استعمال کرنے سے جب انکا  
 عیب نظر آتا ہے تب انکے ترک کرنے کو دل چاہتا ہے۔  
 ۹۷۔ جب کاسیٹھاؤ ٹوٹت ہے اسکو دیدیتا گت نیم۔ تپ۔ گیہیے کچھ سدھ  
 نہیں ملتی۔  
 ۹۸۔ جو شخص سننے اور چھونے اور دیکھنے اور استعمال کرنے اور سونگھنے سے خوش  
 ہوتا ہے اور بغیر انکے ناخوش ہوتا ہے وہ جینندری کہلاتا ہے۔  
 ۹۹۔ سب اندریوں میں سے ایک بھی اندری جہاں اپنے بے میں لگی برجھ جاتی  
 رہی جیسے چلنی سے پانی نکل جاتا ہے۔  
 ۱۰۰۔ عمدہ تدبیروں سے سب اندریوں کو اور دل کو اپنے قابو میں کر کے اسطرح پر کہ  
 جسمین جسم کو تکلیف نہونے پاوے سب مرادوں کو حاصل کرے۔

एकादशेन्द्रियाराध्याहर्था निपूर्वेमनीधिराः॥ तानि सस्यव्यव-  
 ह्यामियथावदनुपूर्वशः॥ ८६॥ श्रोत्रं त्वक् चक्षुः शिखानासि-  
 का चैव पंचमी॥ पायु पस्थं हस्तपादं वाक् चैव दशमी स्मृता॥ ८७॥  
 बुद्धिर्द्विषाणि पंचैवांशो तादीन्यनुपूर्वशः॥ कर्मेन्द्रियाणि  
 पंचैवांशो तादीनि प्रचक्षते॥ ८८॥ एकादशं मनोज्ञं चैव गुरो-  
 नोभयात्मकम्॥ यस्मिंश्चित्ते जिता वै तो भवतः पंचको गुरो-  
 ॥ ८९॥ इन्द्रियाराणां प्रसंगेन होय स च्छत्यसंशयम्॥ स नित्यम्  
 तु तानेव ततः सिद्धिं निश्च्यति॥ ९०॥ न जालु कामः कामाना-  
 शुपभोगेन शास्यति॥ हविषा कथावर्त्ते वभूय स वा भिवर्द्धते  
 ॥ ९१॥

۸۹- اگلے پنڈون نے جو گیارہ اندریاں کہی ہیں ان سب کو ٹھیک ٹھیک کہتے ہیں۔

۹۰- سامہ۔ باصترہ۔ شامہ۔ وایہ۔ لامہ۔ ہاتھ۔ پاتون۔ زبان۔  
 مقام پشاپ۔

۹۱- ان سب میں پہلے پانچ گیان اندری کہلاتی ہیں اور دس پانچ کرم اندری کہلاتی ہیں۔

۹۲- گیارہ ان میں ہے جو اپنی صفتوں سے گیان اندری اور کرم اندری سے نامزد ہیں۔  
 سن کو جیتنے سے دس اندری جیتی جاتی ہیں۔

۹۳- اندریوں کی شکست میں پڑنے سے جو دکھی ہوتا ہے اور اندریوں سے ترک تعلق  
 کرنے سے جو بدھ کو پاتا ہے۔

۹۴- جس چیز کی خواہش میں بچے دل کو ہوتی ہے اسکے بل جانے پر بھی آسودہ نہیں ہوتا  
 بلکہ اور خواہش زیادہ ہوتی ہے حطرح کھی پانے سے آگ تیز ہوتی ہے۔

दशन्तिसर्वावैदिकोजुहोतियजतिक्रियाः॥ अस्मरं दुष्करं जेयं  
 ब्रह्म चैव प्रजापतिः॥ ८४॥ विधियज्ञाक्षययज्ञो विशिष्टो दश-  
 भिर्भुजोः॥ उपांशुः स्याच्छतगुराः साहस्रो मानसः स्मृतः॥ ८५॥  
 ॥ ये पाकयज्ञाश्चत्वारो विधियज्ञसमन्विताः॥ सर्वे ते जपयज्ञ-  
 स्य कलानाहंति योऽशीम्॥ ८६॥ जप्येनैव तु संसिध्येद्वाह्नरातो  
 नात्र संशयः॥ कुर्यादन्यन्नवाकुर्यान्मैत्रोवाह्नरा उच्यते॥ ८७॥  
 ॥ इन्द्रियाणां विचरतां विषयेष्वपहारिषु॥ संयमेयत्नमाति-  
 चेद्ब्रह्मन्यत्तेन वा जिनाम्॥ ८८॥

۸۴۔ دیدین لکھی ہوئی سب کربانیاں ہونے والی ہے مگر اونگ جو برہم کا روپ ہے

لا زوال ہے۔

۵۸۔ گیٹ سے آپائنس جب دوش گنا زیادہ ہے جبکو پاس کے رہنے والے بھی نہ  
سُنین سن پڑنے والے جیٹ سے آپائنس جب سو گنا زیادہ ہے اور جو جیٹ لین  
چیٹ چا پ کیا جاے اونہم نہ ہلین تو وہ جیٹ آپائنس سے ہزار گنا زیادہ  
ہے

۸۶۔ اور جو چار پاک گیتے ہیں اور بدعسم گیتے یہ سب چار گیتے کے سولہویں حصہ کو بھی نہیں پہنچتے۔

۸۷۔ برہن سب جانداروں سے محبت رکھے اور صرف چپ ہی کو کرے تو  
سب مدد ہوئی ہے۔

۸۸۔ اپنے اپنے نشیون سے اندریون کو رد کے اہل طرح کہ جیسے رتھوان گھوڑے کے  
کمال سے روکتا ہے۔

۸ یعنی آنکھ کو دیکھنے سے زبان کو ذائقہ سے ناک کو سونگھنے سے بدن کو چھونے سے کان کو سنیے سے روکے۔

सतदक्षरमेतांच जपन्व्याहति पूर्विकाम् ॥ संध्ययोर्वेदविद्विप्रो  
वेदपुरायेन युज्यते ॥ ७८ ॥ सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतत्त्रि-  
कं द्विजः ॥ सहतोऽप्येन सोमासात्त्वचेवाहिर्विमुच्यते ॥ ७९ ॥  
सतयर्चा विसंयुक्तः काले च क्रियया स्वया ॥ ब्रह्मसन्नियवि-  
द्यो निर्गहं रां याति साधुषु ॥ ८० ॥ ॐ कारपूर्विकास्ति सोम-  
ह व्याहृतयोऽव्ययाः ॥ त्रिपदा चैव सावित्री विशेयं ब्रह्मरा-  
मुच्यते ॥ ८१ ॥ यो धीतेऽहन्यहन्येतां स्त्रीणां वर्षा रायतन्द्रितः ॥  
स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः स्वमूर्तिमान् ॥ ८२ ॥ सकाक्षरं परं  
ब्रह्म प्राणायासाः परंतपः ॥ सावित्र्यास्तु परं नास्ति मौनात्स-  
त्यं विशिष्यते ॥ ८३ ॥

८० - اوزنگ مجبوه مجبوه سوه اسكو اور گاميتري کے تينون چرون کو دو لون سندھيا  
مين ويد پڑھنے والا براہمن جب کرسے تو سپورن پڻ پراپت ہون  
۸۱ - اچھين تينون کو باہر جا کر ہزار بار ایک مہینہ تک پڑھے تو بڑے پاسے چھوٹ  
جائے جسطرح سانپ کپیل سے چھوٹتا ہے  
۸۲ - جو براہمن کشتري ویشیہ ان تينون کو اپنے وقت پر نہیں پڑھتا ہے اسکی سادھ  
لوگ نندا کر لے تین -  
۸۳ - یہی تينون اپنی اوزنگ مجبوه مجبوه سوه گاميتري وید کا لکھ ہے اور پر پاتا کے ٹٹے  
کا دروازہ ہے -  
۸۴ - جو شخص کا ہلی چھوڑ کر تین برس تک ہر روز اچھين تينون کو پڑھے وہ بنگل  
ہو کر برہم پدوی کو حاصل کرے  
۸۵ - اوزنگ یہ پر برہم ہے پرانا یام پر پت ہے گاميتري سے بڑا کوئی نہیں ہے  
پ پ رہنے سے سیر بولتا اچھا ہے -

व्यत्यस्तपाणिनाकार्यमुपसंग्रहांगुरोः॥सञ्चैनसञ्चःस्पृ-  
 ष्यन्वोदसिरोनचदक्षिणः॥७२॥अध्येष्यमारांतुगुरुर्नित्य  
 कालमतद्धितः॥अधीव्यभोइतिब्रूयाद्विशामोऽस्त्वितिचा-  
 रमेत॥७३॥ब्रह्मणाःप्रणावंकुर्यादादावन्तेचसर्वदा॥सबत्य  
 नोंकतंशूर्वपुरस्ताच्चविशीर्यति॥७४॥प्राकूलान्ययुपासी-  
 नःयवित्रैश्चैवपावितः॥प्रणापामैस्त्रिभिःपुतस्ततश्चोका-  
 रमर्हति॥७५॥अकारंचायुकारंचमकारंचप्रजापतिः॥वे-  
 दत्रयान्निरदुहद्भुवःस्वरितीतिच॥७६॥त्रिस्यसबतुवेदेभ्यः  
 पावंपादमदुहदुहत्॥तदित्यूचोऽस्याःसावित्र्याःपरमेष्ठीप्र-  
 जापतिः॥७७॥

۷۲ - گرد کے سامنے ہو کر داہنے ہاتھ سے داہنے چل کر اور بائیں ہاتھ سے بائیں  
 چل کر چھوئے۔

۷۳ - گرد حکم دے تب چپا پڑھے اور جب چپ پڑھے تو کے تب چپ رہے چل کر  
 گرد کے حکم سے پڑھے اور چپ رہے۔

۷۴ - سبق کے آغاز و اختتام پر پرپو اپنی اولیٰ کار کے اگر نہ کہے تو پڑھ بھول  
 جاتا ہے۔

۷۵ - پورب ہنم کش کے آسن پر بیٹھ کر پوتر پتر سے پوتر ہو کر تین بار پرانا یا ام کر  
 تب اول کار کرنے کے لائق ہوتا ہے۔

۷۶ - اکار کار مکار ان تینوں اکشروں کو اور مچوہ مچوہ سوہ اکو بھی بھاجی تینوں  
 وید سے نکالا۔

۷۷ - اٹھیں تینوں وید سے ایک ایک پاؤ گا متری کا برہاجی لئے نکالا۔

अमन्त्रिकातुकार्येयंस्त्रीराामाहशेषतः॥ संस्कारार्थं शरीर-  
स्य यथाकालं यथाक्रमम् ॥ ६६ ॥ वैवाहिकोविधिस्त्रीराां सं-  
स्कारो वैदिकः स्मृतः ॥ यतिसेवागुरौवासोगृहार्योऽग्निपरिक्रि-  
या ॥ ६७ ॥ सयशोत्तां द्विजातीनामौपनायनिकोविधिः ॥ उत्प-  
त्तिव्यञ्जकः पुरायः कर्मयोगं निबोधत ॥ ६८ ॥ उपनीयगुरुः शि-  
ष्यं शिष्येच्छोचमादितः ॥ आचारमग्निकार्यचमन्धोपास-  
नमेव च ॥ ६९ ॥ अध्येष्यसारास्वाचान्तो यथाशास्त्रमुद्भू-  
तः ॥ ब्रह्माञ्जलिस्ततोऽध्यापोलघुवासाजितेन्द्रियः ॥ ७० ॥ ब-  
ह्मरम्भोऽवसाने च पादौ ग्राह्यौ गुरौ सदा ॥ संहृत्य हस्तावध्येयं  
सह ब्रह्माञ्जलिः स्मृतः ॥ ७१ ॥

۶۶۔ یہ سب سنسکار عورتوں کے بلا ذریعہ منتر کے کرنا چاہیے مگر انکو جو وقت پر صریح سے  
کہا ہے اسی طرح کرنا چاہیے  
۶۷۔ عورتوں کا بواہ بموجب منتر کے ہونا یہی منتر کا سنسکار ہے بت کی سیوا کرنا  
کے گھر میں رہنا ہے اور گھر کا کام کاج یہی ان کی سیوا ہے۔  
۶۸۔ تینوں دن کا جینو کہا وہ نہایت ثواب ہے اس سے دوسرا حجم ہوتا ہے آپ  
اسکے بعد کرم یوگ کو کہتے ہیں۔  
۶۹۔ گرد کو چاہئے کہ پہلے پوتر یا آچاراگن کی سیوا تینوں وقت کی سندھیا ان سب باتوں  
چیلے کو پہلے سکھا دے۔  
۷۰۔ بموجب حکم منتر کے پڑھتے وقت آچن کر کے پورب رخ ہاتھ جوڑ کر جینیدی  
ہو کر چھوٹا کپڑا تنیکر چیلے رہے۔  
۷۱۔ ہر روز سونے کے آغاز و اختتام پر دونوں ہاتھ سے گرد کے چرنوں کو  
چھوئے۔





पूजयेदशनं नित्यमद्याद्यैतदकुत्सयन् ॥ दद्याद्द्व्येत्तसीरेचप्र-  
तिनन्देच्चशर्वशः ॥ ५३ ॥ पूजितं ह्यशनं नित्यं बलसूर्जे च यच्छ-  
ति ॥ अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयनाशयेदिसम् ॥ ५४ ॥ नोच्छिष्टं क-  
स्यचिद्दद्यान्नाद्याद्यैव तथा चरा ॥ न चैवात्यशनं कुर्यान्न चोच्छि-  
ष्टः कचिद्भजेत् ॥ ५५ ॥ अनरो गमनायुष्यमस्यर्घ्यं चातिभोजन-  
म् ॥ अपुराणं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिर्वर्जयेत् ॥ ५६ ॥ ज्ञात्वा  
विप्रस्तीर्थेन नित्यं कालमुपस्थशेत् ॥ कायं प्रैदशिकाभ्यां वा न-  
पि त्र्येणाकराचन ॥ ५७ ॥ अंगुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्ष-  
ते ॥ कायमंगुलिमूलेऽप्रेरेवं पितृन् तयो रथः ॥ ५८ ॥

۵۴- ہر روز ان کی پوجا کرے اور ان کی توہین نہ کرے اور ان کو دیکھ کر  
خوش ہو کر یہ کہہ کر ہمک ہریت ایسا ان سے بھوجن کرے۔

۵۵- ان کی پوجا کرنے سے بیچ اور اندری شکست دونوں پڑھتے ہیں  
اور پوجا کرنے سے اچھین دونوں کا ناش ہو جاتا  
ہے۔

۵۶- جو ٹھاکسی کو نہ دے دن اور رات کے بیچ میں بھوجن نہ کرے بہت  
بھوجن نہ کرے جو تھے منہ کھین نہ جائے۔

۵۷- بہت بھوجن کرنا عمر و تندرستی و بہشت و شراب کی واسطے نہیں ہے اور دنیا  
میں باعث برنامی ہے۔

۵۸- براہمن ہمیشہ برہم تیرتھ سے آچمن کرے دیو تیرتھ پتر تھو پر جاپت تیرتھ  
سے آچمن نہ کرے۔

۵۹- انگوٹھا - تریچٹا - کشٹھا - ان تینوں کا مूल سلسلہ سے یشیم تیرتھ سے پتہ  
پر جاپت کہلاتا ہے۔

प्रतिशुद्धोष्मितं दराड सुपस्था यचभास्वरम् ॥ प्रदक्षिरां परीत्या  
 गिनं चरेद्देसं यथा विधि ॥ ४८ ॥ भवत्पूर्वचरेद्देसमुपनीतो द्विजो-  
 त्तमः ॥ भवत्पार्श्वं दराज न्योर्वैश्यस्तु भवदुत्तरम् ॥ ४९ ॥ मातरं-  
 वा स्वसारं वा मातुर्व्याभगिनीं निजाम् ॥ भिक्षेत भिक्षां प्रथमं-  
 याचेनं नावमानयेत् ॥ ५० ॥ समाहृत्य तु तद्देसं यावदर्थममाय-  
 या ॥ निवेद्य गुरवेऽग्नीयादा च म्यप्राडः सुखः सुचिः ॥ ५१ ॥  
 आपुष्पं प्राडः सुखो भुंक्ते यशस्यं दक्षिरामुखः ॥ अयं प्रत्य-  
 ड् सुखो भुंक्ते ऋतं भुंक्ते ह्युदङ् सुखः ॥ ५२ ॥ उपसृज्य द्विजो नि-  
 त्यमन्नमद्यात्ममाहितः ॥ शुक्ला चोपसृशेत्सम्यगद्भिः स्वा-  
 निचसंस्पृशेत् ॥ ५३ ॥

۴۸- ڈیڑھ صاعن کر کے سو بچ کے شکمہ ہو کر اگن کی پردکشنا لینے طوات کر کے طریق  
 مندرجہ ستر سے بھیگھ مانگے  
 ۴۹- برائے کشتری ویشیہ متیون ورن کے برہم جاری بھیگھ مانگنے کے الفا طین سلسلہ  
 کے موافق اول و درمیان و آخر میں بھوت لفظ کو تمبین گے  
 ۵۰- پہلے مان بہن موسی سے بھیگھ مانگے اور جو برہم جاری کا اہمان مینے توہین  
 کر کے اس سے بھی مانگے۔  
 ۵۱- پہلے ہو کر بھیگھ مانگ کر گورو کے پاس رکھے پھر آجین کر کے پوتر ہو کر پورب منہ  
 بیٹھ کر بھوجن کرے۔  
 ۵۲- پورب۔ دکش۔ پشیم۔ اتر کی طرف منہ کر کے بھوجن کرنے سے سلسلہ کے موافق منہ  
 نیکی نامی دولت راستی کی ترقی ہوتی ہے۔  
 ۵۳- ہر روز دل کو میو کر کے بعد آجین کرنے کے بھوجن کرے اور بھوجن کے بعد پھر  
 آجین کرے اور اندر لوہن کو پانی سے چھوے۔

सौजीविहत्समाश्लक्षणाकार्याविप्रस्यमेरवता॥ सत्रिय-  
 स्यतुसौवीज्यावैश्यस्यशरातान्वी॥४२॥ मुंजालाभेतुकते  
 व्याःकुशाश्मन्तकवल्बजैः॥ त्रिहताग्रन्धिर्नैकेन त्रिभिः पंच-  
 भिरेववा॥४३॥ कार्यासमुपवीतस्याद्विप्रस्योर्ध्ववतंत्रिहता॥ श-  
 रास्त्रयमयंराज्ञोवैश्यस्याविकसौत्रिकम्॥४४॥ ब्राह्मणोवैल्ह  
 पालाशोसत्रियोवाट्वादिरो॥ पैलवौदुम्बरोवैश्योदंडानर्ह-  
 निधर्मतः॥४५॥ केशान्तिकोब्राह्मणस्यदण्डः कार्यः प्रमा-  
 नातः॥ ललाटसंमितोराज्ञः स्यात्तुनासान्तिकोविशः॥४६॥  
 वृजवस्तेतुसर्वस्युरब्रणाः सौम्यदर्शनाः॥ अनुद्वेगकरान्द-  
 शांसत्वचोनाग्निहृयिताः॥४७॥

۴۲- برہمن کی سوچ کی میکھلاتین لڑکی اور کشتری کو نوردا کی ڈوکر کی اور ویشیہ کی  
 سن کی تین پینا چاہئے۔

۴۳- اگر سوچ اور داسن نہ ملین تو کٹش بھیرا بگئی کی تین لڑکی کرنا چاہئے ایک یا تین یا پانچ  
 گانٹھ کی کرنا چاہئے گل کی ریت کے سوائے نہ یہ کہ برہمن ایک کشتری دو ویشیہ تین گانٹھ کی بھین  
 ۴۴- برہمن کو کپاس کا جھینو کشتری کو سن کا ویشیہ کو بھیر کے باتون کا پینا چاہئے سو  
 کسطح کی تگنا کر کے پھر تگنا کرنا۔

۴۵- برہمن پیل یا پلاس کا ڈنڈ و معارن کرے اور کشتری برہما بھیر کا اور ویشیہ پیلو  
 یا گولر کا۔

۴۶- شر کے باتون تک برہمن اور پشانی تک کشتری اور ناک تک ویشیہ ڈوکر کو پھان  
 کریں۔

۴۷- سب ڈنڈ ملائم و صاف و بے سوراخ و خوبصورت ہوں بد صورت یا آگ سے  
 داغدار نہ ہوں۔

गर्भाष्टमेऽङ्कुर्यते ब्राह्मरास्योपनायनम् ॥ गर्भादेकादशे  
 राज्ञोर्गर्भात्तुद्वादशे विशः ॥ ३६ ॥ ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यवि-  
 प्रस्य पंचमे ॥ राज्ञो बलार्थिन षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे ॥ ३७ ॥  
 ॥ आयोडशाद्ब्राह्मरास्यसावित्रीनातिवर्त्तते ॥ आद्वाविंश-  
 त्सत्रवन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ३८ ॥ अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्ये-  
 तेषु या कालमसंस्कृताः ॥ सावित्रीयतिता ब्राह्म्या भवन्त्याय-  
 विगर्हिताः ॥ ३९ ॥ नैतैरधूतैर्विधिवदापचयिहिकर्हिचित्  
 ॥ ब्राह्मरायीनां च सप्तम्यन्नाचरेद्ब्राह्मराः सह ॥ ४० ॥ का-  
 र्या रोश्च वास्तानि चर्माणि ब्रह्मचारिणः ॥ वसीरन्नानु-  
 र्वेराशारासौमादिकानि च ॥ ४१ ॥

۳۶- روز قیام حمل یا روز دالالت سے آنکھوین - گیارھوین - بارھوین برش بہ ترتیب  
 سلسلہ براسن - کشتری ویشیہ کا جنیو کرنا چاہئے -  
 ۳۷- برہم پیچ اور پٹل اور دھن کی اچھا ہو تو سلسلہ کے موافق براسن کشتری برہم  
 پانچوین چھوین - آنکھوین برش جنیو کریں -  
 ۳۸- سوگہ - بائیس - چوبیس برش تک بہ ترتیب سلسلہ براسن کشتری ویشیہ گاتیرہ برش  
 ۳۹- اس کے بعد تینوں دن اس کے اوجھکاری نہیں بننے تک ان کا نام برایتہ کہلاتا ہے اور  
 آریا لوگ انکو برا کہتے ہیں -  
 ۴۰- جب تک لیے براسن پر اشپت یعنی کفارہ نہ کریں تب تک انھوں کے ساتھ پڑھنے پڑ  
 وادہ شادی وغیرہ کامیو ہارنکے -  
 ۴۱- اب ان تینوں دنوں کے برہم یاریوں کا چڑا وغیرہ نہیں کہتے ہیں - کہ کالاسن برش  
 کرا کا چڑا برہم کشتری ویشیہ سلسلہ کے موافق اوپر جسم میں اور سن میں بھرتی کرنا  
 کپڑائیچے کے بدن میں دھارن کریں -

नामध्वेयं दशम्यालुहादस्यां वास्यकारयेत् ॥ पुरायेति यौगुह-  
र्त्तवानसन्नेवागुराणां चिते ॥ ३० ॥ मंगल्यं वाहारास्यस्यात्वाचि-  
यस्य बलाचितम् ॥ वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु शुभितम् ॥  
३१ ॥ शर्मन्वाहारास्यस्याहोरासमन्वितम् ॥ वैश्यस्य  
शुभिसंयुक्तं शूद्रस्य धनसंयुतम् ॥ ३२ ॥ स्त्रीणां सुखोद्यमकूरं  
विस्पष्टार्थमनोद्वयम् ॥ मंगल्यं दीर्घवर्गाक्षमाशीर्वादाविधान-  
वतम् ॥ ३३ ॥ चतुर्थे मासिकर्तव्यं शिशो निष्क्रमणं गृहात् ॥ य-  
ष्टेऽन्तप्राशनं मासि यद्वैद्यं मंगलं कुले ॥ ३४ ॥ चूडाकर्मादिना  
तीनां सर्वेषामेव धर्मतः ॥ प्रथमेऽवेहतीये वा कर्तव्यं शुति-  
चोदनात् ॥ ३५ ॥

۳۰۔ پیدائش سے گیارہواں یا بارہواں دن تمام مکران کرنا چاہئے اگر ان دنوں  
نہ ہو سکے تو اور کسی اچھی تہہ اور کشتہ اور دن میں کرنا چاہئے۔

۳۱۔ برہمن کے نام میں لفظ سنگل یعنی خوشی اور کشتہ کے نام میں لفظ بل یعنی طاقت اور  
دیشیہ کے نام میں لفظ دھن یعنی دولت اور شورو کے نام میں لفظ نندا یعنی تحقیر مل کرنا چاہئے  
۳۲۔ برہمن کشتہ۔ دیشیہ شورو۔ انھوں کے نام کے اخیر میں لفظ مکر کرنا چاہئے  
پریشیہ جب سلا شامل کرنا چاہئے۔

۳۳۔ عورت کا نام ایسا رکھنا چاہئے کہ جو فرحت انگیز ہو اور نرم اور سلا اور پیارا اور خوشی  
اور دعا کے معنی رکھتا ہو اور اذیت کا حرف اعراب کامل رکھتا ہو۔

۳۴۔ چوتھے مہینہ لڑکے کو گھر سے باہر لگانا چاہئے اور چھٹے مہینہ یا جن مہینہ میں  
کل کی ریت ہو ان پر اش کرنا چاہئے۔

۳۵۔ برہمن کشتہ دیشیہ ان سب کا جوڑا کرکے یعنی نوڈن پہلے یا تیسرے برہن کرنا چاہئے  
یہ وید کا حکم ہے۔

सताद्धिजातयोदेशान्नां योरेन्यथलतः ॥ २३ ॥ अस्तुयस्मिन्कस्मि  
न्यानिवसेद्वृत्तिकर्षितः ॥ २४ ॥ गृध्राधर्मस्यवोयोनिः समासेन प्र-  
कीर्तिता ॥ संभवश्चात्यसर्वस्यवर्षाधर्मान्निबोधत ॥ २५ ॥ वै-  
दिकैः कर्मभिः पुराणैर्नियेकारिर्द्विजन्मनाम् ॥ कार्यः शरीरसं-  
स्कारः पावनः प्रेत्यवेह्य ॥ २६ ॥ गार्भोर्होमैर्जातकर्मचौडमौंजी  
निबन्धने ॥ वैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामप्यसृज्यते ॥ २७ ॥ स्वा-  
ध्यायेन व्रतैर्होमैस्वैविधेनेज्ययासृते ॥ सहायजैश्च यज्ञैश्च ब्रा-  
ह्मीयं क्रियते तनुः ॥ २८ ॥ प्राङ्नाभिर्वर्धनात्संभोजातिकर्मवि-  
धीयते ॥ मंत्रवत्याशनं चास्य हिंसायमधुसर्पिषाम् ॥ २९ ॥

۲۴- براہمن کستری ویشیہ تذبیر کے ساتھ اس ملک میں رہیں اور شور و جہلکلیفہ سے  
چاہے جس ملک میں رہیں۔

۲۵- بھگ جی کہتے ہیں کہ اسے رش لوگوں کو اچھے سب کی پیدائش اور دھرم کو بیان  
کیا اب درون کا دھرم کہتے ہیں۔

۲۶- براہمن کستری ویشیہ کو گر بھادھان وغیرہ منتر کا سنکار لوگ اور پرلوک میں پور کرنا  
ہے اسلئے ان سنکاروں کو کرنا چاہیئے۔

۲۷- گر بھو سنکار جات کرم بوند ان آئین ان سنکاروں سے براہمن کستری ویشیہ کے سچ کا  
اور گر بھو کا درون چھوٹ جاتا ہے۔

۲۸- وید کا پڑھنا۔ برت۔ ہون۔ تریبیدھ۔ نام برت۔ دیورش۔ پترؤن کا  
ترپن۔ پتر کی آئین۔ مایگیہ۔ یگیہ۔ ان سب کرموں سے یہ منتر پرکوش پالنے کے  
لائق ہوتا ہے۔

۲۹- نال چھیدن سے پہلے جات کرم ہوتا ہے اس میں منتر پڑھ کر درق ملنا و  
دکھی ٹوکے کو کھانا چاہیئے۔

तस्मिन्देशेय आचारः पारंपर्यक्रममागतः ॥ वर्यानां सान्द्रगाला  
नां समदाचार उच्यते ॥ १८ ॥ कुरुक्षेत्रं च मत्स्याञ्च पंचालाः शू-  
रसेनकाः ॥ सबचक्षुर्विदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः ॥ १९ ॥ सतदे-  
शप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ॥ स्वस्वंचरित्रं शिषेरन्मृषिव्यां  
सर्वमानवाः ॥ २० ॥ हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि  
॥ प्रत्यगोचप्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ २१ ॥ आसमुद्राक्षुषे  
पूर्वो राममुद्राक्षुषश्चिमातः ॥ तयोरेवान्तरं गिर्यो गार्यावर्तौ विदु-  
र्बुधाः ॥ २२ ॥ कृष्णासारस्तु चरति स्योयत्र स्वभावतः ॥ स ज्ञेयो  
यज्ञियो देशोऽस्लेच्छदेशस्त्वतः परः ॥ २३ ॥

۱۸- سب درون اور درون سنگردن کا اس دیش میں جو آچار چلا آیا ہے وہ سداچار  
کہلاتا ہے

۱۹- برہادرت کے متصل کر کشیتر- نتیجہ پنیائے- شوشنیک سے یہ دیش برہم ریشوں کے  
۲۰- تمام مردمان عالم پیدائش اپنی اس ملک کے رہنے والے براہمنوں سے جانیں  
۲۱- ہماچل اور ہندھیا چل کا پچ و تثن کے پورب اور پورب کے پچم ہندھیا دیش کہلاتا ہے  
۲۲- مشرقی سدر سے لیکر مغربی سدر تک اور ہماچل اور ہندھیا چل کا درمیان آریا  
کہلاتا ہے۔

۲۳- کالاہرن اپنے بسھاؤ سے جس دیش میں رہے وہ دیش یکمہ کرنے کے لائق  
ہے اُسکے آگے ملگیش دیش ہے۔

۲۴- سداچار۔

۲۵- تھانیشر کے اتر و پچیم ہمالیہ پہنچ و جبل دیا کے پچ کالک۔

۲۶- دیہ سدا۔

۲۷- حصار کے قریب۔

वेदः सृष्टिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मानः ॥ सतचतुर्विधं प्राहुः  
 साक्षाद्भर्मस्य लक्षणम् ॥ १२ ॥ अर्थकामेष्वसत्तानां धर्मज्ञानं नि-  
 धीयते ॥ धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमारां परमं शुतिः ॥ १३ ॥ शुति-  
 द्वैधनुयत्र स्यात्तत्र धर्मा बुभुक्षुः ॥ उभावपि हितो धर्मो सम्य-  
 गुक्तो मनीषिभिः ॥ १४ ॥ उदितेऽनुदिते चैव समयाध्युषिते तथा  
 ॥ सर्वथा वर्तते यज्ञ इतीयं वैदिकी शुतिः ॥ १५ ॥ निवेकादिशमशा-  
 नान्नामंत्रैर्यस्योदितो विधिः ॥ तस्य शास्त्रेऽधिकारोऽस्मिन् ज्ञे-  
 यो नान्यस्य कस्यचित् ॥ १६ ॥ सरस्वती हय इत्योर्देवनद्योर्थ इतर-  
 म् ॥ तदेव निर्मितं देशं ब्रह्मा वर्तं प्रचक्षते ॥ १७ ॥

۱۲- وید اور شاستر اور اچھے لوگوں کا طریقہ جس سے اپنے دل کو تپا اطمینان ہو یہ چاروں  
 دھرم کے لکشن ہیں۔  
 ۱۳- ارتھ اور کام کی جو خواہش نہیں ہے اس کو دھرم اور گیان کا ادھکار ہے  
 اور جو دھرم جاننے کی خواہش ہے اس کو صرت دید ہی پرمان ہے۔  
 ۱۴- جس کام کے کرنے میں شاستر دو طرح کے حکم لکھتا ہے ائمین و دونوں درجہ  
 ہیں اس بات کو اچھے پرکار سے پیڑتوں نے کہا ہے۔  
 ۱۵- سورج کے اوتے میں اور سورج کے است میں اور سورج اور کشتی کے  
 منوں میں یہ تینوں وقت ہوں کرنے کو دید میں کہ ہیں ائمین جو اچھا معلوم ہو  
 کرے۔

۱۶- جہنم سے مرن تک جب کائنات کا منتہی سے ہوتا ہے دینے براہمن کشتی و شیبہ  
 اہن تینوں درون کا ادھکار اس شاستر میں جانتا اور کیا ادھکار نہ جانتا۔  
 ۱۷- دیوتاؤں کی ندری جو ہر سوتی اور در کھداتی ہے ان دونوں کے بیچ جو ملک ہے  
 اس کو آریاوت کہتے ہیں۔



वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विद्वान् ॥ आचारस्यैव साधू  
नामात्मनस्तु स्थिरे च ॥ ६ ॥ यः कश्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना परि-  
कीर्तितः ॥ स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः ॥ ७ ॥ सर्व-  
तु स मवेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचसुषा ॥ श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वा-  
न्त्वधर्मे निविशेते ॥ ८ ॥ श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन्निमा-  
नवः ॥ इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥ ९ ॥ श्रुति-  
स्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वेदस्मृतिः ॥ ते सर्वा ये व्यमीमांसे  
ताभ्यां धर्मो हि निर्वर्तते ॥ १० ॥ योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्रा-  
याद्विजः ॥ स साधुभिर्विद्वद्कार्यो नास्ति को वेदनिन्दकः ॥ ११ ॥

- ۶ - وید کا قول اور وید جاننے والوں کا قول و فعل و ساو دھرم لوگوں کا فعل اور وہ فعل صیغہ کرنے سے ایسا فعل مطین ہو یہ سب دھرم کے قبول میں -
- ۷ - سب باتوں کے جاننے والے میں جی نے جسکا جو دھرم اس شاستر میں کہا ہے سب وید میں ہے -
- ۸ - ہر شخص کو بحکم عقل و اعتقاد کے وید و شاستر پر نظر کر کے اپنے دھرم پر ثابت قدم رہنا چاہئے -
- ۹ - جو شخص وید و شاستر میں کے ہوئے دھرم پر چلتا ہے وہ دنیا میں نیکیاں اور عاقبت میں عیش و جاودانی حاصل کرتا ہے -
- ۱۰ - وید اور شاستر پر بحث لا طائل کر کے اسے طعن نہ لگانا چاہئے کیونکہ انھیں دونوں سے دھرم نکلا ہے -
- ۱۱ - جو شخص وید کے احکام کو بذریعہ علم و منطق غلط سمجھ کر وید اور شاستر کی توہین کرتا ہے وہ ناستک بننے کا نسر ہے اور اسکو دھرم لوگ اپنی منڈلی سے باہر کر دیں -

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः ॥ हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो  
 धर्मस्तन्निबोधत ॥ १ ॥ कामात्मतानप्रशस्तानचैवेहास्त्यकाम-  
 ता ॥ काम्योहिवेशधिगमः कर्मायोगश्चैवैदिकः ॥ २ ॥ संकल्प  
 मूलः कामो वैयज्ञाः संकल्पसमावाः ॥ त्रतानियमधर्माश्च सर्वे  
 संकल्पजाः स्मृताः ॥ ३ ॥ अकामस्य क्रियाकाचिद्दृश्यते नेह  
 कर्हिचित् ॥ यद्यद्विकृतं किंचित् तत्कामस्य चेष्टितम् ॥ ४ ॥ ते  
 सम्यग्दर्तमानो गच्छत्यमरलोकताम् ॥ यथा संकल्पितां चैह-  
 सर्वां कामानामनुते ॥ ५ ॥

- ۱- دوستی و دشمنی سے علیحدہ اچھے بیڑت لوگوں نے دھرم کی پیروی کی ہے اور وہ دھرم کلیان کرنے والا ہے اس دھرم کو مجھے سنیے۔
  - ۲- کہ پھل کی چھان سے کوئی کام کرنا اچھا نہیں ہے اگرچہ اس پھل کے بھوگنے کی واسطے جنم لینا پڑتا ہے اور جو نتیجہ کرم اور نتیجہ ہے وہ معاون حصول معرفت ہو کر مکت دینے والا ہے بلکہ اس بیان سے عام فہم کی مخالفت نہیں ہے کیونکہ تمام بیان متعلق دھرم مندرجہ ویرشا ستر عین خواہش ہی ہے۔
  - ۳- اچھا۔ یکم۔ برت۔ نیم۔ دھرم یہ سب تکلیف دینے اس کام سے یہ پھل ہو کر لے
  - ۴- برہمن سے پیدا ہوتے ہیں۔ اوروں کو کچھ ہوتا ہے سب اچھا ہی ہے۔
  - ۵- بغیر اچھا کے اگر کوئی کام کرے تو مکت حاصل ہو اور دنیا کی متناہی براؤں سے۔
- لا سترگار برہمن۔ گرہادان۔ بیٹوں۔ بیٹوں۔ جات کرم۔ نام کر۔ نکلن۔ ان پاس۔ چارکر  
 کرن بدیدہ۔ اسپین۔ ویرا۔ (مین ویرا برت) سوارن۔ ہوا۔

स्त्रीधर्मयोगं तापस्यं भो संसर्गसमेव च ॥ राज्ञश्च धर्ममखिलं कार्याणां च विनिर्णयम् ॥ ११४ ॥ साक्षी प्रश्नविधानं च धर्मस्त्रीपुंसयोः यि ॥ विभागधर्मं द्यूतं च करारकानां च शोधनम् ॥ ११५ ॥ वैश्यश्च द्वोपचारं च संकीर्णानां च सम्भवम् ॥ व्यापदधर्मं च वर्यानां प्रायश्चित्तविधिं तथा ॥ ११६ ॥ संसारगमनं चैव त्रिविधं कर्म संभवम् ॥ निःश्रेयसं कर्मणां च गुरादौषधीसंसारम् ॥ ११७ ॥ देशधर्माज्जातिधर्मान्कुलधर्माश्च शास्त्रतान् ॥ पाषाणद्वाराधर्माश्च शास्त्रैः स्मितुक्तवान्मनुः ॥ ११८ ॥ यथेदमुक्तवाञ्छास्त्रं पुणश्चोमचुर्मया ॥ तथेदं द्यूयमप्यद्यमत्सकाशान्निबोधतः ॥ ११९ ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृशुप्रोक्तायां संहितायां

प्रथमोऽध्यायः १

۱۱۴ - بسترى کا دھرم - تپتیا - نوکش - سنیاں - راجا و لکا دھرم - سب کا مونکا دھرم  
۱۱۵ - طریق گواہی گواہان - مرد و عورت کا دھرم - بھاگ دھرم - دینی حصہ بانٹ  
جو اکیلے کی بابت بھرمون کی سزا -  
۱۱۶ - دیشیہ اور شور و لکا دھرم - ورن سکون کی پالیس - بت سوز و نو لکا دھرم - پاپ چھوڑ  
۱۱۷ - شہ اور شہ کرموں - ام مدیم اور شہر میں ہم پانا - ام گمان دینے خود  
شناسی (نتیجہ اعمال نیک و بد -  
۱۱۸ - دیش - جات - کل - پانڈی ان بھون کا دھرم - اتی بائین بن جی نے اس  
ت ستر میں کمی ہیں -  
۱۱۹ - جو کہ جی کو ہیں کہ جی کو ہیں - شہر کو سن جی کو چھا اور بھون لکا سطح ایلو گجی کو ہیں  
من جی کا دھرم شہر کو جی کی شگتا کا پہلا اور جیسا ہے

آचार: परमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्तसंन्यतः ॥ तस्मादस्मिन्महायु-  
क्तो नित्यं स्यादात्मवादिजः ॥ १०८ ॥ आचारहि च्युतो विप्रो न वे-  
दफलमश्नुते ॥ आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णाफलभास्यते ॥ १०९ ॥  
यवमाचारतो हृद्वाधर्मस्य सुनयोगतिम् ॥ सर्वस्य तपसो भूल-  
माचारं जघ्नुः परम् ॥ ११० ॥ जगतश्च समुत्पत्तिं संस्कारविधिमे-  
व च ॥ व्रतचर्योपचारंच स्नानस्य च परं विधिम् ॥ १११ ॥ दाराधि-  
गमनं चैव विवाहानां चलक्षराभू ॥ महायज्ञविधानं च आह-  
कल्पं च शाश्वतः ॥ ११२ ॥ वृत्तीनां लक्षणां चैव स्वातकस्य व्रतानि  
च ॥ भक्ष्याभक्ष्यं च शौचं च द्रव्याणां शुद्धिमेव च ॥ ११३ ॥

۱۰۸- جو آپسار و نید اور شاستر میں کمی ہیں وہ پریم و صدم میں اسلئے  
جو براہمن یا کشتری یا دیشیہ اپنا بھلا چاہے وہ اس شاستر پر عمل  
کرے۔

۱۰۹- آپسار بہت براہمن وید کے پھل کو نہیں بھوگ کر سکتا ہے اور آپسار بہت  
براہمن تمام وید کے پھل کو بھوگ کر سکتا ہے۔

۱۱۰- جب منوں نے دیکھا کہ آپساری سے دھرم حاصل ہوتا ہے تب سب پیشاکا  
بول جو آپسار ہے اسی کو اختیار کیا۔

۱۱۱- اتنی باتیں اس شاستر میں کہی گئی ہیں۔ جگت کی اُپتت سنگا وید  
بہت کا آچرن۔ انسان بدھ۔

۱۱۲- استری پر سنگ۔ براہمن کا لکشن۔ مسایگیہ۔ شرادھ۔  
کی بدھ۔

۱۱۳- جیو کا کالکشن۔ برہم چاری کا برت۔ کھانے اور نہ کھانے والی چیزیں صفائی  
چیزوں کے پاک کرنے کا طریقہ۔

تस्य कर्म विवेकार्थं शेषा रागा मनु पूर्वशः ॥ स्वायम्भुवो मनुर्जी-  
मानिंशस्त्रमकल्पयत् ॥ १०२ ॥ विदुषा ब्राह्मरानेदमध्येत व्यं-  
प्रयत्नतः ॥ शिष्येभ्यश्च प्रवक्तव्यं सम्यक् ज्ञान्येन केनचित् ॥ १०३ ॥  
इदं शास्त्रमधीयानो ब्राह्मराः शंसितव्रतः ॥ मनोवानदेहजै-  
र्नित्यं कर्मदोषैर्न लिप्यते ॥ १०४ ॥ पुनः विपश्चित् वश्यं श्वसप्र-  
समयशचरान् ॥ शिष्यो मपि चेवेमांस्तन्नामेकोपि सोर्हति ॥  
१०५ ॥ इदं स्वस्य यनं श्रेष्ठमिदं बुद्धि विवर्द्धनम् ॥ इदं यशस्यमायु-  
व्यमिदं निश्चयेयं परम् ॥ १०६ ॥ अस्मिन्धर्मोऽखिलेनोक्तो गु-  
रादौघौ च कर्मरासम् ॥ चतुर्णामपि वरानामाचारश्चैव शा-  
श्वतः ॥ १०७ ॥

۱۰۲- اس براہمن کے کرم اور کستری وغیرہ کے کرم جاننے کے لئے برہما جی کے بیٹے  
من جی کے اس شاستر کو بنایا۔

۱۰۳- جو براہمن پیدت ہیں وہ اس شاستر کو جتن سے پڑھیں اور چلیوں کو دینے  
شاکر دون کو بھی پڑھاویں اور کستری وغیرہ پڑھیں مگر پڑھاویں نہیں۔

۱۰۴- جو براہمن اس شاستر کو پڑھتا ہے اور برت کرتا ہے وہ دل و زبان و جسم  
پیدا ہوئے اعمال میں ملوث نہیں ہوتا۔

۱۰۵- پاپیوں کی نیکت کو براہمن پوتر کرتا ہے اور اپنی سات پست اوپر کی اور سات  
پست نیچے کی پوتر کرتا ہے اور تمام پریتھوی کو اکیلا دھارن کر سکتا ہے۔

۱۰۶- یہ شاستر کلیان اور بدہ اور شیش اور عسمر اور گت کا دینے  
والا ہے۔

۱۰۷- اس شاستر میں شسام و عسمر اور کہوٹن کے گرن و دوش اور آچل  
کے ہیں۔



पञ्चनारक्षणांशनंमित्र्याध्ययनमेवच॥चरिक्पयंकुसीरंधवे  
श्यस्यहविमेवच॥६०॥एकमेवतुष्ट्रस्यप्रभुःकर्मसमादिश-  
त॥एतेवामेववर्णानांशुश्रूषामनसूयया॥६१॥ऊर्ध्वनाभेर्मे-  
ध्यतरःपुरुषःपरिकीर्तितः॥तस्मान्मेध्यतमन्त्वस्यमुखमुक्तंस्व-  
यम्भुवा॥६२॥उत्तमांगोद्भवान्येह्वाद्ब्रह्मराष्ट्रैवधारणात्॥  
सर्वस्यैवास्यसर्गस्यधर्मतोत्राह्वराःप्रभुः॥६३॥तंह्रिस्वयंभू-  
स्वारास्थात्तपस्तत्त्वादितोऽसृजत्॥हव्यकव्याभिवाह्यायस-  
र्वस्यास्यचगुप्तये॥६४॥यस्यास्येनसदाश्रन्तिहव्यानित्रि-  
दिवौकसः॥कव्यानिचैवपितरःकिंभूतमधिकक्षतः॥६५॥

۹۰۔ چار پاپیوں کی حفاظت کرنا، دان دینا، یگیہ کرنا، وید پڑھنا، تجارت کرنا، سونپنا، لٹنا، کھینچ کرنا۔ بے سات کرم ویشوں کے لیے مقرر کیے۔

41 - سوور کے لیے ایک ہی کرم پر سبھو نے ٹھہرایا یعنی صدق دل سے اینٹیں ورنوں کی خدمت کرنا۔

۹۴ - مرد کے تمام اعضا ناف کے اوپر تک کے پاک ہیں خصوصاً منہ اور بھی نیا؟  
تر پاک ہے برہما جی نے کہا ہے۔

۹۔ دنیائیں براہین بوجہ دھرم کے سے افضل ہے اس لئے کہ نہایت پاک  
عصوا (یعنی شمع) سے پیدا ہوا ہے اور دوسرا استعمال رکھتا ہے۔

۹۔ برہما جی نے اپنی عبادت کے زور سے پہلے براہمن کو اپنے منہ سے پیدا کیا تاکہ تمام عالم کی حفاظت کرے اور منتر کے زور سے دیوتاؤں کو ہتھیار اور سپہزوں کو کبتیہ یعنی دے۔

۹۵۔ اس برہمن سے پڑھ کر اور کو بیج کہ جبکہ مکھ سے دیتا لوگ سہیہ اور پتیر لوگ کبیٹہ کھاتے ہیں۔

॥ क्तमायुर्मर्त्यानामाशिवश्चैव कर्मराणाम् ॥ फलत्यनुयुगं-  
॥ नेप्रभावश्च शरीरिणाम् ॥ ८४ ॥ अन्येकतयुगेधर्मास्वेताय-  
॥ परेऽपरे ॥ अन्येकलियुगेन्दुशांयुगाद्वासानुरूपतः ॥ ८५ ॥ त-  
॥ र्मेकतयुगेत्रेतायां ज्ञानमुच्यते ॥ द्वापरेयज्ञमेवाहर्षानमेकं  
॥ तीयुगे ॥ ८६ ॥ सर्वस्यास्पृशुर्गस्य शुभ्यर्थे समदायुतिः ॥ सु-  
॥ बाहू रुयज्ञानां यथ कर्माय कल्पयत् ॥ ८७ ॥ अध्यापनम-  
॥ यनपजनं याजनन्त्या ॥ दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामक-  
॥ यत् ॥ ८८ ॥ प्रजानां रक्षणां दानमिज्याध्ययनमेव च ॥ विव-  
॥ र्च्य शक्तिश्च सत्रियस्य समासतः ॥ ८९ ॥

۸۴۔ وید میں جو عمر آدمی کی کسی ہے اور حصول مقصد کے لیے جو دعا اور بدعا اور آدمیوں کی خاصیت یہ سب بائبل میں جگہ کے موافق پھیل رہی ہیں۔

۸۵۔ جنگ کے حوالے آدیون کا دھرم سب جگن میں علیحدہ علیحدہ ہوتا ہے۔  
لینے تک میں اور۔ تریا میں اور۔ دوا پر میں اور۔ کلجک میں اور۔

۸۶۔ ست عبادت اور تریا میں معرفت اور دوا پرین کی اور کلمہ  
میرزا داں مقدم رکھا گیا ہے۔

۸۷۔ اس سپورن جگت کی رچھا کے لئے اُس ہاتھسوی برہمانے منہو یا نہ۔ جاگہ چرن سے پیدا ہوئے چار دوزون کے کرم الگ الگ مقرر کیے۔

۸- دیر پختنا۔ دیر پختنا۔ گیہ کرنا۔ گیہ کرنا۔ دان دینا۔ دان لینا۔  
اکرم برائمن کے لیے بنا کے۔

۱۔ رعایا کی حفاظت کرنا۔ ۲۔ دانا دینا۔ گیہ کرنا۔ ۳۔ دیر پڑھنا۔ دنیا کی نعمتوں میں  
ن۔ لگانا یہ پانچ کرم کشمیری کے لیے مقرر کیے۔



ज्योतिषश्च विकुर्वाणा रापोऽस्य गुराः स्मृताः ॥ अत्र  
गन्धगुराभूमिरित्येवास्तद्विरहितः ॥ ७८ ॥ यत्प्राग्द्वारश  
हसमुदितैर्विकंयुगम् ॥ तदेकसप्ततिगुरां मन्वन्तरमिहोच्य  
७९ ॥ मन्वन्तराराय संख्या नि सर्गः संहारस्य च ॥ कीडनिर्मे  
त्पुरुते परमेष्ठी पुनः पुनः ॥ ८० ॥ चतुष्पात्सकलो धर्माः स  
चकते युगे ॥ नाधर्मेणागमः कश्चिन्मनुष्यान्प्रतिवर्त्तते ॥ ८  
इतरेष्वागमाधर्माः पादशस्त्ववरोपितः ॥ चौरिकान्त  
भिर्धर्मैश्चापैति पादशः ॥ ८२ ॥ अरोगाः सर्वसिद्धयार्थ  
शतायुषः ॥ कते त्रेतादियुगेषां मायुर्द्वसति पादशः ॥ ८३ ॥

- ۱- جوت سے پانی پیدا ہوا جسکا گن رس ہے اور پانی سے زمین پیدا ہوئی جسکی  
صفت ہو ہے قیامت کے بعد پیدائش عالم کی صورت یہی ہے۔
- ۲- دیوتاؤں کا جو جگہ بارہ ہزار برش کا ہوتا ہے اسکا اکھٹر گنا ایک منوستر ہوتا ہے  
یعنی ایک من کی سلطنت کی مدت ہے۔
- ۳- بے انتہا منوستر اور پیدائش اور فناء عالم کھیل کے برابر یعنی محنت کے برابر  
لیا کرتے ہیں۔
- ۴- ست جگہ میں دھرم چاروچرن سے رہا اور اس جگہ کے آدمی سچ بولا کرتے  
تھے اور کوئی کام اور دھرم کا نہیں کرتے۔
- ۵- تریتا وغیرہ تینوں جگہوں میں لوگ اور دھرم بیٹے چوری جھوٹ فریب سے کام کرنے لگے  
اسلئے دھرم ایک ایک چرن گھٹا گیا۔ دینے تریتا میں ایک جھوٹا پرین دو حصے ہر دون کو  
اور کلجگ میں تین حصے کم ہو گیا۔
- ۶- ست جگہ میں کوئی بیمار نہ ہوتا تھا اور جو چاہتے تھے وہی ہوتا تھا چاروں پر لوگ سیدھے اور  
کمی عمر ہوتی تھی تریتا وغیرہ تینوں جگہوں میں عمر آدمی کی ایک ایک چرن گھٹ گئی۔

दैविकानां पुराणानां सहस्रं परिसंख्यया ॥ ब्राह्ममेकमहं  
यन्नावतीराचिरेव च ॥ ७२ ॥ तद्वै युगसहस्रान् ब्राह्मं पुरायम-  
हर्विदुः ॥ रात्रिंच तावतीमेव ते ॥ होरात्रविदो जनाः ॥ ७३ ॥ त-  
स्य सोऽहर्निशाभ्यान्ने प्रसुप्तः प्रतिबुध्यते ॥ प्रतिबुद्धश्च सृजति  
मनः सदसहात्मकम् ॥ ७४ ॥ मनः सृष्टिं विकुरुते चोद्यमानं रि-  
स्रक्षया ॥ आकाशं जायते तस्मान्न स्य शब्दं गुणं चिदुः ॥ ७५ ॥  
आकाशात्तु विकुर्वाणा तत्सर्वं गन्धवहः शुचिः ॥ बलवान्  
जायते वायुः सर्वस्पर्शगुरातो मतः ॥ ७६ ॥ वायोरपि चिदु-  
र्वाणा द्विरोचिष्ठा तमोनुदम् ॥ ज्योतिरुत्पद्यते भास्वत्तद्रूप-  
गुरात्सृज्यते ॥ ७७ ॥

اور دیوتاؤں کے ہزار جگ کے برابر برہما جی کا ایک دن ہوتا ہے اور رات ہی

نہایت قند ہوئی ہے۔

برہما کے ہزار جگ کے برابر پیر یسوع کا ایک دن ہوتا ہے سو وہ دن بڑا پورا ہے  
 اور اتنی ہی رات سم ہوتی ہے اس رات دن کے جاننے والے نئے کما ہے۔

یہم کے - وہ برہما اپنے دن میں کام کرتے ہیں اور رات میں سوتے ہیں جب جاگتے ہیں

تب شکب بکب روپ من کو سرشت رخنے کیواسطے آگیا دتے میں۔

وہاں سے آکر اپنے گھر پہنچے۔

۷۷۔ من کے برہمائی کی ابتداء پر آپ کے آپ اہل حق و سبب یا اسلی صفت

آواز ہے۔

[illegible]

۷۔ آکاس سے جملہ حیویات کی چھتے والی پال موی ہو ا پیدا ہوتی اسلی

بکتر ہے۔

۲۰۰۰







॥ ३० ॥ लोकानां तु विवर्ज्य सुखवाद्भूतपादतः ॥ ब्राह्मणां  
त्रिपदैः प्रथमं च निश्चयेत् ॥ ३१ ॥

۱۔ پانچو مہاجھوتوں کی ناش ہونے والی سوکھم ماترا یعنی اس حزن سے سب جگت سے ہوتا ہے۔

پیدا شد اسی عمل و خاصیت میں آپ سے آپ بھر دے ہوا۔

را این جکودی گئی وہی خا حیت اسکو پھر بوقت پیدائش از خود حاصل

۱۷۔ اہل کمال و ترحم وغیرہ اعمال میں مصروف ہوتے ہیں۔

۴۔ آدمی اور کوئید کیا۔ (یعنی مراد یہ ہے کہ کوئید کو دیکھ کر صاحبزادہ نے)۔

तर्ज्येवानुसनामानिकर्माणिचष्टयकष्टयक॥वेदशस्त्रेभ्यः  
गरीष्टयकसंस्थाचनिर्ममे॥२१॥कर्मात्मनांचरेवानासोः  
वज्रत्याशिनांप्रभुः॥साध्यानांचगरांस्तूह्यसंयज्ञैर्वसनातनं  
॥२२॥अग्निवायुरविभ्यस्तुत्रयंत्रस्यासनातनम्॥इहोहयज्ञ  
संयज्ञार्थस्तृयजुःसामलक्ष्णम्॥२३॥कालंकालविभक्ती-  
घनसत्राणिग्रहांस्तथा॥सरितःसागराञ्छैलान्समानिवि-  
प्रमाणिच॥२४॥तपोवाचंरतिंचैवकासंचक्रोधमेवच॥  
॥द्विसमर्जंचैवेमांसस्युमिच्छन्निमाःप्रजाः॥२५॥कर्मणां  
विवेकार्थधर्माधर्मोव्यवेचयत्॥द्वैतस्योजयञ्चेमाःसु-  
दुःस्वार्हिभिःप्रजाः॥२६॥

۲۱- پھر پرانے سب جیون کا نام اور کرم علیحدہ علیحدہ جیسا پیدائش سے پہلے  
دیباہی ویدشبد سے جانکریا۔

۲۲- پھر یہ بھوینے برہمانے دیوتاؤں کو اور ژریارنقون کو اور کوٹم ہتھینگیہ کو پیدا  
۲۳- پھر گیہرہ ہونے کے لئے اگن سے رگت پیدا اور یا یوسے کیر دید اور سورج سے  
سام دید کو نکالا۔

۲۴- پھر کال اور کال کے جھٹے یعنی برہمنہ ہینہ دن وغیرہ اور استونی وغیرہ نکشتر اور  
وغیرہ گروہ اور ندی ٹھنڈ پر رت سم کلیم یعنی تیرتھے سیدھے مقامات کو بنایا۔

۲۵- انکے بنانے کے بعد تپ یعنی پراجاپت وغیرہ اور بانی رت یعنی چت کا  
اچھا کام کر دوہ دیوتا وغیرہ پر جان سب کو بنایا۔

۲۶- کرموں کے برکار جانتے کے لئے مگر وغیرہ دھرم اور دھرم ہتھا وغیرہ اور





سمیچارادے سب گناہوں کو بھلا کر دیتا ہے ॥ ۱۱ ॥ سب سے بڑا گناہ جو  
 انسان کو تباہ کر دیتا ہے وہ ہے غیور ہونا ॥ ۱۲ ॥ تاہم اس کا علاج ہے کہ انسان  
 میں نہ ہو ॥ ۱۳ ॥ مध्ये व्योम दिशश्चाष्टावपां स्थानं च शाश्वतम् ॥  
 १४ ॥ उद्वहतीत्यनश्नो व मनः सदसदात्मकम् ॥ मनसश्चाप्यहंका  
 रमिभन्तारमीश्वरम् ॥ १५ ॥ महान्तमेव चात्मानं सर्वं शिवा  
 निच ॥ विषयाणां गृहीत्वा शानैः पंचेन्द्रियाणि च ॥ १६ ॥  
 तां त्वमवाप्स्यस्व परमां पद्ममितां जसाम् ॥ सन्निवे  
 तात्मा मात्रासु सर्वभूतानि निर्ममे ॥ १७ ॥

۱۲۔ برہمانے اس انڈے میں اپنے ایک برس تک بکرا اور پرتا کا دھیان کر کے  
 انڈے کے دو ٹکڑے کئے۔

۱۳۔ اُن دو ٹکڑوں سے برہمانے سوگ اور پرشوری کو بنایا پھر اُن دونوں کی جڑ میں  
 اور آٹھ دشا اور اچل سمندر کو بنایا۔

۱۴۔ پھر برہمانے پرتا تماشے شعلت بکپ ڈوپن کو پیدا کیا اور من کے پیدا کرنے سے  
 سم تپہ اور بھمان کر نیوالے انگار کو بنایا۔

۱۵۔ اور انگار سے پہلے آتما کا اُپکار کر نیوالا صفت تو لینے عقل کو پیدا کیا اور  
 بھوک کرنے والی پانچ گسیان اندری اور پانچ کرم اندری اور تپت ترا کو  
 بنایا۔

۱۶۔ شکتی مانوں کے شکستہ ہو کر اپنے بکاڑ میں ملا کر تمام مخلوق

تات: स्वयम्भूर्मगवानव्यक्तोव्यंजयंनिदम् ॥ महाभूता  
 जाः प्रादुर्गसीत्तमोद्बुहः ॥ ६ ॥ योऽसात्रतीन्द्रियशास्त्र  
 व्यक्तः सनातनः ॥ सर्वभूतमयोऽचिंत्यः समवस्वयमुद्ब  
 सोऽभिधायशरीरात्वास्मिन्सुर्विविधाः प्रजाः ॥ अप  
 र्यादीतासुबीजमवाहजत ॥ ८ ॥ तदराहमभवद्वैमं सत्स  
 प्रभय ॥ तस्मिन्जज्ञेस्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥  
 पो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः ॥ तायदस्यायनं  
 नारायणा स्मृतः ॥ १० ॥ यत्तत्कारणमव्यक्तं नित्यं सदरा  
 कम् ॥ तद्विस्तृतमपुरुषोलोके ब्रह्मेति कीर्त्यते ॥ ११ ॥

ہرے پوشیدہ ولا زوال قوت رکھنے والا اور اندھکار کا ناش کرنے والا پریشور پرماست  
 کو ظاہر کرتا ہوا ظاہر ہوا۔

ہرے تمام اندریوں سے الگ ہار کی پوشیدہ ہمیشہ بے فکر و سب مخلوقات کی جان  
 سے آپ ظاہر ہوا۔

ہرے دل میں یہ خواہش ہوئی کہ اپنے بدن سے ایک قسم کی خلقت پیدا کرنا چاہیے تو اس  
 کو پیدا کیا پھر اس باقی میں بیج ڈالا

یہ بیج مثل طلا و آفتاب کے تصویرت بھیند بن گیا پھر اس بھیند سے  
 جی جو مت ام مخلوقات کے پیدا کرنے والے ہیں آپ سے آپ پیدا

منکرت میں پانی کو نارکتے ہیں اور وہ پہلے پرانا تھا گھر تھا اسوجہ سے پرانا  
 کہتے ہیں۔

ہرے تمام سب کا باعث پوشیدہ ہمیشہ قائم و فاعل مطلق ہے اسے جس شخص کو دنیا میں  
 کیا اسی کو سب لوگ پرہانت کہتے ہیں۔

## अथमनुस्मृतिलिख्यते

१३॥ तुमेकाग्रमासीनमभिगम्यमहर्षयः॥ प्रतिपूज्ययथा  
भिर्मदं वचनमब्रुवन्॥ १॥ भगवन्सर्ववर्णानां यथावदनुप  
पाद्यन्तरप्रसवारां च धर्माब्जो बभूवुर्महेशि॥ २॥ त्वमेको  
पां त्वस्य विधानस्य स्वयं भुवः॥ अचिन्त्यस्या प्रमेयस्य का  
वर्ष विवर्षो॥ ३॥ सतैः पृथुस्तथा सस्य गमितौ जागहात्  
त्युवाचार्यतां सर्वां च हर्षी श्रद्धयतामिति॥ ४॥ आ  
तमो भूतमप्रजातमलसरां॥ अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्र  
सर्ज्यतः॥ ५॥

سری گنیش آئیم

اتھو ٹیکامنو سمرتی

۱- من جی پخت پیٹھے ہوئے تھے کہ اُنکے پاس بڑے بڑے رش لوگ آئے اور پڑے  
۲- بے بھگوان سب رولوں اور دن نکر دن کا دمرم ٹھیک ٹھیک ہے کیوں نہ  
۳- اے پر حقو چنٹ اور تہنت اور قدیم ویدین بیان کئے ہوئے جو بہت طرح  
اصل طلب کئے جانے والے ایک آپ ہی ہیں -  
۴- جب ان مہاتماؤں نے اس طرح سے ان تجنیوی مہاتما سے پوچھا تب  
ان سب تہشیوں کی پوچا کر کے کہا کہ سنئے کہ  
۵- یہ سب جگت پہلے پر کرت میں ہیں تھا اور اسکا کچھ علم و نشان نہ تھا اور نہ وہ  
ہو سکتا تھا جو اب کی سی حالت میں تھا۔

۶- یعنی وہ اب ہیں اس سے یہ پوچھا جاتا ہے کہ پہلے میں جی نے ان تہشیوں کی پوچا کی

विद्युतोऽग्निमेधांश्चरोहितेन्द्रघनुषिच॥ उत्कानि  
 अज्योतीं व्युच्चावचानिच॥ ३८॥ किन्नरान्वानरान्मा  
 विधांश्चविहंगमान्॥ पशून्मृगान्मनुष्यांश्चव्यालांश्चो  
 दतः॥ ३९॥ कृमिकीटपतंगांश्चपूकामक्षिकमत्स्यराश  
 चदंशमशकंश्चावरंचपृथक्विधम्॥ ४०॥ सवमेतेरिदं स  
 नियोमान्महात्माभिः॥ यथाकर्मतपोयोगात्तद्व्यवस्थान्  
 मम॥ ४१॥ येवाजुषादशंकर्माभूतानामिहकीर्तितम्॥ त  
 यावोऽभिधास्यामि कर्मयोगंचजनानि॥ ४२॥ पशवश्च  
 श्वेव्यालाश्चोभयतोदतः॥ रक्षांसिचपिशाचाश्चमनुष  
 जरायुजाः॥ ४३॥

۱۔ اسکے نزدیک بجلی بادل رُو بہت دھنس اُنکا (سینے لگت کاوٹنا) ثوابت وسیارہو  
 ۲۔ ہیسل و قطب وغیرہ کو بنایا۔  
 ۳۔ پھر کرم و پتھر و مچھلی طرح طرح کے پرند و چار پائیہ و ہرن و آدمی و درود۔

۴۔ درخت ان سب کو بنایا۔  
 ۵۔ زمین جی سکتے ہیں کہ اس طرح سے بڑے بڑے درختوں نے اپنی عبادت کے را  
 ۶۔ دیکھا کہ حکم پا کر جانداروں کو اعمال کے موافق ساکن و منحوس بنایا۔  
 ۷۔ انہیوں کا جیسا کرم ہے سنسار میں اگلے چاروں نے کہا ہے اُن کو نکالو یا  
 ۸۔ دھرم کا بھی کرم آپ لوگوں سے ہم کہیں گے  
 ۹۔ یہ دھرم و درود یہ دانت دے سانس و کبش و پش و آدمی یہ سب ارج  
 ۱۰۔ سائل کا چھپا نیوالا جو چڑا ہے انہیں ریکر پھر اعلیٰ سے باہر نکالتے ہیں۔

॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥  
 ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥  
 ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥

۱۔ پرنیو و سانس پھل و کچھایر سب انڈج بین (یعنی بیجہ سے پیدا ہونے ہیں) جو اسی طرح پانی یا زمین سے پیدا ہوں وہ بھی انڈج کہلاتے ہیں۔  
 ۲۔ ۱۔ ۲۔ ۳۔ ۴۔ ۵۔ ۶۔ ۷۔ ۸۔ ۹۔ ۱۰۔ ۱۱۔ ۱۲۔ ۱۳۔ ۱۴۔ ۱۵۔ ۱۶۔ ۱۷۔ ۱۸۔ ۱۹۔ ۲۰۔ ۲۱۔ ۲۲۔ ۲۳۔ ۲۴۔ ۲۵۔ ۲۶۔ ۲۷۔ ۲۸۔ ۲۹۔ ۳۰۔ ۳۱۔ ۳۲۔ ۳۳۔ ۳۴۔ ۳۵۔ ۳۶۔ ۳۷۔ ۳۸۔ ۳۹۔ ۴۰۔ ۴۱۔ ۴۲۔ ۴۳۔ ۴۴۔ ۴۵۔ ۴۶۔ ۴۷۔ ۴۸۔ ۴۹۔ ۵۰۔ ۵۱۔ ۵۲۔ ۵۳۔ ۵۴۔ ۵۵۔ ۵۶۔ ۵۷۔ ۵۸۔ ۵۹۔ ۶۰۔ ۶۱۔ ۶۲۔ ۶۳۔ ۶۴۔ ۶۵۔ ۶۶۔ ۶۷۔ ۶۸۔ ۶۹۔ ۷۰۔ ۷۱۔ ۷۲۔ ۷۳۔ ۷۴۔ ۷۵۔ ۷۶۔ ۷۷۔ ۷۸۔ ۷۹۔ ۸۰۔ ۸۱۔ ۸۲۔ ۸۳۔ ۸۴۔ ۸۵۔ ۸۶۔ ۸۷۔ ۸۸۔ ۸۹۔ ۹۰۔ ۹۱۔ ۹۲۔ ۹۳۔ ۹۴۔ ۹۵۔ ۹۶۔ ۹۷۔ ۹۸۔ ۹۹۔ ۱۰۰۔

۱۔ ۲۔ ۳۔ ۴۔ ۵۔ ۶۔ ۷۔ ۸۔ ۹۔ ۱۰۔ ۱۱۔ ۱۲۔ ۱۳۔ ۱۴۔ ۱۵۔ ۱۶۔ ۱۷۔ ۱۸۔ ۱۹۔ ۲۰۔ ۲۱۔ ۲۲۔ ۲۳۔ ۲۴۔ ۲۵۔ ۲۶۔ ۲۷۔ ۲۸۔ ۲۹۔ ۳۰۔ ۳۱۔ ۳۲۔ ۳۳۔ ۳۴۔ ۳۵۔ ۳۶۔ ۳۷۔ ۳۸۔ ۳۹۔ ۴۰۔ ۴۱۔ ۴۲۔ ۴۳۔ ۴۴۔ ۴۵۔ ۴۶۔ ۴۷۔ ۴۸۔ ۴۹۔ ۵۰۔ ۵۱۔ ۵۲۔ ۵۳۔ ۵۴۔ ۵۵۔ ۵۶۔ ۵۷۔ ۵۸۔ ۵۹۔ ۶۰۔ ۶۱۔ ۶۲۔ ۶۳۔ ۶۴۔ ۶۵۔ ۶۶۔ ۶۷۔ ۶۸۔ ۶۹۔ ۷۰۔ ۷۱۔ ۷۲۔ ۷۳۔ ۷۴۔ ۷۵۔ ۷۶۔ ۷۷۔ ۷۸۔ ۷۹۔ ۸۰۔ ۸۱۔ ۸۲۔ ۸۳۔ ۸۴۔ ۸۵۔ ۸۶۔ ۸۷۔ ۸۸۔ ۸۹۔ ۹۰۔ ۹۱۔ ۹۲۔ ۹۳۔ ۹۴۔ ۹۵۔ ۹۶۔ ۹۷۔ ۹۸۔ ۹۹۔ ۱۰۰۔

वेवदंत्वग्निं मनुसन्धे प्रजापतिम् ॥ इन्द्रमेकः परे प्रा-  
वह्यशाश्वतम् ॥ १२३ ॥ एव सर्वाणि भूतानि पंचभि-  
र्त्तिभिः ॥ जन्मवद्विद्वन्नेति त्वं संसारयन्निचकवत् ॥ १२४ ॥  
यः सर्वभूतेषु पश्यत्यात्मानमात्मना ॥ सर्वसमतामे-  
त्येति परं यदम् ॥ १२५ ॥ इत्येतन्मानवंशाख्यं भूषण-  
म् ॥ भवत्याचारवानित्ययथेष्टां प्राप्नुयाद्भक्तिम् ॥ १२६ ॥

तेमानवेधर्मशास्त्रेभ्युप्रोक्तायां संहितायां  
द्वादशोऽध्यायः १२  
समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

۱۲۱- اس پریش کو کوئی من کہی اگر کوئی پرچاپت کوئی ...  
۱۲۲- یہ آتما سب جانداروں میں شیخ عناصر کی موتیوا ...  
۱۲۳- جو آدمی اس طریق سے سب جانداروں میں آتما کے وسیع ...  
۱۲۴- اس بھگت کے لئے ہونے لائق شائستہ کو بہن کشتری ویشیہ ...  
۱۲۵- اس بھگت کو پانا ہے۔

منہ سہ شاستہ سہایت ہوا۔

सर्वमात्मनिसंयश्येत्सच्चसच्चसमाहितः ॥ सर्वह्यात्मनिमा-  
 नाधर्माधर्मकुरुतेमनः ॥ ११८ ॥ आत्मेवदेवतासर्वाः सर्वमा-  
 न्यवस्थितम् ॥ आत्माहिजनयत्येषां कर्मयोगं शरीरिणा-  
 म् ॥ ११९ ॥ खंसन्निवेशयेत्स्वेषु चेष्टनस्पर्शनेऽनिलम् ॥ यत्ति-  
 मिच्छोः परत्तेजः स्नेहेऽयोगांचमूर्तिषु ॥ १२० ॥ मनसीत्तुदिश-  
 गाचोत्रेक्रान्तेविष्ठां वलेहम् ॥ वाच्यमिन्मित्रमुत्सर्गे प्रजने-  
 त्वेजायतिम् ॥ १२१ ॥ प्रशासितारंसर्वेषामभराणीयांसमरागो-  
 र्वात् ॥ १२२ ॥ रुक्माभंस्वप्नधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं यस्म ॥ १२३ ॥

۱- بیخاک ہو کر آتمین سکودیکھو اسکو دیکھتا ہوا اور ہم میں دل کو نہ لگا دے  
 ۲- سب روپوتا آتما ہے آتمین سب قائم ہے سب ارباب قابوین کے کرم کو جوگ کوید  
 ۳- اگر تاتے سب ادوخ کو  
 ۴- ہر کے دل والے جوہ کے اکاش کو جو کرے حرکت اس منس کا سب ہندو  
 ۵- کی ہوا میں باہری ہوا کو جو کرے اد ریٹ کی کن میں باہری کن کو اور بل کے اور پڑ  
 ۶- میں جھمکی اچھل کو جو کرے اور پھوکی کا حصہ جو بدست آتمین باہری پرتھوی کو جو کیوں کر  
 ۷- دامن چندرمان کو شیر و تر اندری میں وشا کو پا د اندری میں کشن کو بل میں ہر  
 ۸- میں کن کو یا لو اندری میں ہنتر دیوتا کو لنگہ اندری میں پرچاپت کو جو کرے چھاپت  
 ۹- پر حکمرانی کرنیوالا چھوٹے سے چھوٹا سونے کے برابر روشنی والا سونہ پرچھاپت  
 ۱۰- لڑکے کہیں کرنے کے لائق جو پریش ہے اسکو سب بڑا جانو۔  
 ۱۱- تھا اور نہ دل



# अथ मनुस्मृत्यः सूचीपत्रम्।

## सूचीपत्रम्

आशय	अध्याय
मंसार की उत्पत्ति - आशयों	१
का सूचीपत्र ... ..	२
शिक्षा - ब्रह्मचारी का धर्म ...	३
विवाह - गृहस्थ का धर्म -	४
पंचयज्ञ - आहुति ... ..	५
विका - सुशीलता ...	६
जन्म मरणा का सूत्र - जी-	७
जों के अङ्ग करने की शक्ति ...	८
तप - धाराप्रस्थ सन्यास ...	९
राजाओं का धर्म ... ..	१०
न्याय - दीवानी और फौज-	११
दारी का कानून ... ..	१२
तथा - व्यापार और सेवा-	१३
वृत्ति ... ..	१४
अनुलोम प्रतिलोम - आप-	१५
त्तिकाल में वरों का धर्म ...	१६
प्रायश्चित्त ... ..	१७
आवागमन - शुभाशुभ कर्मों	१८
का फल ... ..	१९

अध्याय	सूचीपत्रम्
१	मंसार की उत्पत्ति - आशयों
२	का सूचीपत्र ... ..
३	शिक्षा - ब्रह्मचारी का धर्म ...
४	विवाह - गृहस्थ का धर्म -
५	पंचयज्ञ - आहुति ... ..
६	विका - सुशीलता ...
७	जन्म मरणा का सूत्र - जी-
८	जों के अङ्ग करने की शक्ति ...
९	तप - धाराप्रस्थ सन्यास ...
१०	राजाओं का धर्म ... ..
११	न्याय - दीवानी और फौज-
१२	दारी का कानून ... ..
१३	तथा - व्यापार और सेवा-
१४	वृत्ति ... ..
१५	अनुलोम प्रतिलोम - आप-
१६	त्तिकाल में वरों का धर्म ...
१७	प्रायश्चित्त ... ..
१८	आवागमन - शुभाशुभ कर्मों
१९	का फल ... ..

M.A. LIBRARY, A.M.U.



U276



# मनुस्मृतिः

मानवे धर्मशास्त्रे भृगु प्रोक्तायां संहितायां

महाभारते

पुराणां मानवो धर्मः सांभावेदश्चिकित्सितम्।

आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेतुभिः १

कानपुरनगरे

नवलकिशोरीय ग्रंथे सुप्रिता

संवत् १९६५ वै०।

CHECKED

Date

منو مرقی

CHECKED



مانو دھرم شاستر بھگ سنگھ  
مستشرق ترجمہ اردو مرتبہ لالہ سوامی مال صاحب

بار دوم

مطبع منشی نول کشور مقام کاپنورین طبع ہوئی

